TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4334**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

श्री ॥ऐ८०॥ ॐ नमः श्रीवीतरागाय नमः॥ वेलाउल रागे दूहा॥ श्रीमुनिसुव्रतस्वामिजी॥ त्रिभुवन तारण दे
व॥ तीर्थंकर वीसमउ॥ सुरनर सारइं सेव॥१॥ सुमित्र नरेंद नंद॥ पोमावइ तस माय॥ जनमभूमि जिनव
रतणी॥ राजग्रही कहिवाय॥२॥ अवतरीया हरिवंसमइं॥ हरिसा चवीया सार॥ कल्याणिक पंचइं सला॥ नामि
सदा जयकार॥३॥ चरणकमल तेहनां नमी॥ रामसुलक्ष्मणराइ॥ सीतानें रावणतणो॥ चरित्र कहुं सुखदा
य॥४॥ सुखदाइ सकु लोकनइं॥ रामकथा अति रीम॥ श्रावणसुणंता सरइं सही॥ मननां वंछित काम॥५॥ रा
मउ चरितासु खथकी॥ पापपुलाइ जाय॥ मतिफिरि आवइं तिहथी॥ ममउकमा डीया दुइ॥६॥ पावनमइं पाव
नमहा॥ कलिमलहरण अपार॥ मोक्षपंथनो संबलो॥ सजनजीवन सार॥७॥ वीसामाथा निकसलो॥ धम
ऊसलको ठाम॥ बीज अथ में तरुवर तणो॥ रामचंद्रनो नाम॥८॥ लक्ष्मण रावणराजीया॥ तीर्थंकर मदद का
य॥ मुक्तिपुरि जइ थाइसि॥ सकल जगत काराइ॥९॥ सत्यवती सीता सती॥ सीलतणा अवदात॥ सग
पकुता बारमइं॥ वसुधा मइं विख्यात॥१०॥ जकडीनी ढाल॥ जंबूदीपइं खेत्र भरततणो॥ लंका नग
री थां निकनिरमलो॥ निर्मल उथां निकपुरि लंका॥ दीपतउ राक्षसनुउ॥ अजित जिनवर तणइं वा 1
रइ॥ रूपघनवाहन कउ॥ महाराक्षस पाटथापी॥ अजितस्वामि हाथइं॥ चरणपामी मोक्षयाकं तउ॥ २

घणा मुनिवर साथिए ॥११॥ रासस राजा राज करी घणो। अवसर जांणी तप संयम नणो। अवसर आंणी गुण
श्रेणी। देव रासस सुतल गी। राज आपी ग्रही संयम। लही मोस सुखां मणी। असंख्याता कु बाल पति स
म इंद समाजि नतणइं। कीर्तिधवल नरेंद्र नी कथा। राय आंभवर घणइं ॥१२॥ इणि इ अवसरि रूपाचला
व थइं। मेघा सिधपुर नगर आवे। आवइं अवइं पग अतिद्र राजा। नारि तेहने श्रीमति। श्रीकंठ पुत्र पवित्र
पुत्री। नामि देवी गुणवती। पुफोत्तर परत्नपुरपति। नंदपद्मो नरसही। तस अर्ध देवी कन्यका ए। राइ मारगि
उमाही ॥१३॥ बे वर सुत नै परणावी नही। लंकापति नइं व्याहा गइ गही॥ गइ गही व्याही अति उमाही। कीर्तिध
वल नरेंद्र नइं दे विदेवी सदा सुखदा। राची जेम सुरइंद्र नइं। अतिंद्र साथि इ रत्नपुरपति। वदइ अम
र ष आकरो। नारि हे तइ कि तेम अधिक ते। उपजे सुणि वइ मरो ॥१४॥ पुफोत्तर नी पद्मा कुमरी। पग श्रीकंठ वइं
रागइ अपहरी। आपहरि नि सुणी जां मयद्या। पुफोत्तर रूप साजीयो। दलबल विराजी रविरुत। तो मइ ब
पुर साजीयो। लंकापति नुं चारण लीधुं। लंकपति वन्निका करी। समजा विराजा व्याह कीयो। पद्मनोजी तइ
घरी ॥१५॥ सा थइ लंका नो पति सादरो। वास उमरो रोइ हाहा करो। इहां हा तुम्हे रो वासु वाणउ। तिहां तुम
हे मी सक। कोइ वेला पिशुन वासइं। कलाज तउ निघटइ वइ कु। द्वीप वानर त्रिसइ + योयण। वी म अभि

करतो हामरणो। वासकी जइं सुषरहो जे॥ प्रेम साचो आयणो॥१६॥ नगरीपतिनो साषि तमांनीयो। पुरीयकिंकिं
धावासवषाणीयइं। वषाणीयो वरवासवारू॥ महलमोटा मंदिरे॥ जैनचैत्य उत्तिंगपोसह॥ शालदीसइ सुंद
रे॥ उत्तमाचारि आचार सकू थइं। धमकर्म समाचरइं। देवपुजा सद गुरु सेवा॥ जन्म इम सफलो करे॥१७॥ वां
नरद्वीपे वांनरदेषीयइं॥ राजारिद्धि प्रेमविसेषीयइं। विसेषीयइ तव प्रेम बहूलतं। मारि वाकोन विलइइ
अक्षपांणीदो जोइ नृप वचन सकइं सहइ। चित्रलेपिछ अतिषेचर। रूपवांनरनो धरइं। तेहथी आयहो
पनो मि। नांम वांनर विस्तरे॥१८॥ श्रीकंठ हिंथी नृप जितं नंदन। वज्रमुकुट नाभि आनंदनं॥ आनंदकारी राय
इकदिन॥ सभामइ बइठो छिसइं। श्रीपद्म अष्टमी जातरे ति। ज्ञानदेषी सुरति मइं॥ राइचालीयो मानुषोत्त
र। गिरि यात्र नषल्याइयो॥ साधु संग इलेइ संजम। राइ मोक्ष सिधाइयो॥१९॥ नजमुकुंवादिक अनेक जी। रा
ज्ञाक आवइं सुविवेक जी। सुविवेककारी क्रम राजा॥ नी समइं जिनने नमइं॥ घनोदधि वर राजक्ष आ
अनमतो आवी नमइं॥ लंकनगरी तडितकेश राजा॥ राजकुंडा राजतो। राक्ष सावांनरा मांहि। प्रेम नुपुरागा
जतो॥२०॥ नेरनवन मइ लंकानो धणी॥ रमिवा चाल्यो साथि त्रियाघणी॥ त्रिया साथइं राइ षेलइ। वांनरो
एक इतलोइ। राइ त्रियना कुच विलुसा कोदीयो नमते तलइं वांणाहणीयो लुयपडीयो [illegible]

तेकारण। तरइ हिंते साचो सोइ वांनर॥ कुंत्रइद षिकमारए॥२१॥ ज्ञांनप्रयुंजी देषइ देवजी। आपी ऋषि
नी सारइं सेवजी॥ सेव सारइं तां मनरपनी। लोग वांनर मारए देषको पीयो देववांनर। सेन अत्ति विस्ता
रए। कोपीयो कपि तरु सिला मुद्गरइं राक्ष मुंनावय। यांति नइं बलि सुरमनाविर्तु। बगसि अवइमसा
षइए॥२२॥ साधु समीपइं दोइ आवीया। मुनिदेसणि सांता पावीया। पावीया सांता रायपुछइं। कहो
ऋषिक रूणाकरी॥ वांनरा नी मा हरीए॥ सुणवो श्रवचरी॥ पुरी सावस्तीइं मंत्री॥ पुत्र नतं तत्र प्रकृत
३। कासीयइं लुबधक जीवकपिनत्र॥ पापजीवीयो बतो॥२३॥ मुनिवर पासइं तइं दात्तावरी॥ वांणार
सिइ आयो संचरी॥ संचरी आयो तां मलुबधकि। मारीयो ते मुनिवरू। माहेंद्रकल्पि देव होइ॥ लुब्ध
क रेनरे सरू। नरगना दुष देषि लुबधक॥ उपजइं वांनरपणइं॥ वैर कारण तब वधारणा॥ ज्ञांनिब
लि मुनिवर तणइं।२४॥ पुत्र सकोमल तनइ पद आपीयो॥ संयम साधि नृपमनि थापीयतं॥ थापी तें सं
जम साधि पमन॥ मोक्ष मारग साधीयो। घनोदधि नृप ग्रहो संयम। मोक्षपद आराधीयो॥ किंकिंधराजा
किंकिंधषयइं॥ सुकोसल लंकावली॥ केत्रा राज मुनिंद॥ पहलीढालए तांषी तल॥२५॥ सयर स्वरा गेसद
गिरि वैताढइं विशेषथी। रथनूपर पर देषि। असनिवेग राजा तलो। पालइं राजविशेष॥२६॥ विजइ हसिं

रामज स

हविजयामह। विद्युतवेगविसेस। दीदंकदीनंदना। पावइ मोह विसेस। २७। तिणपर्वत आदित्यपुर। मंदिरम
लाराइ। तिहघरि पुत्री ऊपनी। श्रीमाला सुषदाइ। २८। संवरमंडपतेहनै। बोलाव्या बहुभूप। मंडपनीरच
नाकली। आवीसोतिअनूप। २९। राइ सहुनै अतिक्रमी। वीरउ किंकिंधराय। विजयसिंह को पिउं घणुं। अम
रषसहिउं नजाइ। ३०। आगइ हाउतारीया। पर्वया उमघाहि। अरे बैठा जो बलवरउ। आजकुलजउं नकाइ
हएकइ आयोवरमालिका। कइ सरासग्राम। श्रीउ मुणिको घणुं। वानरराक्षसस्वामि। ३२। विजइसिं
ह सुत मारीयो। किंकिंधनृपनइ स्यात। अंधक हणि वदलउ लीयो। विजयसिंहनइ जाति। ३३। किंकिंधमलं
काधणी। कृटिका दीयादोइ। इहांपणि षोको नहीं। बलीयो करे सोहोइ। ३४। इति तनि आमि सुदावली
हइ पटाल। बलीयासुकि उलागतादे। फिरि फिउरी इहां लागताहइ। किंकिंधानानायक पायाल
थितिवावताहे। लंकपायाल प्रसिधापुहवी। वासकीया सुषपावतीहे। ३५। अशनिवेगी गेरूप निर्घात
जालंकामाणइ षापताहइ। देशनगरपुरपाटणसहुनैं आइ। यथा योग्यनै आपताहइ। ब० ३६। सह
श्रारसुतनइदीधंपदवी। आपुण संयमधारताहइ। सुमतिगुपतिगुपति व्रत तो। व्रतिपालक निजपरि
कारिज सारताहइ। ब० ३७। राइ सुकेस घर आइ जाणी। नारिसिरोमणि नायकाहइ। आलीसुमालीमाल ३

वीनए। पुत्र तीनतीदायकाहइ। ३८। ब० किंकिंधपति निवरवनिता। नाम तंश्रीमालाहइ। तसरसुत आ
दित्य रजादो। सुतनी मासुविसालाहइ। ब० ३९। राइ किंकिंधमधुपर्वतपरि। सुषमानताअतिमानताहइ। नं
मि किंकिंधानगरनिवासी। वासविकोषइ वांणताहइ। ब० ४०। राइ सुकेशतणा सुतकोप्या। तसनिर्घात
निकासिउंहइ। मालीलंकापुरी किंकिंधा। ४१। राजा नृपनासिउंहइ। ब० ४१। नृपसहस्रारतणैघरिना
रि। चित्रसुंदरी राजाहइ। नंदनइंद्र अनोपमजायो। ऊपमइंद्र हिसाजेहै। ४२। ब० मालीराजा इंद्रनिणीति
उं। पुनरपिलंका जोधाहइ। नृपवैश्रमणलीलीसादीधी। षुणसति षुणसी कीधाहइ। ब० ४३। लंकापाया
लं सुमालिवसंता। रत्नश्रवा सुल तं फिउ। कुसमोद्यानि जइ विद्यानो। साधनमोटउ मंमि उंहइं। बली
धध्येय व रनी कुंमरी मनहरणी। पासइ आवी ऊभीहइ। तनिमनि राचीरहीबेसाची। प्रसूजीनइ गुण
बुसीहइं। ४४। ब० निश्चलमनराषंतानरवरि। स्थउं साधन साधियाहइ। मानवसुंदरि विद्यासाधी। वोन
धरोरोवा धिउंहइं। ब० ४६। हृष्टिपसारीजोतांदेषइ। पासइ पद्मनि गाढहइ। आपुणकुल अवइकु
हो सुंदरी। वचनै कथनै काढिहइं। ४७। ब० कौतुकमंगलपुरवर मौहउ। व्योमबिंदु तिहां राजाहइ। कौ
शिका कैकसी य सहोदरि। रूपकला गुणताजाहइ। ४८। ब० कौशिकातो विश्रवसाघरि। वैश्रमण ४

सुतबासिहइं। इंद्रतणइं अधिकारी अधिकउं। लंकाराज निसंकाहइं। बलीण॥४८॥ निमत्तीमुख तुम्हवर
लाधा। मन सी अधिक उमाहा हइं॥ तिडि कमंकअंबरराजा। साकन्यात बन्याहा हइं बलीण॥४७॥ पुरकसु
मालनेवारेबसावी। बसबी ना सुषमां नो नादइं। धर्म सुकर्म करता बकुलउं। उत्पन्न तारथ आगइहइ
बण॥४८॥ एकदिवसिकेकसी निद्राहइं। सिंघ सत्रणो देषिउं दइं। गज कुंभस्थल भेदकरंतो। तपनेब
ध विशेष्य उहइं बण॥४९॥ गर्भवती मा राणीवाली। अति असुहाणी लाषइहइं। मोडइ अंगकलेसकरं
ती। मोनघणं मनि राषइहइं बण॥५०॥ दर्पणनां ण जिम मुषदेषिइं। इन्द्रहि आण मनावइं॥ अ
रशिरापावदीयं इत्यादिक। गर्भप्रतावजणावइहइं बण॥५१॥ प्रतिपषोयाघरे त्रासपडंता। सुभवेलासुत
जायोहइं॥ सहस मचउइ सबर्षप्रमाणइं। अविच लहोइ आयोहइं बलीण॥५२॥ सीमेइणगुराप तिप्रग
ट। मोणिकनवीनीपायोहइं॥ हारउवाई उचोलीधउ॥ पहरि गलै सोतायो हइं बण॥५३॥ देषिके क
सीए हतमा सउं॥ अवरिज अधिक उपायो हइं॥ रत्नश्रवाई नइ एह असुरब। राणीया लदेषायोहइब
॥५४॥ रावसइं इद्र इ घनवाहन इ॥ आपिउथि उए मुणीयइहइ॥ सूर्वज्ञानी ता व सजितेअर्चिउ॥ देवतणीप
ग्निसुणीयइहइ॥५५॥ बण नागहजारेसेवितकिणहो॥ उपाडिउनविदी ठउहइ॥ बालिकपारेलीलां॥

इंसी॥ कंठेपहरी बइंठोहइंबण॥५६॥ नवमाणिकमइं नवमुषदीसइं। दसमोसोमदजिदेषाअंहइं। दसमु
षनाम पिता तसथापउं। उबवअधिक उंथाहइंदे बण॥५७॥ सुमाली मंदिर गिरिगिउदयउ। श्रीनवतऋषि
मफिउहइं। नवमाणिकनोहारबहइसो। सिषेनाधिप मफि उहइंहइ॥५८॥ मानुसुपिनदेषीसुतजायो। लं
बकर्णकहायोहइं। कुंभकर्णतउअपरनामथी। सुरिजतेज सबायोहइ बण॥५९॥ सोडशा सानुषनुषस
मुन्नत। सहोदर समस्तायाहइं। बीजीढालविसालविनोषी। केशराजमुनिगायाहइं॥ इतिबण॥ काफ
रागेदूहा॥ एकदिवसिरावणपमुख। कुंचउजो वइंजोम॥ बयसिविमानिआवतउ। वैश्रमणगुणधीम
द्य देषीरवीमायजी। एकुणराजाहोइ। मासीसुततउनाहरइउं। मुकसगनीसुतजोइ॥६८॥ वैश्रवणनं
मिइं लंकउं इंद्रतणइघरिएह। मानीजइमतिआगलो। सकजीसाथिसनेह॥६९॥ तुम्ह पितामहमारि
कइं। लंकग्रहीहरिराइ। आपीबइठउएहने। एकंपसहिउनजाइ॥७०॥ लेकाहोइ इनामथी। विषा
रासस नोम॥ रात्रनीमिल्यपाकरी। आपीयो असिरोम॥७१॥ घनवाहनराजायकी। एथितिचालीजात
अवलोकाइ हीनथी। दीनवदेनपमात॥७०॥ धरतीबुट्यजेहनी। मानइमहालमजोम। सधनद्यकीनि
र्धनकवइं। कोइ नषावापाय॥७१॥ सोहिननयणेनिरषिउं। लंकानगरीजाय॥ पितामहीनइं आसु

लोमजस

णि। तुम्ह बसि सो राइं ७२ लंका नालू राक नइं। वेदी थांनां मांहि। देषि मित्ती तव जां ता सिमदी। पुत्र वनी ऊ
भी हि। ७३ एह मनोरथ माहरा। गगन कुसम समदे षि। मरू देस मरा लिका। दिन दिन षिण विसेषि ७४
एह वचन स्रवणे सुणि। बिसी षण बोलंत। बाधा राठा ह सि पकडि। मा ता मम मोलंत ७५। पद नी ढाल।
चढती तेज प्रताप इ। दसकंधर राजा। तीन भुवन नव नवन को कंटक कहीइं। श्री णत्र को ढ थाय इं द रा ७७
कण सुइ दधनंद विचारो। ऊण सु षेचर थान। ग्रह गण राति न राति पती यह रइं। अब ऊगे एक तो नु
७७ रावण घरि बइं ठ त्रं सुष पावे। कुंभकरण को जोर। अष्टापद उ ठाथी केहरि। नाजीजाइ लोर दश
७८ कुंभकरण सी ऋल गव जाते। म्हारी अधिकी टेक। मये गल माती केहरि आ गइ। पाव सरइं नही
एक द रा ८०। रावण लाषइ माय सुणो जी। दिउ हमनइं आदेश। विद्या साधन साधी आवा। बांधइं बांन
विसेस ८१ द० सुधी रावन नर बलि साधी। विद्या एक हजार। सिंहनणइं ननिया षरवइ ही। कुंउ अंग
ज अपार ८२ द० कुंभकरण ने पांच जयांनी। च्यार विनी षण लीधी। षेमकु वाल सुतीनी बंधव। आया वि
द्या साधा द० ८३ विद्या साधन की विध अधकी। पद्म पुराण वषांणी। मइं मन बंध संषे पइं कीयो। ग्रंथ बंधतो
जांणी ८४ षट उपवास इष्यां को साधित। चंद्रहास वर राय। वेरजे मकला चठती। बाधइं अधिक बना ईद० ५

ठ इ गिर वैताढ दक्षिण श्रेणइं। पुरवर सुर संगीत। मय नर षेह लवती नी जाई। मंदोदरी अपबिंब समान
परणावी राजा रावणनइं। सनमुष आणि कुमारी। जेम सची इंद्र घरि राणी। राइ घरि एना रि द० ८८
गिर मेघर वषेचर पुत्री। रमती पुत्री पुत्री दीवी। दहा हजार वरी एक साथि। एर नगु नम पसाय द० ८९
षा मा वइ पुत्री नेता तज। सुर सुंदर वह राजा। श्रव राजन क सक भि ति सा थि इं। आयालं सकर ताजा
द० ९० बुक सक भितीबोलइ सामी। देगविमान वलावउ। आयाकटक विकट सयसारी। ट लिवे
री सट लाव उं द० ९१ रावण सा षइं लां मनी या सु। आरति कोइ म आणो। रिरू जंगे गुर उनबीहइं। ए
कुंभाण त्रे जां ण त्रे द० ९२ करि संग्राम सकुने जीती। नागज पासां बांधइं। नारी वचन बांधी बंधन थी। ने
इ घरे रासा थइं द० ९३ मंदोदर कैसे उपेपुराधिप। सरूप नयण राणी। तडित माला पुत्री परणी। कुंभकरण
घरि आंणी द० ९४ ज्योतिः सुरपति वीर नरे सर। नंदवती नी जाइ। पंकज श्री पंकज वर नयणी। विभीष
ण सुषदाई द० ९५ मंदोदरीइं नंदन जायो। इंद्र सरिष उं तेज इं। इंद्रजीत जी नां मिघा णा मि। बोला बो घन
है जइं द० ९६ द० मेघ सरि ष उ नयन नांनंदन। बीजो नंदन जायो। मेघ उ वाहन वारू कुंभर। कमें तक हिवा
यद० ९७ ह कुंभकरण [illegible] सी षण साग लंका नइ कजाइ इं। धनद सुमाला सु आलेनो। इतलु प इ देव

6

रामजस डइ दप ६० रावण नाइ ना जी चढीया लव संग्राम मइं धनद संग्रामे तेजंग कीयो थो। रावणजी जस पामइं दप ६१ वर म शरीर धनद नरेसर। चारित सुचित लावइं। अनु मित्र सु सन परणमि। रावण आणि तेधम वइं दप ६२ लेको लीधा रावण राणइ। पुःफक लीयो वि मोण। माया मनोरथ पूरा कीधा। पुरषां एहपमो ण दप १०० पुफ कवे मानिक बयसि नइं। जीन समेत इन्हा वइं। भुवना लंल नहा थी ना री। गज शाला इं वंधावइं दश एक विद्याधर आणि सुणावइं किंकिंधा नप ज्याया। लंकपयाल तजी निज नगरी लेवा सारू आया दप १। सुरिहारी वीय मराजिन। सहंधदेष्याने वावइं। रावण छोडाया यम हरि सुए ह ज्ररत्त सुणावइं दप २। लंकालेई किंकिंधा लीधी। लोके पुफकयान। सुर सुंदर संग्राम हराया। अ जमनो राजा नदप ३ कोपितेइंद्र प्रधाने निवेधित्रे। देषो नइं सुथाइ। यमनइं सुरसंगी तस। मर्पिंड्रे आधकोट हराइ दप ४। सुर राजा नइं पुर किंकिंधा। ग्रीतधरी नप आपइ। रुषिनगर तत्रे रुषरजी नइं। आपुण डीकरिया पइं दप ५। सल्लइं सुहर तिडि सघण सुं। रावण लंका आवइं। नारि वंधावइ मंग लगावइं। सुय णमहा सुष पावइं दप ६। आनेद रंग विनोद विशेषइं। घरि मंगल चारि। केशरा जएतो श्रीलइ। सुषि रजय य रकार दप ७। रामगरी राग दूहा। खर राजा घरि जाणी वइं। इंद्र मालिनी ६

मालि। वली सुत ज्य जित्रे वली। कोनर सकइं तसपारि। घरा रुडा तत्र थिवी सके। निस सहित देइ सब विधि वाली आगली। वंदइ सकल लोक। पधुगपि केते ओतरइ। जायो सुत सुग्रीव। सुप्रभा क मासली। सोत नीक सदीव। रिष राजा घरि कोमनी। हरि कंता सुविधान। नील अनइ नलनो मथी। जाया पुरष प्रधान। ३ खर रिराजा वालीसणी। नृपपदवी आपंत। चारित पाली निरमलंत्रे। मोक्षपदं ता संत। १ रे। आंगल रुण करि लीजीयइ एढाल। एक दिसि लंकापत्ती वंदन चैत्य अनेयतो। अ नइं यती पर्वत संद रूप ६। खर गंधार नेअपहरि। खर खेचर गतं संचारि। लंकपयालेघ रकरए १४ खर राजा नो नंदन। चंद्रोदर आनंदन। खर राजा नो मारीयो। एम करि तनै राजा सो। ल रक परि बले सा जीते। मंदोदरी वइ वारीयो १५। लंकपयाला नत्र धणी। कोधोन गनी पतिसणी। आपुण डो करिया पी थत्रे ए। ये चंद्रोदर मारि त्रे सुणि। अनुराधा नावी धणी। नावीघणी दे करंडा पत्रे आपी यो ए १ घवन मइ नंदन जाइयो। नोमि विराधक हाइयो। कहाइ सकल कला गुण आगलत्रे ए १७ जोवन नोवय पामीयो। वैर विसोधइन कामीयो। कामीयो कामकरण उताव लोए। १ वाली सेवा वीछतो। आ णि मिले सुं वइ बत त्रे। अनुलर इत वलीवीयो ए। वाली नइ प गं लागायो ए। अंतःकरण निराग। ५

या॥ तिणीयो रावण वचन सुणावीयो ए॥१८॥ किष्किंधवन घी सुकनाई॥ स्त्रीकंतणी लुकनाई॥ तुकनाई वालि
नृपति सेवकपणइ ए॥ अथ अभिमान कीजीयै॥ जउ कीजै तो बीजीयै॥ पीजी स्वामी मेनाबुघणु ए॥२॥ ए
लि कहे सऊं करो॥ ते ण घर सुनहि आंतरउं॥ आंतरूं पडीयूं बइं मन माहि रहइ ए॥ देव अनइं गुरु टाली
ए॥ नन मूं मस्तक वाली ए॥ वाली ए नाकुं घरि ताह रइं ए॥२०॥ जन अपवाद थकी डरूं॥ नही तिम जाणू
ति मक रूं॥ कायाथी टलि कन ही ए॥ जा तुम स्वामीनै करइ॥ अवतु सीधुं को वहइ॥ वहइ आणी बव
ली सही ए॥२१॥ दूत वचन जब सांभल्यो॥ राजा रावण परिजलउ ए॥ पर जलि अदल बल बकलै चा
लीयो ए॥ कपिसाह मो आवीयो॥ दल बल अंतन पावीयो ए॥ तो गउ पउटालीयो ए॥२२॥ दंद युद्ध
थापना॥ टालि उपाय पापना॥ पापना उपाय इं अलगा कीया ए॥ दोइ तो आवतना॥ दोइ तो मति आ
गला॥ आगला दया धर्म चितमइं दीया ए॥२३॥ अस्त्र सस्त्र जे चालवइ॥ वाली तेसऊं जालवइ॥ जालवे
रावण नां उपकर्म नइं॥ एवु तुम ही वइ चोकसी॥ वकसी चोट करइं अति उकसी॥ ऊकसी हामनवे
ट॥ धर्म नइ ए॥२४॥ कंदुकनी परि पाडीयो॥ कर कोटर मइर मइल्सी डायो॥ लीडायो चार समुद्रां फरी
यो ए॥ दोइ षिसाण उआ पडी॥ आणय मन संताप जी॥ सेना पजी हार उं रावण हारीयो ए॥२५॥ मकारे ७

अतिमारइं जी॥ परबलाइ उपगार जी॥ गारजी तो छंडै रावण सजी ए॥ लघुभाई परिवापी नइं॥ राज्य तणी
थिति आपी नइं॥ आपुण संयम साजीयो ए॥२६॥ सुग्रीव इं सु विचारीयो॥ रावणनो अधिकारीयो ए॥ अ
धिकारीयो भीवनायरणा वीयो ए॥ वाली नमी रूप संचरइ ए॥ प्रतिमा धर वहु तप करइ॥ तप करै लिव
धिवंत कहावी ते॥२७॥ मास इमासे पारणो करइ॥ सदा सुष कणो सुषकरणो॥ अष्टापद गिर आवीयो ए॥
काउसग्ग समसे चरइ॥ योगध्यान निश्चल धरइ ए॥ निश्चल धरइं जिनसासन सोनावीयो ए॥२८॥ निसाले
लोक उपरव रूं॥ निसालो कनै रेस रूं॥ नेरे सरू कन्या नउरे भावली ए॥ माहणनप जाइ जाम॥ अष्टाप
द आयो तोम॥ आयो तो मआगइं तत्र नसकै वली ए॥२९॥ दोगो तलिं ऋषि जी कंठउ॥ रावण रोस करै गा
ढउं॥ करइं गाढो जाणइ ए॥ पर्वत पडइं॥ माया साथइ ऊपाडइं॥ तवतउ पर्वत षडहडे॥ षडहडे मुनि दा
वइं अंगूठडइ ए २९ आसकरी नइं नासीयो॥ ऋषि चरणे चितवासि उं॥ वासिउं रहि उ साबुं पाय अन
सरी॥ लषनइं रागनरी सइ जी॥ सज्झायि सनो सजी॥ तो सइजी नीर षपरप वालीकरी ए॥३०॥ देवगु
हारि स्तुतिसुं॥ जिन गुण गाइइं संगति सु॥ तव धरणेइ स्मरीयो ए॥३१॥ अमोघ विजना मिसली ए
वाल्कि रूप थइ निरमली॥ निर्मली विद्या देइ सिधारीयो ए॥३२॥ दशविध आराधन करी॥ वालि ऋषि 8

रामजस

शिवगतिवरी॥ नमोनमोरिषराजीयाए। चउथीढालइंचतुराई॥ चतुरनरांनइंमनिसाई। मनिसाईकेश
राजगुणगाजीयाए॥३३॥ जयतश्रीरागेढाल॥ गिरवेताढिविशेषायइं। ज्योतिःपुरपुरनाम॥ विद्याध
रवेज्वलनशिषरोजगुणेकरिअभिरांम॥३३॥ नारिनांमइंश्रीमति॥ पुत्रीतउपरभान॥ तारानारा विलोच
ना॥ कोइनतासममान॥३४॥ नरपचक्रीकतणउसदी॥ सुतसाहसगतिइंजोइं॥ ताराद्रशितिमोहीयो॥ करे
याचनासोइ॥३५॥ वोनरपतिनीबोबना॥ तातलिषीएवात्त॥ साहसगतिस्वल्पायुषो॥ कपिपतिनेदिइं
तात॥३६॥ ताराऊअरिउपना॥ अंगअआढादोइ॥ जयानंदअंगदभलो॥ बलिसमफलजोइ॥३७॥ साह
सगतिसांसइयडिउ॥ फेरेरातिजदीह॥ अणसरिजिउंकिमपांमीयइं॥ एजिनवचनेलीह॥३८॥ कोइदा
वउपावइमिउं॥ तारासंगकराय॥ तउजीतव्यलेषइंलिष॥ नहितरतउमरिजाउं॥३९॥ रूपपरावर्ति
नकरी॥ विद्यानोआरंभ॥ हेमवंतपर्वतजइ॥ मंडइकरेवादंभ॥४०॥ स्वचरषेचरराजवी॥ दलबलसब
लविराजा॥ दिगयात्रायइंचालीयो॥ रावणरूडेसाज॥४१॥ नवमालीकेंगोडराएढाल॥ रावणदिगज
यचालीयो॥ साथइंसबपरिवारोरे॥ तेजप्रतापवधइंघणो॥ ऊगंतोदिनकारोरे॥ रा॥४२॥ लंकपयाला
आवीयो॥ परइंषरोहीमांनिउंरे॥ षेचरचोहजारसुं॥ साथिचलेबोलांनिउंरे॥ रा॥४३॥ सरसषरोसुयीवनो

८

चालिउंरावणलारोरे॥ अवसरनेआरामनाउपजइप्रेमअपारोरे॥ रा॥४४॥ नदीनर्बदाआवीयो॥ कोवइक
टकपडावउरे॥ जिनपूजाकरिवाभणी॥ बइठोरावणरावोरे॥ रा॥४५॥ अणचिंत्योजलवाधायो॥ पूजासाज
णतणाणोरे॥ षवरिकरिजणआवीयो॥ एबइरावणरालउरे॥ रा॥४६॥ नगरीवेमोहिषती॥ सहस्रआकृति
हाराजोरे॥ रायहजारेसेवीयइं॥ अधिकावेअंदाजारे॥ रा॥४७॥ सहसएकवेसुंदरी॥ ननसेवकदोलाबोरे
पंचेंद्रीसुषभोगवे॥ जलसुंअतिअतिलाषोरे॥ रा॥४८॥ पालीबंधीपांणीमे॥ केवलनारीसाथिरे॥ सेव
कराषीपाषती॥ इर्षरमेंजिमहाथिरे॥ रा॥४९॥ सुरतरगयातसुसाहिवा॥ सांभीमारमवाइरे॥ कोइ
नआवइआसनउ॥ देषीतसुसुचदाइरे॥ रा॥५०॥ रावणजीआयअडिअडिउं॥ सोहोवउंशिरसांधा
यो॥ लडीउंविवधजुधसुं॥ लीधउरावणबाधोरे॥ रा॥५१॥ आकासांथाउतरी॥ चारणऋषिद्रुआवइरे॥ शतबाहु
नोमिसलउं॥ श्रोणीसुतजोडावेरे॥ रा॥५२॥ रिषजीनोमनराषेवा॥ मांनिऊसोकनरिलाईरे॥ देशाअनेरोआप
तो॥ चरणग्रहइंसुषदाइरे॥ रा॥५३॥ अनरणपनेरइसुं॥ मित्रपणाइंवेवाचारे॥ चारित्रलेरपाएकगा॥ सगयण
तउएसीचारे॥ रा॥५४॥ दशरथनंदननइंदीयो॥ पुत्रीअजोध्याराजेरे॥ अनरणपुत्रआदरी॥ सासाआतम
काजोरे॥ रा॥५५॥ लातधमुकाकुटीयो॥ नारदऋषिपुकारेरे॥ रजारावणएहवेता॥ ऊतरदिऊमारिउंरे

९

राणघाराजनगरनो राजवी॥ तो मिमहलकहायोरे। मिथ्यादृष्टि धर्षेघणो। कगरानोसरमायोरे। राण ५७ यज्ञ
देतिहिं साधणा करतो मइं अवगली योरे॥ विप्रतिणो वइको पोयो। तिहकारण कंहलीयोरे। ५७ रा० रावण
वालीआवीयो। मरूत नउमुख पसे जिउरे। जिनमन अधिकदिठावीयो। रिषजीनो मनरे जिरे। ५९ रा० हाव
णी सुमतो करी॥ यज्ञ थणी समभायारो। साचइं तउरा चइं सक्रं। धर्मदयामनिलायोरे। ६० रा० नारदनेन
पहलीयो। एमतने। णचलायोरे। वसुराजाथी चालीयो। पानइं पिंहलरायोरेरावइ। ६१ कनकप्रभा वेकम
री॥ मरूत रायनी जोइरे। रावणनोपरणावती। वाधाडीतसवाइरे। रा० ६२ तिहां थकी नृप आवीयो। मथु
रापुरी आवतारेरे॥ हरिवाहनबे राजबी॥ पुत्र मधुसुविचारोरे। रा० ६३ राइत णाइ पमिलो गतो। सूलम
धुकर देवीरे। फिरांथकी लइं पामीओ॥ राइनेवात विसषीरे। ६४ रा० मधुर [illegible] मधुबोलीयो। चमरें दइंमु
कदीधउरे। हरवलवनामित्रलणी। एवपगारतुकीधउरे। रा० ६५ चमरिकहिं उ मुक आगले। धाइंस
इइंजोइरे। सेतआयरवइं मइंललउं शतद्वारउरी होइरे। रा० ६७ घोडानउं पांच उं थक उं अटवीने
आव[illegible]गाहरे। पल्ली पतिनो कुंमरी॥ वनमालानइ चाहइरे। रा० ६८ मित्रतणउं मन मोहीयो। मांनि
नि तुं मन लावइरे। रहै घणुं उदासीयो। रायतरावतलावइरे। रा० ६९ के निरहिउं बोलेनहो। राजा।

६९

सिरिउलासइरे॥ आरतियारा हलतणी। मलिकोई बोलीराषइरे। रा० ७० चितनी आरतिसी तलीस
सीनेरे सरखो लेरे। नकहूं वातनइं कारणइं। मित्रकसुं हमें कोलैरे। रा० ७१ मित्र तेरो घरि मोकली। आ
वीलावइं वातोरे। आणग्रराषइं मांगतो। मुक्त सरिखा कण मातोरे। रा० ७२ प्रलवक हइकं पापीयो। नि
जकादीव अनिंतोरे। नारीनराषी मंगतो। अनिरधारी मितोरे। रा० ७३ आकुपथा रोमायजी। बोलइं वारू
वारोरे। कुंअपराधी रायनो। फिटशारो अवनारोरे। रा० ७४ गुपतरही लइं निरषीयो। राजासकु विरंतोरे
रोणी जाघरि मोकली। छेदइं केउ तुरं तोरे। रा० ७५ राजाइं धमिसाहियो। मित्रतणा तव हाथोरे। करइं
वसंसा मित्रनी। हर्षधरीनर नाथोरे। रा० ७६ राजाइ व्रत आदरी। पामित्रे कल्पे शानेरे। तवि हरिवाह
ननंदनो। मधुनो भिपरधानोरे। रा० ७७ मित्र लमी तमी लतमइं घरम। विश्वावसउदारोरे। जोतिमतिउर
उपनो आयकुमारकुमार उरे। रा० ७८ तपित पिनीयाण उकरी। चमरकउ कुंएदोरे। हरबलासं
नवेधयी। एतुकसाथिसनेहोरे। रा० ७९ दिईत्रिसलसिभाड्यो। एतुपकरि अविधारोरे। काजकरी
फिरआवइ। जोयणदोइकआरोरे। रा० ८० एमसुणी सुषमांनीयो। मधुसुकरइं सगाइरे। मनोर
माकुमरी तणी। दीधी तसपरणाइरे। रा० ८१ डाफसतनी यपांचमी। पाचोनेमनिलाइरे। केरा राज

रावणतणा आचरित ऋद्धि सुखदाई रे॥७८२॥ सारंगगौड़ ढाल॥ घर छोड्या नृपालने। ऊपावर स
गार। मेरू गिर जिनहरजी आ। श्रावकव्रत आचार ८३॥ फिरि आवि तें महि मंडले, नलकूबर दिग्गपाल।
पुर डलंघन तणो नगरी। राज करे सुविसाल॥८४॥ सा माली विद्या करी, ज्ञानयोग तपर माण। अग्निको
ट कीत आकरो। अग्नि तणो मंडाण॥८५॥ उकेस कर्णघन साथ सुं, श्री गिरि आडि परनरे स, अग्निकाल ने
देखवइ, कोइ न करइ प्रवेश॥८६॥ ऊंलकर्ण फिर आवीयो, सो मिलण इं मनि धरे मोर, सुलट पगपा
ण पहइ, कोइ न चालइ जोर॥८७॥ आरति आ थिकी उपनी, केमरह अब लाज। एतले राणी रावली। प
ति करिवा ने काज॥८८॥ रावण पासि इं दूतिका, ले जि करइ अरदास, जउ मन राषो माहरो। तउ प
करचइ मन आस॥८९॥ आसाली विद्या महा, वसि वरताहे आज। चक्र सुदर्शन सुमती, सउ मंद
तु राज॥९०॥ तुरत सा धइं सुक मन वसि ऊ। इह लवि तुस रनार। सत तुम्ह विचन अंतरो, सो जाणइ
करतार॥९१॥ उपरं सा नी वीनती मनमांहि अवधार। उतर दिऊ उता वलउं, आतुर अति सा नारि॥९२॥
ऊमर सुलो सुजा जीए ढाल॥ आतुर अति जो लीकरी, लघु बंधव तव बोलइरे, रे गियक्षारो
पद मनि तु रइ शाली तो लइरे॥९३॥ आ० रावणरी सव सइ रके हइ, बंधव इम किम सापइरे॥ १०

गुरखपनी तीने ऊह आ परत्रिय थि मन रापइ रे आ०॥ सधकोइ लिखि षणइ षणा कीयोसो छो होइरे। वि
सविवहार करे सहु। मरण तउ प्राणां जाइरे आ०॥ सपवान कहता कामनी, वेगही वेग सुं आइरे। वि
द्या दीधी विधकरी, साधीवार न लाइरे आ०॥ सद हा सदीया सु रसानिधि कारीया सुविसाल उरे। नग
रलीयो नलकूबर, लघु गयो तत काल तो रे आ०॥९७॥ चक्र सुदर्शन पामीयो, पामी अतिघणी सो भा
र नलकूबर आपणउं, धापित्र नकीयो लेनेरे॥९८॥ उपरं ला समकावी ने राइ सु प्रेम मेला वि
करेरय्य तु परपुरि कपरि, रावणजी चढि आविक्रे रे॥९९॥ सहस्र आर रूप इं हुज नेद मनइं सम
का वक्इरे। रूवकिलेस किया किसुं, कोई नइगइं दाव इरे॥१००॥ आ० विद्यासाधन हीय पति॥ न
वि आढा यइं चालि करे, पामावे पति राकिती, सफल तणउ वर आलि उरे आ०॥१०१॥ मरुत तणउ
मुखले जन, लेजनको लहरायो रे, धनेद तणउं मदमर्दन, सुग्रीव सेवक रायो रे आ०॥१०२॥ पुरडलं घउं
लेघणा, नलकूबर बल सें जि उरे, राया रावक हाव इजी, राजन आइं गाजि उरे आ०॥१०३॥ रूपवती
अति रूपणी, पुत्री ने पर लावीरे, आघउं काढो नंदन, चित नेत्री समकावीरे आ०॥१०४॥ अति आकल
पणइं आ छापद, पामइं आपउ संतायो रे, घन रूकोइ न विलसीयो, जोणत जैते आपो रे आ०॥१०५॥

राम जस
रा

तात वचन न वि मानइ जी तो लइ आप घणेरो रे धनि हो धनि तु तात जी मन मनो एते रो रे आ० ७ जे हण
नो तस साथ जी सगपण किम करीइ रे आज कि सुंदरी वर तइ आ गइ वालि जाइ रे आ० रावणइ
तप वा वायो आयो इंद्र हि पास इरे पुर घेरा णे वाह रो नृप अंबकि सु वि मा सइ रे आ० सक्ति रा
कि दो इ लइ जी आवत लइं रथ वाली रे सक्ति संज म सन मुष जइ करइ लिके शक्ति संभाली रे २०
इतस नइं सुरपति कहइ रे तुम्ह नो सर मा णा रे शोक मनावी रि फरी या पणि न विन मीया राणा रे
आ० २१ इंद्र चढी रणि आवी यो रे लूं रहा नल गाइ रे जेम वषा णा इंद्र पहिं कइ तेम लडाइ रे आ० १२
हारि इंद्र इंद्र नरे हजी जीतो रावण राजा रे जय जय कार हुओ वली वाज्या ज सना वाजा रे आ० १३ रावण
लंका आवी यो सुअण तण ३ म निला यो रे इंद्र दी यो कं वयंजर आप को यो फल पायो रे आ० १४ स
हस्रार नृप आवी यो रावण संभ्रर दा सो रे पुत्र भिख्या मुझ आप तु जी बापडे क रे निज दास रे आ० १५
राइ कहइ सुणि खेचर इंद्र करे एक काम रे नगर बुहारइ नित सको आवो राव इ गाम रे आ० १६
सघली वात मनावी यो छोडि इं इंद्र ज राय रे नीच कां म करं करं तजी आरति मइ दिन जाइ रे आ
१७ साधु समीप इ पुछीयो परभवइं इंद्र हि आयो रे नीच करम करि बुं पडिउं कुण ही इं छपा २१

पदे आर्यैं साधु कहै तप सांभलो परभवि साधु पदे रो रे परि जइ यइ पुरनो पति खेचर गुणमणि गेहो
रे आ० २९ ज्वलन सिंह घरि नारी ॥ वेगवती सु विचारी रे अहल्या नामि सुता अबडं मात पि
ता नी प्यारी रे आ० २० संवर मंडप ते हनै राइ घणि चलि आवे रे आनंद माली कंठ मा वर माला
पहिरावइ रे आ० २१ नामि तडि प्रभ तव वीजिइं मन हि मछरो रे आनंद माली साथ जी
वहइं इ घन बीरो रे आ० २२ आनंद माली चरण ग्रही कर तो उग्र विहार इरे ध्याना रूढ मुनि सर
देषिनइ एक वी रो रे आ० २३ दी यो परीसह आकरो साधु नो चाकोध्यांनो रे सिंह सरि थ उनो
भाई रूप स्वान समानो रे आ० २४ तव कल्याण गुणधर आनंद माली ना ला रे तेजो लेश्या
मूकइ हा तुझनइं देण असा लो रे आ० २५ सत्यश्री तुझ नारी इं रूपि जी शीतल की धो रे ले श्रा
अश्व वी सं हरी संयम सुचित दी धुं रे आ० २६ सवल मी शु त कमी तणो पोमी इंद्र न रिंदो रे आ
२७ तइं इण परदीध सा धनइ तुझ नइं रावण राइ रे आ० ·· कर्म की या विण ला गव्यां किउं हा वि
लय न जाइ रे २८ आ० एम सुणी रथनूपर स्वामि संयम धारि उरे कर्म षपी केवल लही आतम
कारिज सारि उ रे २८ आ० ·· तुंग गिरि पडं तलो राइ जुहार ण दे वो रे अनंत वीर्य केवली

रामजस
रा

वोदइनवनतघेवोरे आ०३१ सुणीयवयंणसुंओ णजी। अलकरइएरूडारे। कणसोयइमरणो। मुक
लायवनचथितरूडोरे आ०३१ परदारानइ ड्यणइं। वासुदेवनइसाथरे। निश्चयमरण मैं वतावो यो
त्रिभुवनकेरे नाथरे आ०३२ आणइ केतीनारिनो, नवलीधउं नपनेमेरो। देवधर्मगुरसाखजा। माओ
अतिघणेत्रेमेरे आ०३३ छतीसी० साधजी। नमोनमो परोइरे केरारा रिषराजजा। नमीयइसय
लमुनिंदोरे आ०३४ ॥ केदारारागइहा ॥ अवजनपति सुहीमणा। सयरवनीनविलोइं। सावधान
होइ सुणउ। सुण तौ सालाहोइ। ३ यरूपाचलपर्वत[illegible], सनारअरिहंगेण। सनारनपमंदिर। सनार
मंमा। णउद्द सनार जिनदेहरा। सनी सरूजणहार सनीरश्जाकरी। सनइसनेइ फलसार इ७ ॥ केर
लग। कोगानेडाल ॥ संहरमत गाथलियइरे। चरमशरीरी होइ इ०। सुक्षास्यासवदोइदूहरे० घइद
र्श नमइं जोइ दन० एसमअवरनकोइ इन० सेवक दरमत्नगाथीउ। रांमसरि घउ राइं। क ओन
दिहो सिइं नहीं। आजेनके इदेघायन०३८ स्वामीनाएवीलवे। आराकपित्रपगार। प्राणदीयां
होनोवनइ। रोघतणउ त्रिरसारइण३९ सेवकनाएबोलवे बोनरम्हारूं नोम। आघाथीआ
घाउइ। णावासदा चिशाम ४० दन० सायरउलउलं घीयो। वालीनगरीलंक। रामरायपर १२

सादधो कोथकोमनिसेकर ०४१ दिनकरनीपरिदीपतो। पुरआदित्यथधेन राइंप्रल्हादसुदामणो
पालेजिनवर आंण दन०४२ केतुमतिमहिमावती सतवतीवरनारि प्रीतवतीलीलावती शीलव
तीसंसारि दन०४३ श्रुलसुपिनउ अवलोकीयो [redacted] दन०४४ [redacted] गुडीवागुहिरनिसांण घरिरबारिवद्यामणा घरिर
अतिमंगलदन०४५ बारमइं दिनथापीउं पवनंजयतसुनाम चेदकलाजिमवाधती वाधइंसु
मअलिरामदन०४६ बहतरिवत्रीसजी आरस्तनुमांदिं सातअगारदयरादरइं पुत्रपनउ सउ
पोहिं दन०४७ पुरवरवइंमांदे इजी रामाहे इउदार हृदयइं सुंदरि सुंदरी सुंदर नइं सुवि
चारदन०४८ पुत्रीसकआकपरिं पुत्री हुई एकनी मिंअंजनसुंदरी सकलगुणे सुविवेक
दन०४९ मावीत्रीवात्रीकरी वीरानकवडमान लउआई लगतीमहा आदरमेरसमान
दन०५० पुत्रानइपरणाविवा जोवतवेतकमार परधानेश्रगटाकीयां जोईकेहजारदन
५१ वरतोदोमनमानीया सघलामांहि दोइं घ पवनंजयपंरादनउ विद्युतप्रलसुविशेष
दन०५२ अणदराचरथंलरइं विद्युतप्रभविवलाइ परतषिउबइं आकेहइं कमाकि 13

रा अंजना देषायइ हू०५३ पवनंजय चिंरआ कषद्धे पवनंजय परमांण पुत्री पवनंजय सली देनक हीराजा
मइ हू०५४ खेचर मिलीया एकठा नंदीसर नी जात भावना भाव्हादनी मांनइं सघली वात हू०
५५ आज थकी दिन तीसरइं मांनसरोवर जाइ आइकरी जइं वेगसुं मेलिउं मज समुदाइ हू०
५६ पवनंजय कहइं मित्रसुं तइं दीठी सा बाल रे साची अधिकी सही रूपइं झाकझमाल हू०५७
जेहवु अंजुं पांदेषीयो लहीइ चइं न अतिंत तेहनो वांचाइं करी क्षण कहइं सुणि मित्त हू०५८
पवनंजय बोलि उहसि वासरतो एउरि कुंमांण हि वजाइं जोकहोइ दूरि हू०५९ बाल्हा
नामेलावि पइं घणा तिके दिन थाइ दिनेत कुंजइमा सामिलइं कहइरे कि मरहिवाइ हू०६०
मित्र कहइं सुणि सांमजी आरति दूरि निवार रातिइं रहस पणइं जइं देषावुं तुझ नारि हू०६१
पवनंजय कुंआरजी चालिउं मित्र समेत आयो अतिउतावलो नारी निरषण हेति हू०६२ जिम
२ निरषइं नारिनें तिम २ थावइं चयन देवबहइं अतिआकरो सुषमां हिं रूषदयन हू०६३ बे
ठीसमतू मिकां वारू वात विनोद रंगमांहिं राचीं थकी करती अधिक प्रमोद हू०६४ वसंत
तिलका कहइं सषी कुमरी उकवेड नाभि पवनंजय पति पांमीयो जेहनउ जगि सोभाग हू०६५ १३

मुषा
मिश्रकेहइं सषी किंसुंब डोसिउ एह विद्युत प्रभवर थो सलो जेहनउ अति मेरे हइ हू०६६ वसंत
तिलका कहइं सषी करी सोरि नउांणइं सेद विद्युत प्रभवर वल्पायुषी तेहनी सीरेउमेद हू०६७
अयर कइं एवात मइं सुन विलषइं लइंगार चंदन बो नो हालतो नां विसकें रोलार हू०६८ पवनं
जय परयावसुं तातउ वायो तिवार कुंमरी नउवरजइं नहो जउइं हिवा तां प्यार हू०६९
काढी षड्ग षको कुंसी एदोई संहार करूं सहीउतावलउ बोलइं राजकुमार हू०७० मित्र क
हइं प्रसु जो सुणउ नारि अबध्य कहाइ तिण मइं निरापराधणी कहो प्रसु केम हणाइ हू०७१ कुं
मरी निदा न विकरी एको अवइं लबाल उहतो गिरवा माहिं ते पृथवी ना प्रतिपाल हू०७२
फिर भोलपें निज थांनिके तउं कहें तक रूं आह प्रथम कवलें मक्षिका आयां कुण उमाह हू०
७३ रोष तहीं जे करू हायो ते अननी मिवासि पवइं कि सौ परिधां मी इं पुरसंता सावासि हू०७
४ ॥ मोतीतुटउ नां मिलइं तुटो न मिलइं नेह ते माटिइं धुर हीथकी छूटणमति हो तेह हू०७५
मित्र कहइं इम किम कवइं आ बुण बोल्यो बोल न पलइ तव सकुंअ कहे फिरि २ कूडा बोल
हू०७६ शीलक मइं वेतालजी ऊवाई या अयोण संगन न पामें रंगमें साजन रे थाय ण

रा॰मजस

दूहा ७७ सायर सिषनइं आपीयो। विसतउं विसवावीस। गोलक ठगे मिरदे। अजरे नकरेईं ग्रा
ठरणा। वउं री वहीयो आयकइं। मित्र तणी मति मोना। आइ तणी विध साचवी। नोमतणइं अनुमो
नि। आइ तणी विध साचवी। नोम तणो अनुमोनि। दूहा ७४। मयंगल मोटा मालता। अति ताजी तो
षार। दीधां वरने नाथ जइं। मणि मोती वर हार। दूहा ७५। जामीनइं लेइ करी। घरि आयो प्रहला
द। समसत्र सोहामणो। दीधउं वर परसाद। दूहा ७६। कुसिमना वीदर्भ सुं। उववारी अपया
ना। ... लोगवीइं सही। पनिछूई विधवा तदूहा ७७। ढाल चली एसात मी। पवनंजय परणे
ता। केरा राजसुष पामीइं। जउं होवइं चितहेत दूहा ७८॥ खंभायतीराग दूहा॥ बोलकुं बो
लनवीसइं। सील समाची लेता। विणदी रति न विकुपजे। अरतिघणी आलेता। ७४। नज रिनमे
मेलइं नाहलो। कुपजै अति उचाट। आवइ एूं लाग्यूं घणूं। विरही वाकी वाट। ७५। मातपिता नी
लाडली। अग्नरा नी सुलदे। ठां कं तमयाविण कामनी। उभो दे षिकुं ने खि। ७६। पवनंजय प्रमना
परमम हासुषकारि। नाहनने हइं नियरनइ। मेल्ही माथे मारि ७७॥ अढीया ढाल॥ मेल्ही
माथइमारि। पवनंजयकी नारि। आरतिआकरीए। आंगइ सघरीए। नाबोले निंसास। वास १४

मरवां ग॰
पानिला
५+

रआयनिरास देवकिसे किसूए फाटइं बेहीसूए ७८ दिनवाला मइं जाइ रयणी छ्रसरथाय
विरह वियोगणीए बोलइ सषीय बसंत तिलको निकटबसंत नाइन रोइए एकाकी होइए
७९ सघला दिनए कसूप नविजासिइं रे विरूप फिरवा कउ सिइए नेहां गुडसिइंए मायबा
पतिवार समझावे सविप्रिय सुएस्वैइए सुर पुत्रकरइं किं सूए ८० कुतर नो घइं जोम
कोनारहियां तोम तोणिततो डीयइए एलूटूं जोडीयेए दिल्लेसूं कि ऊं कोम आपहि आवइ वोम
तं टइं षीवोसूए अधिकूं इवीए ८१ आयो दूत उदार रावणनउं सविचार लाषितकहे सलो
ए प्रलजी सांसलोए वरूणनमोनै आणराव इअधिक गुमोन रावणरावणो ए मिलीयो षोध
लोए ८२ वरूण सुतांसु विसाल बांधालीया ततकाल घरइ षणवराए षेचरआकराए तेड्या
रावण राइं षेचर मिलीयाआप प्रलतुम्हे हीचलोए कां मत उतावलोए ८३ तात नि षेधी तोम
चालि कुंमरजोम पवनंजय जवोए आमेर अतिथयोए हयगय रथ अधिकाइं मेलीज
न समुदाइं कुंमर चालीयोए हरषइं हालीयोए ८४ निसुणी पविरतंत कटकिचलेच कुं
किंत दरसनसो सलीए आवीतलिचालीए पंचोली जिमजोइं आगइं ऊसीहोइं पलपक 5

२ सोमनस
रे

नपालटइंए प्रियजोइ घटइंए ५५ पंखिवानो जिमचंद दूर्बलदीसेमन मोसननदेषाइए चांमवि
रोषीए लुलि लालक देखाइं नहीरे विलोयनकाइं सादी सादिकाए तिमहीललाटिकाए ५६
आणषोयों ते बोल ५ सरअधरअमोल कायाडबलीए सथिलपडिवलीए नयनांजलमइं
किलि रहावइं तनमनल्हलि नारी निरषतोए ५७ थसिलागा पतियाइं सोषकदो षगरा
इ दासी उम्हारडीए चित्तहमारडीए नसकारी थइंएह मइंजोतीधुरिलेह मांनतमांगताए
लहाइलागलीए ५८ फिरआवीघरमोहिं धरणिपडी साप्राहिं अवलानोमथीए आसूंपरणां
मथीए दलबलनो विस्तार चालिउ राजकुमार मांनसरो वरइंए वासोअन सरइंए ५९
मंदिर रचना कीध पालक नइं परसिध सुतो सुंदरुए लोगपुरंदरूए दीन पंगोअरलेत पंथ
णा सहसु लेत मनसुं जागीयोए राइअनुरागीयोए ३०० वासरि मांनइ लोग रजनी नरे वि
योग ते अरलेघणीए वचनदया मणीए जेहने दिननैराति एकसरिषा जात ते किमजीव
हाए आरति अतिवहाए १ परल्पापाछेएह साथिं नदी नेह सतीयशिरोमणीए वादहि अव
गणीए जउआवीथी चालि ततइंगिउ मुरटालि बोलसंतो षणउए नकहोणउ घणउए २ २५

आजलगीथी आस अबतउं हुओनिरास आजमरइं सहीए एतउमइं लहीए नारिहतानउ पा
प मोरोथइं संताप मुजनइं बोलागसिंए अपजस जागसीए ३ मित्रप्रहसित बोलाइ मननीवा
त सुणाइं एथइं सिइं कउए मित्र कहे कउए नारि हुई निरधार मरतन लावैवार सांचउंस
ंचलीए मानविमोचलीए ४ अबइजाइ तास संतोषउं सउलास मानिमांनिनीए आसाअ
ननीए मलिमराते सोइ स्वांमीसेवक दोइ आयासंचरीए गगनिगतिकरीए ५ स्वांमीरहिउं
बारि सेवक गेहमझारि आवाजो वहाए रोतीरोवइहीए पोयणि मारीहिंमि सा तवदी सेतांमि
जलविणमाछलीए तलपइं वलवलीए ६ अचीनीचीबाइं चयनतरं चलहाइं कंकणतोडतीए
मरिवउंलोडतीए वरजिर राषेत धाइल्ल लसाषंति जीवेतासउंए सुषहोसिइं कउए ७ संचलजोणा
धाइ थसितसि नाडिगयो हाय काढइं जेतलइंए साषइंतेतलेए ८ स्वांमीनो मित्र प्रहसितनाम
पवित्र स्वांमीआईयोए ८ तउजाए सिहासि कुमरी कहै उदास नोमनमुजगमइए दर्शनकि
मरमइए ए कमीके रोदास करिवो रागनरोम कीधउं आपणउए एपरसवतणउए
कोमतिनो करतार दीठउ सलसरनार कुलीअंगमइंए रांणीत्वक कहइंए १० तइ छिअप

राधधारोबेहनलाधवं बोकंधलीए हरोतुललीए डरवसायरअवगाह कंवेचावीनाह नोम
धारधीए नामाकारथा ऐ हसिरमीसुषपाय चालणचलागो राई रोली तवकहेए गर्भसहा
रहइए ऊतरनोअरिहिनोण आपतं स्वोमिसुजोण लोगथीन कृए सुषमइं दिनलर्कृए १२
देइमुदनीदेव वतलगयो तत पेव कटकरिजइ मिलीए किणहीन अटकलीए केश
राजएडाल नगसेषासुविसाल नारीनाह लोए मिलणतेमाहलोए १३॥धन्यासीरागइ
रा॥ पवनेजय तवपाधरो लंकानगरीजाई रूपसलीपरिलेटीयो अतिरलीयायतथाय
१४ रावणरूडेरावणे शुभवेलासुविचार वरूणोपरि ततषिण चढिउ दलबलने अनुसा
रि १५ अवतो अंजनसुंदरी गर्भधरै तिहिं वार गुपतपणानउं कामए कोईन जाणइ सार
१६ गर्भतणइं तवलक्षणे गर्भजणाणउं जाम केतुमती सासू कहे किसकीयोएकांम १७ प
वनेजय परदेशवे वकं वधाइपेट कुंजोलथीइ नकंसिंइ सोई ऊओनेव १८॥ऋषभकोकी
ढाल॥ केतुमती कलिकारणजी कोलि रूपणि होइ करमगति दोहिलीजी वकंकिसंतेए
कीयोजी लाजवायाघरदोइं क० १९ लोरि अलागणादुरणीजी षोमनतो उनमादक० षो

णतउवाधोसलोजी कोकोधनेअपवाद क० २० मरिवाथीफिरजीवीयैजी शीलगयोसंसारि क० सो
लसलो सकंनेसहीजी सुंदरिनो सिणगार क० २१ नेदननीअपमांन ताजी जो रोषासक कोइ क०
पणिथारू असतीपणंजी आजजणाणंजोइ क० २२ रोवइं राणी रावलीजी डषदाय इंनसमात
क० देषावीसासुंदरीजी पतिआगनावात क० २३ वललीवाधणवेगसंजी सेसलावइं सकलो
गकर २० नोमनलावइ उरनेजी लेसिकं सितै लोग क० २४ गिरगिराइ सुंदरीजी हाथचढि किहो
आय क० मा चीकई सुंदरीजी कितेनचलायमाय क० २५ निर्लजीवचनेषरी आरंरसुरषांया
राथि क० काढीनगरीबाहरीजी सथीवलीलससाथ क० २६ आरसुरषीपाधरीजी पीहरिभी
लिसोई क० वाहरि मेकीवोकजाजी एतवइ मईजहोइ क० २७ रातिवाहरहीजी करलोसो
चासोच क० किसी महीवो मिपचे महीजी आरति मई आलोच क० २८ दीनसुषी गाढीउषीजी
आवीराजदुआरि क० पतिहारीयइं आइनेजी कीधउं राइ जुहार क० २९ सवीं इंनसुणावतां
जी राजारोसधरंत क० हाथघसइ सिरधुणवेजी पश्चातापकरंत क० ३० ऊलटाकर्मसमाच
रीजी कलनइ लीक लगाय क० आवीमुंहदेषाडवोजी कंणसलषाइं क० ३१ धनथी ऊपजी

रामजस विजुलीजी अमनथी विसवेलि क० ३१ दीवावी जिम कालिकाजी मुकथी एहमभेलि क० ३२ वल्ल
की रति जी वदेजी पापणि परहाजाइं क० ३३ अंरू ठ तं तं अरहरू आजी उसियां थानरष एक
ठ सपलोनी कोने सुणीजी महोछव मंत्रीस क० ३४ देति अडाईअं गुलीजी करइ ते किसे ठ ई सकायेथ
रूवीवटीपीहरांजी सुणीइं ठइ आवे ल क० ३५ जलथी साणि नउपजैजी काठ थकी उपजे न क० ३
पके मरी बोनी राषीइंजी मेरीसयल कहीव क० ३६ कुंआर उठलोजी दोसिइं राइरा व क० ३६
केतुमती नो मइं सुणीजी अपकार तिठइं आ दि क० ३६ फूठ तं दोसल मा यकेजी वक्र विगोई
वात क० ३७ राजा कहइं मंत्रीससुंजी ठेन विजां लाइं मर्म क० ३८ सास वक्र ने अवगणोजी एतत्रे
अबैअ धर्म क० ३८ अण मिलते नर तारसेजी ति णही मइं परदेश क० पाछे कइं गर्बेलाजी
एठइं कांइ विसेष क० ३९ उहां थी उनर करउंजी जाजे अजगअपार क० संहमदे पोलाह
रोजी सितं बकलो विस्तार क० ४० दिनस थां सध सकजी वा कांथी अ तिवे कि क० मोण
सनतं सारो नहीजी एजिन वचन निसं क क० ४१ नपआदे शाइं पोली यइजी दूरि करीसा
वास क० लोक विलाप करे घणुंजी सरंरे नपाले क० ४२ नपी तरसी लल तलीजी अं १३

स्वरसइं नयन क० वसीकरि पगवी भीयइंजी पावइं अधिक कचयन क० ४३ प गेयगे गिरि गेरिय
उइंजी सरूरलिइं विश्राम क० वसंत साथणी चालीजा यतास क० ४४ गोमन गरपुर पाटणाजी नपनी
आयस कारे क० पहली दीकही आवीया को मतिदि कुं पयसार क० ४५ वासो ही अणपावतोजी धर
ती अति संताप क० पांमी अटवी मोटकीजी करइं अति विलला य क० ४६ सामहीमजे लोमनीजी
सकुनी कुं शिरदार क० एहपराल वदे विवा कां कीधा करतार क० ४७ तात फिरा माता फिराजी फि
रीया ला दूसरि क० नो भडरिथी जगफिरितेजी मरव तं कुरि विछूरि क० ४८ मरिवां मइं तबोनहीजी
साचत लउं विसास क० पक नावैठीढ मघणोजी नप जवा दिइं त्रास क० ४९ आगे जातादे षीयोजी उ
फा मांहि एक साध क० अमित गती नांमे सलोजी दर्शनथी सुषलीलैध क० ५० नवमी ढाल सगोलण
उजी सगपणन उविवहार क० केशराउ देविंउ घणुंजी धर्म एक आधार क० ५१ ॥ [illegible]
[illegible]॥ देइ प्रदक्षिण लावसुं विधवंदनाकरंत सुषपूछी बइठी सती अधिक उदय धरंत ५२ रहे बैचार
ण रूपिलणी वसंत तिलका नांम रूणकर्म नादोषथी सांचां कुण ते नांम ५३ रूषिलो षे ललसाव
सुं कर्म कथा नहि पार वोडइं तो संषणं ॥ सुणि वाबोल विचार ५४ ॥ आदि जिन [illegible] १२

प्रेमलस जिन एटाल॥ एरसववालसुणावइं स्वामी सोनि सुणइं सुषसातायोमी जंबूद्वीपइं प्रसिद्ध मोलं
ज्ञायणलाषतणो मेरुणू प०५५ लेत्र सुलेत्रा सरथसलाइं मंदरपुरवर नगर सुणीजें ५५ वणिकवस
इं नामिं श्रीचनेदा नारि जयाना मिश्रानंदा जायो नंदन नाकेजामो कलातणो आगर अभिरामजेम
५६ एकदिसजशोमसिधायो लाचिदर्शन देषी सुषपायो समकितपामीपाले नेमो साधुदोनदेवा
सुश्रमो पर०५७ तपसंयमसधाआराधि ईशानइं सुरपदवी लाधी नगर मगंकमनोहर कहियो
श्रीहरिचंद नरेशरलहायो प०५८ प्रियंगूलक्ष्मी नारीनीकी प्यारीबेअति राजाजीकी सुसुरच
विरोणी उरिआयो सिंहचंद नामिकहायो प० ५९ धर्मकरी फिरिदेवा मोहिं सिंहचंद् ऊपजि अ
शांहिं वेताढिइं वारुणपुरवारू रायसुकं ठजबइं उदारू प०६० कनकोदरि राणी उरिनंद नो
मइ सिहवाहनआनंद राजकरी चिरसोई नरेशर विमलनाथने तीर्थ सुषकर प०६१ लक्ष्मीधरे
सुनिरासियधासो संयमसाधीकाजसमारि जे छःकरतपकरणीकरिसोई लांतकलकदेसुरलोकि
सुरहोइ प०६२ तवउदरिसोआ शिवसपजेवइं पुण्यवंतहोवइरे तिसोअवे चरमशरीरी उत्त
मश्रेणी होसिइ एउकनंदनराणी प०६३ कनकपुरी नगरीनो नायक कनकरथ राजासुषदा. २८

थक राणीकनकोदरायसयोणी बीजीलक्ष्मीवतीयवषोणी प०६४ साआवकणी हजइं मूरति म
णिमय बिंब वणाबइं देहरासरदीपंतो देषी आदिलणइं मनिरीसविशेषी प०६५ आदितदाजि
न बिंबविपावे यानअशुचितिहांरेरषावइं जयश्री गणिनीतववनिआवे आदिसंघातइं सोर
मचावइं प०६६ रेमूढीनइं एसितेकीधउं जिनआसातनासंचितदीधउं नीविपनोथी अमरस्वबी
जइं एहछेकोमनपुनरपिकीजइं प०६७ होइ षिसाणी राणीआपइं जिनमूरति निजथांनिकथा
पइं न्हवण करीनइं हजरसावे भावभरी जिनना गुणगावइं प०६८ देवधर्मगुरसधासेवी स्वर्गसु
धर्मइं जइं देवी ओरोषंकोतुआवीसिधा अंजनसुंदरी नामप्रसिधी प०६९ छःसांनिकजिन
मूरतिराषी तेहतणाफल ल्योछोचाषी कीधाकर्म नछुटे कोई अंतरनयणे लेज्योजोई प०७० त
वकुंकतिसगनी एहनी अनुमोदी थीकरणीतेहनी तेमाटइं दुखपायइं साथिं कीधं लामइरु
योहाथइं प०७१ लोगवडिजेवइंएसकं कर्म आजथकीउपजसिइं सकुशर्म दिनरसाताबधुतीजा
स्यइं शीलसतीनइं अधिकदिठासिइं प० ७२ आवासिइं ऊमरीनो मामो देक्षाथी नरिसजेवि
मलं कुमरनेनिजघरिलेइ जासिइं पतिमेलंउ पणिवेगोथासिइं ७३ एमसुणीसुंषपायोगाढो ऋषिन

तेवचन मदाले साहते मरअपमारी रिषपांगरीयो गगनिगतिगगनइं संचरीयो प० ७३ सिंघए कन्या
योतषवाली घरहरषुजण लागीसा बाली आयोतव षेचर मणिचूल सरतरूप कांधे अति रूलप
७४ नावउ केहरिवारन लागी सुंदरनीए आरति लागी श्रीमुनिसुव्रत पूजा करती वरतइ छइं सुम
मति आणे सरति प० ७५ दिनइगा वसविंजे वरउत्र जीणविधि उसयल तेघरसूत्र सयलकला
गुणलखण पूरउं ऐहोसि हए कंअरअतिसूरउं प० ७६ सुतिककर्मकरम करइं उतकर्षइं वसं
ततिलका सषी सुहषेइं एकसुलोकअ बइं समसावी आपदमइं दुषनिहरे वटावी प० ७७ सुत
नइं मारेपारे उछेगि सुंदरि दुरवआंणइं बकुसंगी रुदनकरंती गुहिरो बावइं दुप्पदेव मुंइम
सुषपावइं प० ७८ एहवी सुतनी तो अतिउछव घरे पिताकरतउरे महोछवमेरे वराकोइं सिंउ
थाइं इमचितवतीदोरे सराइं प० ७९ प्रति सूरिजनां मिंइं खगएक आयोगयो मनि आणि विवेक
रूदनतणउ तउ रवइं कारण आपुणपइं बइं दुरवनउं वारण प० ८२ वसंततिलका पासइ लणावे
आदि अतथी वरी पसुणावइं सालाघइं कं मामोथारो पुत्र आरति सयल निवारउ प० ८३ लग
ने वेलासाधइं वेलासाधंता मन बाधइ यह उवाछे एहनाजेहवी मोरांनाजोयइ यरे जेहवी १९

प० ८४ सालेजीसुत सांषिसमे वेमोनिसइं साडि हुदेत निजनगरीनइं चालिकंआइं हर्षघणउरे
पडेनसमाय प० ८५ थोनतणी किंकणीनोनाद कोनिसुणी उपजिउ अहिलाद सारवानइं उरहसी
योजोम मायुगोदी वीबट किउतो मन्द पडीयो पर्वत ऊपरि आइ पर्वतचोटसकिउ नसहाइं बालि
कनै सारे चूरोणउं वज्रपड्यो जिमतिमअधिकाणउं प० ८७ अंजनसुंदरि आंणइं दुष सुकदुरवी
थारीनइं सांसुष जांणिउं थउं सुतनो सुषजोमंत दिनलहि सिउं हरषीहोवेत प० ८८ पाछेथीमां
मोअतिधसिउं बालकनइं देषीमनि हसीयो आल्हनआवीकोइ दीसइं सुमवंततो विश्वाविसइं
प० ८९ मातानइं आलीसुत आपउं मातांइं सुतसाथइंथापिउं हर्षनकोइ पुत्रसरिषउ पुत्रोहा
थनाम निरापइं प० ९० हनरूहपुरवर उछवगोणइं सालीजइं मंदिर आणइं सयलकुटं बतणोइं
मनिमांनी कुलदेवी जिमतिमसनमांनी प० ९१ नामइं नामदीयो हनुमान चंदकला जिमवधतो वा
न शैलचूरिवे अपरविधान प्रगटचउं लिश्री शैल प्रधान प० ९२ राजहंस[illegible] जिमक्रीडाकरतो वा
धइं अंगजआनंदधरतो दसमी ढाले कहीसमफावइ केशराजनइं साचसुहावइं प० ९३ ॥सारती
रागेन्दहा॥ सुतमुषनिरषति हर्षअति फिरआरति अलोल सालेरा रिषा सालहिं जेसिरचवा

रा०म०रास ऊबोल ९४ सोदिन कहइ हो आवस्यइं घरि आवी सरनार लो गामांहि उजली। कदि करिस्ये कर तार ९५
पवनंजय परगट पणइं वेकण जीति वडराय घरइ घणो ओच्छव थया ९ वणीने सुषथाइं ९६ हराव णाले
का आवी ऊ। पवनंजय पगि लागि। घरि आवण नइ उमहि ते। पस्नी अनुमति मांगि ९७ मात पिता
पगइण मीया नारी निरषण नेह। अकुलीणो अणदेषवइ मनमइं अति अदेह। ९८ ।राग।...
का गीलकी ढाल ।। रवी हो रवी कोइ नारि साषइ हो साषइं स्नूयप्रति इसलजंए सुंदरी हो सुंदरी के
री वात वातज हो वात सऊं उन्ह सांनलीए ९९ गर्भ जहो गर्भ तणउं अहिनांण देषी हो षीजी सासं
जी षरी जांणी हो जांणी वात विरूध काढी हो काढी सा घर बाहरीए ४०० आरत हो आरत पुरषो सा
थि षीहरि हो षीहरनै सामी कलीए आगइ हो आगइ जांणइ देव वात कहो वातक वीचै सिंवली
ए १ वज्रजहो वज्रसमाणउं बोल निसुणी हो निसुणी सासुरडे आयो सहीए सुसरो हो सुसरो बोले
एम आवी हो आवी पणि राषी नहीए २ जंगल हो जंगल मांहि जाइ गिरिगिर हो गिरिगिरि तरू रजो
इयोए अधन हो अधन पामी कोइ आपुण हो आपणउ दासी हो इए ३ मित्र जहो प्रहसित नां मउदार सा
थि हो साथिइं वदइं वसुधा धणीए जाई हो जाई तु हजआपबापज हो बाप अनइं माता सणीए ४ २०

एमज हो एमज तु कहि आवि लाधी हो लाधी नहो छे सुंदरीए प्रघट हो प्रघट के रेम करिवो हो वांछे प्र
स निश्चय करीए ५ गुणतां हो गुणतां य विपरीते माता हो माता मुरछा लीघणीए सीतल हो सीतल
करि उपचारे मेरवा हो मेटी मात उठी तणीए ६ मित्रज हो मित्र संघात इतो म सानां हो उले सोदि
इएतलीए बाल्हा हो बारे विरोष कोइ रे तइं वीरो मेल उं एक लीए ७ साचो हो साचउं देव विचार आ
पण हो आपण कीरं फल सोग हेए। विणठी हो विणठी वात विचार सुतनै हो सुतनै किं उं करि जो
गहेए ८ रोवइं हो रोवइं सा असराल नयणां हो नयणां प्रनाला जिम वहइए पआगि हो एजमि
माटो माय जेहवो हो जे छे ते हवो फल सोग वइए ९ राजा हो राजा षरूले चालि उं तुरगवे घण
इए षेचर हो षेचर केइ हजार ध्याया हो ध्याया सुत सोधण पणइए १० लोकन हो लोकउ घन का अ
इं ऊपावे एऊं पावे कइ जेतल इए हरव हो हरब तुल्य प्रमांण तातज हो तातउ आयो तेतलैए
११ साहा हो साहाराष्यो सोइ लाकउ हो लोकउ उलगा नो थायाए जीवत हो जीवत नइं कल्याण
हेतज हो हेत घणा कहीराषी यइए १२ अबला हो अबला का एकांम सबला हो सबला तो इम किम
करइए षारी उं षारी तो उमाय तो विण हो तो विण तो निश्चै मरे ए १३ षेचर हो सोधन ग्या या जेह

तेमउस हनरूदहो ऽहनरूदपुरवरिआवीयाए सुंदरिहो सुंदरिनइंपगिलागि वीतकहो वीतकसकसुण
वीयाए १४ विक्लहो विवलअधिकउहोई घटतेउहो मइंथो वलआगिमेए लिखियोहो लिखी
यो तुफआह्वान करताहो करतारितुफलागिमेए १५ एतलेहो एतले आयोताल राषिउएहो मरवा
यीउफनायकूए चिंतइएहो चिंतेमनहमृआरि पापणिपतिडखदायकूए १६ मामाहो मामानिसुण
उएह उहिवनिहो उहिवनिवेगा[illegible]पतिनेकपतिनइदेइलोष काइंहो काइएकउरणयाइंये
ए १७ रचीइंहो रचीइंतोमविमान जोणेहो जाणेउगिकंदिनयतीए मामोहो मामोजीनेआए सुत
सुएहो सुतसुंचालीसासतीए १८ सोधंतहो सोधंतवनउद्यान सूतजहो सूतवनिआयाचालीए मि
त्रहो दीवउंयानविमान नरपतिहो नरपतिसुंतावीसलीए १९ आपउहो आपोमुफनेईसआव
हो आवीआजवधामणीए नयणेहो नयणेनिरषेनारि नंदनहो नंदननंदश्रीरोमणीए २० आमीया
हो आमीयांथवोमेह चित्तवणीहो चितवणिचितइंचाहसुए वणमेहो वणमेसुसरापाय नयणा
हो नयणानेहउमाहसुए २१ नंदनहो नंदनलीधागोदि रूडोहो रूडोनइंरलीयामणउए रहीयो
हो रहीयोकेविलगाय सुंदरहो सुंदरनेसोहामणउए २२ बारूहो बारूंयोणवषाण वकअरवक २१

अरनोमीमानणउए ब्रसजीहो ब्रसजीउमृपरसाद हमघरिहो हमघरिरंगवधामणउए २३ सुंदरि
हो सुंदरिनामायबाप लाईयो लाईनउजाईसकूए मातहो केनमतिपणिआप साजनहो साजनआ
गमिल्यानकूए २४ हनरूहहो अनरूहपुरिवरिआय उछवहो उछवअधिकोमांडीयोए सोजन
हो सोजनवरतेबोल दानिहो दानिदालिदषांडीयोए २५ दिनदशहो दिनदशनाइंजीम साजनहो सा
जनसकश्रे गहगहेए पर्क्तहो पर्कतोनिजगेह ब्रसजीहो वक सुतसुंरे तिहांरहेए २६ अरहे
अचरिजनइंपासि पढीयोहो पढीयोपाठअनेक वक्तरिहो वक्तरिविज्ञान जोणेहो जोणेविन
यविवेकजाए २७ विद्याहो विद्यासाधनकीधकूओहो कूओअधिकनकाउजीए ढालजहो एका
दशमीएह लाबइहो लाषेमुनिकेशराजजीए ॥२८॥ रामगरी रागेदूहा ॥ वरूणप्रतेरावलवलीमे
लेकटकअपार प्रतिसरउनैपवननय योल्यावातिरवार २९ दोइनरपतिचालतां निघधरंहते
मोन चालिकआडंबरघणे रीकायोराज्ञोन ३० सुग्रीवादिकषेचरां वरूणसाथेसंग्राम रावण
नेवरूणत्यजो वाज्यानीमहमांम ३१ नेदनवरूणतेघणूं घेरिकेरावणजाम हनमंतेतेबेधीया वि
द्यानइंबलितामं ३२ हनुमतऊपरिवरूणि आवेहोइंकराल रावणिरोसकरो घणो जीनिउतेत 22

रामजस

नकाल ३३ ओतो वरूण विशेषथी नयने करे जुहार पाविजे वांनिकते हने अवनहा खुणमलगार ह्य
वरूण घरि वइं कमको सतवती तस नोम परणावी हनुमंत ने जांणवि वर अति रोम ३५ पुत्री सुर्य
नषातणी अनंगकुसमा नोम हनुमंत ने व्याही मरुहा रोवलि जोणि सकाम ३६ पद्म रागी
पुत्रिका वोनरयति नी जोइ नलराजा हरिमालिनि परणावी एहोइ ३७ अनेरे विद्याधरे पुत्री तो
हजार परणावी हनुमंत ने धर्मि सदा जयकार ३८ रावण नो आदर लह्यो परणी नारि अनेक
हनुमंत आयो निज घरी मालतां आनंद ३९ अथ मिथला नगरी सली हरिवंशी राजान वास
वकेतु सुहामणो विपुला नारि सुजान ४० तेज घना पइं आगलो जनक कि नोम जगि जोइ प्रजा नइं
पालणतणी जनक सरिषो होइ ४१ ॥ चउपई नी ढाल ॥ पुरि अजोध्यां प्रगटै प्रगटै नामि राजकरै
आदीस्वर सामि सुनंदा सुमंगला वली नारि निरोपम गुण आगली ४२ सुमंगला ना जाया नंद
निनोरु आनंदना कंद सुनंदाये जाया एक बाहुबलि तस अविचल टेक ४३ सो पुत्र मइं मोटो
मह्यो पाटोधर लरथे डारसरी सवा कोडि नंदन जे हने सर्यशामी थो तेहने ४४ सर्यय साधी सुरि जवंश
प्रथवीमांहि अधिक प्रतोप पुरुष अतोंण कुआ जेतलै अनिसुव्रत वारै तेतलइ ४५ विजयराय मोटो

राजान हिमचूल तस नारि प्रथंना जाया नंदन नीका दोइ वज्रबाहु पुरंदर जोइ ४६ हस्तिनागपुर अही पुर वैजअन्ति रोमाइ नवा
हनराजा नउ ओमा रूपमणि नो मइं वर वर नारि पुत्री मनोरमा सुविचार ४७ वज्रबाहु सुकीधउ साह मनमइं आ
णी अति उलास सुदरि लेइ चालिउ जामा उदयसुंदरि सालउ तामं ४८ मकु चावलनइं कुंडसाथि आतापनीलो
धउ नरनाथ वाटइ गुणसागर रिषराज दीठउ उदउ अंग लागउ पाय ४९ वारूवार प्रसंमा करइं नवकुंडथाइ
आतमउ धरइं ॥ दूहा मदा उउ रिषराज कउ धनि होष निवास अजकउं पण्हा सांभिसि सालउ सालक हइं एमध
रा घल प्रसंसतउ केम जोल्ल लेसिउ संयम सार कुमर कहइं हो एह विचार ५१ सालउ नाथ इंदी लउ काइ दिव
सगया फिरि नावइं धाहि संयम साथि विमासण किसी मारइं मन निपणि एहउ वेसी ५२ कुमर कहइ एस
घली सहा वात विशेषइं लीधा वहा इम तिहूकइं बोली बोचा सालउ लाधइं जाणउ सोचा ५३ संयम लेवा
थयो कुसी आर रिषनइं कहइं तारो संसार ५४ सालउ कहइं काइ साचं कर ते व्याहनी तमन मांहि धरउ ५५
कंकण न विछूटो ताहरउ एमनोरथ कूवो मरउ ५६ तुज भ्रीयपावइं एसुंदरी मरिजो स्यइं दुख सारइं लरी
५५ कुमर कहइं कुलवेती एनाह सरि सउ राखे नेह तउतउ कां संयम ना देरे नारि नाह करणी अनुसरइं
पदउ धारी लगनी लगनी समकाइ उ पणि संयम मारगि आवि दुख पूर्वक ससारी सषा पाछिहा दे षेवाइ
५७ नाह नारि ने सालो साथि ब्रत लीधउ गुणसागर हाथि अवरहा कुंवर पण वीसा चरण ग्रहइं त

२

रा०रत्न २ विस्वा विस्वा विसयन रासबकी उपजायो धर्म। धर्म थकी लहिसे सिवसर्म। सोई सग त्रे जगमांहि सलत्रे। धर्मकरा
वइत्र तावल त्रे॥ ६७॥ एह सुणी श्री विजय नरेस॥ वयरागि मन श्राणि विसेषि॥ पुरंदर नै देई राज॥ राजा ई साध्या
निजकाज॥ ६८॥ पुरंदर सुत सो हामण त्रे॥ जायो पृथिवी राणी तण त्रे॥ कीरतिधर नै पदवी दीध॥ राजाई संयमव्रत
लीध त्रे॥ ६९॥ कीरतिधर रयत दासखो॥ संयम साधि मन सादीयो॥ तकैरे राजा तणी संभाल॥ मंत्री सर सा पइसु
विसाल॥ ७०॥ जब घरि उपजइ नंदन श्रायो॥ तब हुं संयम लेयो राउ॥ रूप मणा न उपालि त्रे राज॥ उपयोग
थी जायवइ श्राज॥ ७१॥ नारी ना गोर सोचा उम्ह मन कि त्रे नकरो श्रालोच॥ जेह नै पाबइ नही संतान॥ तेह
ना तत्रे घरि कहि त्रे मसांण॥ ७२॥ एम सुणंता ढीलत्रे पडि ऊ॥ विषया सुष उपरि मन श्रडि ऊ॥ सहदेवी नो
मइ कोमनी॥ ना गुवती हे सलसोमनी॥ ७३॥ पुत्र कोमल सुत उपजित्रे जिसइ॥ गुपति पणइ सोरा ष्यउति सइ॥
जाणि त्रे रयसाथि इंथासि संयमी॥ राज रिघरमणी नइ वमी॥ ७४॥ जोगि त्रे राजा लेद जिवार॥ सुत नै सुधि
त्रे प्रथवी सार॥ समता रस साथि चित धरी॥ राइ चरी तब संयम सिरी॥ ७५॥ एक बार समी हाल श्रनेरा॥ संयम
व्रत पालई सलसत्र॥ कैसर राज रिष राज उदार॥ करतां षाइज मासषमाण॥ ७६॥ [सि]द्र राग श्रासा राग॥ ७७॥
श्रजब नमा सोजगि धरणी॥ तिणही मांहि एह॥ राणी इम देराय नै॥ फिर कारिमा सनेह॥ ६९॥ पडि उगुणित्रे
मति श्रागल त्रे॥ करतत्रे उग्र विहार॥ दिन केता नै श्रांतरइ॥ फिर नउ सो श्रणगार॥ ७०॥ पुरी श्रजोध्या २३

श्रायो॥ लेवा का ज श्रहार॥ मध्य दिहाडइ तावडै॥ हिंडइ घर घर बार॥ ७१॥ [दूहा सोरठा राग परी एहा ले]॥ श्रई श्रई
कर्म विटंबण॥ राणी राजा लारी॥ श्रायकरै श्रविनो घणो॥ एमो हो श्रविचारो॥ ७२॥ गउषइ बैठी गोरडी॥ नग
र निहालण हेत त्रे॥ फिर तत्रे रिष श्रविलोकायो॥ करु श्राणि तसनेतो॥ श्र० ७३॥ श्रागयो सुकनै तजी॥ लेइजा
सिइ एतो॥ वयरी विवध प्रकार नै॥ श्रा[illegible]यो करण क सुतो॥ ७४॥ श्रा० पतिरे गयो थिई पुत्र सुं॥ बांधि रह्यो बइने
हो रे॥ पुत्र गयो करि सुं किसुं॥ सो मन एश्रंदेहो॥ श्र० ७५॥ श्रातत यां णि श्राकरी॥ नरहा सुध लगारो॥ पुत्र नै बालै
पतिषकी॥ एजु गन त्रे विवहारो॥ श्र० ७६॥ श्रा लम मुनि गोश्राकरा॥ श्राणी श्र डाया तां मे॥ काढि त्रे नगरी बाहिर त्रे॥
जोवा मिलती सो गामत्र॥ श्र० ७७॥ फिट कास्यो जण जण मुषइ॥ राणि सा थइ रोसत्रे॥ जोरन वालइ कोइ नत्रे॥ प
णि श्रालाइ श्रपसोसत्रे॥ श्र० ७८॥ धाइ श्रावी रोवती॥ राजा जी नइ पासि॥ कारण पूछि उरोजन उ॥ सा षइ श्रा
यइ दोसो॥ श्र० ७९॥ तातइ म्हारो देवजी॥ तपकरि दुर्बल प्रांति॥ लिसा लेवा कारणइ॥ श्रायो थो उ बाह॥ ८०
राणी सेवो साचवी॥ ते तउ कहाय न जाइ॥ सरव लोय रि चय्य थकी॥ एमुक हो इं नराइ॥ श्र० ८१॥ एम सु
णंता वेगसुं॥ गइ वटायो सपालत्रे॥ वेदन करि वंतात नइ॥ श्राइ गयो तत कालत्रे॥ श्र० ८२॥ प
गिलागी ऊसन उरहि ऊं॥ मागइ संयम सार उं॥ नगम इं कोके द नउं नहीं॥ स्वारथीयो संसार उं॥ श्र०
८३॥ करजोडी नइ वीनवइ॥ देवी चित्र जमालो॥ सुत विणि किम थिति चालसइ॥ लाषइ राइर सालण्ध

रामजस

गर्वं अवइं अरि तादरि॥ मइंतसदोषरजा॥ अंतराइ कोम तिकरइं॥ सारलदे जे काजे॥ अ०५० तास
पासि समाचरि ॥ चारित्र चोथ वायो॥ वात सुणती मुंइ सह॥ तवसहदेवी मायो॥ ५१॥ काइ एक आर
तिध्यांन मई॥ काए कक्रोध मां णई॥ वनमइ ऊइ वाघण॥ गिरगह्वर तसवां मो॥ अ०५२॥ कीरतिधर
नइं मुकोसलो॥ वाघर सएदोइ॥ चोथ चारित पालता॥ चिचरइं मुनिवर सोइ॥ अ०५३॥ गिरगह्वरन
इं अनुसरी॥ करता तप उपवास॥ समता रूपइं वरतता॥ रहिया रिष चोमास॥ अ०५४॥ कातीपु
निम पारणइं॥ नगर सणी आवेतइं॥ एतलें आवी वाघणी॥ रिषि सों हीध्यावेतइं॥ अ०५५॥ तातक
हइ सुत सांभलइ॥ एह उपद्रव आयउं॥ हो वादइ मुंक आगलइं॥ सुतबोलंत सुहायउं॥ अ०५६॥ पाव
पावन पावड़ं॥ सिवीनो एधर्म॥ सहू श्री उपआजए॥ साचे सिंसिव समें॥ अ०५७॥ करुणा कृतोरस्या॥
आराधन विधि साधि॥ ममता मकीदहनी॥ आतम गुण आराधि॥ अ०५८॥ विद्रुत पातसणी परि चाघ
णी तेह विकरालो॥ आणि पगे सुत उपरिइं॥ धरणि पड्यो रिषबालो॥ ५९॥ विदारइं नख ऊणां॥ बाल्ह
तनु नी चामो॥ निरसी बलि आतिनिर साथी॥ पीवइं लोही तांमइं॥ अ०६०॥ तोडी रत्नुतणउं॥ मांसवम
नासनउं॥ चित्तरीनो पणउं॥ कोध अधिक पर्या सइं॥ अ०६१॥ अमतने कवले करी॥ सो पीधो जेदेहउ
वेर विना ही वाघणि॥ तोडी नांख्यो तेहा॥ ६२॥ परिणामे चढइ तेऊ वरि॥ पांमिउं केवल नाणउं॥ ऊरोल २४

थलइ रेणु को झालइ॥ साधि उपद निर्वाणउं॥ अ०६३॥ पकार तिधर करणा॥ वलि कर्म तणउं सयकीधउं॥ मोसप
ऊतो केवली॥ नर लवनो फललीधउं॥ अ०६४॥ निरसमी हाल मेजे रसपो षिउं तेणिउं॥ केवी राजरि थएहवो॥
पापी अइ कहो केणि उं॥ अ०॥ ६५॥ गउडी रागे दूहा॥ चित्रसं माली राणी थइं॥ जायो सुदरनंद॥ हिरण्यागर्भ
घरि गोरडी॥ मृगावती असिरो म॥ लघु कनो मिसुलनाइयो॥ इखितजन विश्राम॥ २॥ मार्ड धन्य दिव
स एहालं॥ हिरण्यगर्भ लनपमा थइं॥ धोला केश॥ देषी आलोचइ॥ एजिम इरिलविसेस॥ ३॥ नतपिण ते
राजा॥ नघुषऊ मरनइं राज॥ आपी आपणपइ॥ सारइं आत्म काज॥ ४॥ राजा घरि राणी॥ सिंह का असिधान
सा सचिव विधि जाणइं मसरए णइ सुविधान॥ पात्र तरय थनानपणी तणउं दसिण एवनानय अडा अजो
आ आया॥ ६॥ हरांणी तेजी साकरि सबल संग्राम॥ सिंहणी नइं आगइं गजकि ऊ नतजइं धांम॥ ७॥ र
पजीती आयो निसुणि एहबुंदं तगाढो दुख पायो॥ कांम निउपरि कंत ८॥ एह्वे विसचारणी नहित
रि एहवउंकांम॥ नकरइं को बीजी नारि धरावी नीम॥ एरहियो मनपाची नवइं बालिकां॥ कइं अमि
करता घा इइं ऊइ एम॥ १०॥ राजा नइं डीलीयइं॥ उपजी हो जर दाहा उबध नविमानइं ओलइ अरति
अगाह॥ ११॥ सादो सउं तारण राजा॥ आगइं बोली सऊ नइं सेनी लता॥ उगटइं अवसर जाणी॥ १२॥ मे
निजपति टाली॥ अवरनवे छिउं कोइ॥ तउसा सणदेवी॥ सांनिधि करि ज्यो सोइ॥ १३॥ इमकहतां रां

णी करसिउ राजाश्रेग हरिवाहन आयाला जी जाइंसु जेग १४ तिमवेदनना वी दागदेह निरोग राणी
सुराचित्ते पेचेंडी सुषभोग १५ राणी उर उपन्निउ सुतमनलो मोदास परिघापी आवइं संयमसुंसुष
वास १६ मोदासनरेसर अष्टाह्निक उछाह मेनावइंगावइं श्रीजिननी गुणगाह १७ तवजीवदया
नउं पउहो राइवजावइं मंत्री सारबोलै एनउं मुझनइं सुहावइं १८ तव सवेजपुरष मांसनकि
णिहां पाई सुमहीतिम चालनउं उउंउसपायो १९ दाहिणथी मांनी पणिमननमइं नसुहाणी जेउ
विसनपडाया तेनउ पापी पांणी २० तवसूदरि संघाति गुपतपणइं कहइराइं पिलएकहीमइं मांस
पषइं नरहाइ २१ उहेउमारउं जो मुझनै दिइं मांस सउंधिउं नविपावइ दीठउं करीय पयांम २२ एक
बालकमुझ नयनइं आणिघवावइं मांणसनइं मासइं स्वादघणेरो पावइ २३ गिहउ तव राजा दिनक
उपमकरावइं वरजिऊं नविमोनइ लोगअसातापावइं २४ मंत्री सरमोटउं राजनणउं रषवालो कहो
कहो समझावइ राजा नविदिइ टालउ २५ तववंधीकाढउं काटीदीधउ राजा बापकुउबापक लोगसही
होताला २६ सोदासतणउं सुत सायवंत नरेश सिंहरथ थिरथापिउ सुपदाई सुविशेस २७ स्वपतिउ
तिलमलो दषिणदिसवलीआवै दषाएक मुनिवर गाढा साता पावइ २८ पूछइं तव धर्मज मुनिवर
चावइं वारू परिहरी यइं मांसज अरूपरिहरियइं दारू २९ तेवीजइं नरगे तेत्रीजइं पकुवावइ इम

सुणीनो राजा मनमइं हरख अतिपावइं ३० पचखांण करइं नयमांस अनइं मदकेरउं तवश्रावक कहिओ जां
णइं धर्मसलेरो ३१ महापुरि सचलिआयो सुसकर्मानउ वेरिउं छलटेपरधाने आवीनइं नपघेरिउं
३२ तवदिवसमुपंचे महानगरनो राजा सकलोकइं मांनिऊं बाध्या अधिकदिवाजा ३३ तव पुरीअ
योध्याइं तेमउ कलिउं एक सुतमेवाआवइं कइंउम सारउंटेक ३४ सुतवातन मोनइं राजाबलसा
जइं सुतपणि सोमयो मनमुषआइं विराजइं ३५ तवनामइतदो लडाया विविधप्रकारे हारिऊंत
वनेरन जीतिउं तात तिवारइं ३६ विलषाणउं देषीराजा आतंनपोली घाउइंवइंसाडिऊं बालआप
णउंजाणी ३७ दीक्षादाराला राजा संयमधारी विचरइं महीमंडलि षटकाया हितकारी ३८ सिंह
रथराजानउं राजाब्रह्मरथ चउरइंमुषराजा हेमरथरालरथ ३९ उदयरथुराजा वारिरथसे
सीरथ आदितराजा मोषतास मरथ ४० रपवीरसेनजी पतिमनुमानीतउं रुपपद्मवधराजा रवि
मांनुजोणानउं ४२ सवहोमनिलावइं वसंततिलकानरेस कुबेरदतजी कुथसरनवि शोम ४३ दि
रदरुपनीकउं सिंहदशानंदलिपाक रुपदशरथकसिंधु जेहनी जगमइं धाक ४३ पुंजस्थलपोढ
उं कुंकस्थनइं रघुराइ एसूरिज वंशीराइ सकु सुषदाइ ४४ कोइं मोसपधास्या स्वर्गिपधास्या
कोइ एवंशी वहेरनु विरुदीनउं जोइं ४५ अरण्यनरेशर आजोधाउं राज करतउं अतिपरतइ

एरकात थई नेहनी दोनंदन अनंतरथ अधिकाई दसरथ दिलिदरीया सो लाकहाये नआई ४७ अनर
एपनरेशार बेचरसुमित्राई साछिइं वतलेमा आपो एह सगाई ४८ सोसहस्रकिरण रष रावल साथि
लडाई लेईने दहारिकं तवहुतलीधुतेधाय ४९ अनरएपनरेशार अनंतरथ सुत साथि संयमव्रत
लीधउं मोटामुनिवरसाथिइं ५० विद्याधर साथि पालीबोलीवाचे सो मुगति सिधाया जगमइं मो
टउसाच ५१ चउदसमीसाषा ढालरसालअपार केशी राजवषाणाइं धुरि सदा सुषकार ॥५२॥ ए
रजीयासगेरूडा ॥ मास एकनउ थापिउ राजा दशरे दशरथराजि चंदकला जिमजिम दिनदिनइं वा
धइं दलबलसाजि ५३ शास्त्र सास्त्र आदिइं करी कलासकनउं जांण विनयविवेक विचारमें पंडि
तपणउं प्रमांण ५४ योवनी वयपाईयो सरवीर झूझार दाता सुगता अरुगुणी वसुधा जन विस्तार
५५ ॥ [red band: ढाल heading, partly illegible] ॥ राजा दशरथ दीपइलोरे दिनदिन तेज घनावइरे
असमंषलीनउ एहमइरे टीसइं आपउ आयरे रा० ५६ दर्भस्थलपुर जांणीयइरे सुकोशल तिहां रा
यउरे रांणी नामि अमृतप्रभा राजानइं सुषदायउरे रा० ५७ पुत्री वर अपराजीता जी इंद्रांणी अव
तारोरे माहा दशरथराइनइरे तेडवकरीय अपारउरे रा० ५८ सुसीला आयनापतारे मित्र सुर
पालउरे सुमित्रा पुत्री एरणावइरे दशरथनइं सुविसालोरे रा० ५९ सुप्रभा अतिदेहनीरे सुप्रभातस २६

नामउरे राजारांणी इपरणावइरे दशरथनइं अभिरामोरे रा० ६० पंचे दीसुषसोमचइरे ?र?? पु
ण्यप्रसादोरे एरवएरव उजालीयारे विस्तरी योजसवादोरे रा० ६१ एक दिवस लंकाधणीरे बइठउ प
रषदमांहिरे निमित्तीनइं पूछइं हइरे निजआउरबलषांहिरे रा० ६२ कहइ कुंमरि सुआपथीरे कहइको
मारणहारउरे इन्द्रादिक सुरनीरहइंरे मांणसनउं मउं सारोरे रा० ६३ पंडित प्रगटपणो लणइं
रे शीताहेतविणासउंरे दशरथसुतथी थाइं सिइंरे लोगकरइं तवहासउरे रा० ६४ विभीषण ब
लीयो कहइरे जूवउ थ्यो रुजोणरे दशरथ जनक विणासनोरे बिबुधवचन अप्रमाणउरे रा० ६५
उत्पत्ति बीज बिना नहीरे रावण कहइ एरूडुरे सरउसीसाइ तण उरे करहा नकदेकडुरे रा० ६
६ नारद बइठउ तिहारे करिवानइं उपगारउरे राजादशरथ आगलिरे भाषइ एह विचारउरे रा०
६७ मिथलानगरी जइरे जनकनइं रे जणावइरे जोणी साहमी मावलोरे मतिरे असातापावइरे
रा० ६८ राजनलीवणराइजीरे मंत्रीसरनइं दोजइरे दोइ प्रदेमांनीकल्यारे जांणइं जिमतिमजीजइरे
रा० ६९ मूरति दोइ राइनीरे लेपमइं तवकीजइरे विभीषणसरमाविवारे एउपाव गीवीजइरे रा०
७० रातिअंधारी आवीउरे विभीषण विकरालउरे सर तिमस्तक छेदीया कउप्यउ जाणे कालोरे
रा० ७१ कलकलशब्द ऊठीयलेरे सुभटसंबाहाथाइरे मरिवाकाजि उतावलोरे नजरिन आवइंका

छूरे रा० ७२ रोवइं राणी रावलीरे रोबइं बीर गुलाम तरे मस्तकारि जसघलाकीयोरे गयो विलीषणताम
तरे रा० ७३ मंत्री सोइ मतइं घरतरे राजानिज मानइरे उरमतेजो लाइ नहारे आपणमेलाणइरे रा० ७४
बेधिन बयबूदेषायइरे राजा जानो राजोरे गेषनणि अलगीरहतरे प्रतषिदीसइं आजतरे रा० ७५
समतसमेताएकवारे दशरथ जनक मिलतोरे एकअवस्था दोइनेरे साथाहोइ चलंतोरे रा० ७६
कौतक मंगलपुरवरइंरे समति राजकरंतोरे प्रथवीश्री करिकृपनोरे केकेयी गुणवंतोरे रा० ७७
द्रोणमेघनी सोदरारे सेवरमंडपतासतरे आयाराणराजीयारे करइं कन्यानी आसतरे रा० ७८ हरि
वाहनआदि सहूरे बइठाआसणभूपतरे दशरथ जनक पधारीयारे उपइ सोहअनुपोरे रा० ७९
कन्यामंडप आयावेहारे देषइं रूप अवलोकइरे कोइ निजरिन आवीयोरे आगइं सरकइं सोइरे रा०
८० दशरथ नृपमनिमानीयतरे पहिरावइं वरमालोरे राजारोसकरयधणतरे हरिवाहनस्यपा
लतरे रा० ८१ मेरुसीमोटा राजवीरे एकिमब्याहइं राकतरे दासइवेसइं कापणीरे एरेवदातकवां
कतरे रा० ८२ बेलगते जाइवेगसुरे लिकवर मालछिनाइरे नीणुक रिसीपाधरेरे टलनीजाइ
घडाइरे रा० ८३ चउरंगिणी सेनासजारे जूझातवाजतरे सूरघरोरे वधामणारे कायरनरना
ठेतुतरे रा० ८४ श्रु मतिपलकरइं घणरे जोरोतमाईजाचतरे बोनसजाआगइं कृतरे सारथि २७

हइसाचतरे रा० ८५ केकेयी कई सारथीरे बेठइंरथ नइं जामोरे दशरथदलमोडइंघणारे विश्रुनतणाते
तोमोरे रा० ८६ जीतउदशरथराजितरे धर्मिइं सदा जयहोवेरे परमेसरपधारयोघणरे साचामासुजो
वइरे रा० ८७ नृपवर आपइं रीझीयतरे सांसंभारि रहावइरे प्रस्ताविजमागइंसुरे सुतनेनृपपदना
वइरे रा० ८८ केकेयीसाथिलेइरे राजयहीआवेतरे जनकगयोमिथिलापुरीरे दर्सघणतेपावेतो
रे रा० ८९ दशरथनिजपुरिनावीयोरे विलीषणनइं त्रासतरे देशभणीजातीयोरे राज दहादावा
सतरे रा० ९० बोलावी अपराजितारे आदिसघलीनारीरे राजथापनकरियापिजरे थिरथानिकसुवि
चारीरे रा० ९१ सिघजिहाहा वासइंवसूहरे तिहांलातसथानतरे तिमदशरथराजागिणतरे रायान
उराजारे रा० ९२ पनरसमी ढाल विषइरे अनरण्यदीपायोरे केशराजनेदननीकोरे नीकतेनातक
हायोरे रा० ९३ ॥ अजाणाकांनराराग हृदा ॥ ब्रह्मलोकथकी चवी महर्द्धिकसुरसोरे मानसरोवर
देसजितरे उदरिलीयोअवतार ९४ सुषमइं सोवइं सुंदरी सुंदरि सेजिमकार राणीजी अपराजिता
सुपिनविलोकइच्यार ९५ साथहाथतेचउसहो लोबपणइं नवहाथ चउउपणइं करतोनजो
करिकरिलीनतेनाथ ९६ केहरिकरि षोलोघरते पंचमुषउपरवेश करतउदीवते मुहमइं
रोणीहर्ष विसेस ९७ नायकनतेग्रह गणतणाते रोहिणिनतेसरतार जलरतते आकाशथीचे

इमहा सुषकार ॥८ ञ्गोनउ अतिरा लडो नहि बापमोलगार सूर सहसकिरणे करी पावइ सो सत्र्प्रकार ॥८॥ राइ जगावी वानवइ इससुणउं अरदास ए सुपिना नउ फलकह उ जिमपंकेचई मन आस ६०० जी सुपरम सुष पायकइ सांभइ सुपिनविचार उञ्चपनउ तउ प्रसविसिउ सकळ जगनउं आधार १ ग्रल दोष सबटालतो पोषकरेतासार कुलवेलो सुत जाईयो वरतिउ जयजकार २॥ अ वडंधारउ रएटा॥ कुलवेलो अवतार ॥ अरजायोरे हर्षवधायो मंगलगायो सबजनरे सुलायोक ॥ नगरछांटायो जलसिंचायो कुंकुमघन वरसायो चञकहरायो कलसबंदायो इंद्रतमासइ आयो कु० ४ लोगमिलायो ढोलवजायउ गुहिर निसांण गुडायउ आनंद पायो सबमनि भायो उछव अति मंडायो कु० ५ रमणी आवइ केलि रचावे कुंकुं हाथ देवावइ रासरमावे पात्र नचावइ उचित उचि कउ पावइ कु० ६ घरघरि बारई तोरण रचना नारि अधांगि आवइ दुर्वा पुफ फलादिक आंणी मंगलसार करावइ ७ कु० जि नाम लि [illegible] सुरह जिमराजा दोनि दालिद वारइ याचिक नाम अजाचिक म था सु [illegible] सकळ [illegible] सारइ ८ पधो नउरे निवासते हथी पधा दायो तस नाम उ सकळ जगनइ अलिराम पणाथी बोसू नाम जरी मो कु० ९ गज हरि रवि शशी प्रमुख कमला सायर सुपिना सातो ११ अलिवउ देषि सुमिणो स्वामी आगइ आवि कहइ ए वात उ कु० १० देवलोकथकी चविआयो उत्तमजा

उ आरवे रोणी उदरि निवासकीय उरे हरिषिइ सकउ परिवारो कु० ११ सोमवरण सुतजायो सुंदरि राजामन उच्छाहउ उछव विवधप्रकार करीजे लीजइ लंबी लाहो कु० १२ अष्टप्रकारे पूजा जिननी मकाबंदी वान उत्तमपुरष उपजायाथारे सकनइ दयइं कल्याणउ कु० १३ नरायण अभिदान दासरे लक्ष्मण अपरवि धानेउ सूरतरु कंदतणी परि दोइ वाधइ पुरष प्रधानउ कु० १४ अनुक्रमइ वीर विनोदइ विनोदइ सो रघु गोरी पोषइ नीलांबर पीतांबर पहिरइ माजनीयां संतोषइ कु० १५ आचारिज शाला करि शीष्या सकल कला गुणतेह उ आगम इम सुरगुरु सारिषा प्रतबुद्धि दासइ एहोरे कु० १६ लीला मुष्टप्रहार क रइ वइ पर्वतना षइ चरि सरवार साहसा थ्यामां हि पावे कीरति सूरि कु० १७ कोमकार खधनुषधरा नइं जनमए रषइ बांणउ सरिज [illegible] ना ई कंपइ पाडइ मतिरे विमांनउ कु० १८ कोइएक सुजन बलि राइ विचास्यो कोइ एक सुतबलजांणी कोइएक धैर्यधरी नयनिवसिउं पुरी अयोध्या आंणी कु० १९ सरयपुत्र के केइ लायक पुरी अजोध्या मांहि सुषलाई शत्रुघनजी जायो अधिक उछाह कु० २० रामअने लक्ष्मणनी जोडी कविकथनेरे कहाणी भरत अनइ शत्रुघनकेरी जगमइ जोड जणांणी कु० २१ गजदंता उं मेरूमहीधर सोसो अधिक लहावइ दशरथ राजा नंदन च्यारे कर्मइ यतउरे कहावइ कु० २२ एमो लक्ष्मी वालमेरे रामतणउं अवतारोरे केशराज रिषि राजिव षांणिउ ए पहिलो अधिकारो कु० २३

गोतमरास ॥इतिश्री ढालसागर ढाल द्वाप ष्टा रामजु मोरबाधेन प्रथम मोत्रिकार ॥धन्यासी राग ढाल॥ गोतम
गणहर गुणनिलउ गोतम गिरुओ नाम गोतम गुरु गुरमइं वडउ गोतम करीइ प्रणाम २४ सामे डलसी
तातण उ सुगल पणइ अवतार किहि कारण अलगा पम्या निसुणउ एह विचार २५ जंबूद्वीप इसर
तमइं वसतउ दाम ग्राम विप्र नलनउ वसरन तिजी अनु कोशां नउ स्वोमि २६ अंगज तउ अन्नस्तआ
ससी वन नउ नोम कथान विषइं अपहरि र विक्रमो पति नाम २७ मोह वसिइं मोसाथण मायवा
पति हवार पुत्र गवेषइं चाल्या विवि मिल्या उ अणगार २८ अणगार हिं उपदेश थइं लीधउ संयमसा
र स्वर्ग सुधर्मि देवजी थोमी यदवी सार २९ ॥कडख मन मरहिमर दह ॥ सुणि सुणि रे सुयण स
यांणी काद्य वइं अधिक अयांणी एक मन वूटइं कोइ सुर दान व मांनव होइ सु० ३० वेताढ गिरि
इं अमिरां मउ रथनूपर पुर नो नामउ सउ देव चवीनइ आयो घग चेड गती रे कहायउ सु० ३१
उनारी कहु नारी नपचंद गती नी प्यारी पुष्कवती अलिमान उ सुखमांनइं मेरु समानउ सु० ३२
सरसा पलि संयम सेवी बीजइं सुर लोकइं देवी सोइन मांनइं सीता सुयमां [illegible] जाता सु०
३३ अनंतउ अरिनिकरतउ नारा नउ अतिदुख भरतउ सब मांहि तम नो जोइ देसवालिक हु
उ मोई ३४ सीजांणइं साहइ नडायो रिषि आगइ लिआवी पदी था रिपजी दीधउ नवकारो लहि २९
उ सोकि नेर नउ अवतारउ सु० ३५ दस सहसनउ आयो सोगवउ तउ पुण्य बलावउ सो देव चवीनै आ
वइं वहदलउ लेवइं सुष पावइं सु० ३६ विदग्ध नगर छइं वारू राजा जी अधिक उदारू प्रकाश सिर त
रनार उ प्रवरा रे वली नउ नाहो सु० ३७ मका माजनेई रे सुहायो कुंडल मंडित सुल जायउ सुत
सुंदर अधिक सरूपउ सुत तेज अनूपउ [illegible] सु० ३८ कथानक सवमइं समतउ सोवादि जमारो
गमतउ मरिचक चक्रपुर राजइं चक्रध्वज राइ विराजइं सु० ३९ भूनसेन पुरोहित तेह नइं स्वाहा रम
णी वइ जेह नइं जायउ तेहि पिंगल नंदउ उपजि उ मामनि आनंदउ सु० ४० अति सुंदर बेटी राजा पप
करती अति विज्ञान कं थीआचारिज जी पासइं पिंगल पणि पढि उल्हासइं ४१ सु० तव नउ बेक्षण उ
नेहो पिंगलनइं कुमरी तेहउ संग तथी विलसइं कामउ इम जो सोबकला वामउ सु० ४२ कुमरीन
इं लेई नाठउ उ श्रमणी योअति घाटउ विदग्ध नगरि चलि आयो वसवा नउ मन ठहरायउ सु० ४३
कस वन कोइ जाणइं तृण लाकड मोली आणइ जिमतिम तउ पेट भरेवउ तिणकस रखजर मकरे
वउ सु० ४४ एकस बतणी अधिकाई निज परघई लहरे वनाई एकस ब कलाइ दीठउ शोभी रूड़त
लाइं [illegible] ४५ अति सुंदर सुंदरताई नयसुत नइं के णिवनाइ सालीधी तेणि छिनाइ पिंगल
रहीयउ सुरबाई सु० ४६ नयवापतणउ अतिओणी पर्वतमे पल्लीठांणी कुंडल मंडित तिहां वसीयो

सेमजस
तेर

मुषड छ नंदे षइं रसायो सु० ४७ नारी नइं श्रीणवियोगो पिंगल जी लीधउ योगो चिंतवइं न विलइ नारी
घाटी एमो टी सारी सु० ४८ दशरथ नउ देशा विण सइं कुमल मंफिन त्रासइं तब बाल चंद चढि आयउ बाध
रपथा मइं स्रायउ सु० ४९ तब दीन यणं तसदे घइं करुणा नयनइं सुविसेषइं छोडी दीधउ तिहिं वारो कुं
लमंफित सुकुमारउ सु० ५० बापरा जानइं काजइं कुअरजी रहइं निति साजइं मुनि चंद रिषीसर संगइं
रूडो श्रावक छइ अति रंगइं सु० ५१ राउ वांचना मांहि तस प्राणनउ हुता आहि जनक घरि अवतार
ते निसुणउ सीता सुविचारउ सु० ५२ सरसी यणि समवेलमती मा फिरइ ठाइं रमती रूडी पुरोहि
त कुमरी सा पहिवइं गुणिवइं सुरी सु० ५३ वेगवती कहि वाणी संयम साध्यउ मन तांणी उच्छलो के
होइ आवी राणी उरि उपजी आवी सु० ५४ कुअर कुंमरी दो जाया ते युगल पणइ सुषदाया तो मु
विदेहा हरषी सुत पुत्री नउं मुष निरषी सु० ५५ पिंगल मुनिवर गुणवंतउ परिलइ [illegible] पकुते
अवधिज्ञान सुदेषइं तव तउ अतिरास विशेषइं सु० ५६ तव ते बालक अपहरायउ ते सुरवरदे
षइ लरीउ जाणइ अब अमर षजोइ मारी नइं मन संतोषउ सु० ५७ विवेक विचारइं तामउ ए
वइं पातिक नउ नामउ वयर नइं रे वसाऊं संसार घणारे वधराउं सु० ५८ पंचेंदी केरउं पाप
बहु वान रगसंतापउं तिणही मइं एतउं एबालउं दणताइ घण असरी लउ सु० ५९ ते एम विम ३०

सा

सीदेवउ वेताढि गिरइं तलेषवउ दक्षिण श्रेणिं दतउ मोटो नाम नमो रेतउ सु० ६० रथनुपर पुर च
लि आया लषणसु सुषी काया ते बलिक वनमइं मूकइं ते विबुध विचार न चूकइं सु० ६१ तव षेच
र चंद्रगति दीठउ तव लीयण अमीय पईठउ उगाइ उच्छवउ लीधउ त्रियपुष्पवती नइं दीधउ सु०
६२ घरि नविढइं कोसे तामनउ एआरति ढइं असमानउ सुकनइं ठठ उकरतार कुं एदीधउ देव कु
मार कुं सु० ६३ लोगामांहि इम सुणायउ राणीजी नंदन जायउ तव उछव अधिक करीजइ लबी
नउ लीद उलीजइ सु० ६४ तनकी अतिकौतिक रहिउ नाम कलनमभरिजे एसल रमी ठइ ढालो केजीरी
जकहइ सुविसालउ सु० ६५ ॥ धन्यासीराग ढाल ॥ विदेहारे विछोयथ्यो सुतदुःख सायर मांहि कुलइ अ
सुनीयती पतिसम फावइ शांहि ६६ तव तरनइं वयरी यइ अपहरीयउ सुत एह सत्रधउ करि सउ
कुंसदी मकरि सउं अंदेह ६७ थांनिक थांनिक सोधाव्या गिरगह्वर आराम षबरि न पांमी पुत्रनी रा
जा राणी ताम ६८ पुत्रा नउ सुषदे षती शीतल ताई पांमी बोलावी मा बापजी शीता एह वदु नाम ६९
॥ कर्मतणी गति कुणही न जाणइ वीरे एढाल ॥ सीता कुमरी तउ तव धावती रे [illegible] अनु
क्रमइ योवन पांमीय उरे रूप कला सुविशेषि सीता सुंदरी रे मांणस लोक मकारि रूपपुरंदरी रे
शील सिरोमणि नारि सा० ७० कोवर होसइं एहनउ रे सचरखेचर राइं आरति आणइ बाप

वेदवाहा
डिमदेरि

रामजस

तो ३

जेरे घर सघरइं सुषथाइ सी०७१ दे षायावसुधा विघइरे राजराजकुमार सारिषतेसंसार मइरे
कोईन एकलगार सी०७२ अर्द्ध बर्बर देशानतेरे अनरंग तस नाम म्लेछ महामयमेलवइरे दे
शतजाइ इसी म सी०७३ जनकनपकेचंईं तेहनतेरे दूतमोकलितेएक राजा दशरथ पाषतारे
बोलइं आणि विवेक सी०७४ सहिज सामो दे पाठवतेरे आवइं छीक जिवार साडाणत छइं रूप
तीरे आगइं देवविचार सी०७५ जति के अति आतुर थइरे बाला होलइसीम असवारी करिवा
लगीरे नाम सुबोलइं राम सी०७६ ऊम्हे पधारतबतुसहरे मेरो सु संयोम दूमनेघरि बइसार
स्यारे किसी वषे सिं नाम सी०७७ अनुजानइं आगइं करीरे चालितेरामनरेशी चतुरंगणसेना
सजितेरे मिथलापुरी प्रवेश सी०७८ असुरा संआवी आप्यारे सुभटजिके झुझार उतावलि
असुरां तणीरे महानसक्या एक वार सी०७९ धनुषचडावी रामजीरे करतउ बावति आप
असुर सकल अलगा थयारे धर्मथकी जिम पाप सी०८० जनकतणा जनपदतणोरे टालि कैसय
नाकिलेस राजाजी सुप्रापामीयतरे रंगविनोदविसेस सी०८१ सीता दाधइं रामनइरे सारिषतेसंयो
ग ललुतलुना थइ घणारे हरषा सगलालोग सी०८२ सीता रूपसुहामणतेरे निसुणीनइ सुरदे
व निरषण देतइं आवी यतरे सीताघरितत षेव सी०८३ केशनेत्र पीला पणेरे तेंदलि ओलि ३१

काक्षार देउपोणी कोपीनस्यरे शिर दशिषासुविचार सी०८४ नारदरूप डरामणतेरे देषीसीतावाल ना
वीघरस्यरभनतारे गईघरिमइं तत्काल सी०८५ कंकिशिषा बोइइं धरीरे द्वारपालनइं दास सादा
रस्या जइ नोमकईरे हरिणपरि तेजिमपासि सी०८६ कलकलसुणि जणआवीयारे हाथियहाहथा
यार मारिमारि करतो थकारे जाणइं जम अवतार सी०८७ नारद ऋषिनइ देषतोरे सुसतापडी या
सोइ ऋनिशानिसो नीकलिरे कोमकरइं सो जोइ सी०८८ रूपलिषी सीतातणतेरे भामंडलनइ आय
देषाउइं पटदेषतोरे कुमरकुचितत घाय सी०८९ कुचिताइ कुमर तणीरे हबे मित्रां साधि पहत
दा तेदाषवइरे रिषिरषितेनर नाद सी०९० मिथलानगरी ले चलारे जनक तिहां नृपाल विदेहा कु
रिक्रपनीरे वालारूपरसाल सी०९१ अमरी कुमरी नागनीरे मइं दीठी अविलोइ वारंवार विचार
तारे सीता सी नहि कोइ सी०९२ जेहवी छे सासुंदरारे तेहवी लिषी ये नजाइ लिषी तिसी कहा
को सकेरे अचरिजथइ षगराइ सी०९३ भामंडलनें सो मनारे जइरे मिलें एजोडि सांचे सुषसंसा
रनं माहि रइं मनिए कोडि सी०९४ सलवचनें सेतो पायोरे चलु करे कर तार विमजिते रिषरायेजारे
उत्तम नतेअधिकार सी०९५ खगचपलगति मोकलितेरे करिवा नइं अपहार राजाने लेई गयतेरे कि
णहीनजाणीसार सी०९६ जवी आयो सारमतेरे मिलीया बेहूपसारि कुशल बात रवीघणी बी २

रामजस २

तिलाइरे श्वकारि ९७ जनककुमारइं सोहलारे पुत्रारत्नप्रधान नारी निरोपम मेलसारे तेहनइं तिलक
समान सी० ९८ च्यवइं अनोपम कन्मकारे जिम ऊगतो चंद तेम सर्वकला गुण आगलारे पलिदे वाई
कम सी० ९९ दाधारत्नारयनेद नइरे अवरां किते ले बाई मणिमा वइं ठइं सापनेरे करो कि लोधी जाइ
सी० १०० प्रीति लमांरे अबूरे नहि तर लते अपहार करतो वेला वइं किमारे राष्टबु विवहार सी०
१ दमनइं लीनी रामजी आस्ते केमाएह कइ सामंगल मारू सिइरे इहान को संदेह सी० २ वज्रावर्त्त
जेनोमथीरे अनेअर्णवावर्त्त धनुष अवइं धरि मादरइरे मेंदपि आणाथत सी० ३ यक्ष हजारे सेवायं
रे अतिसयवेन अनाव गोत्रजई देवानी परइंरे सेवाजइरे सदाय सी० ४ धनुष नमाव्यो जिम नमारे रू
गरी करिवा नेम समकडे सधा वातमइंरे जिम को यां रहे तेम सी० ५ एह अचेसो बे परजेरे एतजपू
रतषि आज एकहाने चत्र तिवइंरे सारते वंछित काज सी० ६ खेचर चंद्रगति वाली योरे पुत्र अनइ
परिवार धनुष साथ हसलारे राजा लेइ लारि सी० ७ मिथला नगरी आवायजेरे बाहिरके राद्ध वर
णाणते विद्याधरूरे अथवा मोहि व्रमिथे सी० ८ अणदृ नामी हाल मइरे वसुमती नी वादि केशराज
इसहीरे जउहइं यइ पुण्य अगार सी० ९ ॥ मारू रागे हाल ॥ जनक विदेहा नारि सुं संचलावी सर्ड
वात शीलसमी गालीमही कहइं राणा चिंतलाविन १० देवन रुपतो तु काव ते लेवड पुत्र प्रधान ली 32

श्री चहइं पुत्रिका किम राखइं सिंतेओल ११ व्याइं परणेतनं दर्शघणो संसारि अणइआ परणेतनं
दर्शन एक लगार १२ देव योगइं श्रीरामजी धनुषनं चढाव्यो जोइ अवर नइरे चढो उतो अणस
रवइं दुष्टवाइ १३ जनक कहइं जोणइं नही राम महाबलवंत मइदीवत संग्राम मइ पो रूपनुं
नहि अंत १४ सम फावी सुता सुंदरी एहनी धनुष उदार मेंदपि मानी तेडीया राजा राजकुमार १५ दिव्य
स्वयंग धारि कइ सषीयानइं परिवारि इं मंडप आवी जानकी इंद्राणी अवतारि १६ धनुष नाणीस्र
जो करी मनमइ सुमिरइ राम मनसा वाचा कर्मणा अवर सुं नहि काम १७ ॥ पातिलीमीहो एहाल
सीता रामि रावाहुइ जेम चकोरी चंद सुं एवी प्रीति सीचा हस सी० १८ खेचर षेचर राजवी सर मो णासार
हजे साप्प वकहजे तेल्ल एपावइं नारी हजे सी० १९ नारद लाघाजे दवी साते दवी जोइ हो साम
ठलसत्व पडिजे अतिपरि वसि होइ हो सी० २० जनक राइनि हाआ यकइ एसा चकहा वई हजे
धनुष चढ उउइं जे सही तेकन्या पावइ हो सी० २१ उट्याकडि का तो करी जे राइ सन्ह रादहजे धनुष
चढदइ उगकारणइ सरोमइं सुरादहजे सी० २२ सापइं सा धिइं वीटायजे नावइं गहलाऊ हो फ
रसी हो कोनो सकइं जे गाढो ताऊ हो सी० २३ ज्वाला मकइ इवइं घणी दाके ता ताजे हुऊ अधउनु
मा अलगा रह्या मनमोहिला जी हऊ सी० २४ ईहि अवसरि श्रीरामजी लीला गतिकारी हो धनुष 33

सोमप्रभ

समायइंआवीयो आवी अवतारीहुं सी० २५ चेइगत्यादिकराजवी करना अतिहासतेहरई पेवरी
मेतिबगाइस्या एहनइं सीआसतेहो सी० २६ वज्रथांलिजिमवज्रनइं रामवजीउरसइहो शांतिक
रीअहो आगिनै करसाथइ फरसइहो सी० २७ वेत्रमतावरिवालिकइं थरंपरणचेयटावइहो श्री
कर्णातक थीचावइं टंकारगुणवइंहो सी० २८ रामगलइंवरमालिका सीतापहिरावइहो
काउसिरिकंचितिचितविक अधिकउं सुषपावइहो सी० २९ बीजुं लक्ष्मणचउढी यं उहाँ
वधकीधाहउं अष्टादशवरकन्यका पमरींयादाधाहउंसा० ३० चितलपामतेविद्याधरै सामंहल
लेइहुआ निजनगरि चलिआइहो लक्ष्मण कइहउ सी० ३१ तेडितुं दशरथराजाउ सकल
जनसाथिरे आइसलतं सीतातणउं कीधउंनरनाथिहुं सी० ३२ जनकराइनउंभाईजी न
लकनकनकंहावइहो सरतसणी लघासनी सुत्री परणावइंहो सी० ३३ उत्तीनइं परणायकइ
बकानेलेइआवउहउं दशरथराउ यजउं अधिकेरोल्गावइंहो सी० ३४ पुरजनजोआओवायरे
आनंदकराजइहो घरिघरिरंगवधामणा अतिउलवकाजइहो सी० ३५ अनेरेदिनराउत प्रभा
मेदावइहो स्नात्रकरइं अष्टोतरो जलिकलससरावइहो सी० ३६ पेजोसाथिइंमोकलिउ
पटिणीजलराइहो महिणानइंमनरंगरसिङं अधिककइंजगइहो सी० ३७ दासीसाथिइंमोकलि १२

उं अवरोनरपोतहो ओत्थदीयउं नताकजो वृद्धरषी तेरांणहो सी० ३८ वृधपणइंतेवेगसूं धोजे
जीनायउहउं घटरोणउनावली मनतउं अकुलायोहो सी० ३९ मयली मांहिकंघर्या मुकुनइंजल
जलनापिकंहो मोनविणासंजोवणउं मरिवामनवालिकं सी० ४० एमविमासीमंनीयउं रोणीगलि
पासउंहो शोचनइ नारीकरहइ एदेषितमासनउहो सी० ४१ एतलैराजाआवीयउं तेपासउं कोइ
हो वाहिसाहो सुंदरी उभेगिथाडहो सी० ४२ कोइअरइंउ मानिनी कहइं किहिं अपमांनीहउं आ
सनाथीनाथिहा सागदगदवांणीहउं सी० ४३ अवरोनइ जलमोकलिउं कुंकितेचितनेणीहो
एतलइ घेजो आवीयो आपिउंतेपोताहउं सी० ४४ पाणीमस्तकमूकीयउं रांणीसुषमांनिउंहो
धर्मजमारो मारो धर्मजमारउं माहरउं मइआजे जाणपउंहउं सी० ४५ राजा घोजेउं पूछीउं किउं
वार लगावीहो हधिपणइं वलवेगसूं कुनसकिउं आवीहउं सी० ४६ सुखपापावपउइंनहो चलत
उपगथासइहउं पुष्करतउषासतउं सुगालउंदोमइहो सी० ४७ दांतपडइ वोषडेथयउ मुषि
लालधरेलाइउं नारिनआवेंआसनी नविसारकरतोहो सी० ४८ तिवरघटइं तनि लीलरी
कोनेनसुंणइहउं करकंपइं शिरधूजणी ऋटायउं धाइहो सी० ४९ ऋहापाकादोषए राजा
जीजांणइंहउं विषयथकीमनवालिकइं वयरागइआणइहो सी० ५० ससम्नतिनांमइं

रामज०

नलउ मुनिवर चउनीलोहो वनमे आवि समोसरिउ गुण आगम जो लहरउ सा० ५१ वचमें मुनवयराग
वकेसरनइं सामरइउ देदलिकाजि आवाधा पूरलोगउनो सरइउ सा० ५२ देइ प्रदत्तण साधुनी
पदपंकज वेदइं हउ मनमुष सेवा साचवइ कावयायनि केदइउ हो सा० ५३ चंद्रगति मुनना
रिसुं वचरपति वारेण रथ आवर्तजपर्वतनइं जइदेवज्जहारइदउ सा० ५४ वाकउ तोनिज
परिषदिकं रिषराइ विराजइं हउ आवानइं सेवा करइ रिषदेसण साजइ हउ सा० ५५ अविल
बीसीतानणउ लामंडल हावउरउ मातपिता सुत नारिनउ सवलावउ मीठउ हो सा० ५६
लामंडल सीता सही युगलपणइ जाया हउ मानविदेहा जोणवा कहीनइं समकाया हउ सा
५७ पिंगलदेवइं तु हरिउ निजवयर विचारी हो उववधिइ उपगमंदिरा परिहर कमारीहो
सा० ५८ जाती समरण पामीया लामंडलदेषइ हउ साधुवदिकं साचूं सङ मनमांहि विशे
षेहो सा० ५९ सुरवाइ धरतीपड्यो उवाई लीधी हो पमिन्नागउ मातीलणाई मई अविनय
कीधउ हो सा० ६० माता दिइं आसीस जा चिरजीवउ लाइइउ करइ घणूं पगिलागणी मा वित
कुलाइहो सा० ६१ धाइमिली योरी मजा लिइं कंठलगाइइउ मिथ्यादी मिंगी परी जगिएदस
माईहो सा० ६२ लामंडल परिवारियिकं आवुणपइ सजाइउ वयरागइं ब्रतआदरइं गुरुत ३४

सति

गाइं ला जो हउ सा० ६४ साधुनमी राजा नमी नमिराय वरायाहउ लामंडल सीतानमी निजमंदिर आया
हउ देहउ सा० ६५ ढालसली एगुणीसमी सीतापरणावीहउ केशराज श्रीरामनइं परिनारी सुहावी
हउ सा० ६६ [illegible] सर्वमुनिवर सलो सत्त्ववदइं सुविसाल शासनसोहवधामल
उ घटकायाप्रतिपाल ६७ विधिमुं देइ प्रदषिणा करजोडइं नरनाथ प्रसनकरै प्रगटपणइं निमु
णइं सयलउ सयलउ साथ ॥ [illegible] ढाल ॥ दम सुणावउ एहजी पुर्व सवत
रसाधजी सुषइपनउ अवदातजी वादिजमारउ जालसा सेनापुर वो सुंदरू लावनसार सुजोल
सा पत्रिविसंसदीपका सुताउ वाल्लिक अयाणसा ६८ साधानी निंदा करी लवमै समी अपार
सा० मावलुहारउ अवे आगइं सुणिइ विचार सु० ६९ चेदपुरइं सउदामणी धनघरि सुंदरि
नारि वरूण नां मइं सुत जाइयो वरनइं सुविपदारि सा० ७० साधानी सेवा करै श्रधालुसमला
इं सा० सुषइरवना अनुसारथी मतितउ उपजइं आय सा० ७१ धाई संडइं जाणीइ उत्तरकुरु
वरषेत सा० युगलपणइं तिहां कपनउ अलककर्मी नुहेन सा० ७२ तीनपल्पनउ आउषो सोगवि
सुरसुषसार सा० पुष्पला नां मिवे पुरी पुषलावलाय मकार सा० ७३ नंदिघोष राजा ललउ प्रथ
वी राणी होइ सा० नंदीवर्द्धन नां मथी नंदन नीकउ जोइ सा० ७४ नंदीवर्द्धननइं दीयो रायइंरा

०मजस. यतिवार सा० ७३ जसोधरपुर पाषनी आपडं आत्रणगार सा० ७४ श्रावकनाव्रत पालीया पंचमकल्पइं
देव सा० ७५ जयजयकार करेघणं सारइं सुरवरसेव सा० ७६ पूर्वविदेहिं इं जोणायइर वैताढिइं सु
विशेष सा० ७७ उत्तरश्रेणिनइं सलुं त्रिपुरनो सिंह देवि सा० ७८ रत्नमालि विद्याधरं विद्युतवती
नारि सा० ७९ सर्यं जयजयकारायो पुत्रसलंडे अवधारि सा० ८० रत्नमालि नृप बालायउ सिंह
पुरीनउं ईस सा० वज्रनयने जीतिवा मरमइं आणारीस सा० ८१ सिंहपुरीनइं बालतो बालेश्वर
नो बोल सुपसुपंथीधीनो रले सोइ रहिं कंविकराल सा० ८२ हरिनन्म तणउं सलउ पुरोहितनउ
जीव सा० ८३ पम स्मतं नोमथी देवदयालसदाव सा० ८४ सरस्वारसुर नो कथिइं आबोले एमसा०
उनकट पातक एहवु तुम्हने सजइ केम सा० ८५ नरिसुनंदन [illegible] सर्वकुमार इंराई सा० मांस
नजितधो नइसही विश्वबाहिरेन्याय सा० ८६ सोइपुरोहितएकदा संदिहणितं गजभय सा० नरि
सुनंदनराजा यइं परिआलितं गहताइ सा० ८७ सोशथिरणमइं हणि कं नरिसनंदनथी मि सा०
गधारि करि उपनउ नरि संदन तसनोम सा० ८८ जातो सुमारण पांमायउं नोधउं संयमसार सा०
कल्पआठमइं देवतो मोहंदेव उदार सा० ८९ नरि सुनंदन पांमायउं आजगरनउं अवतार दा
ग मानतलमांहि बलो कर्मनमरकइं नार सा० ९० नरगि पहुतउ उडुसरइं उद्दोशमइं जाइ सममी ३४

वि कीतिहिकारणइं घोतु कचोराइं सा० ९१ मांसतणानइं बाबरिउं नेहनाए फलजोइ चाउडरा
इ आकतनउं कोइ करे अपराध सा० ९२ एम मुनिनइं आउहरिउं कुलनेदननरपकाध सा० सर्वय
सा साधिइकरी राजासंयमलीध सा० ९३ स्वर्गसातमइ लोगवी सुर सुषनो विस्तार सर्वजयच
विकीतउं दशरथराइ उदार सा० ९४ रत्नमालीआवीकरियो जनकराइजी एह सा० कनकतन
नाइसलउं उपमन्युमसनेह सा० ९५ नेदिघोषयेवेकना लोगविसुरसुषपूरि सा० ससनलिएक
कवो सरि त्रिरामणिसूर सा० ९६ एमसुणीवैरागीयो वृतमागुरनापाय सा० राजामंदिरआ
वीयउं लोगलीयावनउंलाय सा० ९७ पुत्रपनउंताउजाया रत्नाचउ मेत्रास सा० रहीसघला
रागनो संयम साधिइ सुजगीस सा० ९८ एहवासमाढालमे पुवनुं वतर [illegible] केशरज गुरुना
पाया ढालीयो सघलउं पद सा० ९९ ॥ नउइं राग केदारा ॥ सरतनगो ऋक्षत्तमुणउ केत्रतन्नेसु
नार हेतनजाणइआ पणउं तेसाचलोगमार ९८ पहिलउं रुपतउं यकए बिरहकुम्हारोहोइ मे
रूमेसार बक्षरणउं दोडुपदेषइकोइ ९९ ॥ किंदयइ निलस्वरे ॥ नियरुरइ ॥ ल्लतन
केके यारे चित्तसुवित्तवइ पति सुतदोइजाइरे किसकरेसु उपावइं एकलो वामरइ नरयाइ
रे एविधिविलसतजाणि कं नविपडइं जोवउं अतिमतिसाजोरे आणघडायोरे घाटघडेघणो

रामरास
धडओमोमइं सोजारे ८०० प्रभुजीनोरे राषिउ नहिरहे तउ कुसुतनइं राषुरे वरलेमारइ जेउ माहरो
ते क्रम्ञ जउ सापुरे ९८१ विनयकरी नइं वनितावीनवई प्रभुजी करि परमादोरे आपणे वर मुफ जो ग्र
साषायत्रै जिमयामे अहलादोरे ९०२ नृपति सामनि सोसलउ जेवाहो तेमो गउरे चरण निवेशन
रासीनइं सकु मोगि मारगि लागउरे ९०३ प्रभुजी तुम्हनो संयम आदरिउ सरत तणा दिकु राजउरे
बोली वाचा पाली ओपणी उरणथाऊ आजउरे ९०४ एमसुणिनइं स्वामी कहइं सही अवदान विलि
इकोइरे एतले लषमण रामपधारीया बतलामानचराइरे ९०५ केकेयीनइं संवर मंडपिइं मति
उधो संग्रामउरे केकेयी रूडसारथी कुंजी तिवेबड़े तामउरे ९०६ मइंवरदाधउ मोउं हिं अवसरइं
सोत ऊ अवकुं आपुउरे देशवलायति पद वाआपणि सरतनणा अवधारेरे ९०७ रामकहइं
रे अति अनारी मजी एतउ आठउ कोमउरे रामअवहरे सोइ सरघजी सरतअवइ सोरामउरे ८
आंपिजवो मानइरे दाहिणा एकसराषा होइरे प्रभुजीनइं तउ भारसारिया सरत अनेकुहोइरे
९० ७ एनिसुणारे अमायसमाणना रामवचन अति रामोरे मनीसररे नेउइं जेतउइ सरतसूण
इवइ तामउरे ९० १० कुप्रभुसाथिइं यासु मंयमा अवरन बोजी वातउरे जेउउ बेधवपद वाने
घणी वसुधामइं विख्यातउरे ९० ११ करी सुणारे मनमइं नोयाबइं श्री पविधारुउ कामउरे करता

इ जैनलोग हसइं नहा उरूवथइं वकुमामोरे ९० १२ नृपतिसामइं उत्तम कोकुरे सुकुमतिस्या नेमो
रे मइंवरदाधउ घउउरूमानणा जेबओमे वाउगोरे ९० १३ सोवरधारी माइ मोजी मइं पतिउ
मउदेमोरे मातपितानी आगन्या पालया तुम्हसोनइं सुविवेकि पिउरे ९० १४ रामकहइं तुम्हने राज
नी नविवइं वोनाकोइरे तातनणाउरे बोलन सोपिउं हाथइ विमासी जोइरे ९० १५ आमइं पोणी
नीषउ घणुं बोलइं गदगद वाणीरे चरणकमल श्रीरामतणा नमी दोकरमस्तकि आणीरे ९० १६
घणा किसी एके लवणी करूं सउवातो कोउकेकुरे राम बतोकुराजा नहिधाकु म्हारा एरूजटेक
उरे ९० १७ राजाजीसे रामनदाकहइं सरतवचन एमाचउरे कुवनवासइं जासे तुम्हसरी पालउ
उम्ह एवाचउरे ९० १८ आगन्या लेइनइं पगिलागीकु मरबाणउ तववापउरे सरतमेलाइ गवइं
बइघणु दाखिपद्दासर चापउरे ९० १९ परवंकउपणामी माजीतणा वचनवदे समनेहोए धारा
नेदन कुबुजेहवुं तेहवउ सरतज एहोरे ९० २० वाचापाले वानइं कारणइं राजनरुनइं आलि
उरे सुकुबयवातउ राउकरइं नहा कुवनवासइं चालिउरे ९० २१ माजी साहमन आलेया घणउ का
यरनउ मतिहोवइरे योगवियोगजे करतानो कीयो उलललेइ मुहधोवउरे ९० २२ एमसुणीना
धरनी गिरपडी फिरफिरमुरछाया वेरे सीतलनाइ करि वस्त्र चेतनना होइं घणुं नरिओवइरे ९० २३

कौशल्याजीवउरे किहि पापी उ सुरवानी मरजातारे पुत्र वियोगाथी मरणलह्यो कातीकोपईजातारे ए० २४
श्रलखजी संयम मारग आदरई सुत होवइ वनवासीरे वज्रमयी छइ सही तु कोसल्या जीवइ कोइ विमा
सारे ए० २५ रामलछमि माता सम कहइ एम करे किउ सोसारे काइर नारी ना एकोमवे तु बइठा या
रोतारे ए० २६ केहरि एकाकी वन मइ फिरइ वे फरवा रूवीरउरे जननी तउ घरि हो बइठो रहे ना
लाई काइ अधीरोरे ए० २७ बाप तणा इरे शिर ऋण जे रहै तेतउ सुत नो दोसउरे सुकृ धरि रहतो
रिणन दिउ तरई ए० [illegible] लोउ एसंतोसोरे ए० २८ इम समझावीनइ पगिलागीयो अवर माय त्रिरना
मोरे श्रलखजी वनवासो नइ चालीयो हर्षघणो रोमांचोरे २९ एकवास मीठा लइ राम जी चाल्या छै वनवा
सइरे केशरा जकैकयी राणीने वचन करीजा सइरे ए० ३० [illegible] पतिव्रता व्रत
धनसाचवीयइ पति सुं प्रेम अपार ते सुंदरि संसार मइ दीसइ बइ दीवार ३१ चावै पावइ पहिर
वइ करवइ भोग विलास सुंदरि नइ मन सादरो जब लग रहई श्याम ३२ सुप मइ आवै आमनो
दुप मइ अलगी जाइ स्वारथणी सा सुंदरी सपनइ मइ न मिलाइ ३३ सुमरो नइ सादर थणइ सा
ता आप गिना गि कोसल्या पण मा करी चालानुमति मांगि ३४ [illegible]
बोलइ नाथ यांचि कइ बालिक नो परितेह हउ रूव सवर नयनो दिकइ पांणि ग्रहण समनेह उरा ३७

मरसिइ रावी घणी माचात्रीय नइ प्यारी हो साजी सोल सिरोमणी सस्वती माया रहि रहउ रा० ३५ वज्रपुर
वीरउ जा वइद तु मति जाइ आ पहंउ वोल्ही नहिय विदेसउ इंउ सहिणा अतिसंतापहहउ रा० ३६ वाल्हे
विषध प्रकार ना तु बइठी चालंतह उ दोहि लउ पाए चा नाणउ किउ हर सिद्धालंतहउ रा० ३७ दउ
ली तिम अमृत सघडी दउ लनउ लहिणउ वासहउ दउ लउ लाडिरू तावरउ रहिणउ निम उदा सहउ रा० ३८
कोमल कोयानाह री दउहिल उ धरती सयन हो पाबइ सयघि ना पविसो पायाथी रचयन हउ रा० ३९
प्रियबइ पग बेधन करो परदेशामइ नारि हउ नारी घरि हो मइं सली बाहरि पडी विकार हउ रा० ४०
पलनइ पेषी पंथीया उदिय मइ तन कालनरे नारी नयण निरषी लोउ पजइ अति जंजाल हउ रा० ४१
मां निरमारी सिघउ मति जोइ प्रियुलार हउ सासरा सेवा कांयं प्रियसे विउ सोवूर हउ रा० ४२ आइ
एहवु कोक हइ मइ अलगी न रहाइ हो० नारि कही तर बोहडी साप्रिय रही सुषपाइ रो० ४३ वोरस पूर
रषनली अरधांगना नारी रतउ नाम हो तेकर उ अलगा किम पडइ प्रियना मि विश्राम हउ
रा० ४५ जिह नारी प्रीय मांनीय उ तिहि मांनिउ जग दास हउ नारी न उ यरवे सरू ना थनर
नो सदा सहउ रा० ४५ प्रियउ उ आगइं संचरइ नारी पाछइं जाइ हो चरण कमल कारण का

रामजस कातनिलागांसुपथाइहो ४६ प्रियनंमुषन्यवलोकतो नयणे अमायलरायहो दुरवनो सोवरसत
तणे एकषिणमांहिमुलाइहो रा० ४७ जलहर नइ ऊठिइं थको विद्युतजिमसो लाइं तिमश्री
रुजोनापाषती नारिरहइंसोभाइहो ४८ एमकहानइ नीकली लहुसासूआसीसहो आतम
रामजरामजी मनमइ एहजगासम्रहते रा० ४९ हूइबइहेसिइवली जेपतिलगनानारिहोति
णमइ आदिउदादरइ लइ सत्यवतीअवधारिहते रा० ५० नगरतणी नारिमिली रावनीअस
रालहतं पतीव्रतामांहि घणे महराइ सुविसालदत रा० ५१ कष्टपणइ वनवासनतं सुयनवि
जाणइजेहते उसयुकलअनुआलणी आजअबइत्रियएहहते रा० ५२ दषजिसतेषोसेवरि
तयमांहीवनिवासहो कोइनदासइंआनरूं साहसनइसीवासहो ५३ आननतकं अतिउ
जलो आरतिलवलेसहकं सायवतीएतोमनी षिनुसाथइ परदेसहते रा० ५४ लष्मण
कोपिइंकलकलिकं कालतंपीलतंथाइहो जाणइंअबकरियइकिम् मननुकोवहरायहो
रा० ५५ काइचलीधावरतणी रामत्रिरइथी मांउहो नरतउसरलससावीया कपटकटीएराउ
हते रा० ५६ रिणलउ तारणत्रिरतणते तातकोयोसुविचारहतु सरषसलचक्षुसाइजी कांजे
[redacted] सारहो रा० ५७ सरतपठीदानीनइ रयपदवीजिअजुस रामराइनइआपानेसांइ ३०

देषिसकाजहते ५८ रामनलेसिइंराजने दुरवयांमेसिइंतातहो एउतपालउवावणते करूंविस
सीवातहो रा० ५९ दुरवःमतिपावउतातजी नरतकराएसाजहो रामसत्मांकंथरिरक तउतते
पावुलाजहो रा० ६० सेवककरूपिहोइनइं रहिसते चरननइंसाथहो पिउमतिलतेकरिमुघरा सुज
सदायतेजगनाथहते रा० ६१ तातनणइयगिलागिनइं माजानइ परिसामहो करिनइलागेचा
लिवा मायसिषदीयइलामहते रा० ६२ वछस्यव मतितोहरी मरूमहुतुफमांदिहते सायनतजि
वउलाइनतं लोगवचनएमांहिहते रा० ६३ आइमिल्मतेउतावली काइकराविलेवहो रामतात
करिमानजे कहइहसुमित्राअषेहो रा० ६४ कोसल्यापगिलागिनइं चालणलागोजामहो
कोसल्याकहइंमाइजी लष्मणसाथनाइलोमहो रा० ६५ रामगयो जेहीजाइ म्हारीकवहबोलहो
लष्मणकहइं मातामुणो नतजितेरामउमालहते रा० ६६ वनवासएकाकीये आयरामजीआत
हते जनककरूंसेवकपणे नउलोनतिमुफमातहो रा० ६७ तीनइंमांणसचालीया आणनाथ्या
णदहते सायरनीपरिदेषिवोर नगवीनहीमंदहो रा० ६८ राजारांणीआवीया आवीयापरिवा
रहते बालअनइंगोपालजी मिलियालोगअपारहते रा० ६९ पगिलागीवऊडावीयामाता
जीनइंराइहो करिदिलासोलोगनी रायवजावनिजाइहो रा० ६७० ढालसतो[redacted]

रामरास नवा सहो केश राज अनकर्मा घा होसिइं लील विलास हो ७१ ॥ [illegible] ॥ गाम गोमना गाम
पति करइ प्रभु अरदास देवइ हाथो निककरउ सवइ हरोवास ७२ रामनमानइं वातए चालिउ हा
सलजाइ गामनगर पुर पाटणो किहो हा नर हाइं ७३ राजन केने सरयजी आको सइ निजमाय राम
अनै जस्मण तणो विरह सुमित्र नविजाइ ७४ चारितनेउ तो वलते राजा दशरथ ताम सामंत मंत्री
मोकलइं वोहडावण आ रांम ७५ पश्चिम दिसि जातो थको आणि पकं तीतिह करी घणी अरदास
पति रामनमानइं एह ७६ पाबाचाले रामजी उपाबान चलेत लागइं कदहि बाकडे तेरथी
साथ चलेत ७७ ॥ [illegible] ॥ आगइं जातो अटवी आवए नरनविदा सइं अधिकडरा
वए उरावणी अटवीयमोरि नदी छे बीही मणो कहो कलो रोइ साथइं अजो प्रापुर धणी सामंत
मंत्री घरे जाऊ कहवइं आगइं घणउ कराल कहि कमाय बापहि आजताई अम्हनणउं ७८ ला
ई लरनहि हम करि मांनयो तातसरिषउ सदा करि जो णजो जो णजो ताइ लरतजीनइं आंतरो
कोमति करो बापनायासऊ सरिषा पाटपति तउ एषरउ सामंत मंत्री नहार हाया आषिश्री
सहालवइ धिगजमारो माहरोर रामनजि घरि चालवइ ७९ तीनइं माणस तेरा तरं गणी
ऊतरा पारे क्रूपी घणी ऊंडी नदी कांती तिरीनइं कांबोगइ सामंतमंत्री घरि आयां राइद्यां ३९

रथनइं मिल्या ८० रामन आवइ साथ ... रापइ राजा दशरथशिर डोलावीयो गोलावीयो दशर
थमस्तक लरथ सुसाथइं सलउ राउपीलत्र अरति टालो कहे रूप उतो वलतउ लरथ लाथइं राजन
करूं कोडिवा लाह कए राम आणे प्रमवाण करूं विनयविवेक ए ८१ राणी केकयी आवी साथइं रा
जने बोलइ राघव पाम इए पाथइं जराघव राजन चले रायसुं आवो कहो लरतनइ तउ राज देता वा
चवरनो निरतहो राज अरथो लरथनउवे रामनइं तेडाकरी राज आपी मुदि हथापी आपइ हे तउ मेय
ममरी ८२ अणरे विमासितउ मइं को धुं पफु अपजस लो ४ मइं अति आकरो आकरो मइ एलो यो अप
जस कोगकोसरी यउं नहो तोनहो विथ राज मुणता हो इं फाटइ छे सही लरत सुकं आगु जाइ कहू
बानतो कोडिए रामलष्मण सतो साता आणि सुरे बोहाडिए ८३ अनुमति दीजइ सुत नेआजए स
बरी चाल करि वाको मए कोसकरि वां अबरी चालं लरतने मेत्री सरू साथि लेइ वेगि चालिओ
नरावारयवरू दिवसनवेजाइ पफूती देषही तरूवर तले रामलष्मण सत्ता सीता दरिषीत तउ अ
टकलइ ८४ रथथी उतर आधा आवए वहवहकरहतो अति सुष पावए पावरी अति सुष आवि
सनमुषि रामना पगे लागीयो वेविशिरनाती लगायो प्रेम अधिको जागीयउ सुमित्रा सुन सतो
सीता करइं तव परलोम ए हायइं धरियोने सारीयो पुछायो सुषनां मए ८५ लरतनलो परियणि

रामजस लागारहिकै श्रीराघवजी सुषअधिकवेलहाते सुषलहितेअधिकंबोहगलमै घालिवइंआयापणी श्री
षिआलीवहीचाली भरतजी साईतणी कहालवातविसेषचिवरी प्रहहीपरगटपणे आजेबअतिसो
मिजानइं सोमनिजरिनिरषणइं ८६ अलेगततनीपरिमुकवेजाकरी किकरेपधास्यावनमइसेचरी
संचरीआयावनमांहि वेगसुतमरघुपती कपटकेलवणीयमांहिं कनसमकहुरनी गाइआह
णबालअबलामारीयायाएए अबमोहेलागतेकवककनते भरतनाथइंआपए ८७ आइअ
धुवतेराजकरीजइए लोकांकेरीआरतिहरिजइए हरीजईअएअरतिलोगां राजबापदियरिह
रकउमहलतांपुत्रराजमहे तस्तलाषइगृहवरिते मंत्रीजालषमणपालीयोकै बतेधारकंलक
राजाधिराजारामराजा लोगवसघवासकै ८८ केकेयीकेहे राघवजीसुणाते साईसगतोसरअवे
धर्ण अवइसगतते भरलकेरते बोलतते अवमांनीयते मायनामनुहारि मोराजाणी अधिकन
तोणयइ जनकदोषनदोषलरतहि दोषएवइ मादरतु त्रियसूलाविइकलाविइकोयो अविन
टालहरते ८९ नारीसहिजीकलिकाकाकरी परघरलजेवानइंकमरी उमरीअधिकाकरणास्
डुदाइडषराजीतणी अपराजितानइंसुमित्रानेकरी अतिपाजानणी कनरीतिनोपीघणके मय
श्री एहअवगुणमायनाहोइमायरसहतेमयलीमगणेतेदसुरारना ९० एमकहेतीश्री ४०

से लोभए चलारिरे वारु लाषए लाषरमांकेवनसाकु कोनमीमदेरामजी लोतिदाधु राजभरतहि सा
षिमुकअलिरामजी तानजीवइं कहाजाइ बोलकिते लोपाइजी लायन्याई कहितकरिवु सदासुं
लिमाइजी ९१ सी लोआणि तेजलसु विवेकजी रामकरेजी लल अभिषेकजी अभिषेककोधो भरत नामदा
ललरूपालए सामंत्रमंत्रीशाधिराषी टालीयत्र जेजा लए माइसणमा भरतरूपहि लला वणलल स्री
परजनी देइदषिणदमिइंचालिकनहि राजत्ति अजनी ९२ पुरीअयोध्याआयो भरत रामादराइ
राजकरेतए राजकरिवइं लोकसुषीया नहिअसुषलगारए धर्मकर्मचलेत अधिका राजनेजअप
रहइ देवगुरुसगुरुसवा दयानइंप्रतिपालवइ सुरवेसासुजसपायते कलतणाइतजुआलवे
९३ राजा दशरथबकपरिवारसु मनमइंहरषिले कारजसारमु सारिसुकारिजरिवइम्हारु
राजबेतांगामए सत्यव्रतिमुनिंदआगइं कहइमस्तकनामए लेइ[illegible]कोरिजसारिते ठालएते
वीसमा केशाराजकहइंसुधिनिनतंजसधर्मसुमनसारमा ध्याजाश्रवणीरामेहइ ...चालना
चितवावमु आणंलाउल्हासि चित्रकोटिदिनकेतला रहाधाकरिनिवास ९४ आगइजीतासापीयो
अयवंतीवरदेश निर्लंजनघांतिकजई लिइंविश्रामनरेश ९५ सत्यवतीघाकाघरी वटि तलि
सोवइजोम लेस्नणसाथिबोलावायो इहिअवसरआराम ९७ कजेइकओदेषायइं अवही

नेमजस कउएदेश कोइमिलो तोउवायइ सासतंठे सुविसेस ७८ पेखीव्रगरो नोमथी वातामे वावाय
आवीआगइ नाकलिकं श्वडतवरूपालत ७९ ॥ श्री वी०॥ धर्म नरेमनलोगमोरे एढाला॥ पं
चामावात कहइ धुरिछेहधार काएकजउदेशोरे दासइरे दासइ वइ सुहामणउरे वारू मोदि विसे
सरे पं० ८०० देशारे नगरी उजेणीसलारे सिंहोदरतिहां राइरे रूउउरे रूउउनइ रूलीमणो
रे कोइनसंग्रहाइरे पं०१ वज्रजरे वज्रकर्णनोमि सलउरे तेहनइस्वामेतरे देशागरेदशांगपु
रनो राउ थउरे गिरुओनइगुणवंतरे पं०२ हाउइरे हाउइआहेडइ धणुरे नगिणेपापलगाररे प्रात
उरे प्रीति वर्द्धन नोमथीरे दाठ उतवअणगार पं० ३ उसउरे उसक कायोत्संगमेरे रहे सीमंतनाम
रे किमुरेकिमुकरऊ उतारहारे करोआपणुकामरे पं०४ वन मइरे वनमइं कोमकिस्यू करोरे
करोतपउपवासरे जिद्धारे कर्मपछे हइंपालतारे साधीजइं शिववासरे पं०५ हिंसारे हिंसादोष
वतावी थारे समकितेत वस्तपालरे श्रावकरे श्रावक ऊउ सुंदररे जीवदयाप्रतिपालरे पं०६ देवउ
रेदेव नमे अरिहंतजी गुरुथउयसुसाधरे अवरोरे अवरोशिरनामइनहीरे धर्मरनेमेलीधरे पं०७
नरवररे रिषिवादोधरिषिरिआवायारे चितचितमुचितएमरे कोधउरे एहअभिग्रह्याकरो
… नेमर पं०८ राजारे सिहोदर … कीजइरे कोइ उपावरे नेमजरे ४१

नमुपक्षइजिनआपणउरे इस्वनचिपा … पं०९ मणिनारे मणिनी कांधी मुंदडीरे मांहि रावितु
परे श्रीमुनिरे श्रीमुनिसुव्रतस्वामिनउरे एतउ पाव अनुपरे पं०१० माथइरे माथइ चतुरे हाथनइरे सलउभ
नावइराइरे मनमुरे पगवांदइ अरिहंतनारे आयुकाद्यूजाइरे पं०११ राजारे राजा रीसाणउ घणउजा
णि उजव एमनेरे वालउरे वालउ एहनइ कोनहीरे वालउ जिनवरधर्मरे पं०१२ कोइरे कोइनर उप
गारीयोरे आवी साथे एहरे नपतिरेस बइतइ कितेलहारे नत्रफिरिसा वडतेहरे पं०१३ नगरीरे
कुंदपुरी रलीयामणीरे तिहां वसइ बहुसाहरे यमुनारे उदरि सुत उपनउरे विद्युत अंग उच्छाहरे
पं०१४ अनुक्रमइरे यौवन नी वयपामीयारे लइकिराणउ सारेरे नगरीरे उजेणी आयोचलारे
करिवानइव्यापाररे १५ वेस्यारे वेस्याकांमलतावरे तिणसुं राम्यो सोइरे पामउरे साथे धनस
घलोसहीरे रहि उनिरधनहोइरे १६ पं० राजारे राजानी पटराणीनारे श्रीधरीनइ कानेरे कुंडलरेकुं
डलवइ तेतेदवारे हेमुकनेसु आलिरे पं०१७ तवहारे तवनावइ मणिसामनीरे कुंडलआवइ दा
मिरे चोररे चोरी करिवा चालीयउरे कुंडललेवा कांमरे पं०१८ राणीरे राणी राजासुं कहइरे
कारेउदासी आजरे दशांगरे दशांगपुरनो नायकरे मारणकेरो काजरे पं०१९ रजनीरे रज
नी वइरणि कइरहारे कदिपावुपरतातरे साईरे नाइसुलने साइलारे करूमकनोघातरे पं०२०

रा०म३म एहजेरेएहमेतिमईसासलोरे कुंहलचोरीलाजिरे आयोरेआयोउरकदवालागीरे माहमीनेहंमतिसा
जिरे पं०२१ निगुणीरे निगुणीएपुरसाजीयोरे कणतिणअधिकअपाररे वातजेरे वातकरंतीआव
यउरे दलबलननेंनहिपाररे पं०२२ विद्योरे वीद्योपुरवरचोपघइरे चंदनइंजिमसापरे आवणरे
आवणजावणनकोलहइरे लोगोलागउंपापरे पं०२३ राजारे राजाहतउमोकलोरे नृपतिपा
सइतामरे मुद्गरे मुद्गाउंकोमंदिरइरे आचाकरे परिणामरे पं०२४ नृपतिरे नृपतिचापइएतल
उंदेवगुरोविणदेषरे मोणसरे मोणसतउं नमिवउंनहोरे नेमअछेसुविसेषरे पं०२५ पोरषरे
पोरषतउं एकोनहीरे धर्मतणउरे दिठावरे वाकोरे जिकेहोकुहइंतिहोकरू अवरनकोइकु
होवरे पं०२६ एधर्मजेरे धर्मह्वारदिइमोसणोरे धर्मकरेवाजाउरे म्हारेरे म्हारिइंधर्मसपाइयोरे
धर्मथकोसुषपाऊरे पं०२७ एकहीरे एकनमानइंराइजीरे कोणइंअतिअभिमानरे रोकिरेरो
किरहिऊसऊंकोइनइरे आरतिनउं असमानरे पं०२८ लूटेरे लूटइंदेशदयामणउरे रष
वालउंनदिकोइरे तेहथारे तेहथीदेशदयालजीरे गयउंसुऊजडहोइरे पं०२९ कुंपणिरे ल
इकुंकुंवउ आपणोरे अलगउंगयोअपाररे बाल्यारे बाल्यामंदिरमालीयारे नोणइंदयालगा
ररे पं०३० म्हारीरे म्हारीनरनीठापरीरे लोगानाषपाडिरेजाउरे लेवानइंषउलोकडारे घरिमे ४२

नारिकहाइरे पं०३१ लडुरे लडुनेरेसलासणारे दाहुदर्जीनअजेरे देवउरे देवनरूसमदेवतुरे सरीछेवे
बिनकजेरे ३३ तेहनोरे एवचनश्रवणसुणीरे आणिदयादिलमांहिरे दीधरेन्नस्वर्णमयसत्रजोरे दलि
दहरइंनपछोहिरे पं० ३४ चालिरे चालिउंचरतेपुरलगारे देवलिदेवजुहाररे चेइजेरेवेइयनस्वा
मिन्लवरे एज्जिउंअष्टप्रकाररे पं० ३४ लक्ष्मणरे लक्ष्मणपुरमेमोकलिउरे तेनृपतिनइंपासरे उत्तम
रेउत्तमनरअवलोकियेरे पायोअतिउल्हासरे पं० ३६ सवारे सेवकरूपिइंसाचवेरे लक्ष्मणलाघइंलो
मरे देवलरे देवलमइंबयठाअछेरे सीतासुश्रीरामरे पं०३७ नृपतिरे लक्ष्मणजीतिहांआवीयउरे श्री
णपाघरिबोलायरे भोजनरे भोजनभगतकरासलोरे रामतदासुषपाइरे पं० ३८ लक्ष्मणरे लक्ष्मण
जीनइंमोकलइरे राजापासितिवाररे आणइरे एहउपद्रवटालीयइरे जगिमोटोउपगाररे ३९
राजारे राजाओलमनावीयोरे सरतनलइंनृपालिएहजरे एहउपद्रवसांसलोरे टालिसिइंततको
लरे पं०४० सेवकरे सेवकमेअनुशासनारे राजाजीनाजोइरे परण्यारे पाछेलातेमारिषुरे अणपरणा
सुरोइरे पं०४१ एहजेरे सामंतहइधुरिमाहरोरे मोटोसाथिगुमांनरे वांकजेरे कोढिनसंधूंजउंकर
इरे तउरे किसिराजानरे ४२ पुनरपिरे पुनरपिलक्ष्मणआकहइरे दोसइंकुणअन्यायरे पालेरे
पालइंनिश्चउंधर्मनउंरे कहिधाइंसिउंजाइरे ४३ आपुरे आपुतोनविकांचाटोरे चितमेआणिस

यांकारो सायररे सायर अनि आणायइरे लरतलूपनी आणरे ४४ बोलिरे बोलिउ राजा अतिघणउं
रे निसुणी लरत वचणरे लेइरे किंके नवि आइ एहनेरे पुरषोत्तम प्रमाणरे पं० ४५ लखमणरे साथे
नवलूपालतुरे सोरोमांहि लोररे उगारे उगो आवि कता वलतूरे जोकं घाहूंजोररे पं ४६ आयारे करि
आउंवर आकरोर आपुणवइरे अथालरे लखमणरे उगाई लाघूंसहार हाथीने आलानरे पं० ४७
बांधारे बांधी विधि वजा समुरे नावी आइ डरिरे उवलिर गज अपारि घी बांधीयारे आलिके राम हजू
रिरे पं ४८ राजा रसिंहोदर पगि लागिकइरे राघवसु नाथंनरे जोणारे मइंचनजी उमहू अबगरेको
एक लेचाषे तरे पं० ४९ म्हारो रघ मजिउ एअपराधकोरे आपउं अबस्मादे शरे माहारे मादो मे मन
मेलवतरे लोप इंतोमनरे शरे पं० ५० बंधनरे बंधन बोड्या राघसूरे मेलवीया चपदोइर घरिघरिरे
घरिवारि वधा मणउरे आनंदवरसाजाइरे पं० ५१ आधोरे राज दायो सिंहोदररे राघवजीनी साषिरे
मरतरे मेरिउ लस सेवकपणउरे आपुषि साई साषिरे पं० ५२ ऊंमलरे मोगला यां रांणाकन्हेरे विद्युत
अंगद्दादाधर कोधउरे नगरी मे अधिकारीयोर पांचामे परसिधरे पं० ५३ कल्यारे सिंहोदर राजा तणी
उ तीन सयां परिमोलरे आवजरे आठे आठे लूपाल्नेर व्याह तणउ मलणरे ५४ लखमणरे लखमण
नेसुता कैनहारे वनवासी जइबनाइरे पाछेरे पावइ परणेसिउ सकारे राजा निजघरि आइरे पं० ५५ ४२

दालगरे दालललो वोवा समीरे राजा रा पाटिकोरे मुनिवररे केडा राजपरत षिपणीरे सराया काज अनेकरे
पं० ५६॥ आसाराग दुहा॥ रतिरही या रामजी॥ मलयाचल नइ जो मजाते विवइ आवाप देशमुनिजेल
नोम ५७ तिसि थापा सीता घणी॥ न रूलतिह लिइं विश्राम जललेवानइ कारणई लखमणधाया तो म ५८
आगइ एक सरोवर तू दी उ अधिक अनूप जलकीडा करिवा तणी॥ आयो छे एक नृप ५९ कूवरपुरन
उ उवी साबडे जो मकल्याण सुमाल॥ लखमण नइ देष्यो घणो राचि के रूपरसाल॥६० आकारिकरि तेल
षो एछे कोइ नारि आमे चण सो जनतणो॥ वडपाकं उविचारि॥६१ सोरकहे जिम सैनम्हा लाई बहुवन
मांहि मेवी चार सामैतजी॥ आया लेई उवाहि॥६२ सोनकरी नीजनमली॥ आरोगा रघुराइ वन नावे लेलूप
नइं सहजयणउ न मथाइ ६३॥ [illegible] एटीने॥ आलनरे सीता पतिकेरउं जिह
जिहां सेचाररे तिहां तिहां नाकाज समारइ करी उपगाररे आ० ६४ कूवरपुरपति बोलीयारे स्वामिसु
णउं सुविचाररे वालि षिल्प राजा ललउरे प्रघवानउं लरतारेरे आ० ६५ गर्भ बनी रांणी जइरे एतलै अ
सुरां आइरे बांधिलीयो नेराइ जीरे लोउयो न विजाइरे आ० ६६ रांणी जाइ पुत्री कारे मंत्री साषित प्रतरे पु
त्र पनउतो थारे रहइरे आगईहो घरसूतरे आ० ६७ सिंहोदर सुत सांलला रे थापी वात प्रधानर वालि
खिल्यघरि ना वहारे तवलमए राजानरे आ० ६८ पुरष वेष धस्यो स्हारे बालपणा थी जाइरे मातामेत्री

बाहिरजरे सेदनआलइंकोइरे आ० ६९ वसुधामइंविष्यातरेजिरे न्रपकलाणसुंमालरे मेत्रीमोटा तजेक
हिजरे राजनलइं जरषवालरे आ० ७० अधमणरे असुरां तणारे आवुक आपर अर्थतणा अरघानी
सारे अरू न विगोडइ बापरे आ० ७१ सिरोद रिषीराषीयोरे नज्रकर्णरपजेमरे असरांथी उबारीये
रे बापदमारो उतेमरे आ० ७२ रामकरइज तरत एहरे परहोमकरि सिवेषरे नातगोडावी नारहो
रे ओझ जासु विसेषरे आ० ७३ मासाभोर्गादक्रीडिआपारे कन्याराजारूपरे लसालजोनिइव्याहीरे येरे
मेत्रीकहइंअनूपरे आ० ७४ रामकहइंवनवासमइरे होइ आविउआ मरे तबालणि घरि बेइगरहजरे
पाबइसिरिसइकोमरे आ० ७५ तहतिकहीदिन नीसरइरे प्रभजीपश्चिमरातिरे आगानइ उगच
लिजरे न्रपजीगिउ परभातिरे आ० ७६ नदीनिर्मदा ऊतरीरे वेध्याचटवीजाहिरे लोगे तजे वरस्या
घणुरे जाईबेयरवाहिरे ७७ दसिलनी दिसिअनुसरारे कंगकीनरूनरिरे मीवजेकजेदीमइ नदी
रे जाइमारगस्रिरे ७८ गुण अगुणनेगिलइरे नगिलइघाटविघाटरे डेबलनइंएसोचनारे ब
नायाउउउ वाटरे ७९ असुरांनी सेनाघणीरे दलबलनउनदीपारे देसघातनइनीकल्यारे
मिलीगया तिहिवारे आ० ८० सेनामइसेनापतीरे तरूणपणउ बहुतामरे सत्यवती अवलोक
लोपुलोअतिकलहीसरे ८१ असुरांनइं तेजकहइरे उदालजेएबोलरे धसमसकरतो धाइयारे

लोपति ततकालरे आ० ८२ लखमणलाघइंरामसुरे उभेरहिउवियथासिरे धनुषतणा टंकारथीरे असुर गया
तेनासिरे आ० ८३ सेनापतिसामंतसुरे लागऊ राघवपायरे चरणुलावइंआपणीरे ऊतऊ आगइआइ
रे आ० ८४ कोशंबीनगरीतणारे वेस्वानरअभिधानरे श्रीमुणसाथिआधणीरे जायासुत अज्ञानरे आ० ८५
रूद्रदेव अतिरूड़रे करतउकर्मकरूरे चोरअम्माइनइंसिरइरे बाजइंअपजसतुररे आ० ८६ चोरीकर
तो सारी योरे अलीनजेओदिसेरे न्रपदाधुतेतव आवकइरे छोडाविउसुविशेषरे आ० ८७ शिष्यादाधीमोसण
रे मकरेरएहवुंकोमरे पछीमांहिआवेतारे मइपायोविश्रामरे आ० ८८ पहिलपतिएकऊउरे तेजस्तायश
चेडरे कोइनदोवइंसामुहजेरे वरतइंआंण अषडरे आ० ८९ बांधिरांणीराजीयारे पाडुसघलइं आसुरे अज
ऊयोमुकऊआणीयारे देवजमारइंदासरे आ० ९० अविनयकोधऊं आकरोरे वसजोमुऊअपराधरे साम
वडुबइंमाहरूरे शत्रुनेंदर्शनलाधरे आ० ९१ कोमलताउंआदेसजी दिऊंपरतषआजेरे वालिखिल्यनई
छोडि दिइइरे यहलीकरिएकाजेरे आ० ९२ वालिखिल्यनेछोडिकहरे आमुरीकीयोपरिणामेरे वालिखि
ल्यकोरिजोडिकहइरे प्रणमिऊंबलजीरामरे आ० ९३ रामतणाआदेशथीरे दीधउपुरियऊंचायरे कल्यां
णमालाकुमरीरे देखंधासुषपाइरे आ० ९४ हालसलीपणवीसमीरे बंदीमोचननामरे केचाराजआ
रामजी कोमकरेअतिरामरे आ० ९५ ॥सारंगरागदूहा॥ विध्याअटवीअतिक्रमी मेलंताबऊंयाम

महानदी तापीतिरा उरसा आपातोम १८६ पातग्रामग्रामाविषइं अरूणएइवो ग्राम निर्जलनइं निर्धनपणा लोग
वसइं तिनोम १८७ कपिलनामइं अतिक्रोधायो ब्राह्मण महाकपाले अग्निहोत्र कर्म चरइं गर्वइं इरितगात्र १८८
सुसर्मा सुखदाइनी ब्राह्मणि गुणनी जोण मीगनोलमानेनी वसुधामइं वखाण १८९ सीतानइं तिसव्यापना
पाणी पावा कालि आइगया तपणा मते वेषपंथनतं साजि १००० भाजन ... जी १८ ... रामयथारीया
ब्राह्मणकेरइगेह आदरदिई अति ब्राह्मणीजी आगणइ धर्म सनेह रा० १ आसणमांडया जुजुवाजी देति अतिस
नमान शीतलपाणी पाई योजी जातेअमृतपान रा० २ वनलइं ब्राह्मण आवीऊंजी प्रगटपणइ रे विसाव
कोपकरई अतिक्रोधायोजी नामविवरइं वाच रा० ३ ऊलणमयले लूगडेजी घरिमइं घाल्या आज अग्निहोत्र
अपवित्र योजी कीधउ कोरे अकाज रा० ४ निकलि म्हारा घरथकाजी नहिं नरि तोडुहाड नाम निनतं मुषसुलस
बाजी आयतलेइ ऊमाउ रा० ५ शरणइ आइसुंदरीजी माता राषा प्राणि नत्रे पालिन टलै पापी योजी लक्ष्मण
आयो ऊठि रा० ६ पगसाहीनइं फेरीयोजी उबाली आकास नीषणला गइ ते जेत रहैजी ब्राह्मण पायो त्रास
रा० ७ पाउइं अमकी पीयराजी मिलाया लोग अपार सेदलहानइं लाबहिजी फिटरे फिटगमार रा० ८ कादा
रूपरि करकइंजी कर नीसो जनकोइ करूणा आणी रामजीजी दीधउ छोडाइ सोइ रा० ९ तिहां थकी चाल्या
गयाजी वीजी अटवी मांहि काजलवरण सामलाजी परम नयी करप्रांहि रा० १० मलहरलागो वरसवाजी आइ ४५

४६ गइवन मास वडलातलि वासो रसाजी आंगी अतिउल्हास रा० ११ अधिशायकदेवलाजी प्रस्थापमइं वास एते
हनइं मारइं नहाजी ऊत अधिक उदास रा० १२ इनकर्णनामे नलोजी एसउ रासिएहा भर जाइपुका सोदेवता
जी तवनेकरइं सुविचार रा० १३ लागहानमुरपा पायाजी अवसर रूकतएद एतउमो रायाव णीजी आयाबड्
उकंगेह रा० १४ वासुदेव एअष्टमउजी अष्टमहाबलदेव महापुरुष प्रथवी विषइजी कि ऊनकरी तइसेव रा०
१५ नवयोजन चउआवणइजी लांबाजोजन बार कोटअनइं वरपातिकाजी ऊंचा मेदिर सार रा० १६ हाटनवा
बऊवसतसरजी घरोनधननउपार रूपवी वीवाग मेजी सोनाचिवध प्रकार रा० १७ पुरी अजोध्या सारिषाजी
रामपुरी अभिराम राति विषइं रचना करीजी देवतणो एकाम रा० १८ मंगलशहद सुहामणाजी जाणिरंराम
नरेश नगरी नयणे निरषतांजी पायउ सुषि सुविसेष रा० १९ नीणाभार विसेषसुजी इनकर्ण वरजस्स दा
वत्रे ऊनतं आगलइजी सुरूनरूनतं प्रतस्त रा० २० विस्मयचेतचिचा रीयोजी राजा राममजिवार पचकवहइए
मइंकायोजी वामनरुपे विस्तार रा० २१ देवव सेवाकारणइजी आ ... अवसर पामि ऊनू सेवकलावास
उजी छेडउ म्हारा स्वामि रा० २२ परुपुरुषसेवा करेजी पोषइं परिघलप्रेम रामरहइं सथमइं सहजी पुण्य
तणाफल एम २३ कपिलविप्रइंधणलणाजी आटमामइं आवंत रतननगरी निरषतोजी अचरिज अतिपावं
त रा० २४ नारीरूपइं परूणीजी विप्रइं रवाऊम नापाईनतन पुरीजी वासिइं वसइ श्रीराम रा० २५ याचिक

रामयश नइ जलहरयरिइजी वर सइ कंचणधार एमसुणतो घलसलिजेजी ब्रांम्हणलागतेवार रा० २६ उन्मदलिद्रीकृअ
तुजी वादिजमारोजाइ जिमकुयावुदविणाजी नासतै सोइउपाइ रा० २७ मामा घइनगरीतणाजी द्वारख्वइ
वरमार रखवालीदसहारदैजी कोनलदइ यइसार रा० २८ एरख चोरेचेलहेजी वंदनननेअधिकार यविक
दोइजाइ तोजी कोनकरइ कणवार रा० २९ साधुसमी पइंश्रावीयोजी श्रावुणश्रावकदोइ घरणिकाधाश्र
विकाजी [redacted] ३० उबक षिनविधिसाचवीजी रामसमी पइंश्राइ उत्ताब्रांम्हणब्रांम्हणीजी काइ
नकहिणतेजाइ रा० ३१ लखमणबोलावीलीयाजी तवलेदिइश्रासीस दाधावेबिलदसिणजी सफलाकरीय
जगीस रा० ३२ घरिश्रावीधनघरचीयोजी लीधतेसंयमसार कारिजसारिश्रापणतेजी एतरस्नो कुपगार रा०
३३ श्रबचोमासेतनस्योजी घरजो चालणहार यसइंदाधउ रामनइजी स्वयंप्रभवरहार रा० ३४ लखमण
नइं तीडंकदीजी तेजडीयामणिरयण चूडामणिसीतातणजी उपजाविकेश्रतिचइन रा० ३५ मननावेबित
रागनइजी संचलावानइदेन वीणादाधविशसजी मयलीसाजसमेत रा० ३६ पकुचाबीया बवेवलेजी देवमह
सुषदाइ प्रसजीश्रागइचालीयोजी नगरीगईविलालीइ रा० ३७ ढालनलीबावीसमीजी देविकायोश्रनुराग के
त्तराजे मुनिसाधयतेजी रामनणउसोलाग रा० ३८ ॥[illegible]॥ संचरतांसुखमइसदा सांफसमयमझ
कोइ विजयपुरीचलिश्रावीया वासतैसतेइसोइ ३९ नगरीनंतद्यांनमइं घउलतेश्रवेविशेस मंदिरना ४६

श्राकीरसे वासचंवसइंनरेश ४० महिधरमहिमानिलकै राजापालेराज ई बोणीराणी तणते करायइके तसकाज
४१ वनमालापुत्रीनला बालपणाथी एम टेकयहालखमणवर् श्रवरवरूतोनेम ४२ वनचासतेश्ववणेसुणी
राजाकरइविचार कदियरिश्रावीयरलसिइ यारहेतणएवार ४३ यो टापुत्रीजोलि कइ मायबापयरिवार परणाव
इंतनावली रायाकरइविकार ४४ इंदनगरनोराजावीजी इषसराइमफार सूरेइ रूपराजालगी सादाधी
तिहिवार ४५ ॥संधीनी[illegible]॥ वनमालानिसुणीएजीम मनमांहिश्रकलोणी तोमरातिहामनवइमोहि
श्रावइ एकाकीमरिवानइदावइ वनदेवीनीकाधीइजी लखमणटालीनवहइजी जन्मांतरिपणिमुफमति
श्रापइ इमकहीनइमरिवेश्राघइ ४६ कणहवडलेश्रावीचाली लखमणजीदीठीसा बाली रामसुमानासुषमे
सोवइ लखमणजागइटहटिसइजोवइ ४७ एकीवनदेवीदासइ एवटवासणिवसवावीसइ वटिश्रारोहिउय
रिश्राई लखमणहविचढायतेश्राइ ४८ विनदिग श्रोमतणीसकरे मनव्वचकाइकरीमइसेवी सोलत्नजोव
उलदमारो सुफनेकाजे लषमणप्यारो ४९ इहिलविटालितेयरलविदेजो येबारावलिहजालेजो एमकही
मांकुठेगलपासतै लखमणदेषइएहतमासतै ५० श्रबलवइसाजेनलइ लखमणजीसाघइश्रतिहै ते संदेसा
हसमकरितेकाचतै सोहेलषमणजागतेसाचतै ५१ बाहिसाहदेहीश्रांणी एतलइजा म्पाराजाराणी लख
णसकेविरतंतसुणायो सीतारामिमहसुषपायो ५२ लखमणजीनिरषी पणिसुंदरिमनमांहिहरख

साता राम तणाइं परिलागा ओलइं सागदत्ता अबजागा ५३ पावइ इंद्राणी नपनारी नवि देषइ वनमाला प्यारी क
रूप स्वरिंइं कवापी कारी राजानइ उषइउकनारी ५४ वनमालादेषणनै राजा चालिकं माथि मुगट जनाजा प्रन
पासइं वनमाला देषा राजा नई अतिरास विशेषा ५५ हलि हलि कल्य मचायो सोरो एवइ मुफ कुमरी नाचे
रो सा म्हुने ब चित्तं लषमणदेवा राइ मुगट त्रासा तन षेदव ५६ उलषायो लक्षमणजी माना राजाइ यांमी सुषसाना
धरिहि वाली आवीगेगा कुमरी नातउं कर्मसुचेगा ५७ लषमण वरवर बांनइ ग्राहा बालपणा हाथी कुमारा अबर
त्त्जीर पुत्री परणउं इहि वातेरे विलंबन करलो ५८ आदर अदि कइ मंदिर ओलइ लोज सगन करी मनमां
नै षासर कुआवइरे विचारा वरतइ सुषनहा असुष लगारा ५९ परषदरराणा अदनतउं एमलइं एकप
वारिकं रूवउं अतिवीरजि मोकलीयो आपा उपजिकं ओणी अतिसंतापा ६० नंद्य विचे नगरी आयो राजा
जोइं सो वतला यो नरलसंघात विग्रहवा हूं अतिवीरजी संग्राम अपारं ६१ भरतपस इंवकं रूपति आया
मंडिक षेत कूपा कं वजाया अतिवीरजी उमहबोलावा पसषक बलवधतस वाधा ६२ कांम पथाजे सारइं
कांम सोइ सगी जगमइं अबिरामउं कांमपग्रा थीजे दिइ टाले तेरे समाग नउं मुदकुरि कोलरे ६३ लक्ष्मणसा
षइंपरे विरुंध कि कउपजिकं वइरे असुध दूतकहइं हमस्वामा बलायो एवात मइं अटकलायो ६४ भरतर
[illegible]बो वइसेवा विग्रहकारण एहलेहवा कोइ नहारि कं कोइ नजीति कं दोइ पषि वइ सुजस वदातउं ६५ ४७

अवसर आयो मुफनै जाणि कं रहइतणा विध सघला वोणउं एम कहा मोकलीयो तेहे पणि ओणइ रांघवसुं ने
हउं ६६ प्रतिषमर्मन काइ जाणइ भरतरूपसुं कांच्यति ताणइं मुक सहाये अधिक उ यांमी जीतणचाहे अजोध्य
स्वांमी ६७ सेना सघली सुकजाकं मित्र नजाणइं तेमकरी कु एहदुणानइ पाछोभाकं भरतन्नपनी आणधरा
कं ६८ रामकहे एसघलो कउ तुंबारइं घरि वयवो रूउक सुतसकुं नै दिइउ मुकलार जिनमुक कहा इंकां
म समारे ६९ सलाक हासाषी नरनाषि सुतसघलाई दाधी साथि नंद्यावर्त्त नगरनै पासइं आवी उतरा
या रे उल्लासइं ७० देव षेत सणार षवाला रामथते साथइं लाघइ सुविसाला कारिजकोइ सुफ फुरमावो जेव
मनइवै अधिक सुहाउं ७१ कारिज कोइ नहि तुफ ताई देव कहे एसाचं माई तउपणि काइ करिद पावुं नाम
तणाकं लाजरहावुं ७२ नारी माथि इलेइरे लडाई राजानी एलघुताई [illegible] तेणहामइं
जीय आगइ हारइं ते अपजस यावइं जग सारइं ७३ निघरूपति सघला होइ स्त्रियनरराज कहे जिमजोइ रांमअबे
ने सुलणदो साई स्त्रीरूपि पणि सुंदरताई ७४ महीधरि इंए शेना लेजा संग्रामि एसरसतेजा धारपाल जइ नमसुं
णावे अतिवार जनइं रीसचणावी ७५ भरतनृपनै कं साथे सितं सुजमघणइ व सुषमा नाथे सितं त्रियशेना एपाबा
ने जितं मंदिर नउं दृष्टिदेषउवेचउं ७६ एतलइं एक कहे नरफासुं महीधरि इंएका योहासउ वैश्वानर जिमघी
सचाणउं रामइरामइं राइतपाणउं ७७ रांमादिक जीयशेना हरी आइगई नृपद्वारि मनरि राइकहै कांटो गलिमा

रामजस

हो आया सुरा सुभट सं बाहा ७८ नारि लउ नरना परि नाको अटलर नौलै पडाका का गजनतं धसोलवा है दल
धर दर बिमारि मचावे ७९ लोगालोगनला गावारो राजा जीऊ ते असवारो आवइ धां कतै करि संसाली लखण
जी नोधत उदालं ८० केवा ग्रहा नई बांधि तं गाढ तं लखमणनं तै विलऊ वो सरत सूपसुहा नं तं आडा जेजिम धातैति
महाकरी या ८१ रामरू लखमण दोइ दोठा ८२ जो लो यण अमाध्य पईवा पगिलाग नइ नरवर बोले अबरनको श
स जो सम नो लई ८३ आठा पद जिम सुणी यो आगई उदकि उदकि तां यग सागई तिम सुक मां हि एह उवोली साव
त का एना थुठाती ८४ लोजगइ निर लजकहा णतं लोगां मांहि लूद लहाणतं श्रगटपरा लव एह सहा णतं चो
र अनाई जेम गहा णतं ८५ जलथी अलग तेका धतं माढतं पाणी मांहि नावइ पाछो नउ फउ नउ फउ कर तब
तो वई पाणा कै तरी यां न विजीवई ८६ श्रोगुली यां देषायो को रलतं आयइ आपकेर मनडो हलो दि। नदि
न प्रति सोजाइ गलतं तं लहा अप मांन न वाधई बलतं तं ८७ नालिर इंजिम राषा ढ्यां णी एह सयाणी मति
मनि श्रोणी वाढि तोन करिया षलिराषि को न सकइ तेह नुं जल चाषी ८८ मांन गयो नष्टाई आया साधानी
सेवानई सेजा या नाई पलि जेह नो बिहाणी परी सण बेपर देशा धीणा ८९ जो वनयतं ढूटा यतं सरणो तेह
नई तत से यमनं तं शरणं तं घणुं घणेरो सार अबकं म्हारा तननी राधुं सबकं ९० राज तजी नइं संयम यालं
उ समय ला ण तु फिर तं अनु आनू रामकहे सरत सरिम तं राज करंतं हम बोल परीषतं ९१ अति वार जनार ४५

अधिकाई विलयर विद्यापी वक्र राई सदगुरु पां सइ संयम लीधतं समना स्त पसु धार सपाधतं ९२ विजय रथ स
गिना सुर साला लखमण नेदा धार तिमाला विजय सुंदर बीजी लगना सरत लणी दीधा स्त लगनी ९३ नरत
रूपनी सेवा साधा निजधरि आयो रपआराधी राम विजई पुर चलाआया वनमाला नइं अधिक सुहाये ९४
सातवा सम टाल सुंहाली सरत रूप आरतिटाली केवा राज कहे सारइ कोम सो इस हो दरजगि अलि राम
९५।। धन्यासी राग ॥ महाधर नइं स्त्र बके रामचला कं जोम लखमण जी सुंबीनवई सावन मालानी
म ९६ श्रीवादी नदातारतुं अबकात उठ निरास मा ष्कइ प्रण विलोचना करइ घणुं अरदास ९७ बाहक
रा सुविसे षधा मुक लोज ईलार वनवा सइ सरसार कं होइ षिजमति दार ९८ लखमण सा षइं सामनी ए
अवसर नहि कोइ जू ठ तें दठ का जइ नरा हायइ विमासा जोइ ९९ उवकि र मंदिर आवसुं सेवा नइं वन
वनवास बोलदमारी बइं सही पकं चावसुं तुक आस १०० सुंस विना नावा नघुं र यणी तोयण पाम
नावउ तो उम्र नेअबे मां निली यो शस आष र।। राग ... रली आजउं एठ ...।। रामक तं सुजसघणं तं स्व
गी सुपायाल रामकउं ऐक २ पश्चिमरात्ति आगइं चाल्या उत्तधिकं वन एक मेमं जल्लि पाणी पुरी रे दा
सइ सोर अनेक रा० ३ उतरीया उद्यान मइ रे लखमण वन मैं जाइ लेआयो फल सा गसार पाणी पात्र लरा
इ रा० ४ से स्कार सीता कीयो रे आरोग्या उवाहि रामणा आदि सवारे लखमण गयो पुर मांहि रा० ५ अवणे

व

रामजस सुणीउदयोषणोरे सदइजुशक्ति उदार परणे पुत्री राइनीरे नहि संदेह लगार रा० ६ पुरष एक तवपुछीयोरे
एवड किस ते विचार शत्रुदम राजा नलोरे राधानो सिरदार रा० ७ कनकादेवी तेहनेरे पुत्री तसु परधांन जि
तपद्मा वइं नो मथीरे परतषि पद्मा वांन रा० ८ वरनुं बल सुविचारिवारे मंडिउ एह उपाय आउलगाकेना
वीयोरे जेथी कांम सराइ रा० ९ एम सुणी नइ आवीयोरे परषद मांहि देव नयरडेतुके णवइरे तवबोले
ततषेव रा० १० सरतसपनं इनतवुरे जाकु करिवा काज परणग पुत्री ताहरीरे इहां आयो आज रा० ११ शक्ति
धानतु मादरोरे कहे तुं महासके श्री एकनहा पणि पंचजी सकं सदासु विशेस रा० १२ जितपद्मा अनुरागणीरे
होइ गइ ततकाल लखमणने अविलोकतीरे राची रूप रसाल रा० १३ पुत्री वरजे बापनइरे कहितन मांनइ
रेच थालरी सदो साचै वरे मूकइ शक्ति सुपंच रा० १४ दोहं धांदो बाद मइरे एक सुदंताजोइ सादालाधी
शक्ति जारे अजब लमासो होइ १५ जितपद्मा हरषी घरीरे पग्ह रावे वरमाल राइकदइ परणो सहोरे सकं
मरी सुविसाल रा० १६ लखमण कहइ उद्यानमइरे बइठो छै श्रीराम जनुसेवक तेहनोरे करूं तांइ कोम
रा० १७ रामसु लखमण जांणीयोरे मेलाग वो तिहां राइ लेइ आयो रामनइरे परम महा सुषदाइ रा० १८
नगति नाव पोषिज घणउरे प्रजा प्रसन्न पाय तत्र पणि आगइ चालीयारे राजा नइ समझाइ रा० १९ वंस ४९
स्थल गिरि उपरीरे वंसस्थल पुर देषि लोग नया कुल देषीयारे पूछिउ पुरष विशेष रा० २० सोसाम

वइंप्रलमा मुणतउरे रातिभयं नो माइ धुनि कउ वैवेआ करीरे तेलोगां नष मायरा० २१ रातिअनेरी जायगेरे
नासी जाइ लोग थानक आघरि आवइ रे कष्ट नणउ एयोग रा० २२ प्रतउ। लखमण मोकलितउरे जोइ
आवउ एव कावस गमांहि मुनिरे दीठो दोयुणगेह रा० २३ देईप्रदक्षिणा वांदीयारे सगलेहा विध साधी
पिणवजा वइं रामजीरे उपसर्गकीजे लाधि रा० २४ तां नमोनअनुमोनसुरे रागतणउ आलाप लखमणना
नाइकरैरे नाचइ साता आय २५ रातिजगा वइं रंगसुरे होइरहि उविनोद साधतणी सेवा कीयारे पा
वइं अधिक प्रमोद रा० २६ अनलप्रभ सुर आवीयोरे विकुर्वी वेताल साधाने संतापिवारे जाणेकेपि
तेकाल २७ सीतानउ रिषपावतारे रांमसुलखमणदोइ जेबलबांधि सांमहारे नासिगयोसुरसो रा० २८
मुनिवर आवी केवलीरे आवइ सुरवर कोउ केवलमहिमा साचवैरे पायनमइ करजोडि रा० २९ रा
कदै ५ मसणे प्रनजी करेरे उपद्रव नो हेत कुलभूषण केवलीरे निसुणइ सक सचेत रा० ३० नगरीनी मिय
दमनारे विजयपर्वत नृप अमृतसुरमति वेतजारे एक दूत अनुप रा० ३१ उपयोगात सुकोमनारे ने
दनदोइ उदार उदितमुदित गुण आगलारे कुलके रासाधार रा० ३२ दूततणो एक मित्रउरे ब्राह्मणबे
वसुभूति आसक उपयोग तणउरे वानलिषी एहूती रा० ३३ साचितइ चित्तचारणीरे अमृतस्वरनइ
मारि निःकंटक होइ घरीरे मातुसुषसंसारि रा० ३४ नपआदेसइं दूत विशइ चालिक मारगचारे

रो सैमजस ब्रांम्हण पणि ते साधि लागतें हृतदणि बल प्रसिरा रा० ३४ बांम्हण घरि आवा नइ त्याषइं मुफनै पाढो वालि का
ज करे वाधेग मेरे आपगयो चालि रा० ३५ उपयो गानइं वान जणावी त्यत्नी किहूं तइसाइ पुत्र हणो धी
राजआयणतें काजेतो सुप्रभाइ रा० ३६ एह मतनो ब्राम्हण केरो रहस पणायो जांणि उदित मुदित दोषा
यारे अमरष अधिक तें जांणि रा० ३७ उदित बांम्हण मारीयोरे आयो उदय कसाल ह षत्तनलपली विषहरे
मोमरिक्रयो सील रा० ३८ चारित्र लीधउं राइजोरे उदित मुदित पणि संमेत तह जिनवंदिवारे चाल्यारिषि
उबरंगि रा० ३९ विचि मिली कसोलोल्डोरे मारइ ओच्छलगार बोजा व्यापत्तियतिपतिरे मोनिल्यो यो उपग
र ४० पत्तियतिषो पंषायोरे एषाकर सण कार यार भायइं पंषायुहिंडरे ऊआमारण हार रा० ४१ इणइं
तव बोज वीयोरे पंषा घोपत्तीस कोइं लालइं आपणत्तरे एत तें विसवावास रा० ४२ उदित मुदित दोइ सा
धुजोरे आराधी संथार महाशुक्रनादेव तोरे पामितं जयजयकार ४३ ढाल जअगवासमारे वलतणतें अ
धिकार केता राजिसु निवरनणइंरे साधुवंदइं तेसार रा० ४४ ॥ [illegible] ॥ ब्राम्हणातनें वसुसति
नकें जीवनमीत्तवमांहि मोलसंथई तायसयणं पामिम कनेपाहि ४५ देवक आयणि ज्योतिषा प्रमके
तुम्हसिमीत मिथ्यामति नो बाधि आलडं अलिअसिमान ४६ उदित मुदित नाजीवते सुर पदजजि
आवेत होषपुण्यणाइरोया सगति पावेत ४७ अरिष्टपुर नो राजायतें विधेवर त्याल पोमा

बइरो णा करिइं उपजा सुत सुविसाल ४८ रन्न सुर घरलायामणतें चित्र सुरथ चतें साल नांम थको अंतिय
उवजा सुंदर नइं सुकमाल ४९ धूमकेतु नाजीव नते उपना घरि अवतार अपरविया करि कूर रूपनो नांम
अनुभरसार ५० ॥ढाल॥ उदें अधिक सोने दकओ वडवे धवा थोरे चालेत जओ प्रूसलवेदर नयणाज
णावइं मदारी सनोहेतु आणी उर्यावेडं थरर अरथनंदन राजदा जइं दोइ अपरलपुनंद युवराज काउ
इं घट्ट दिवसनें अणसणसाधी मारो नपदेव धनि कुमारी पर एक नृपनै आष साथी कुमारी हाथ
राइनइं रेग सुजो ण प्यारी अनर थुवराइंघा वे चिमांगा गई करवे तेहनै करिन लागा यन्न तव रासुं राइना
गामन्मारइं करीम कायो सोरतनें देवासारइं चहितें राइज रावणो लेइ हउ सानतें लो थिआण्पत्रे कलिक
र फडो पथ विडंबी पनेन धवामेल्हादी धनें जइं नायसा पामिइं ब्रत्तते मलीधउ त्रियसंग तितिः फलजोम
का धते विषया विषअमृत जांणा पाधते पथ लवमांहि नमायो चिरकाल सोइ लहा नरग गतितास फिरि
होइ करीवाल तपज्योतिषामइं गणो वते सोतन्न रह अनपलनो मदेवो पद रन्नरथ चित्ररथ दोइ लाई ग्रह
संयम बार मइं स्वर्गिजाइ महालअनइ अतिबल नाम पायो हतुकमीया लवतणतें हेरआयो ५७ हि
वइं नारि विमला तणइ कदरि आवी उणे सुरवरे सोहै तें अधिक पावो कुललषण एषके अवरएहतें
अवइं देसनूषण अुसवानादहे ५८ उपाध्याय वरघोष पासइं पढीया हेमवर सतो वारत सघरि रहि

या जब तेरमत्तें वरस आवा सुदा वइं नयपावती पे हितलेई आवे पत्र तव गत्रषि वयवीषक एकै मरी अ
विलोकेतो जाणाई एह अमरी तव दोइ लाई तण तें राग दो वइं मेरुसा दम वारह वार जो वइं ६० तव चा
लिकइं आवीया राइ पासिइं तव ये डित हजायो सा सनो मा निज मंदिर आवायो हर्ष यो मा ६१ पगिजा
गनइं माय सेवा विशेषा तेऊ परी मायने पासिइं देषा तव रजायो मायने कणक मारी तव माय ना वइं
भूह वहि निपारी ६२ गुरु मंदिर वासो जतो भ मारतें तव कपजिके एह सावधारी चित चितवे वे वहि
सोगो हम जाणि हम आदरि कें एह योगो ६३ तप तिव करतो इहि गिरहीं आया हमे का वसगीरह्या तजाय
काया नहि आसऊ जाव वइं डर न मरणइं दिन राति रहणु अरिहंत शरणे ६४ पिता हम तणो जी णा
यो इख गा के समस्ता वतां कोथ दाके नवि घाइ ताहे मुकुं अणसण ग्रहाय सो गुरउ ईसो महा लोचन
सुर थयो अति जगासो ६५ उपसर्ग मारतें तिणइं जानि लिखियो इहां आवायो थो सो प्रेम पषोयो मुनिआ
ने तवारजन इं सुहजानो करण ते वदे व जायइं प्रधानतें ६६ अनल प्रत देव गुरुतें श सो हा सुरी साथ
इं चालि गया ष्पालि मोह सुरमां न वे पर षदमां हिसा घइं दया धर्म जके वला कहीयइं दा षइं ६७ सुदन
नाथे रवंत सी सइं भूम पाठ लिके वली जणदी सइं काल नषण नषणदे स लाई दो सिइं केवला ए
ह दया वताई ६८ अनल प्रत एह निमुणाइ सारी तव हा षक परिलोग तें हमार कोइ क मिथ्यात

न कें अधिक वहायो काइ एक जपुव वैरइं तमाहिकें एह दिन चार जन्या उपसर्ग करतां एतो पाय सेना
र सरभरि सरतां अम्ह आवायो सो गयो देवनो सी हम कपजितें ज्ञान सव जग पका सी ७० महालोचन
पावीयो अधि लोषो श्री रांमजी सुं करइं प्रेम पोषतें सुरवीलहा प्रत्यक कारण तें वसलाघइं तुरत संजारथ
रणतें ७१ वेशा स्थल पुरपति पवरियो मइं श्री रांमलख्मण पति सासनो मइं धनि रूडु उपद्रव एह अरु
गतें कीयो सयन वि आवसिइं फेरि वलग कें ७२ श्री रांम आदेश कीधतें प्रसादो धज लहलहइं गग
न सुं करइ प वादो श्री रांमगिरि गिरि तणतें नो म थापि कें कीयो तेव व अधीयो अर्थ थापिकें ७३ सु
र पतिनइं रहा नइं देव आगइं जब चालीया लोग बहु पुविइं लागइं बहु जावीया लोग सन मां न देइं वसु
वालीया लोग चित साथिलेई ७४ तदेउ अति दउ क कारण साषी तिहां आवीया चित्र अति अउररा
षा गिरि गुहा गेह समतोल लेषा तिहां वासकी धतें कोइ दिन विशेषा ७५ अनेरइं दिहाडे लच जामण
वेलो दोई चारण साधु जो पुष्पमेले त्रिगुप्त गुप्त नो मइ विराजे आया ओगण सो धंता अनको जिंउ ७६
छिमास उपवासी या दोइ साधतें घणइं पुण्य नइं वरेणे दर्शन लीधतें श्री रांमजी लषमण सताय सीता
नलीष्पा वकविस्र मांहि वहतो ७७ लली लगति सुं साध ना चरण वेरइं तव संतति सयल नाइ पनिकं
दइ सना यह निज राम तुं हर्ष आणी प्रति लाती या धा मुक न्ना न यो णी ७८ इम वारण ते पारण ते कीध

रोमग्रस जीमतें ललनापुष्पख्य रूवरू वर सेल लामो रंगगंधगुनी हृष्टि करई उदघोषणा देवनी करइ जइ ॥८०॥ पंच सुदि
व्य कृत्या वर्षा णा ललादायकाखूजदिन सफल जीरणं एतते ढाल सुणता समी जगत जीवा केशरायइं स
दा वात साचा ॥२॥ रामगरी रागकुर ॥ रंगजटारली यामणां केसद्दापदयाल येचर सुरख्य ख्यसु
आपइ ते सुविसाल ॥८२॥ गंधांबुनी हृष्टिनकं गंधतणां विस्तार विस्तरीयो छेदइ दिसइं सुरभि महासुषका
र ॥८३॥ गंध सिंधएकपंषामो रोगाएद वइं नाभि तरूवी कतर आवायो गंधवास नायाभि ॥८४॥ दर्शन दाते
साधुनइं ज्ञानी सुमिरणलाध सुरबाई धरणा पडिं ते पेषी साबाध ॥८५॥ सीताइं सुमतो कायो वेदइ रूषि
नायाइं रिषजा करसे फरसीयो तो मनिरोगो थाइ ॥८६॥ पांच कइ सोना समी चंचविडुमसाव नानारत्न
सुं मइं ततरं पद्मराग समयाव ॥८७॥ रत्नोकरनी श्रेणिनिस माथइं जटा सुहाइ नो मउ टाइं पंचायो ते दि
न थाक हिवाइ ॥८८॥ धानश्रो लमसीनरनी रायलों ॥ रे लाई मे वने सायाणां देन सुगति सलनाव
वतावी ला म्याजी वक्षयो लारे ला० द ढप्रहारी दिढपणेरे मेल्ही आपप्रहारा यरमारथ पदपामिसतं प
रतषि साधुतणं उपगारी रे ला० ॥८९॥ चिलातीबो दीनंवेदतं नामि चिलाती पुत्रो साधुसंगतइं कारि
उमारिते कीधेडू रिकसनो रे ला० ॥९०॥ अर्जुनमाली गारमोरे नरषट एकज नारि षटमास लगि
एमकरंता लीधं कारिज सारी रे ला० ॥९१॥ परदेसी परलवि निचिमानइं पापकरइं अति पाप केशीगुरु ५२

समकावीतोधई सुमति सदा थिर थापी रे ला० ॥९२॥ राघव इवे साधुसंघातिइं एकदह पंचादेवं थांनि दोइ तुम्ह सेव
सारइं अवरि जएह विरोषो रे ला० ॥९३॥ सनतकुमार नारी देहविकारी रोगामइ ख्यारदारो कंचनवरणा कायाकइ
पद्धे करणविचारो रे ला० ॥९४॥ साधु सुयुमकदे सुलिराजा चरित्रतणं विविसारत्ने कलकार कटपुरपकत
नत्नें दंडकराइ उदारो रे ला० ॥९५॥ सावथीनगरीनो राजा जितशत्रु सुषकारी रोणीधारणी थई सुत ज्ञायो षं
धदक नामकुमारो रे ला० ॥९६॥ कुश्रापुरंदरयशारे दंडकनइं परिणावइं पालक ब्राम्हण दूत पणइ रे माव
स्त्री षंदा वइरे ला० ॥९७॥ जितशत्रु राजा धर्मपरायण गोष्ठि धर्मकी तावे नास्तिकवादि पालककेने रे धर्मकरिके
सुहावइ रे ला० ॥९८॥ षंधदक कुमरिइं युगतिजीततं जाब क्षरगो नावइं दोइ पिसाणातें निज घरि आये
रहइ कुमर सुदावइरे ला० ॥९९॥ षंदक कुअर पंचसयांसुं मुनिसुव्रत पासइं संयमलेइं सूधव्रत पा
लइं मारग धर्म प्रकासइ रे ला० ॥१००॥ बहिन वेदा कुंपुर समकावे एह मन चिंतवीणा कंलक रिकरन
गरइं प्रविशे पालनइं आणे रे ला० ॥१॥ पत्तजीनाथइं कीणि नरायइं मारणंतिक नांमो उपसर्ग उपजतकं
दासइं षंदकनासइं तामोरे ला० ॥२॥ हम आराधक होवो कइनद्दो पुनरपि स्वामि नाथे तुक विण मयलाहा
आराधक जिम देषइं तिम दावइरे ला० ॥३॥ आप विराधक होना सघलो केरांम कइंको मनते एह विकारी चा
लि कें षंदक पकन कं तिणइं तांमो रे ला० ॥४॥ पालक पापी सुमिरिपरा सव आणइं एह विचारो साधु समो

मरियाछइं जिहां मातइंवक्रदृषीयारोरे सा० ५ राजा पंमापवरि जि वारइं आयामुनिवरवंदइं देशनसंमली
निजघरिआवइं मनमंइअतिआनंदइरे सा० ६ पालकपापघणेरा उपेषइं राजानइंसनलावइं आलोतुफ
मारेवाआवइ तेरुषीयारदेषावइ सा० ७ राजावातनकोइविचारइ एकांतइं रीसाणउ पालककर्मथानेमु
निसुप्या करि मो जिम ज्रम जांणउरे सा० ८ पालकमीघ्रपण पीमोटउ मंकइं यंत्र जिवारइं षंदकदृहिइं साधु
एकेको पीलइतेह तिवारइं सा० ९ निर्जामक तव होइ षंधकआचारिजजी आपइं आराधनविधिशुद्धकरात
इं आयामइं मनघाइरे सा० १० श्रेणिरूपकनी वाटइं चढता घोमीकेवलनाणउ अष्टमहागुणकेरानायक
पकु ना अविचलठांणरे सा० ११ चारसया अंगरषीला एक सुवेलउ बालकं एहनुं दुषमुझमतिदेघाउं
मांनइंनहीयचंमालरे सा० १२ बालिकनेपालकतेपेषा नयणेलोहुवहावइ सकुनाको मसमासापाछइं
उपजिउरासअगाहोरे सा० १३ दंडकपालकदेमसकुनउ होजिउ हुंक्षयकारी पोतइं वेनवसंतलितेदषी कां
धनियाए कोपापावइं पीलीनाषिउ मोइ यावयोनेपांनइं तेनचढइ एहजुषाणो जोइरे १४ वनिकमारा
मांहिवृदितउं देवकउ कालउरे पापियंचमंकु तिणहामइं एपापमद्वाअसरालोरे सा० १६ रजनकवन
सुजपुरदरजसाइदा धउषा वनितणउं मनरा षणउकारुण वेषवजीलीधरे १७ उतउजारजोहरणरे लो
होबरडि देषी मंकुनिकातेलिईवाली पआहारविरोघारे सा० १८ नारताणउं पेषली अकसीणी चोचवक
धनादाणं जारारे ३९ १५ ५३

छउवडुजो देवयोगिनवदे आगइं उपनंतेउजपडायोरे सा० १९ देवीसाईमासीकेरी जाणीएहसहिनाणी कंनाक
डु मोटा पोल्या घालाघणारे सा० २० शोककरंता सासनदेविइं पापोग्रघोलोधी श्रीमुनिसुव्रत पासइंमेकी ग्रम
दिक्षालीधीरे सा० २१ अग्निकुमारइं अग्निविकुर्वी बाल्युपुरनाजोगी दंडकराजापालकपापी एसनकर्मयोगे
रे सा० २२ दंडकारण्य तेहादिनथी पुरनविकेरिवसाणउं नहुंकरतीनंदुदोइ मउइं रुइं जाणजोरे सा० २३ दंड
कराजा सवमइंलमीयउ दुख:तणउ संयोगी गंधानिध पंषीजाउं तेजद्दीमहातनिरोगारे सा० २४ जतीभूमि
रणहमदनीनघा ऊपजाउं एआजो सर्वोषधि लबधिधकारे जंणउं एसउं साजोरे सा० २५ रोगगयानिरो
गायोरे रत्नमयीरेवारीरे श्रावक जयोसावलोरे धर्मकरवइं धारोरे सा० २६ जीवनघातइं फलननविषाइं
रातिभोजनत्यागी चालताषचखाणकराया जांणिउं उरवोरागोरे सा० २७ राघवनेनलामणिदाध रा
षिजो सेवा मांहिं साहमीनइं वाछलपणइरे पुण्यघणेरोसाहिरे सा० २८ रामकहेएलाई वइरे उमवंच
नाधावारू समवतोनइंपासिइं रहिमइं चतुरपणइं वेचारूरे सा० २९ एमकहारिषिपंगुराधार तारव
वेदनजाइ जिनमरति जहरतार अतिरलायातघाइरे सा० ३० देवदायोरथजोतरइरे बाइसेमलारामो
रे लक्ष्मणहावइंसारथीरे पंरवाआगइनामतरे सा० ३१ क्रीडाकरतासंचरइरे परबलपुत्पत्रनावो रांमति
होषी अंघोघारे मिलायोएकरुषवरे सा० ३२ ढा० लतीसमानइंकहिउरे पंषीवलभकारउं केश राजरि

षिवायकमईरे नहिमंदेहलगारो ३३॥ढाल॥ राग गउडी गोगड३॥ लंकपयालाराजीयो खरनामइ नपाल
सुर्पनषाघरिसुंदरी सुंदररूपरसाल ३४ श्रुनवेलाश्रुनकोरायो अयानेदनदेइ नीहक सुंदर सोहाम
णउं पांमायौवन सोइ ३५ मायबापनइ वरजतो दंडकारणि मांहिं मर्यादा सकासि साधीवा नीबकग
यउं उछाहि ३६ हणिमुं वरजननारनइ वचनवदइ चिकराल अतिमांनामांनइ चदिकं आंणिपकं
लतकाल ३७ कौंचरवानी रंगअवइ गकरवंशविहीस तिहांरहा साधनकरइ एकमनो अकिलेम ३८
एकांते सुविशुद्धा तमा जितेंद्री अरु चार परबोधीवट शाषसुं अधतंमुषो सुविचार ३९ बारस बारदिन
सातरूं विद्यामाधणहार ओरंलिउ परगटथाइ किंसुकरइकरतार ४० बारस बार वउलीगया अप
रितउं दिनच्यार सीधा कइं सीधा दिवइ वरतइ विद्यावार ४१ तेसमइ सरिजतणाजे गकरमांहि जो
म विस्तरीयां दामइ घणु कवरहरषिकंनोम ४२ कौअनइ तिहां आवीयउं लखमण मनिउल्हास मर्यो
जस असि देषीयउं आणी मूरषकार ४३ खांडउंलेनो धउं हाथमइं कोहा मर्म इसोइ अपर्वशास्त्र अविले
कतो कुआनइ सुषदोइ ४४ तापस परीक्षा कारणे आछरक्यो ईस रोमआलि नइं वाहीयो शंबूककेरोमा
म ४५ तुतरि पड्यो आगलिइं चिनमें चिनइ राइ निःकारण एमारीयो फिरिफिरियबिनाइ ४६ गकरमइं
जोवइ जई वउलाकेरी माल दाठो धनुअबलेनबोयो तोमचलिउं ततकाल ४७ रामसमापइं आवीयउं से . ५५

सलाविउंचिरंतन षोरूउं रूकिउं आगलि साषइं रामजंउंत ४८॥बदनीजहनउंजहस्रेरंगसरढाल॥होना
इनइं उपावउ वायो जसरएषांडउं सोनरचाउउं को आयो कइं आयो लाο ४९ रावणानगनचंद्रनषानी विष
साधीजोलि रुजापाणी अलभनोपम आंणइ अतिखररीणहो लाο ५० दीठउ मुउ मस्तकजूव नूरउ अइ
अइ देव अकामउं कीधउं अणसोविक अधिकुं मुरवाणी सानीमोरकउ लाο ५१ करी मबतनहावठहा
षठ उ सूकरी हूक सोइ करतीपउती अति आरडती मरडइं करदोइ लाο ५२ लखमणबैतीलखमणकेरा
एगतिधकतिदेषइं मुफसुतरंलाएजालेवउं रीसघणीसुविहीषइउं लाο ५३ पगनइषोजइ चालीआ
वइ सीतालखमणरामनउं निरषाहरषिपरषइ पदमनि रामरूपअलिरामइउं लाο ५४ कामबाणसु
वींधीलीधी नरहीसुधलगारी भूलीनंदन आनंदअपजिकं करिवानइं नरतारइउं लाο ५५ अमरीअम
रीनह[illegible]सरती धरतीरूपरसालो रामचंदनइंपासइं आवी जनीसानतकालइउं लाο ५६ पूबइं प्रलथा
पदमनिसेती अणअवउ उमनमापउं अटवीमइं एकाकी दीसउं संकाकोइमराषउहो लाई ५७ सानाथ
इंकं राजकुमारी अपरिलोमइ सोउं निरागतनरसर्यासरिषउं अधिक अचेतनदोहुरे लाο ५८ ए
कविद्याधररूपइमोहिउं इहांमुकलेइ आयो एतले अपरषेचरचलिआयो वाहइं मुफ बीनायोह
उ लाο ५९ मुफनइं देगमंकी आपुणलडिवालागा दोईनउतोलडतोदोइ मुंश्री अविसनषाएम

दकं ६० सा०॥ एकाकाकुं अबलाबाला किहं घणुं उदासी अवमइ अबनजी नायगायां म्हा आरति गई सव
नामाहो सा० ६१ अब मुफ्याहडं वार मलावकं बालपणा नडं सोगो सोगवणडं सुषदाइ पावइ दकं
हिलकडं एसे या गकं दो सा० ६२ अबजी एपरपंचविचा स्यडं मोटा नीमतिमोटा कपटकथा कलि कारि
कोमति एसब वातइ षोटाहो सा० ६३ धूताको धूताए धूरत धूतानइ पकडाई किमदिवइ नयणां सयन वता
वडं मादुक मांहि साइहो सा० ६४ रामकदइ मादरइ एनारी वीजाकं मनसेरा थइं वेचा निंदकं निंदकं ले
वो सांसामइं दिनजाइहो सा० ६५ पेलउ बे मतं बेटकिं दिसावकं करि सउघारउ माहडं जेहनइ नहा ते
हनइं आउरता मनमइं अति उमाहडं सा० ६६ प्राबैना लखण कुंकाधी लखणकहइ नजेरी मायमा
हरी वन प्राधीयां सानीमकदि सिषेरी हो सा० ६७ यांचा संगवकी रीसा णुं रीसां णामुतमा स्यां आ
वाषरतुं षरीयवुकारी रीसयणा किस्ता स्याहो सा० ६८ चउद हजार षरास षेचर मे बाद्धा तिहि वार इ
आयणा याते वातकरंतां कवइरीम जियारहो सा० ६९ लषमण सावइदेवदयाकरि वयवउ रदइउ आ
या मुकउ वाएनावादेषडं मुग्ध वको जिमपापो हो सा० ७० जाकं वेगा वइरीजातडं जउ जो लउ एवासो
सिंघनाद जोम मुषथा का जिकं [illegible] वासहो सा० ७१ धनुषवाणा लेइ पगि लागि लषमणा चालि क
जामडं षिषर वेति वरा राहो सुरां मनिकं अति संथामहो सा० ७२ दषि राषिवा रावण आगइ लगनाजोइ

पुकारी रामसुलखणदेहकारलि आवाडं अधिकाराहो सा० ७४ विद्यासाधनकरत उंवार उं मारि लायो वेका
जो लखण सुरवरइ खणअडाया जडाया वइंजइं अजोहो सा० ७५ जघु साइ नावल संबलीया बलायो अ
पअपारउं वेपरवाहो वरतइउरतउं नोणइ मनमांहि मकारो हो सा० ७६ सीतासुं सुषमांनइं स्वीमा सीता
नउ अति रूपउं नारी सघलीहा सोधांघा सीता रूप अनुपरकं सा० ७७ तीनलोकनी नारी जे तउ तेतकं
जोइ विमासी एकपकघी कपम अति पणि सीता आगइं दासी हो सा० ७८ पगनष नषनी शिषा वषा
णत सुरुगुरु पार नपावइं वाणी एक वषा णघ लेरी मोपइं किउं कहो आवइ हो सा० ७९ साइर अति
उंवघ वीमाहिं रतन जिके वेजांचा तेतउं वंधव सघलो घारा स्वामिपणा विसाचरो सा० ८० पुफकता
मिइं वयसि विमांनइं आण उं आणी आसिउं वदन विलोकी कोकी मुफनइं देयो सहा माबामित्र हो सा०
८१ ढालनला एएकतीसमी रावण मांग्या कानो केशराज हो तारघवलीयो आयो नस अबसानो हो सा०
८२॥ [illegible] वीतराग उपदेशमइं आरे धर्म [illegible] दान शील तप भावना साधिवा शिवशर्म ८३
विनविन अनुसारथा दायां दानकराय तपे तपउं काया सोसवा भावइं भावना थाइ ८४ शील पालिवउं दो
[illegible] नरिसो हिलउं लगार चंचलचित्त थिर राषणउं वलिवउं सोमाधार ८५ वाइ सरेवाको सला तरिवो
उदधि अपार साचकं सापषिलावणउं पालेवउ आचार ८६॥ पदकाढाल॥ जीवरे शील तणउं करि संग अ

वररंगसबकारिमारे एहकरारीरंगजी ८७ आगमकोऊलकपंजेरे सायबकवरमाल वाघफिरीहउय
इहरिणलेरे अम्बयणीलहइमालजी ८८ पर्वतहोवडपोलीयोरे विषधीस्मतहोइ विमवानित
वधणारे उर्जनसजनहोइजी ८९ सायरगांमतलावडोरे अटवीनिजघरिबार बुरातिकेनलप
तलजहरे शीलसणाउपगारजी ९० पउहोजमिअपजसतणउरे गुणवनिदेणआगि चारितनै
जेआंजलारे तपजपकाईलागजी ९१ साईसवीपदतणारे कालउकरणकगोल हारदेवाउइस्वर्ग
नारे शीलविनाइमहोलजी ९२ पगलरईनरजेनलारे परनारीनइंदेत ओल्हणमारईतेतलारे
शाविअपरमतेदेति ९३ नजरिमेलउंनजरिमउरे होवइजेवार पलकिपलकिपल्योपमरे वसिवोनरग
मफारिहेजीव० ९४ कसमइनारितिरषतारे ब्रमहत्यानउदोष लागइतेपटमइघणउरे पापतणउए
पोषजीव० ९५ राजदेहअतिआकरोरे उरकरइनिकसोन आईविणमरणउसह्या नवधइकोईवा
नजीव० ९६ अोषिकणीदउनीदसयारे षिणषिणवाजइंदेह चेपरहईतिमवारमउरे जेहनउए
रिपरिनेहजी ९७ लोजगयोनिरलजपणउरे कुकरकेरउनाम पगिपगिमाषाटकूणउरे शीलविनाएको
मजीजी० ९८ सीलवतीसीतामतीरे वसुधामईविख्यात शीलनलोपइसुंदरीरे निसुणउएवदात
जी ९९ वइसिविमानईचालीयोरे राजारावणनाम देउकारणिआवीयोरे वइगोदीगरामजी ५८

१२०० आघापावपइईनहारे नविलेपाइकार वाघनआवइंआसनेरे देषाआगिअपारजी १ सीतासतउले
वीसहारे रामवतानलेवाइ आगइहरिपावईलटारे सोचघणउनववाइजी २ विद्यालतअवलोक
नीरे सुमिरीनवआवेन करजोडीकसीरहारे प्रनजीसुषपावेत ३ साहजिकरिउमाहरउरे पांनुसान
आऊ फिरगयोपांचाविषइरे कपावुअतिलाजणा ४ विद्याकहइरघुजीवतारे कोमकोडिकलाय हात
नआवइजीनकारे सुरपतिआयांआपजी ५ लषमणनडिवानइंगयउरे रामकोयोसंकेत सिंहनाद
तफमांनलाई आयोदेषेतजी ६ सिंहनादनइंककरूरे राघवजीउविजाइ सीतालेतामोहिला
रे नाषिकएहकपाइ ७ नादसुणीअनचिंतवइरे एवइंकोपरपैच लक्ष्मणतउहारइंनहारे संकटन
उसिउसंचजी ८ मायनजायउंएहवउरे जीतइलषमणसाथि खरतउकटोवउपरउरे एमकहार
घुनाथजी ९ वारूंवारवदइपरीरे सातांआंणिसनेह लक्ष्मणसंकटमइंपडिउरे नादकरछेएहजी
१० कंतकहइंसुणिकांमनारे हमनइपारोसोच अटवामइंतजिएकलारे आपगयाआलोचजी ११
अवहाजइफिरआवाजोरे करिवंदचनासार आयोवुइमसांमलारे कूकइंअतिकूपारजी १२ कोइ
कसीताअेरणारे काइएकनिमुणानार धनुषसंबाहिकइरे कविकथरिअरहलाद १३ वारीतउअकने
घणउरे आलिंउजाइसरोस नमिटइवइलवित्तअतारे दईनदेणकदीसजीजी० १४ पाछइरावणआवीयो
२९१७

रामरास.

रे रोवनी अमराल सीता नइं लेई चल्योरे रावउ सूरसालतजी ० १५ सांभजटाइं पंषीयोरे जाइ मिल्यो धाइं
रोसभरी नषअंकसारे तासविलुरइ काइजी ० १६ बरजउ तउ मीनईं नहोरे तामरी सारा उराइ कोपी साषी पा
सुडारे पडीयउ धरती जाइजी १७ रोकनमी नइं कोइनोरे बयवउ जाइ विमानि एह मनोरथ माहरोरे हस्यो अ
लगवानजी ० १८ हा सुमरा दशरथजा जनकजनक कहीलात हालषमण हारी मजारे हा सामंडल भ्रातजी
१९ मिवीलउं जिम चिउकलोरे वायसि बलनइं जेम एकोई मुझनइं यहोरे लेजाइ एम २० आवा कोउतो
वलउरे मरउजी संसारि रासमघा राषीलीयोरे करती जाइ पुकारि जी ० २१ अर्कजटी नउं आई थोरे रत्नज
टिषगएक रोउ सुणी सीतातणउं रे मन मइं करइ विवेक २२ नगनी सामंडलतणोरे रामचंद्रनी नारि राव
णिओरे रावणजा तिहिवार २४ सुले कोणउ मननैघणोरे करइ कि सुं परंक विद्या सघली अपहरीरे लोधी रा
यइं निसंक २५ पंषविक्रणो पंषीयोरे होवइ तिमएदेषि कोटउं मोटा सुंअध्यारे पावइ दुख विसेषि जी ० २६
केहइ द्वीपइं कं बगिरइरे गिरतलो गिरतो तेह करतउ अधिकी उरतोरे आद्यो धरता तेहजी ० २७ आपुणाए
ईआणी लमइरे सायर ऊपरि माई करइ घणा मनकावणारे मनकावा नइं ताई २८ स्वचर भेचर राजीया
रे सयलनमइं हमपाइ श्रीबुत्रि बंडानऊधणारे इंद्र आप गुणगाइजी २९ करिषा संपदरागनोरे महि ४७

मा अधिकवधाइ रोवइ मतिरेगमइरे सुषमइं दुषनसुहाइजी ३० करता कोपि कंधोघणउरे देस किसइं षुं
णमाय लाग्य हाणउ रामनइंरे दाधा गयलिलगाइ ३१ जी ० कोगलइं कंचणतणोरे मालसतीन दिषाय
सरिषानइं सरिषु मिलइरे आवइ सजन इंदाइजी ३२ मानउं मुझ नइं पति पणइरे होइ रउं तुम्ह दास मु
झ मांसं सउं मानसि इरे आणि उम्हारी आसजी ३३ न उरिनउ चासा करइरे दिइन अपुवउ जोर अरंरद
उनाषांनसुंरे आणि रहो अति आवजी ३४ दाधउ मन्मथ वाणसुंरे आरति अति मन मांहि उठीनइ पगि लागि
गयोरे विषः विकल थांहि ३५ लंपट लल्लचाइ घणउरे तउ कोई कोन करइं षोण आणइ बेता नारि मारे
पहि लाबइं पंचरवाणजी ३६ सातापगथंचा ल्यायोरे छिविउं नहि सिर तास परपुरषानइ आसधारे थाइसी
तेविनास ३७ रे बलनी भुज सारिषीरे पति चतालक हि वाइं दोइ अरगी वाइघारे आपइं अलगपुलाइजी
३८ सीता तस कोसइं घणुरे रे निरलज अनेरउ मुझ आंणपाधा ताहरारे विणवी वात विसेसजी ३९ सारत्णादि
क [illegible] घणा रे मंत्रानइ सामंत सीस्यांआवा सादरारे स्वनइ सिर नामंतजी ४० नगरानी सीताकरारे
उवनउ अधिकार नारिनि रोपमत्यावीयोरे सुषि रजयर कोरजी ४१ लंकाषी दिस रखवइरे देवरमणउ
धाति रक्षा सीकतलइं जइरे बयसावी सा आंणजी ४२ रोम अनइं लसमणतणोरे जवलग नलंहुं खेम तव
लग मुझनइं वइस हारे सोअनकेरं नेम ४३ रषवाली तउं त्रियजटारे आरक्षपरिवार सुकामंदिर स्या

६ रामरास

वीयोरे लोगघणाबैलारजी ४४ ढालसलीबत्रीसमीरे रावणनइंचितचावं केशराजरिषजीकहइरे आगइला
वनसावजीव० ४५॥ इतिश्री ढाल दोषष्ठी रामजसोरसायन द्वितीयाधिकारः॥ सोरठीरागे दूहा॥ वाग
वाणिवरदाइनी कविजनकेरीमाइ मयाकरीनइआवयो सुमतिसदासुषदाइ ४६ रामचलोउतावलो आ
यालषमणपासि रणरंगइरमतोघरुं दावउमोमोल्हास ४७ रामप्रतइंलषमणकहइं डमनतंकायोश्राकू
ज श्रटवीमांहि एकली सीतामूकीश्राज ४८ रामकहइंतइतेडायो हुंश्रायोश्रवधारि सोकहइमइंनविनेड
यो एपरपंचविचारि ४९ फिरिजाउउतावलो मतिकोविणसइकाम पाबइपाछंआवियो झिलिउवडं
संग्राम ५० वेगवेगबाटिवहा रामपधारइंजाम नउरिनदेषीजानकी मुरछाणाश्रसूतांम ५१॥ घडिहिडला
नतमांकहेएटाला॥ श्रीरामइंनारिगमाईहो इतउतनहटतजोलतवनमइं सानविदिइदेषाइहो श्रा० ५२
सेशालाथांमाश्रंतरजांमी आगइंश्रावइंधाइहो [illegible] होश्रा० रा ५३
येंश्राउतेदाउकं नरकोई नारीलोधजाइहो उविकुयाबीपापीपुरषइं तोमितेउडइंएघाईहोश्रारा० ५४ श्राव
कजोणिजोणिसहाई श्रनूउपगारकराइहो श्रीनवकारश्रपारश्रनोपम दोधउतससुखदाईहोश्रा० ५५ मं
त्रप्रभावइस्वर्गचउथइं सुरनीपदवीपाइहो संगथापंषाश्रथरीयो सेगतिघोसुषथाइहो श्रीरा० ५६ जेचत्र ५८
देषइनाचउदेषइं पासिनकोइसषाइहो संचलजांणीश्रासाश्रोला धाइरहइपलिताइहोश्रीरा० ५७

लस्मणसाथिइंघरषेचरसो मंडइंतोमलडाइहो इविशिरलघुसाईखररावी श्रापकरइंश्रधिकाईहोश्रा०
५८ रविबइंसिनइंलस्मणसाथि कूफतणाविधिथाईहो लस्मणबीरइंमारानोषिकुं पहिलोएहवधइहे
श्रीरां० ५९ लंकपयालाकेरउनायक चेडोदरसुतसोहइहो नांमिविराधसबलदलसाजा श्रालिसहा
इहोइहोश्रा० ६० सेवकसोइश्राउोश्रावइं कांमपडयानहिकाचउहो लस्मणसाथिविरादचढइरे सेव
कडुकुंसाचोहो श्रारां० ६१ नायहणानइंलेकालोधा रीसघणएश्रागइहो स्वामिकारिजवेरबापनो ज
गमाहिंजसजागइहो श्रारां० ६२ उमहश्रागइएकाटपतंगा रसपलंकुंसाबुहो रिउश्रादेशाविसेसचला
वे रतिश्रवयायेतिराष्हो श्रारा० ६३ ईषतहसिलस्मणजीबोलइं सिउरेसहायसराहो श्रापबलइं
बलवंतकहावइं परबलिनिस्श्रयरातो श्रारां० ६४ जेठउंबंधवरांमनेरेसर दुखितजनप्रतियालहो देसिइं
श्रुकनेराजउम्हारूं शत्रुकंदकुदालहो श्री० ६५ दिविविराधविरोधीरवरतउ बोलिउरोसभकासहो शंबुकहनोमा
रजिएहनइं खरीयोवनवासोहो श्री० ६६ लस्मणसाथइखरमतिरेकड नंदनविसरासाइहो उणंदोपंषि
इतोहेचलाछुं तउरेसुमित्रामाइहो श्री० ६७ मारिकइंमारिमइस्थरष जोलतजासुनटाइहो करिसगटायो
ढइयषियाती लेजेतामबोल्याइहोश्रा० ६८ एमकहेतउनटजिमनाचे बाणेश्रंबरछाईहो बाणसुरपइरव
रशिरवेदिउं श्रवररह्यामुरझाईहोश्रा० ६९ दूषणदलनेईनइंदउडिउं तेयणिमारीलोधेहो श्रायुणका

रामरास धुआयसमारिके अवशेसुजसनदाधउहो श्रा० ७० तेहसाथविराधवदातो मणिजंमणिजंआवइहो एतलेवंमो
नेत्रफुरकिजं तांमअसातापावइहो श्रा० ७१ अलगाथीदोवोअलवेसर अटवीमांहिनमंतहो नारिवियोगि
ओगीनेहवइ आरतिमांहिरमंतहो श्रा० ७२ लहीविववाद विचारविरोधइं एतजंमइंधरिजोणोहो अटवीमे
एकाकोवसिइं रामगमेमिसइराणोहो श्रा० ७३ लखमणआगइआवीउनकें रांमनसांमुंउदिधइहो विरहशोल
सरिखोसालइं नसमुवातविसेषइहो श्रा० ७४ पांनपांनकरिवनसोधिकें नारानयणेनावीहो वनदेवातुम
उववनसामणि दिउछउंकिजंनवतावीहो श्रा० ७५ उमनरोसइंनारीमूकी कोनोकांमसिधायोहो कोमन
कोयंनारिगमाई जगिअपजसबोलायोहो श्रा० ७६ नाईनरवेरांमइंमूकिने वीरक्षतालोकामइहो आयोधो
सोएकनकोई उवुदोवुंरांमइहो श्रा० ७७ राजसारदेवानविराधजं धनिकेकेमातोहो नारिनराधिसकिजंन
रनिसतो तउकिमराजरषातोहो श्रा० ७८ एमकहेतउंरांमनरेसर धरणिपडिउमूरछावि रांमउषेयसुपंथो
उपायो तलाआगेआवाहो श्री० ७९ लखमणजीकरिसीतलनाइ बोलइंआवीआगइहो आयकरउउकाय
किसंए सकोनेदुहुलागइहो श्री० ८० नाइतुम्हारउंजातोआयो खरनोकंदनिकंद्यो वचनसुधारससुंसिंचा
णउं लहइसंज्ञाआनंदोहो श्रा० ८१ देषइलषमणकनोआगइं कवि मिलायोमांडइहो आपदोइमिलित्रिय
नरषोणी हरषांलीजेमाइहो श्रा० ८२ उदसुसोमित्रीतावइं पल्लएआरतिमांणउहो नादसेदकरीनइंकिण ५९

आर विराधधनवधिकोगए अरजकरआरराणोद्र वापांवाघादेउदहहरिमद कोरिजकेउइलागीहो श्रा० ८५ ३/६

एक सीतालोधीजाणउहो श्रा० ८३ तेहनाप्रांणसंघातइंसीता वेगलावीओणइहो तउतउलषमणनामहमाहं
नरिहतेउरूवधपालउंहउं श्रा० ८४ वारविराधखराहविमिलायो आपिउंबोलउदाइंहो लंकपयालेप्रजविरधा
पिजं वचनपलइंजिमवाधहो श्रा० ८५ सीताषवरिकेरेवाकारणि लडमोकलायालारीहो वारविराधघण
उफलफलीयो अवसरिसेवाप्यारीहो ८६ सुभटसकोप्रथवीफिरिआया सीतापवरिनपांमोहो अक्षम
माकसाप्रआगइ वतलावइंतवस्वांमीहो श्रा० ८७ दोषनकोइसेवकजणनउं उद्यमनोअधिकारोहो प्रभ
कदशाइकाजिनसरइं सुदशाकाजसमारोहो श्रा० ८८ विरविराधसबलदलसाथिं रांमलषमणदोइ
हो लंकपयालइआवी यवरिनदइंसकोकोइहो श्रा० ८९ [redacted] सुंदरनेरसआ
पहो मांमउंआवीयेसकडावइं सथियर्यादवारवापहिहो श्री० ९० वारविराधविरोधलेइवइ वारुंवेरजवा
लइहो कोहयदाघीकोरषघायक लोगवचनसंतालइहो श्रा० ९१ रांमसुलषमणदेषी रणिमुषिसूर्यनषासुत
लेइहो रावणीयासइंपधारीपायपणि घरनुंवउडुकरइहो श्रा० ९२ वारविराधतिहांपिरथापिजं आरतिम
घलोटालइहो मोटानामोटिमतउमोटी वमोटोबोलेपालइहो श्रा० ९३ रांमसुलषमणखरनेमहले
वस्याआपविराजइहो सुघराजाजिमवारविराधज सुंदरघेरसूरवमाजइहो श्रा० ९४ ढालसलीएता
मतासम वारविराधवधायो केतोराउरिपिराजकहइरे राजगयोनरउडायो श्रा० ९५ ॥नहराग

दूहा॥ प्रतारणविद्यामहा हेमवंतगिरिजाइ साहसगतिसाधासहा तवहांआयोभाइ ९७ तारानंदेअलिली
बीयो आतुरथयोअपार रूपधरइंसुग्रीवनउ नकरइंकाइविचार ९८ पुरीकिंकिंधआवीयो करिमरि
थडेसुविसाल सगतिमतिवालिविचारिवइं बीजउरविआकास ९९ काउकरिकारणइं वनमिइंगिऊ
सुग्रीवजी एथरमइंचलिआवीयो अवसरलहिइअतीव १०० तामधणीघरिआवीयो रोकाणउदरबा
रि घरिमइवइसुग्रीवजी वातपडीसुविचारि १ दोसुग्रीवविचारिवइं वालिनणतउपरत काकाघरिलाला
जउइं रायेनाघरसत २ चंदरस्मिरलीयामणउं सुवराजाजयवंत वालिविरनकंआईयो बलवबलन
हाअत ३ आवानउंआहोरहित कोईनआंगइजाइ वेदावाहरिकाढीयो बलीयाघायसमाइ ४॥सुरली
काढाल॥ तारापरंसुधिमोहनी ताराअधिकरसाल तारासुग्रीवसोरनीहो ताराअतिसुविसालतारा तारा
रूपअनूपतां तारारमोद्याल्पतारा तारामोहणवेलितारा ताराकोमलकेलितारा ५ चउदअक्षोहिणी
नउधणी राजाश्रीसुग्रीव यारनही३स्तातणउहो साहिवआपसदीवतारा ६ एकइंउगइंमारीयइं मा
चाजूणा दोइ ऊनविनानिश्चेनसहो लोगांश्री सिंदेहोइता०७ साचकेमिलिसिइंसाचनइं जुवउजूवइ
जोइ जवतणाजउऊनलीहो जइसुमतावइकोइतारा ८ हंसअनइंबगऊजला लोगाएकवसंस बारना
रनइंयारखइहो बगबगहेसहहंसता० ९ काचअनइंमणिसारखा लोगांएकहीवाच परिपारखीयांआ ६०.

गलिहो मणिमाणिककाचहीकाचता० १० काकअनइंतुकोकिला वरणइएकसुहाग मासवसंतविराजीयोरे
पिकरकागहाकागतारा०११ मंत्रीनइंयंचामिला निवेडउएमआइं सातमातअसोहिताहो दोइयछिइंथाइ
तारा १२ दोकेलडकेएआयमइं सोचादेवसहाइ ऊठउनासीजाइसिहो सकौनेआवादाइता० १३ येतबुद
रितेमाकलउं ऊनादोइआइ लोगलग्याआपापणाहो ऊगडोनोनमिटाइ ता० १४ लोगनचोहेनारिनेचा
हइंएहदोनाइं कोइमरिलकोजीवियोहो लोगालागइकाइतारा १५ तवदोइसुग्रीवजी लडायाअस्त्रउपा
डि योतिनरायावेदवहइंहो नउहीनमिटाराडितारा० १६ दोइतोसमतोलजा दोईविद्यावंत दोइयेचरते
यरोहे दोइतउमयमंतनारा० १७ हाथीसुंहाथीअडइं सीहसाथितउसीह सापइंसापमिटइंनहीहो सरइं
सरअबीहता० १८ सुग्रीवइंमेतारीयो हनुमतआयोचालि जउतउसुग्रीवकूटायो नसकइऊगडइंसालि
ता० १९ सुग्रीवचितसुचितवइं साचकेएतउसोच कहनइंतजिकहनेलजेहो लोगांएआलोचतारा० २०
बलकेतोबलिवंडजी जगिजसजाचउंजोर सोतोउकुठसेयमाहो लउएरहायोसोरतारा २१ चंद्ररस्मिबल
होयणउ मरदांमइंमरदान थवरिनलीनेएतलीहो ऊगनिजऊणवेआंनता० २२ दशकेधरवेदायतउ
लेपरमारि गिणाइ वानसुरूणहणिदोइनइहो तारालिइंबोलीइतारा० २३ एताहवासेकटयडिइं कोम
समारणहार रवरबोसो रामइंहलिउहो करतोपरउपगारता० २४ शरणथइंश्रीरामनु लखमणसुंदर

सिराम जेमविराधनिवाऊ।घो सोरसिंईदमकांमताराः २४ लेकयथोलोवेसदा श्राजलगातेइम बोलाव्यञ्चा
वइसहोहो कारिज वामवावीसताः २६ इलजओमनेमोकलितं वारविराधहिपास वातजणावीविस्ताहो
पायोसोउल्हामताः २७ वेगाश्रायतेवेगसंश्रोणिकरतेश्ररदास कांमनुम्हारो सारसिंहे देसिईश्ररिनइ
त्रासताः २८ संतोषाणे त्रस्वामिजी निसुणावचनश्रमोल बलतत्रेवोरश्रमीतणाहो श्रारतिमांहिसुबो
लताराः २९ साहणवाहणमांमरटई वालिगयोसुग्रीव श्रागइधरिविराधनइहो श्रारतिवंतश्रतीवताः
३० चरणकमलप्रननीनमी साथीमननीवात परडुखकोइरनतेसहोहो विरुदश्रछइविष्यातताराः
३१ दमडमरनेछइसारिषो श्रबलाडुखश्रपार दमारतेश्रम्हलाजिसितेहो यारत्रश्रीकरतारताः ३२ ए
हसुणेतावातजी गद्दवरीयोराजांन परडुःख[illegible]णोतेहो श्रालईश्रालसमांनताः ३३ डुखदायामेसं
च्चरी सुग्रीवहिसंतोष दाधतेदेवदयाकरीहो कोधतेसुषनोपोषताः ३४ वीरविराधकहेसहा श्रापानेए
काज करिवोछइउत्तावलोहो नकोयांपावालाजताराः ३५ कपियतिसाथईकांमजी श्रायांकरिछेएह सुसत
तेहेडसोधिसिजेहो जईधरतानतेछेहताराः ३६ दायश्रनईपरदायनी सुद्धश्रणावेश्राप तत्रनंतसाचत्रजाण
जो सरराजा छईबापताराः ३७ प्रसजीचालाश्रावाया पुरीकिंकिंधदेषि जाणेश्रलकाश्रनिनवाहे पायोसुष
सुविशेषिताराः ३८ बीजोबोलावीलीयो ऊत्तोश्रावीयेत दोइलज्यानविजोणीयोहे साचनकुवहिहेतताः३९ ६१

वल्लावर्तजनोमघी धनुषचड़ोजितेदेव वियागईटंकारथी प्रगटथयोततषेवताः ४० लेयटपरनारीतणा
दोवांमांहिदोव जगसघलोश्रविलोकतां तुम्हसमोनरनदोवताः ४१ एकबाणसुंमारीयो साहसगतिस
यताम एकचपेटइसंघने हरिणलहइश्रवसांनताराः ४२ वीरविराधतणीपरइ थिरथापितेकपिना
थ साचोकरिसजुदेषनोहो श्राणीमिलीयोसाथताराः ४३ त्रयोदशाकन्यासली रांमप्रतइश्रायंत प्रीतिरा
तिकोवीकरीहो कपियतितोषोयंतताः ४४ रांमकहइकपिराजीया तेवाचासंभलि परगेवानीपाछि
लीहो पहिलीसीतावालिताराः ४५ हालतलीचेत्रीसमी कपियतिकांमसमारि केशराजरिषजीकहइ
श्रबसोधिजइनारिताः ४६ ॥ गूजरीरागेदूहा ॥ रावणनइघरिरोवणुं श्राजपडितेश्रबधार खरतीसुणी
सुणावणा श्राणिमिली बहुनारि ४७ दिवसिच्यारश्रांतरइ सुर्पनषानइसुंद लंकानुगरा श्रावीया वरसइं
श्रांसुबुंद ४८ सर्पनषासुहामणी करता श्रधिकाविलाय रावणनइगलिलागिके दानवदइश्रतिश्रा
य ४९ कंतहणितेकुश्ररहणितें हणायादेवरदोइ षेचरचउदहजारनते हेनाएकसुणोइ ५० लेकथ
यालइश्रावीया श्राणिरोसश्रगाध रांकजेमहकाढीयो वासितेवीरविराध ५१ बंधवछूरूबयवांधको
वरतइएश्रन्याय धरतीदिनदोच्यारमे जातिहारेषाइ ५२ एकसुवरणइसांमली बीजइपीलहवनि
बनवासीबइनीलडा पणिनहीकहइमांनि ५३ नसावाभालेजानणी वासश्रनेरतेहेरि सगतेमगो

श्रीवेवहा कोइदिनाकइं केरि ५४ एमधला अवरोमुला बोलइं वीरवेकि घरटीनाकेरा घणा घरटामो लोएक ५५ पं
षालीकाडी तलतें मेयामइं दिनजाल मारीकरिसुंपाथरा अवरचलातेवान ५६ वातनदिंबलकानही रागनही
नहिनहिरंग राजकाजलावइनही होइरहितें विरंग ५७ नींदनहीलीलानही फुलनहीतेबोल तेजनपाणी
पणिनही सुंणपानलावइंबोल ५८ हासिनहिरोमतिनही नहीभोगनहीयोग मोणसमेंआसारिषो होइरहितें
लसमोग ५९ पाथरेंऊतेंषाटलो पडितेंरहइंनरनाथ गेगमेगबोलइनही अरतिकरइसकेनाथ ६० ॥मिरइं
मनि अयसिआणिलणीएहाल॥ षाराचितमइंकाइवसा मंदोदरिमांदोपतियेषी एकेवातहसी षा॰६१ पथवा
उइंऔधरिइंआयइं घटलोऊाइंराणि तेजहेजपरलायअषाणतें सोसालाजषिसा षा॰६२ सुंसअबइंअह
मुकलगला नानकहोजिसाहीतिसा आरतिआतिउदासयणाषा मतिइंऊायइंचमीषारा॰ ६३ रावणलावइं
सुणिमंदोदरि चितमइंआणिवुली सीतासरतिलालसलाए हायाने मुला षा॰ ६४ इंकुबेदिन रातिघणोरतें
नसकेंसमझिकरी कोतुझकनइंचाहेदेवा मेलतें प्रीतिषरी षा॰६५ ऊंमंदोदरिबुरेशुसोदरि मोटइनाम
चढाई रावणराणीमांहिंवषांणी वनितामांहिंवडाषा॰ ६६ सोलाकोलरमांणीहेतुं रावणसाथिरमा मां
ण मसरनतें लाहेलीजइ कंवुरदासिसमी षा॰६७ सीतातेधनितेधनिषारइं माघइअधिकरती राजारा
वणनइंचितआवी मेल्हीअवरवनीषा॰ ६८ स्वरमेतयश्रीतेतें सेवकमात्रसरा उपतितजिएपतिज

उपोमइं कर्मइंलीरिकहावइं षा॰ ६९ मनघोचानइमौनिकरीघी नीचामहानरहातुलतें सताघांमांहिं सयांणा
एतीहानलही षा॰ ७० किहांजंस्करकिहांसिंहसन्नरकें गरुडकिहांरेअहा किहांमुझपतिकिहांतुझपतिलंपट
लाजलहीरेनही षा॰ ७१ तेनारीधनितेकुवाकर सरिषीजोडमिली पतिलंपटघरकापटरांणी इतीमांहिंमिली
षा॰७२ षारुं मुहकुं नविदेषइं तुझमुंवातकिसी अलगाजाओ षोआगइघी मयलीजेमसी षा॰ ७३ एहवल
इं रावणचलीआयो सीताधमलिधमी सातलवचनासुंसमझावइं आपइंकृपसमी षारा॰७४ मंदोदरिराणीउ
इआगइं किंकरमांहिंगिणी कुंअमृहासमरिषउंकेना लाइअवरसणी षा॰ ७५ नुजरिनिहालोअमस्यालतें दालतें
घातघणी पालतेंदोषोकसनमरणइं उअसवारतणी षा॰ ७६ होइअषविसीताबोलइं सासलिलंकाधणी का
लहइसिसिंतेंकेरे मुंहुं जाघरिलालिचलाषा॰ ७७ धिगधिगउकेएआशामाघइ घारीकोनवली जीवनरांमस
लखमणकेंबुं अहीमाघइरमणी षा॰ ७८ वारंवारवचनजोकोराइं नमजइंराइरली हाकलीयोरेहरालतें
होवइस्वांमनजाइटली षा॰ ७९ सीतानीआरतितोअधिकी नसकितेंसूरखमी आघामाघोअलगोहोवें
नइं मापीआणतमी षा॰ ८० रावणनइउपजीएअधिकी कुमतितणीरेमति उपसर्गकरावइंअधिकासु
दावइरेसता षा॰ ८१ फेतकारकरंताफेरं घुघुघुककरइंएकविचित्रपरिइंकेंदेतानासतनरेउरइं ८२
उअमोनलउइं फुंफूंताफणिकरतायरगद मोदतेंमांहिंअडइं षा॰ ८३ स्तपिसाचवेयालवद्यता

हवसुं हासदसइं डाकिणी साकणी मयलीदेवी कातीहाथि घसइं घा० ८४ ऊसलेंलेता डरललि अति जमजिमक
रभरइं रावणएह विकुर्वण करिनइं आगइं आणि सरइं घा० ८५ परमेष्टी पंचइ मनि ध्याती सीता पेतकेरे
कहजिनकइं थिरकरती रावणसां महं उपगमन सरइं घा० ८६ रावण तउपच पांणन लाउइं सीता समनचल
इं पाकानेनहीं सतपरा तव कानानइरे हले घा० ८७ टालनलीए पांचती समी धनि जे टेक ग्रहइं केतारा
जग्रहा तउ साची सीता जिकुं निवहइं घा० ८८ ॥मालवी गऊडी रागे ढाल॥ विभीषण निशिनी चरी निसु
णी लोगी मांहिं सीता पासइं आवीयो करण दिलासा आंहिं ८९ सहोदरसमझावि वा वालसुणावे वीर
बइं परनारी परीगमुष सारह सबंनसधार ९० बाइजी उमहकुंकलबो किहा थि आयां चालि इहा उमहआ
ण्याकुणइं सायजसंकाटालि ९१ सुभट घोचि अधोमुषी जो णीपुर सप्रवीरा सत्यवती साची सती वोणी
वदइं अदारा ९२ ॥एकदिवसि स्ककमणीए ढाल॥ सीता तीमतिसंकपणइरे सावइ वारू वांणीरे वि
भीषण कुलकेरो नंदन निसुणे अमृत जेणीरे ९३ जनकपिता भामंडल भाई रामत्राया कुंवयांणी
रे दशरथ नी कुलवहु वदीती सतीयामइं अधि कांणीरे सी० ९४ रांमनरेसर लषमणदेवर तजीने
कुरो णीरे दंडकारणमांहि आवी वासतणी चितजोणीरे सी० ९५ सूरिज हास असी तरूडाले देषित्र
अधिकपाणीरे लक्ष्मण जो लिलाइली धे ज्योतिघणी प्रगटाणीरे सी० ९६ करण परीक्षा वेगइ वाहे ६३

वेस जालि कपाणीरे संबुकयें णो सारवे हाणो मनसा अति पछिताणीरे सी० ९७ पांडुउदेषी राघवलावे तइं
नकरी मतिसांणीरे विद्यासाधन चिंण अयरा थइं मारि कुंतइं एप्रांणीरे सी० ९८ पावइं हजा नेजनपांणी
आंणीनइं चमकांणीरे षडमस्तकदो सुदादी वी माना जी अकुलाणीरे ९९ सी० पगअनुसारइं चाली आ
वी राघवसुरांणाणीरे लेपरिनी लाल चिन विहणी तोमधणुंषीजाणीरे सी० १०० खरदूषण विशारी लेइ
आवी आगिथी इसी चाणीरे सिंहनाद संकेत कीयाथी लक्ष्मण सुं मंडाणीरे सी० १ लंका जइं लंका पति
णि कुं वात कहा अति तांणीरे सिंहनाद नो भेदलगावी एकुं इहां आणीरे सी० २ एदशमस्तक कायेवाने
कुकानी रेकहाणीरे लंका नगरी आलेवानइं कुबलचलती वांणीरे सी० ३ तेज प्रताप पराक्रमपालण
कुं घरिमंडी घोणीरे पणि आवाबु रावणकेरा एको तिहुं डखखाणीरे सी० ४ अवणि मुणि इं पणि रीसनआं
णाइं राणीनी सहिनांणीरे आगि सतेजी बइं अति अधिकी जलआगइ ऊल्हाणीरे सी० ५ एमसुणी लघुबं
धव जयइं लाइमति सरमाणीरे एको बलता गारुर घरमइं घालेकुण आणीनारे सी० ६ परनारी ते काल
नागणी कहाविस वेलि समाणीरे गोलवतो हा जबतव जो धवं वंउ किंहां हानहालो णीरे सी० ७ संपदत
रुनी एह कुहाडो आपदनी निसीणीरे स्वापसती नो बेकुषदाई मतिहाइं एरासीणीरे सी० ८ लाषकुं
के कोडि कुं उमह अंतिन तंवस्तविरांणीरे आजकालि दिनच्यार मांहि एत उवाल दिषांणीरे ९ सी०

कुंत्र म्हारो त्रलंलगेरा लो॥ राघवंकीर्ति सुरां एारे॥ लोकदे सिइं कोइनकतो॥ रावणकै आगै बोएारे सी० १० रांमसुं
लषमण दोइ बलीया॥ अनमी नाठि नमी एारे॥ सीतानइ कोदेईआवुं॥ जिमरहइं प्रांन षपी एारे॥ सी० ११ ठा
ललाए छत्रीसइमी॥ राइएक नमानीरे॥ किंश राजरिब रावणकेरी॥ वेलोआ णिजरुणाएारे सी० १२ सी०
धन्यासी रागे इहा॥ रावणदे इरानडो वदइबिनीषणबार यहावसुंकिममेल्हीइं जवलगरइंसरीरा१३
रांमसुंलषमणसालडा वनहिंमोहिवास साहसवाहसकीनदी आपदाफिरेत्रदास १४ साहसवाहस
माहरइं विद्यानो अतिजोर उसिंत्रेकरिस्यइंबापडा कांइमचावइ सोर १५ आजनही तो कोलही कालन
हितवे मास मासनही नत्तुबरसमई आपही करिस्यइं आस १६ एनलामोहिआसमा॥ तआवे सिइं चाल
बलबलकोइ केलची॥ देषित्रं परहारा लि॥ १७॥ सयां गा यदि हो इत्यइ कारण हान। यहलीवामइं सीन
लीरे रांमत्रिया घाघात हो सिइंरावणनी सहारे ग्रहा मिलैबेवात विनाषणवात वि वारे एह सत्यवचनरां
नी तणारे कोई नही संदेह वि० १८ माईतो कोभ्रमो घणोरे आगेही त्रपकर्म द्वारब ओबनो वरितेरे धी
रते लइ जगि भर्म वि० १९ लावनो बलवइ घणत्ररे नटलि कोडिप्रकार सीतानइं तजतो षकारे यलमि
इलो गाचार वि० २० सुणनउहारे सुणइंनहारे विभीषणनी वाच देषेतत्रे देषइं देषइनहारे कांमी एत
ते साच वि० २१ उफकतो मिविमानमइरे सीता लेइ आप क्रीडाकरवी चालीयोरे टालित्रनरलइंपाप ६४

वि० २२ देषावइं अतिरूवडोरे रतनमइं गिरराज नेहनवहनी उपमारे देषावइं वन साज वि० २३ तटनीतटक
रि सोहतीरे हंसाकेरा ष्याल केलिहरा कोमी तणारे दिषावइं सुविसाल बि० २४ मंदिर विविध प्रकारनारे
सजितणी वरसोल लहलहयणत्रे सजत्ररे ओलि विषयसुषलोलवि० २५ लेपरलाल चिलागायोरे के
लिवणानी कोडि करि देषावइं अतिघणारे षेतषरइं नहीं षोडि वि० २६ हंसलजीनइं हंसलोरे कदहीन
वेवइकाग रांमतजी सीतातणत्रेरे नहिअवरासुंलाग वि० २७ तोमत्रग्रस्योआबीयोरे हृदिअशोक रहिं दे वि
मूंकी रावणमानतीरे एपणि कालवे दि वि० २८ विलापणचितचितवइरे होइरहितसीघनकोइ सरदेह
इरे आयोदीसइंअन्त वि० २९ मंत्रीसरबोलावीयारे विभीषणतिहिवा करइंमसूरतिसकुमिजाणि उपडि
उधन्नविचार वि० ३० मोहतणि मुहिमाची योरे कोइनमांनइं कार क्रोधद राघोद षीयोरे केम करीजइं
सार वि० ३१ आयो दीसैआसनोरे रावणका लविनास कोइउपकमी करीरे कीजइं नीतविलास वि० ३२
मति उपावइं मनषकीरे तेमाटइं मंत्रीस जेरनचालइं माहरोरे कानन मेल्हइं ईस वि० ३३ मिथ्यामतिनउ
मोहत्ररे जिनमतनो उपदेश मांनइं महा प्रत्रू आपणत्रेरे कीजइं कांइं किलेस वि० ३४ हनुमननइं कपि
राजायोरे आदि मिल्या नपआय धर्मइ यथिइं पंषाया षयारे मेल्हवे रावणराइ वि० ३५ रांमअनइं लक्ष्म
णघकारे रावणनो संहार अांनी वचनेलइंतउहारे साचवीइ विवहार वि० ३६ जोतो यहली सो चायै

रामजस ६५

तउ रुषवाड मंदिर लागइं बार इ ध्यारे काढि ते कांइ न जाइं वि० ३७ नयलउं रूपउ सिंहासन सोहरे सामउं नहि
लगार जेहनी आणी कांमिनीरे ते तउं आवरणहार वि० ३८ जेनकंनरीयो पांकुणोरे नेतरूमोवइवार षो
टउ नोणउ आपणउरे कीयां काइउ वार वि० ३९ लंका नगरी अतिसजारे ढोलन कीधारेच अन्यथान
नइ इधणारे मेलउं बकुलउं संच वि० ४० कोट ते रनाकांगरारे पोलिअनइ पगार सघला हासमरावा
यारे गोलयंत्र अपार वि० ४१ राघव विरह वियोगीरे आरति वेतउ दास अन्नपान नावइनहारे लिइ
लो बानिसास वि० ४२ लषमण माषिइ बोलीयोरे ढोलपडइ लइएह आशादिन दशावीमनीरे पाबइ नछि
म्हइं देह वि० ४३ कृपीयो अधिक उतावलोरे सुणीयो सुसनउ होइ निमीयो जाइ सरोवरइरे सांहउनोवे
ल वि० ४४ ढोलउं वानर राजीयोरे सुषमांहि दिन जात परडरिवइं डविउ नहीरे वानवउ नविमा
वि० ४५ एह सुणी नइ उठीयोरे हाथ यह इं सिरचाप धमधमतउ अतिचालीयोरे होठ डसंतउ आप
७ आयो चलिदरबार मइरे पलसलीयो सुग्रीव धुजतउं पगि लागीयोरे सारइ से कम्रतीव वि० ४७
उलेसउं दिइं आकरोरे कुधि नहि तुझ मांहि उघर मइ सुषलोगवइरे प्रन्न तरू सेवइ छांहि वि० ४८
वानर जाइ वर सउरे वगुली राति गिणाइं उझ मइं वीतक वीचायोरे लउहोनसमकइ कांइ वि० ५० ६५

पवउ कुटा वेद्यनइरे संलारि नवि कोइ आरति तउं अति ओधलारे आपवका उं जाइ वि० ५१ मननी धारी एन
णोरे येचरि दोइ प्रकार सूमि तणउ बोल्यमायोरे सघलइं उन्ह पयसार वि० ५२ वाचा पालउ आयणोरे
कांम करो धसि धाइं नहीं नाहस गति नी परइरे दिकंयर नवि पडं चाइ वि० ५३ देवद्याल दया करउरे कं
तवंहुं उन्हदास एम कहानइं आवीयोरे श्रीराघवजी पासि वि० ५४ पगि लागा नइं वीनवइरे वेगउ काम
कराऊं पुसकरावुं चांमनीरे ऊरण तउ हानवाइ वि० ५५ कोमीनइ तो कामनीरे कहाय इं प्राणसमान
उवालीनई आपतारे आप्या उन्ह मुझ प्राण वि० ५६ जउ तउं बुजावतेरे जो जितं कांइं काम सुधिक
रू सीतातणारे तउ मा चाम इं नाम वि० ५७ संबाह्यासउ सांमटारे सूरामांहि मरर सीतासोधण चालीयेरे
जिम पोणी नापर वि० ५८ गिर नदी नइं मायरूरे द्वीपादिक मझ गाम पुर पुर पाटण सोधीयोरे नगर नग
रनइं गांमि वि० ५९ हरण सुणी सीतातणउरे सामंहल आवेत साइतउ सगना लणउरे गाढउ डखया
वंत वि० ६० वीर विराधय धारीयोरे लेई निज परिवार सेवक सेवासाचवइरे मानइ अतिउपगार ६१
कपियति तउं उालइं चलारे कंश्हीपयकांत रजउरि नसदेषिवइरे त्यारतीयो उदरूत वि० ६२ दशकं
धर मुझ मारि वरि मोकलीयो कपिराज मुझने मारीजाइं मइरे तपजि उअधिक अकाज वि० ६३ क
पिराजा लव बोलीयोरे गाढउं हो इगर्म उमुझने कितं लगायोरे विनय वडउं जिनधर्म वि० ६४ धाक

रामजस चढइ पगिचालचइरे सोतउ बळसिविमाण आपाईआइ फिरीरे नउ विकं कोई गुमानि वि० ६५ सोना
वइ स्वामी सुणउरे ईसो सुअभिमान काइं करइं नरपाधरउरे कारण एवै श्रीनि वि० ६६ रावणि सीता अ
पहरीरे मइं मनि किउं संग्राम विद्यासघली अपहरीरे पडउ योहोइनि कांम वि० ६७ पंषचि कजेण पंषी थोरे
ऊडी न सकइं जेम विद्याविण विद्याधरूरे जाणेवउ वचन एम वि० ६८ रामसमीपइं आणी थोरे मांडि कहइं
विरतंत रावण सीतानइं लेइरे नावउ आइ उरंत वि० ६९ राणी जायइ रोवनीरे करती अधिक विलाप
रामरामश्री रामनोरे एक हाजि हाजाइं वि० ७० लखमण लखमण वेतनोरे करइं सा मंडलश्रात नामजयं
तो ऊइधीरे मइं निसुणीए वात वि० ७१ ऊकऊश्री नवबाहरूरे करतउ अति आकोरा विद्यासघली अपह
रीरे रावणिका धउं रोस वि० ७२ समाचार सीहामणारे सीताजीना पामि परम महासुष ऊपनोरे जाणिवि
भुवनस्वामि वि० ७३ रत्नजटी विद्याधरूरे कंठिलगाई लीध उम्हारइ वाल्हेसरूरे घबरि नलीतइ दीध वि
७४ जिमजिम रहइं वातडीरे तिमतिम ऊपजइ राग वाहूवार विशेषा यइरे रागानउ एमाग वि० ७५ म
भा वारस गोतणारे सांतलतां संतोष मिलवा मइं उडुं नहीरे वेमतणउ अतिपोष वि० ७६ एहवइ घने सु
ग्रावनइरे आजके तो दूरि आल सआअलगी घरीरे उद्यम वंत हजूरि वि० ७७ लंका नो ए विउं किसूरे
एहवउ रावण तेज आज लगइं अधिक अवेरे रिउ तेजसहेज वि० ७८ रामकहइं सो जाणा सूरे तेळप ६६

णं संसारि काइ रकपट करी घरउं रे लेइ गयो मुकनारि ७९ लखमण नजरिइं ठाहरइरे तउ रायाराजान देषे
वी दिन च्यार मइरे एणो एम यद्दान वि० ८० लखमणसाषइं षेचरेरे रावणतउ छइ स्वांन सूनाघर मइं पयस
योरे फिटि एहनुं अभिमान वि० ८१ उत्रीनइं बल नवि करि करे उत्रीनुं बल षेत सोइसाचू मानेवुरे देषिउ
इनिजनेति वि० ८२ जांबवान साषइ लनउरे उपाडइ नु जकोणि कोटशिलानइं साहसीरे रावणहलो जा
णि वि० ८३ साधुवचन मइं सांसलिरे एअति रूडी रीति सकउ नइं शिलऊपाडइ तोरे उपजइं अतिपरति
त वि० ८४ लषमण साषइ एतलउरे वइसि विमानइ देव विद्याबलि विद्याधरूरे आइ गया ततषेव वि०
८५ जिमलतातिम तेशिलारे देषाडी कंपाडि पुफवृष्टि कइ सलीरे सुजस चढिउं लेलाडि ८६ सनुंर करे
देवतारे प्रत्यय पामी जाम सकुको आणंदा यारे पाछा आयातांम वि० ८७ वृद्ध पुरष परमारषारे बालविचा
रइ एक पहली दूतजमोकलउरे जाणगहार विवेक वि० ८८ वातामइं समफावायउरे पाछी आयइं बाल
दोइ घरे देव धामणउरे वाधइं नहीजंजाल वि० ८९ इतमहा बलआगलोरे मोकलायो सुप्रमाण लंकात
उं साजा सुणीरे कांधा अतिसंमाण वि० ९० दाल चलीए मइ तीसमीरे कांधी इतहिवापके शराजरिषजा
कहइरे जेहनउं प्रबलप्रताप वि० ९१ केदारा राग डूहा राक्षसकुल सायरविषइं अमृतऊपजिउं
एक विनीषण मतिआगलो जाणइं विनयविवेक ९२ इतधूत आयइं धसी विनीषणनइं पासि स

मांनीराषसनणो पावउनाछेनासि ५४ सीताबोडावणतणी रावणसुंअरदास करिसिंइं लघु लाइसली
मानेसिंइं प्रस्तोस ५५ देवयोगिमांनीनहीं पाबोवानविसेम सर्वजणानइंआपनइं लोधामांननेरेशा ५
थ मुयावहसुमतोकीयो अवलोइसकसच हनुमततबबोलाबीयो जोणअतिसमरथ ५६ पणिलाग
कलेरहिंकेअवस्तजोकरिवमार तुकसमबीजउकोनहीं धारोजगिजसवाद ५७ दशकंधरलेईगयो जे
गानगरामांहिसीताबइंतसअछितउ तुकधीआवइओरहि ५८ हनुमंतलाषइंस्वामजी मयाकरीकपिरा
इ तेमारइंकेतेडाये वांनरघणाकहाइं ५९ गवगवाखेशारसरज गवयजोवाननलनीला द्विवि
दगंधमादनसलनउ अंगदमेदसलोल १६०० इत्यादिकतेउवइघणा वांनरअतिरोम बेस[redacted] संघ्य
रवणी मांहिंमारूंनोम १ पणिकेकारिजएतलाकरूं सांभलो राइ लंकाराक्षसद्वीपमुं आणुइहांउचाइर
केलनकेकरीनिकंद ससवतीसीतासती आणुधरिआनंद २ रोमकहइं साचउंसक्र धारउवचननविचा
र जेमकहइंतिमहीकरइं नहिसंदेहलगार ३ एकवारतउजाइनइं आणउंषबरिअपार विसय
डिबइंयारकइ वरतइकवणप्रकार ४ ॥दधिसुतजातहो त्रणदेसएढाल॥ कपिरेधायासाधकहइं
जोवसतनउसुम्मराथइं देहसुंरेरहेकअनेतोलागत फीकउं स्वादनहीजलपांनासतवेतातउनादन

आवइं एकवारोधांन कप ७ रोमतिइंमननारमइंरे नारमइंगुणग्यांन हासिप्रालिविनोदनगमइं एक
वारोघ्यान ८ थोगनइंसाधायोयोग लउइंजिउलगवांन कोमरागराचीयाया एकवारउंध्यानकप ९ दा
धायोरेविंफवननउं आणीयोराजांन जेमसुमिरइंविकवननइं एकवारोध्यानक १० स्वैरणीस्वैबारस
ती वेबहीनरआन अधिकतीव्रप्रणांम राषइएकवारउंध्यांनकप ११ बयीदोधरपडूयांमारी साधिइंराषे
मांनमेहनाजलसाक्षिमनसा एकवारउंध्यांन १२ मंदनीमुंदहाथकेरी आगलेरधरोजोणिएअहीनांणि
कारे लहइंजेशालपरेकप १३ आवेतकंचडामणीनइं आणिजेरेसही जेमएसकसाचमांनइ वान
सयलकही १४ मुकविदोगइमरइमतिलु आईयारी देषिलन्ग्णइलउं लंकपतिद्वार हेदीयोहोदे
षिक १५ सबलदलबलसाज सघरउं संघरहीनरेसमेलोयाबइं मोकलिउंकुंबबरि नइंसुविसेसक
१६ जबलगइंकेफिरीनाहं तबलगइंएवांमछोडवा नहीवानराए मांनियोश्रीरामकप १७ रांमजषमण
चरणप्रणमी लेईनिजपरिवार वरविमांनिइंबयसीचालिकं मांनिहर्षअपार १८ चाटइजातांगिरिम
हिंइजो पुरमहेन्द्रउदार देषायांलोरोसत्पजिउं आणिएहविचारकपि १९ मायमहारीषेगुन्हाधो का
ढिदीधीतांमरीसए सुफआवइअधकी आजफेडुंवांमकप २० एमकहेतानरपनालीयाराइवजा
इं राक्षसुणिब्रह्मांडफुटइं नगरनावउजायकइ २१ नपमैंहइसेरइनापरि चढिउंपुत्रसमेतमारे

सो॰ रामजस

मोहिं कुंडमाचि कं। वातमइं विणहेत। २१ अंजनासुत आकतइरे। असरदा धामी मोडि। चकवाइ ऊभि जाइ। र
ण तणा तं कोडि क २२ प्रसन करि तिआणि अडायो। लडइं चितनइं दोइ वीर विरोधि बल लाया। आपमइंन
रलाइ क० २४ हनुमें तइं सुविचार कोधउं। आज मुझ धिगकार। स्वामी नातउं कोम विचरइं। एलगाबा वारक
० २५ मारिलिकं कुं एक बिणमइं। माइ कलेस पजाइं। कोमझारे लांपं करिउं। सांच कपं जउं आयक २६
सो जिर घसार भी भुजबलि। बांधि लाधकं सोइ। तरु मर्हेंद नरेंद साहिकं। सर षीइ मदोइ क० २७ चरण
लागी होडा दोधा। आप प्रगटा नाम। मायनइ दुखदाइ हुं। उनहंते हनाए कोम क० २८ स्वामिकी मिइं लोकं लं
त्रिरचे बि। माय माता उला सऊ सकं। सऊ नरहियो लंबिक० ३० कानितंउ उक सुजस सुणायो। आविदा
ठउं आज। आप एवं आपवा मेंको। आपयावइं लाज क० ३१ स्वामिकी मप्रमाण कीजइं। पंबमइं कलोणा। सोइ
यो कहो आप घ्रत्र पइं। चालि उकरि मेडी णक० ३२ वाटमइं परसिद्ध दधिमुष। आईयो एकदीव। साधु दोइ का
ऊसग्गि दीण। थांनि लीलअतीवक० ३३ पाषतीहा तितिकमा। राषि मन एकंत। करइं विद्या तणउ साधन
लीयो तेह बुझाइ क० ३४ साधुवंदा कहइं ऊमरी। स्वामि संसलि वात। साधु उपद्रव टालीयो। एनहितउंव ८९

व

लिजात। ३६ उम साहि जिइं साध विद्या एह मारा जोइ। विणह। कालइं फलइं तरुवर। एह अतिशयकोइ क० ३७ दू
बहि श्रुत आपकुं उंस। तोम दिइ तेजो नगर दधिमुष अवइं नीकउं। अवरपुरमइं आवक० ३८ राइ सउंगं धर्वरु
उकं। ऊसमम मालो नारि। एह मे वातास कंमरी। रतिलणइ अवतारिक० ३९ षेचर बहु तरां वो बाकरी विद
धप्रकार। तातनयां मइं वयमीरहा या। मन अपुउं मारिक ४० एक अंगार कषेचर। धरइ आस अगाह
कोमव सिकंनंमतऊं कं। तातन करइं व्याह ४१ लालिप्र बिकं साधु म्याना पुत्रीवर ऊणवाइ सिए। साच
लाषइं उंऊ निश्चे बइं लल सुणक० ४२ मारिस मइं साहस्सगतिनुइं। सो इलल सरतार। रूपइ रूडो न
हा कुउ कं। उससिंइ करतार क० ४३ केमजाणिकं जा पस्रजालि हथीए काज। करावि एल लइं पाथी
मेलवि ऊद वसाज कि ४४ उस समा विकत्रां तिऊ ई। ऊई विद्यासिद्धि। मासबवइं सीकती उस। दी
सी आजू ष सिधक० ४५ चरा सघली कहा लाषा। जाणयो पतिदेव। ऊमरि दरषा तांम प्रसली। चाल
यो लतषे वक० ४६ ऊमरी यामुषए हंसल। मोइलो नृपाल। लेई दल बल राम पासइं। आवायो सु
विसाल क० ४७ टालए अवतीस मारे करणकाज थिराज। केशराज मुणिंद साषइं। आईयो अति गाजि
क० ४८ ॥ गूडमल्हार राग ढूहा ॥ उतपतीनइ आवायो। लंक समीपइ ऊाम। विद्या तउं आशालिक
दोगी रन। मंतेतांम ४९ कालनि मोहे इजेरवा। तेहवऊ ता सआकार। घोरमहारउ रामणा। बोले

अनुमतलार ५१ मतिहीणा कपिकिहां चलिकं कर्म आज आहार घाराही एतनेतल गउं त तुंछे जोणइ सार प
तांम सुमुंह पसारीयो। हनमंत पयव ऊमाहि। माचइं तव मारी गदा मुकलाणउ मुंह माहि ५२ अस्वधकी
आदि त्यजि कै नीकल्यो वडवार। आव्हनै आवी रे चहा। मारवरहिं ते शरीर ५३ तास कायो प्राकार
नगरी लंका या सि। कयरनी पुर नाडिकइं नाषिदीयो आकाश ५४ रषवालकं प्राकार नक वज्रमुषउ
तस नांम। मारी लीधकं फुकतकं सर समारइं कांम ५५ ॥श्रीमहावीरस्वामीएढाल॥ हनुमंत वीर आयो
असगां असुहायक। सुअणजणहा सुहायो। आयो जेम बोलायो ह० ५६ पवननइं वसवीयो। सुरुतरु
सवायो। राय रायां कहायो ऊलिकलस चढायो ह० ५७ कदिहान घाइकायो। खलां माइन घायो। गु
णी अले गात गायो। किणहान विधायो ह० ५८ जगनमइं सुजस बायो। अंजनानंकं जायो। विरकरा
यावगायो। नवलइरे चलायो ह० ५९ रामनइं कांमि धायो। नलकं बोलपायो ह० स्पनदूचित
सायो। घरी घबरिषन रिले आयो ह० ६० वज्रमुषनी कुमारी। करइं रोस नारी। हनुमंत साथि आ
ई मंडइ रे लडाइ ह० ६१ तेहना शस्त्र काप। मूलगि रूपि थापी। जोरन कोइ रोहावइं तब सनमुष
आवइं ह० ६२ मन्म घबांणि वीधा। करहइं वात सीधी। कंभम रूपि राची करूं सेव साची ह० ६३ बा
यनंते वइर लेवा। कायाहेहकेवा। अबेउमर पायलागी। मुदरी मुफ जागी ह० ६४ हनमंतइं तांम

परणी। करी आपघरणी। रतिरहा जाइं आगइं। प्रलकां मिलागइं ह० ६५ लंक अनइं गेहि आवइं। सनमो
न पावइं पाय प्रणमंतहरतं। संकवानमइं सरकं ह० ६६ आवीयो केण कांमे। कहंते अलिरामतं रामनान
हि आंणी। करी सर्व दिसि काणी ह० ६७ आयायइ सार पाछी। घायइ सव दिसि आछी। कोजायइ रामराजे
नहि विणसिसइं काजो ह० ६८ लंक कहइ रे जमाइं। समफावायो साइं। पारकी नारि हीजइं नहे। जीवएष
जइं ह० ६९ वात सुणी रीस लागी। फगडवमेरलागी। मारहरूं कहिण चलि सिइं। मूंगमइ घीरहलसिइं ह०
७० लंक अआदेशे पांमी। वन मांहि धामी। आवीयो देषिसीता। वसुमांहि बदीता ७१ रामसतकं माय रोवइ
साइनिरइं न सोवइं। जेहनी एहरीणी। त्रिकं लोक वषाणी ह० ७२ लरूवर अशोक सोसं तोजगि विलो कइते
हनइं मलिबइठी। हनमंतइं केमइ दीठी ह० ७३ अलकतो गालफरसइं। नयणतं नीरवरसइं। आगलि
कीचमांतो। जायइं अधिक हाघातंते ह० ७४ वदन चिलषंते दिषायइं। रांम जिम कमलषायइं। पतियदा
वंद जेहवंते। तनुदेषजे एहवंते ह० ७५ उस्लनीसास बालइं। अधरनी सोहटालइं। धायती रांमरांम नर
अवरतसकीमह ह० ७६ मलिन लइ वस्त्रवेसइं। मलिनकाया विशेसइं। देवि वेदेहि माता। देषती लहायइ
साना ह० ७७ विघ्यागयतिहो मुंदडी आणी सोइं। मायना गोदि मुकइं। प्रस्ताब न चूकइं ह० ७८
रंदडी नयणे निरषी। मनमांहि हरषी। हिजेदायइं लगावी। मिल्यो नाथजा आवी ह० ७९ विजयसुणावे

लेकपतिहर्षपावइ आजसीताघुसालो। रंगमइं वइं पुरस्यालो हू० ८० वीसरी रामनाहइं। मुक सुं माहइं मे
कलइं फेरि नारी। मानिस्यइं वानघारी हू० ८१ स्वांमिन कें कांम करिवा। पायसुं पिंड लरिवा। वनविषयपाव
धारइं। सुपकि सुंएणि कारिइं हू० ८२ नेमजुआदे मनीका। पानलिइ भाइ फीका। असरमइं पुरघनाका। अ
ध्य कअनइं अवररमणी। अबांहे सगमणी। नाहरी दासी घांस्यो। दीसं नाहरतें घासां हू० ८६ कांनि साहारे
बालो। नेहवीए बालो पुरषबीन ह्यअअलगा। विषय सलगा हू० ८७ स्वांमिजानेमलीधा। साधुजा हरेदी
धा। अणेरेईवलीदारा। कीयानसपरिहारा हू० ८८ तेहघी वारवारइं। आवं पासिघारइं। स्वांमी नइं स्वांमी
स्यइंसी घलहिवइं हू० ८० आवायो रांम स्वांमी। अंतरनकेरे जांमी। लखमणवारलणीयो। नणद पतिजे
हणायो हू० ८१ मारीयो कंतदेषे। परनघिएहपेषे मादरनं बोलसाच कं। जाणजेज गनिजाचो हू० ८२ ला
वीनाघइं घेलो पांणहीयानाघइं। बोलनकोइ राषइं राघइं। एफलतेनचापइ हू० ८३ सूपनइ आ
णनें दोइमइं कोनसाणक। सकतिनारेसनेहा। तिलाकपरिहिचिहा हू० ८४ बूटिनावेलकेउकाप्रदामा

दिरेघेउकं। जातिसिइं अतिलावा। साकहइं सोई आवा हू० ८६ दालतोएकहावा। नासनवनीसुहावा। देव
रहाशीलदावइं। केशराजजीगाचइं हू० ८७। आसारागे दूहा। हनमंतलव प्रगटनें घयो। अराणमइं शीतापा
इं रांमसुं लखमणकुशलघी। सुषमानंतें भ्रम्हमाइ ८८ आपवम्हेकणसोकहइंनें। उदधितिरिंकिकेए
ह। आजअबइं किहांपानिकइं। किसुकरवैनेह ८८ पवनराइनोपुत्रबुं। हनूमंत माहरूं नांम। विद्याव
लिमुविमांनसुं ऊदधितरिक आलिरांम १००० साहस गतिनरपमारीयो। वांनर पतिनो काज। कापत्रकिंहिं
धापुरी। स्वांमिविराजइ आज १ देषविदो गभ्रम्हारडइं। रांमनयइं दिनराति। दावानलपरबतनयइं। नय
वइनहूं जाति २ गाइविलोहिने वावउकं हो संतवह। फिरं। लखमणभ्रम्हविलेहायो। आरतिअधिककं
रेन ३ कहरिक्रोघइंधमधमइं कदहासो गइं सोच। करनाघरतइ स्वांमिजी। आरतिअतिआलोचधवां
नरपति समकावणा। करइघणानिशिदीसआधादिनलिइंतेहघी। पणिआरतीयाईशाप कटकमिल्या
वइएकवा आदिइंनपमुयाव। लामंडलनाईसलनें आरती यणइअनाव ई वीरविराघविराजीयो। सु
भट यणइं सुविसेस मंहेंद्रादिक मोटाका। षेचरअवरअसेस ७ एकएकघीआगला। सुभटमहाकुंभार
सरवारनइं साहसी। अंवरघंलणहार ८। मांच मिलीमसंलेतिकरि। यहलामोकलीहूत। षबरिकरांस
तांलणी। तिहांकिसुंवइं सल ८८ वांनरसकंअवलोकाया। वांनरपतिनेदाय कोडीनाविकंतामकं ल

योधो लाइ माय १०॥ बाला आद मडं सुंदा लम सा दिवर ढा ल॥ राजा राघव राया राइं करावइं दलबल
सबल मिलाव्यो। सबरि करेवा कु मोकलीयो आयो कइ प्रभु आयो राय ११ मुद्रिका प्रभु कर नी आंणी
वेग कुं वेगि श्रपुठ कु जाकुं अवसर साध्यो आदर पाकुं नही तरि सोर कहा कुं १२ दिकुं चूडामणि मुफने
मा सीता अवियह पुराण कुं हनुमंत रघव दिक एक वास मइं सो जननतं ले वाणतं राय १३ सबरि प्रभुना पं
पइं चूडामणि लिकुं वेगइ वेग सिधावो सबरि लह्या धीए पापी धांमत्तिरे असाता पावकुं राय १४ सीता सी
ने मंततामहसीनइं बोलइं मातइं बातनजाणी प्रभु परसादि करूं जे ये बोलइ अधिकुं ताणि राय १५
उकनइ तो पोधइं बयसाडा लेई जाकुं आजो रावण रावण नाद नयास्यूं तउ जाणे सिर लाज राय १६
सीता सा थइं एस बमाचूं जिम कहइं तिम करस्य कुं सती नां मधस्या ततं परपुरषनजाईं फरसिकुं राय
जेती ढील करी छो तेती प्रभु नइं आरति घासिइं धर्म नही हमनइं उमर के रतें स्वांमि थ सइं दुख वासइं
राय १९ वांनर जाति तणी चपलाइं रावण राषस देषइं रांम चंद्रना सेवक हरख्या मनमइं भय सु
विशेषइं राय २० सत्यवती कहइं प्रभु सु कहियो नाम तणइ आधारइं जीवी छुं कइ मरि जाति
विरहदे वत्रम्हारइं राय २१ लेई चूडामणि नइं चालिकुं सीता नइं पगि लागी देवरमण वननइं सो ७१

जेवा हनुमतिनी मति जागी राय २२ रका शोक विषयरे निशुगे बकुल विषइं अकु लाणो आकरूणा
अति आम्रसा जिवा अमरष तकुं अधिकोण कुं राय २३ चंपक माथि इं शोक न आणइं मंदमहा मंदारे
निर्दय कदली दल कापे वा फहल्लि रहिकुं घनसारइं राय २४ अवर अनेरा जे घातरू वर नाष्या तेकुं
घाल्या पांन फूल फल कोइ नदी सइं वूठ करइ नव माला राय २५ च्यार हा पोलि तणा रखवाला रास मत्र
तिसे वाहा वांनर नइं मारे वाघ्या हाथो मंदरार सा हा राय २६ घरघरि नइ कपि साम्हकुं आयो जाईं तो
मघुला या एक एक घी आगइं ना सइं घायारेइं दिषाया राय २७ जाई पुकारिकुं राजा रावण वांनरि सेना
वाडा सघर तरूतकुं कोइ न राषकु वाडा सरव उजाडा राय २८ कोइ ना हथीयार वीनायां कोइ घायाफ
डा कोई नकुं मूहना कविल रिकुं ईजतितकुं अति पाडा राय २९ सुभट लेई नृप नंदन आयो दोइ लडी
या दोइ लडाया सारा वानर ततं बलवंत विशेषिकुं सोइ लोधत्रै मारी राय ३० लाइ मेघनाद को पिचढि अति
इंद्रजी तजी आवइं निरषीनइ हरषि कुं मनमाहि लतिसिकुं मरषइ दावइ राय ३१ यद्लीनो बांणासु
लडाये विवध परिइं बलवंता षड्ग आदि आयुध जना सइं संबाहइं मयमंता राय ३२ इंद्रजी नडे
जेम कइं रा स्त्रमहा डरवदाई वी चइं हाथा छेदी ना षइं वांनर एह वडाई राय ३३ इंद्रजी तना सड
नव घाया जाइ सघला नाग पारेकुं गज अनेरा आगइं वांनर घी अति घाग राय ३४ लड लाया

रामजस | द्रजीत बलिलागउं। इंद्रजीतिन विनावउं। नागपास बांधइ मे वांनर बांधिलायो अतिकावउं रा० ३५
आणी मेल्हिउं रावण आगइं। रावण हर्ष न मावइं। वारूंवार प्रसंस करतउं। सुत नइं कंठि लगावइ ३६
राजजी लाधइं सुणि वांनरे रे। लउासि कं कोधू। सेवक उं आजन्म लगउ मुकू। आज राम चिंतदा थउं रा ३७
घनवासी फल सागा हराम यल्ला लगड जा मउं। साल किसे रूरी पुर मइं। घारा मन नावांने आसउ रा० ३
८ अवर कोमना नावि पडावी। ईहो कोइ आवइं। अबत उ प्राणय आवे सांसय छूटे वान विषाचइ रूप
पहिलांधो सांतो जिउमाई। श्रीलघकाहाप्यारउं। बंदी वांन कीआ अववेगा। सीतालेई घधारउं रा० ४०
उतकुछतां छतसिरोमणी। आयचलीकिउं नाया। अंगारा नउं अतिधगधगतो। तलपर हाथिकयो हाया रा० ४१
कुंघासेवकक दिकिउं धारो। कदिकाउम्ह सुकस्वांमी। लाजनपाकं रूवकहंता माचुन नाषइं कांमी रा० ४२ एक
वार पवनंजय राजा। आयो जो बोलायो। वरूण नगा बंदी षानाषी। अरे अस्वर बेडायो रा० ४४ एकउं पणि आयो
घो स्वांमी नो तेडायो। वरूण सुं तेरण मइं घेरि लो। नवउ मेइ मेल्हायो राजा ४५ धर्म पखनो साह्जि करणउं पापप
खिइं नवि करणउं। लंपट नर सुं वात करंतां। पापइं पिंड जलरण कु रा० ४६ एह वोतो उं को इनदेषु अनुजय
एक नइं जाणी। रणमां हिजे उफनइं रामइं। वसुधा वात वदांता ४७ एम सुणी रीसाणो राणउं। वचन नी रव कं
वाहइं। वयरी नरे रे वषांण करंता। मूरू उं चाहइं रा० ४८ रास नि चउ डा माधूं रुरो। पंच सिषा सिर रामी ति । ७२
॥

सउं करइं सो तउस्रो लाषइं। फेरू रे इम लाषी रा० ४९ एम सुणी कोपिउं अतिवांनर। नागपास नइं तोडउं
कमल नालि सुं कुंजर बांधिकं। करहउ कवण नर तोडइं रा० ५०। विधुतपात तणी परि पडायो। मुकुट रावण
कयाडी। षंडोषंड करी नाषइं। कुण विचारी वाडी रा० ५१ प्रहो प्रहारे रावण लाषइ। री सघणा विस्तारी। लं
म सुलंक निसंक पणाइं रे। विहसी निरषारी रा० ५२ कीडारंग करी रे रंगी लो। आयो वांनर लाई। रांम नमा चू
डामणि आपिउं। तो धउं केवल गाई रा० ५३ चूडामणि वात नी संचापिउं। जाणे सीता आवी। आज मिलमु
फवारू वारूं। करसइं हायइं लगावी रा० ५४। विदाउं औ जो मिला यो आवा। चिवि ऊ आजि कामो ते सघल
ऊ नइं रे सुणाव्या। सलउं सलउं कहे रामो ॥५५॥ ढाल सली एचाली समीउ। सीता सुधि लउं णा। केउ राज
राघव सुषपायो। सवास कं हरषांणा ॥५६॥ रांमगिरी रागे ३हा॥ रांम नांम रली यामणउं। रांम नांम कोएक
सीमा शुद्धि लहाईया। रांम सरूप अनेक ५७ रांम अनल लक्ष्मण सलो। सुग्रीवादिक देषि। सुभट महासराय
णउं। कटक मिल्या सुविसेष ५८ नामं नल में नलपती। वडवांनर नल नाल। जाववांन अंगद सलउं
कपिपति नेंद सलोल ५९ श्रीमहेमहिमा निलउं। पवनंजय नो पूत। प्रबल महाबल आगलो। राघ
ण सघलो सूत ६० वीर विराध विसेषी यो। राइसु षिण उदार। इत्यादिक नां मइं लला। अवर लहइं
कुणपार ६१ विद्याधर विद्या बली। मिल्या याकेइ एकल षकोडि। बाहर एसा ना तणी। आणइ साहिब

रामजस

होडि ६२ आयआयणासाथमइं नोबलिकेरकं माद। अबर नउंगा जोर रिकं सुणी उंनजाइ मादइ ६३
सुनवेला सुरमकरति इं अनहा मतरणविचार। गगनियंबंचाल्या मकं। राघवजी नीलार ६४॥ रानी
मालणी देस लगु करटाल॥ राघवआवायो हे। सुनट सघल्या सुरावउदधिनी कनीलमाला नेमदलनने पर
र रा० ६५ विकथवाहनविवधवाहं नाविनधिविमविसेम। विवधिफरदर विवधिनेजा। विवधिवाजा जोइ
रा० ६६ विवधिडेरा विवधितंबू। वाडि तनेअनिरांम। विवधिनौतिसराइचारे। विवधिपरिवार। रामं० ६७
होघायागुलगुलइं गिरुआ हथीनाहा मार। मोरतनं मावायो अधिको। रघतणा चितकारी रा० ६९ सिंह
नादे सुनटकेरे। पउड्काइरखाण। सरबल्लसकं गुणउंबाधरत्राहनकं सुपमांण रा० ७० कोइतकं बय
वाविमाने। कोइतकं गजराज कोइतउरविकेश्रअंबां। गगनचलायागाजि रा० ७१ उदधिउपरिअथ
रचालत विलंधरगिरिपांमा। वेलंधरपुरपांमायो। तिहां समुद्रसेनस्वांमी रा० ७२ समुद्रनी परिहोइ
दुई दोई सरसकांम। रामदलआगल्यो लोगंमंडायो संग्रांम रा० ७३ समुद्रनीनलबांधिलाभकं स
उबोधिकनलि। रामआगइं आंणिसुंका। कोइनकरी टालि रा० ७४ दयाकरिनइं देवजी। ते घापाम
तिरिधानि परलहाघा जातिमेउा। पुमनइं परमां ण रा० ७५ समुद्रइ सेदराकारइ। सुतातान प्रभ
न अंणिलस्मणलणा दाधी। पांमानइं सनमान रा० ७६॥ रातिरहाने पालिचाल्या। राइसेतुसमुद्र। सा ७२

षिजागा सरमलागा। क्रम्मा अधिक अस्तुद्र रा० ७७ सुवेलाद्रि चालिआया। तिहां राइस्तुवेलजीतिलाधके साधि
काधकं कोमलागा वेल रा० ७८ लंगनगरी प्रतिइं चाल्या है सदा पइजाइं हे सरखनपजीतिनश्रीतिहा रस्तं
राघवराइ ७९ आसनकं आवाया। राघवमा नरामिइं मंद। संघरिक सघलेहा जाणिकं। राइरचिनंद रा०
८० लंकनइएथंदेलागकं। लंकनकं विघनासहोइसिंइएसहाजीणि। लोकपांम्या त्रास रा० ८१ सुद्दनइं
संबाहवदा अति। होइ अति क्रसा यार। लंकपति सामंतसरामसा। कूकणहार रा० ८२ नांमघा माराच
मारकं। हस्तराइप्रहस्त सारणादि सहसकेइ। निशाचरमदमस्त रा० ८३ लंकपतिरणनूरताजी
काइ कोडि निवार। नाडिवा आदेवा आपइं। सउरनअ नहा पार ८४ लंकपति सुलकं आवा। करइएअ
रदास। कोईक ननाबलो घाकं। सोचमइं सुघवा सघ० ८५ अणचिमासिकं कोमकाधूं। कपाई कुलनज
अजकं आउरहो इयोधा। नहा सुधरइं काज रा० ८६। नारितकं आपणलेवा। आवाया बइएह दाधां
पाबीवलइं याबो हृधिवरसइं मेह रा० ८७ आवाया बइंडिनएतइं। मोनरकरिस्यइं काम। नारिले सिद्धो
टदेमिइं केडिस्यइंएगांम रा० ८८। रांमलस्मण रहकं अलगा। देषायो दूतस्वांमा। योनीकि साकरवी अ
बइं अतिआकुल रा० ८९ इंद्र्याघको अधका। नाहरा वेदेव। कोइघो बइं रीकहोइ। एककरि अरमेव
९० इंद्रजीतकरेनकाका। जन्मउरयणायां हिाहू घायोनइं नातनकं कुलतानसोदरनाहिं रा० ९१ इं

इजी तण नै मन्हारू। इंद्र जीतई जगि। कण लछमण रांम राजा। रहई जे रसि रेरी राग ४४ पहिल नई बेन रिकै रावण
साथ झगी बात। मारीयो मई राइ दशरथ। पहुत कश्रवदान ४४ ईरा म्हारी डाढ मां हि। आवीया पदोइ। चाहई
बइक बारी यातें। सगते नहीं अरि है ई राग ४४ जांण य बई रांम मिलीयो। वात मां हिं विचार। रूप पांण जि
सते हो वई। ति सकै चउ समकारि। राग ४४ लकलाषई पुत्र सोलतिन हिं अरि सुनेह। जि सकै दे पुतिसकै
नीषुं आवीयो लम्हेह राग ४६ पुत्र नहि जेरा तुरारि पकै। करण कुल नो बेह। इधन ते म्हहउ ते घार कै। काई
जीणई लेह राग ४७ स्वांमि कां मि यण ई पिता लव। अधमां हिं गिण इ। जन्म अंध समान तनो। आज वा कहि
वाई ४८ पुत्र एण इच रित्र धारई। लल पण न दिषाई। नाई जाकै कि संसार इलंक तो न रहो राग ४४
एम सुणतां राइ रावण। कोपीयो असराल। षडग कांढी मारिवां नइ। ऊगीयो तत काल राग १०४ वि
षण कहायो साम्हजं। दोई लागा वीर। कैलकर्ष जइ ढ जीत ज। धाई आया धार। १ वाचक रिनई काया ज
लगा हाथीया जिमसो ई चित्र फारते राइ जी नकै मेल वई नहीं कोई। समतिरहई मुष नगर मां हिं अल
गजा जेहरि। जेणहीं नई सलकै होई रहे रांमहजूरि घ०२ मारा षइ ठवई साचवालो। जवि जगि पति
पाप विसी षण सकै सलकै नाई। नावीयो लपदा राघ० ४ राइ नई पगिलागि चालि कै। लेइ निज परिवा
र। लो सअरे कोहि णी लस्कर। लागा यान सलार राग ५ हं सदा पई चालि आयो। रांमन ई दर वारि। सुया

वा दिक तां म राजा। करई साच अपार राग ई वयरायो वासा सन कथई। तेहा मई परसो। स्वांमि नो अति यत्न
करण। कहई घरन परतस राग ७ मो कलि कै जण रांम पा मई। घव रिक रि वहितरा। रांमजी सुयाच सांम्हा। मो कि
रहिया नि तिराग ८ कहि कपि पती राक्ष सांनकै। नप जई विसास नेह लेई। मो हिल वस्त। नाषि सुंसो। व्हा मग
ण तां म एक विसाल षेचर। नामिहा सुविसाल धर्म पषि धर्मा लमा। धर्म नकै प्रति पाल। १० सतासा ला त णा क
[redacted] घ राग ११ चोर नई चेद णकै नगमई छ
रतो। वान ता न पसाषी। षीजायो यो अति राइ रावण। कोहा यो
वनगमई साच। लंपटा नई वालन गम ई। एह साची वाच राग १२ जाई आगई हाथ साहा। रांम अं जण रमां हि
पाइ पउ तां लेई कच कै मिल्या घन गलि वां हि १३ कुशल पर वई वार वार हो। परजेत म्ह सुयसाई। आज धनि
दिनम्हारकै रे देव दर्शन पाई राग १४ आकज्ञा घा ई हा वय सकै। ज्या जभ पतिकै प्रेम। वान प्रवई हा कैषा
ली इबला वकै के १५ आवीया तकै घणो दाहे। एह वाल लबो ना जिहां ला नई तिही जांतां। मांनवा मिरमोल
राग १६ वचन नारस पवई बूटई ते। नाई जा लल रूप। वचन नई रमि रांम से चित्ते। वचन रूप वि रूप राग २
१७ विलाषण कहई रांम जीसुं। नाई जा नई वोकि। आवीयो सया वजि मति। जोण ज्यो सम जोडि राग १८ रां
म लखमण तां म लापुं छ। कर जेएतस नाम लेक नी बगसी स। भम्हनई हां ढ़ूं हन्ते हां म राग १९ ढाल एक नाली
समीप लेक आई इजी। केशा राज कहं ते अवसरि। आवीया बगसी स राग २० ॥ केदारा रागे दूहा ॥ हंस

रोम समजाम

द्वापि इंदिन आचरद्या आ गइ आवइ जोम धरता दाण मोकल्या पेनकडा वइ लीम २१ कै चीनी चीसमकरइ ध
रतीथाल समीन्न नो बयलइ चउ आयलाया जनिवि मतिमान २२ वेला माधी वेगसूं को धत्र कटकयजाव
रास्सदलदे यलनकै आणइ चिंमनइ चाव २३ वेलि राइ सामइलणकै रोम कटकइ सादि लेकाली बह
रीकइ कोलाहनइनादि २४ संबाहइं सराघणा पहरइ बगतर टोय प्रह स्तादिक संमटी उपइ आबी
उप २५ कोइनकै स्याधीचद्या कोइहय असवार कोइ सिंहो कंधरिइ चढी चल्या निहिवार २६ कोइ खरर
थि वयसीया कोइ यल्हाणइ मेष कोइ सिंचे सइ बयसीया कोइ विमान विशेषि २७ आप आयणा साथसु
आपआपणइ जोर महलोदेइ स्वामीनइ उत्सा बांधी कोर २८ रोस करी अति रातउ त्रे सूरा नकै सुलतान
विवधस्यै करि प्रहरि तो र थि बइवकराजा नृ २९ करण पिता समतेजकरि कै नकसीदुरदेन सलदं
उदा थिइं यस्या आयो अतिमयमंत ३० कमंयती कै स्वरमहा इं इजीत जीजोइ घनवाहन रावललणा
दोर्दम एहे दुं ३१ कवर अवर संवाहीया मय सुदादि अनेक शुक सारण मारीच सु लडसा मंत सकेटे
क ३२ अक्षौणि ना सहस्त्रा नु यारनपावइ कोइ रावण सामहऊ आवद्या कसी यारीमइ होइ ३३ क
डषा को ढाल आवीयत्रे रावलनो कटरी वण रावण रावलइं पार नावइ वाइ यो अंवर कटक आ
डंवरइ थबरि निजयर तणा कोन पावइ आ० ३४ केइ हरि के ऋके इ रे अष्टापद केउ केइ गजराजके ७५

त्रमोर मंजार महा कर्कट के ऋके सुभट स्वामी नलणा अधिक देत्ते आ० ३५ देड केइ यरहइं षडगकेसंय
हइ केइ मुषं टीत्रीलसाहइ केइ मुदगर पराधारे कवारिका मूलसाहा मनमइ कमा हइं आ० ३६ वीसजोजन
लगइ रोमदल विस्तरइं एरेयेचा सयोजन प्रमाणइ सुभट बोलावता धैर्यउजलावता एकसुएक तकै अ
धिकतो णइ आ० ३७ आपस्वामीतणी स्याध्यता अति घणी करत निंदा परस्वामी केरी त्रेकणरे अबइ ऊके
णाअबइ आपसमइरे लाधइ घणेरी आ० ३८ गछिरे गछिरे तिष्टरे तिष्टरे मति मरइं आयुध अलगनांषी
नहिं तरि एह आयुध संसालिलइ आवि कैरइ कै वजाचोट चाषी आ० ३९ बाणवरसइ घणा विवधि संति
तला चक्र परिघा गदा सुपंडा देड मुदगर करी चोट करिवइं षरी राक्षस वांनरी लडचांउा ४० वानरा राज
तोजेम लकूला जता तेम राक्षस तवजाइं लागा हस्त परहस्त बलवंत उदतअति वानरा साथि आंणिला
गा आ० ४१ हस्त नल मारीयो नीलि परहस्तति अवरि ...त्रि ...पि कइ रोमदल गाजीयो एहदलला
जीयो तोमन पमोकलइ कोजजुइ आ० ४२ राइ मारीच शुक सारण सिंहरथ अम्वरथ चंद्र विनइ उदामा
मकरज्वर न यका मान्ह गेलार सिंघ जगनबीन सेरोल संकामा आ० ४३ मदन अंकुर मताप व विलनद्या
कौ सपुष्य स्वसु विघ्न नामा दुरति नदन जाति सुडुइर वानर राजी एअसामा आ० ४४ राइ मारीच संताप
वानरहणि कै नंदन वानर ज्वर विणासिकै रसुतेहा मिकपिविघ्नमारी लायो दुरतिशुक मारिज गेहवा

नकं आ० ४४ सिंहजयनइं हणि कं त्रयित वरवो नरो। एतलै म रिज अनमो मिकं। दोइ दल रह्या जे मस्तले
घड्या। चातिफिरि मेडीया सुन्न सकामिकं ४६ सुत्त टमधि गजरथि वय सिन्य आवीयो। विवधि प्रकारि सार्यु
धधारा। रामसेना पतिप्रबल बलधारसुं। बीचो बोए रुसेग्राम नारी आ० ४७। रावण राइ कं कार करिवइं कर
रातिचर रणविषयूरी पिरहा या वानरो यग विम्पा जाइंया वा। धस्या अवसर तांम सुग्रीव लह्या ४८
सल्लह सन्नाह करि धनुषवर। करिधरा रास मांनइं सुपिजांम आवइं। तांम हनूमंत सायंत सुग्रीव सुं देव
अवजेम रहते आयदीवइ आ० ४९ चढि कहनुमंत दुर दैतनलनइं वलइं। रासमांन मुह आणि रोकइं। तांमवावो
ठाउ नंतं काइ चाहइ। पवनतवकार गुणिपरनर माथ लते। बापजी लोटवं बडुरे लाहइं आ० ५० हनूमंतइं अ सुघनबेद बाबा तणां। कोहेर वृ
ओदर आवीयो। कहइं रे असांनमइं काइ बोलइं। आविउ रहते चलीजो रे अउलबलो। हमउम जोउवे एकलो लइं
आ० ५१ केशरानीवरि शह रायउइं धरिइं। आवी यो वीर हनूमंत हाकी। सोई नारिल्या यो वज्रे नोचरणकीयो पा
ढिलइं काइ रावान वाको आ० ५२ जेहमालानपनंदन आवीयो। साइउ पाडिकइं नां पिदी धंउं रस महोदर
प्रमुय बकलामिलो अजनाअंगजघेरि लीधउं आ० ५३ कोइ तोसुजलि बय कोई तउं मुषि वियइं। कोइ तक
पगविघइं कोइ बानी। कोई कुषेका या सयल मारिल्या या। हनूमंतनी रीसताती आ० ५४ सायर विचि वडवा ७६

नल। सोन तो राक्स सो बाबिव बारसो हइं। सो जाय सयल रुकगन कं मरिजा जो मेरेति मरनकं योउबो हइं। ५५ रासमं
लेगदे घीअति कोपायो। कं नकर्ण जतव आपधायो। देनइवा मनजिम सलनहो मिग्रहो। काइरा धारजघर घरगये
आ० ५६ कोइ पाएहण्या कोइ हाथिइहण्यां। कोई कुपेरहण्या अधिक त्रास्या। कोई मुदगरि हण्या कोई शूले हण्प
कोई अन्योन्यइं मकपि विणास्या आ० ५७ देषिबलवंत अति सुग्रीव जा धायो। धाई यो दधिमुषनइं महेंदो धा
ईयो कंमद अंगद प्रसृशालक धाईया मदहा मोटा नरेइ। आ० ५८ एवट रूपनइं कं नकर्ण जलउइं। अव
रिइंदेव देषइतमामो। विविधि परिबाणन कं मेरवरसा वदिं। योगन आयमइं करतहा मकं आ० ५९ नीरवो
णइं करी नीदवा कवेणा। रासमइं नीद वसि सयल कोधा जाग्रत बांणसु तांम सुग्रीव जो तेर मघला हो कव
ईलो धा आ० ६० कं नकर्ण जनणकं रथ मरय। मारथा सुग्रीव राइं लव सोजि रालि कं। मुदगर करियदा कपिपति
कयरिइं आवहा मांन विरलइं हाटा लिउं आ० ६१ अंगन इवाइ रइवानरागिरि पउइ। गयं घर कर समीजे
मइ सो। मुदगरइ लाजि कइं तांम दूक उ कीयो। सुग्रीव राइ नो रथभंन सो आ० ६२ सुग्रीव राइ जाए कशिलमो टि
का। रावण जुकतणइं त्रिरहिपाउइ। मुदगर नोउना घंतदहदिसइं। रजतणा दृष्टि अधिकी कमाइंई आ० ६३
अंबर बाइयो काई मकइन हो। लोगनानयण मुष रज हिलरीयो। तांम सुग्रीव जलबाणनइं पंकि वइं रज
हिबव साडि परकास करीया आ० ६४ तांम वानरपति इं रासस कयरिइं। रोमसु मेल्हायो तउित घात। ने

हमइंको इउ पचार लागउं। नहीसूर बायो नवकेर धर णिपात आ० ६६ रावणकं वहीतांम संग्राम नइ। नाम सुत
इन्द्रजीत आय आगइ। वीनवइं बापनइं कोडि संभायनइं। कवण आगइ ऊतरुं फूक मागइं आ० ६७ तोजमव
रूणनहीनहायकं वेरजा। इंद्र सोई तुझ सुत जीतकं। उघर चाकर तेअछइं अनुचरउं। उलयउं करिवइए
करूं। जोणजे जाइयो तोरे बार कअ आ० ६९ होइसन नबइ युद्ध मइं आवीयो। आमुखिइं तांम सकुनइं यंचारे
किहारे सुग्रीव दल मंत किहां। लखमण रामजे चोट म्हारी सहारइं आ० ७० आमीयो वांनरसा घिइं मबोलीइं
या। तो पिहथायार उठ सकल गहीवइंउं चणरे फूकं तनइं मारिबा नेमसुफ। वेरधारी जइ निदसोवइं आ० ७१
स्वासु इंकरी अधिक लडायो आ० ७२ दिग दिशा नाहउपइं हाथीयाजेहवा। तेहवां आरहा एहदा
मइं। कुंभतो कोनराघइं तललउविवइं करी। आपमे कबलइं। अधिकरी सइं आ० ७३ इंद्रजीत मेघवा
हन अहीपा समनउं। असुर कइं नचूकइं रे सोइं। राइसुग्रीव सामंहल बांधीया। तोमतउजोर नलं नको
इ आ० ७४ करतकं पचार सैन्य। नहीकवीयो। रोसकर लक अति। कुंभकरण कं वीर हनूमंत मारिण
दाधावसु मूरछायो तवथइ धरणि मरणि कआ० ७५ तोमकवीकइं कामम इवायोयो। कुंभकर्णइं रेह

तुमंतवीरकं। एकथी एक अधिक हाथीया। लटकलक जाइले हनकं मरी रो आ० ७६ लक करइं राम सु रा
वणावलचिपया। सबल बल धारक एह हेइ। आनंत आधिक उपम अछइं तउहा घणि। नोहयावेल एनयनहे
इ आ० ७७ बांधी यो एहहे। गइ नेनदने लंक मांहि जब लग नजाए। तबलग कं घमकाजा यइं आकरो पामाये
सुजस अलिए बोजायइं आ० ७८ कुंभकर्ण इंद्रजीत जीकी सबनै बांधीयो। एहचियरीनि मांहि विना सुग्रीव दल मंत
नामे हलसैन्य मघलउं आलेसूलयांहि आ० ७९ एहजेवात करतो घकी। अंगदसुभट हफत पउसाघिइं कावउं
कोधवसि। धनुषयहा। बाण नाखइं तिसइं। पांमि अवकास हनूमंत नावकं आ० ८० कुंभकर्णानुज सलह साजीकरा
लाइं सत आगलि आणिमंडइं। राइसुग्रीव सामंहल लखनो। बंधबोडाविवा अधिक तउइं आ० ८१ इंद्रजीत मेघवा
हन चिंतविवइं। एहलउमा हरइं लात तोलइं युझजुगलकं नरू। जाइतं टलि [illegible] लुं। एहसकं सा घिसिंहांनव
उलइं आ० ८२ नागपामइं करी बांधीया एअवइं। लघतिरमेरे सहजिइं हो। सुरिस्यइं। मेल्हीयइं एइहां लेइ
जास्यां। किहायरव सिरोइनरकां इकरिस्यइं आ० ८३ मुहटालिगया पांच मइ परिलसा। कुंभकरण निजरा
यपासइं। आविन इंअटकलइं कोइतल नविचलइं। बंधन इंकोडिवां मतिविमासइं ८४ अरतिआणइ घणा।
बंधबोडणलगा। रांमअरू लखमणदोइ लाइं। तोम चिंतमां लरीदेववाचाधरी। सुमिरीइं आज थावइं सहा
ई आ० ८५ देवमहालोचनवचनि सधउंधणां। चिंतवकं आवीयो तत्तखेवासिंहनिनाद विद्यारथ मुझ सलह

नदेई साचवी रामसेवा आ० ८६ विजुली जिम चलई नास अरिनकुं करई। समरि सा वागदा देविद्याधी सार वि
द्या महा गारुडी स्यंदन। आपि लखमण नणी सेवक धी आ० ८७ वारूणा ग्नेयवायस आदि ईकरी दोई लाई लगी
आस्त्र आपई। जोंणजे मिज मनि दारवुं सेवक थिर करी। ते मनोलाव षापई आ० ८८ लखमण बाहनी तन गरुं
डेत दाय षिवड़ी पन्नगपर हा पुल्या। याराइ सुग्रीव नामे मन लमोकल्या। नोम कुआसकुं ओंलि मिलाया आ०
८९ हालचाली समीनइ दोइ भाप ब्रए। जयकार जग मई जणाणकुं। पं डिनराज रिषिराज के सराज नो सु
जस माच के मझ मई सुणाणो आ० ९०॥ मारूरागे दुहा॥ अस्त कुकुं अजिनायनी। सुसरलहई विश्राम
षानकुं ओंणी मिल्या। सा च विद्या संग्राम ९१ राक्षस अतिक्रोधइ चढ्या। वानर ते नमथंत मध्य दिहाउ हसे
करा। जिम शारवर लोलंत ९२ देषी शेना लाजती। सुग्रीवादिक सूरि। करी घणी कुवावणी। राक्षस नाग हरि
९३ रक्ष लेगदे षीनदा। रावण चढीयो आप। थरहरा वई मेदनी। करतंउ अनिसंताप ९४ दावानल निई ओ
गलिई। तरूवर जेम दहाई। तिम रावणनई आगलई। वानर तो नरहाइ ९५ रावण दो गो आवीयो। आप चढे
नते रोम। विलाषण नरजी। आपुण चढायो तोम ९६॥ नेमिनाथ आयण मृगाचित हमारी एढाल॥ ननते
नर रोम रोम रोम। रामकादिन रूडा। रावणी कटेर दरा क्रंदरा णी। जेहा करई रूडा न० ९७ रावण कुदखिघरा
जकै। अवहादक वेलि। सादमूरे वारधारे। दोके क्रोषा मुह मेलि न० ९८ रेरे मूढ वार देषिव सुकेरा वानी ७८

अवर राषिजे दायो। माहरई मुषि ओंणी न० ९९ जेम अरहाडा घेलनकुं। आगइ रावइ स्वांन। ते म रामिजे का योरा
षवा निज प्रांण न० १०० वेदन तरइ तो परिइ। जोरे अप्रुव चडे ३। रामलखमण सेनि सकुं। आजरणा मई
जाइ १०१ दमो दिआवसि ई। उतरे करूं हुं एह। आविषो निकमूल गई। मूलगकुं सुफने ह न० १०२ करइस
ईअसुहाइ। सुहसरल सोई जइमी कदई करई लइसी। कपट नाहिं कोई न० १०३ राम आयहो। चेडेतो घो। मइला
वरजा राषि कुं छनइ सेवक स्वांमि काम। करतनो लल साषि न० १०४ स्वांमि जासे कुं मजाणि युद्ध तणकुं मि सवा
णी आवा योहुं आज देव सोइ सुणकुं तुंम्ह वाणी न० १०५ सतीआ थिरती राषि वात बेहइं आवी। मानि बोलडा
मोलन नहारे घना षावी न० १०६ मरणथी कुंनो मरूं। राजततो नहीं काम। लोगमुष अपवादे सुणंत कुं डरव पांम्
स्वांमी न० १०७ एअपवाद मेटायां। सेवकनू कंघारकुं। कुवणरांम कवण कुं। मानि वचन म्हारकुं न० १०८ बीजा
यो अतिरावणराइ। अजकु कुंहा वान। केडे ढाधारनें कोटहाया। थण नगया रेरे कुंपाल न० १०९ लाईह सघ
मरूं। लिकुं सकुं तिहा बोलाइ। रावण रूप मूलगइ रे। नाथकु धनुषचढाइ न० ११० लाइ वडकुं बायषानि
तरह बी अरदास। करूं वकुं कुंवेगि। आविषकुंचायो जमयासि न० १११ दोकुं लाई कील डाई। तव घणं अधि
कोंणी पांहे मांहि नांरवाइ। शुद्ध मतइ रेम डाणी ११२ कुं सकर्ण इडजो ति। अवर राक्षस धसवा। रामरामा
बुज अपर राइ जो चलि आया न० ११३ रांम कुं लकारण लडइ। इइजोतिजाम लक्ष्मणसुं ओंलि अरिकुं

रामजस

एरवरु कै संग्राम स० १४ नीलसिरै जघनउर्सुष। घटकंदर सुदेषि। स्वयंसु जइउर्मेनी। सुनल कंठा सुसुवि
त्रोषि स० १५ अंगदगइ मयमेरची। वारविराध सुविघ्न कंदचंड नष निरोयम माचिरह। अति सभ स०
१६ श्रीदत्त जंजंबू माति। ना मेरु लजकेउ। हनूमत कै लआयलगा। रो सस मेतै स० १७ कंदनइ धूमाल
दाषि। किकिंधेस सुमाल। चंद्ररस्मि सारण साषि। मां चिकं कूक करालस० १८ लस्मण ऊपरि इंद्र
जीत। मेल्हइ तामसबाण। लस्मण पालइ ग्रगट्ट पणइ। सराक कै सुल नाल स० १९ इंद्रजीतइ अनु
ज मेल्हे नागपास अस्त्र। तांतणा यइ गजतेम बांधिकं। कोइ कुरि कं नहा स्त्र स० २० रथमइ घालत
तकाल चेंदोदर उत्पावइ। कटक मांहि अति कबाहि। राषि कं पानि किगावइ स० २१ कंसकरण नाग
पासि रामबांधी लायो। नाम कं लहा षिदेइ ते पकचाइ दायो स० २२ अवर राक्षस सुअड्या। वांनरा जइ
आपनिति बांधी आंणा घा। रामतणइ घर ताप स० २३ मेघवाहन बांधायो। सांधी यात्र नाहिं। दिवसि
केरि देषि हेरे। चोरचलइ नहीं पांहि स० २४ देषिन यन अति कं चयन। पामायो तव राड। वीरय सोकं
स्तलसूकइ। कि कंहा एमरिजाइ स० २५ सूल श्रीलरात्ति राम बेदी योजिम केलि। लक्षणइ तकेला
लम हरे सुदिन केर कंमेलि स० २६ आधरे लेइदत्त राकि। विजयनां मत्र मोघा। विजयदेहु निरावण
राइ कयाउइरे चलो घा स० २७ धगधगं तिजलतित्व लनि। लउलउं तीनादि। अंनमेघ तडित लेषा फे ७९

रवइ अदबोला दि स० २८ देवपाव कंमरड़। लोग मेलइ नयन। देषतां घिर नामिरहो। कपजेरे कचयन
स० २९ राम कहइ सोमित्रा हो। विला घणहि लाज। आपनइ उइ राषि लंकं मारइ राक्षस राज स० ३० रा
रति आयो रावणकं। नहीं सा घकराइ। अबोलं नदायां तणा। देषे वातहि जाइ स० ३१ सोमित्री आंगइ
क कंग मृडनो असवार। रावणानु अप्रचिदायो। एहषरो विवहार स० ३२ लक्ष्मण माषिइ कहइ राइ
आघकपाव कं घाड़ परमरमणि ऊकेमरइ। ऊकं ऊक आवीदाइ स० ३३ स्वमावा अतहि त्रमावि। लस्म
ण ऊपरि नेह। रावणमं कइरोस सुं। रामकु कअदेह स० ३४ सा आवंता देषिपेषि। सोमित्री सुग्राव। नाम
उल्ल नलनइ विराधइ। हनूमंत सुरे अती स० ३५ अस्त्रा सुबलवंत तवार। ताडइ ना सअपार। अंकस
घोर कं हाथीयो। जेमनन माम इकार ३६ वरि स्वलि आचा पडा। सुरबांण कं नरना घा हाहाकार ऊं ऊंघ
णु सोच करइ सक्र साथ स० ३७ राम आवइ तांम। वयसिर छिरमाति। राइतण उरथरो ससु ताउ
यो ततकाल स० ३८ बीजउंता जो चोद मह। पंचम कं रघ देषि। रणतणा परितो फिना षडं। राघवरोस
विशेषि स० ३९ रावण सुं चित सुंचितवइ। साइ लणइ उरविलरि। एतक ऊं कं आंधलो। रहायइ एवी
दूरि स० ४० लंका मइ न पआवायो। आथमायो दिनकार। उरवन जाइ देषीयो। आंणी एह विचार स० ४१
रावण सागकं जांणायो। फिरायां राम निवार। लक्ष्मण पडायो देषतां। नरहा सुधि लगार स० ४२ सुरवा

रामजस हथरत्तापद्या।करि सीतल उपचार।उवाई बयवा काया।बोलइ लक्ष्मण तार स० ४४ वलतुं मे किंत मोल्ह
या किंकेन प्रगा सो वयण।शक्ति नही ऊकें वयण ना।कोइ वना कें नायन स० ४५ एम पदेषइं ग्राहरी।सु
ग्रीवादि नरेश्वा।बोलन आयो बोइ मे।आगइं आरतिअसेस स० ४६ रावण जीवेनो गयो एवार इं चितइं
रोस।रावण मारिवो सही।आणउ एसेतो स ४७।निट निट किहां गयो।म्हारो कलाई मारी।धनुषवाण ले
ई चल्या।हनुमंत इं कहइ हकारी स० ४८ किहां चल्या प्रभु जी उमे।वयर विमोषन लाई।रावण तकं
लंका गयो।तोम फिस्या पछितांई स० ४९ नारिद रिसांई हणि कें।एह अवस्था आपी।मो आव्या नजा
गयो।फिटरे रावण पापी स० ५० रावण देषकें मारीये।प्रभू नइ वेदन नारी।कोमन देवइं कायरे देषि
कें किंकें सविचारी स० ५१ जाइ घेटं लीया मिन।कोजइं को उपकर्म।प्रभु जी वो सकें जीवस्यां मोटकं
तइं मर्म स० ५२ एतत्रयालासमा।ढालसत्ती कहि वाछ्र केरा राजएह देषकं।पुण्यइं पाय पुलायइं
५३॥ सिंधुराग दूहा॥ मुणि सुयाव विराधन नलना मेंनल दहं मंत देवकरी एए हवी उम्ह घरि ओकें उर
ते थरइं नारि हरण वंध वमरण॥ इस्वर हकं एइरि।लंक न दाध विसी षण।एइ खंशीलइं नूरि ५४
पात कुआ रावण हणी।देई विसीषण राज।लक्ष्मण साथि इलागि सुं सीता सुं नहीं काज ५५ कहइं
विसीषण सां भजी।धीरज धरउ अपार।काइं रोइन घर हरकं।ऊद्यम नो अधिकार ५६ शक्ति हणि ८०

उजावइं सही।जो लगइ दिनकार।जब लगवर तइ वीमन।करिज्यो जे उपचार ५७ तेतमंत उषधज
डी।कोइ दाइक पाय।रातिहां मो हिं काजीये।जिम प्रभु सार उथाइ ५८॥ जिन पाहुणा नी ढाल एह ढा
ल॥ आवइ दे जावइं वारी वालहोरे।मोइ करो अम्ह काम वीज उरे।काज सऊ असुहामणा उरे।तो मकहे
स्या राम ५९ मात इरे सालइं कोटका या नलोरे।स्यार काया दरबार।राजारे राजा रषवाला रद्धारे हो इ
नइं ऊसी आर जा० ६० पुरबरे पुरब दिसि नइं बारण इरे।कपिपति निनइं हनुमंत।दधिमुखरे दधिमुष
कें दग बान्ह सुरे।तार गवय गुणवंत जा० ६१ उत्तर रे उत्तर दिसि विहंगम रे।अंगद कुरम अंग।महेंद्र ज
महेंद्र सुषषेण जोरे।चंद्ररस्मि सुचंग जा० ६२ पश्चिम रे पश्चिम दिसइं इद्र रजयरे।समर साल मनमथ
नील जरे नील विजय नइ संनहं रे।एसाते समरथ जा० ६३ दक्षिणरे दक्षिण दिसि लामंडलरे।विरवि
धजमेद।गजन लरे गजन लने विसीषणरे।दवन जीतसुं सेद जा० ६४ मांहिरे मांहि राघवरामा योरे।
सुग्रीवादिक ताम।जागइरे जागइं जो धमहा बलारे।मतिको विण सइं काम जा० ६५ सीतारे सीताए एसं
भलारे।लक्ष्मण शक्तिप्रहार।प्राणजरे प्राण पोण वलें उजलजइरे।नाई सुश्रुति धार जा० ६६ मुरगरे मुर
छा आवी अतिघणोरे।धरणि पडी ततकाल।करि करि रे करि सीतल तापरारे।ऊगइ साबाल जा० ६७ करुं
णारे करुण स्वर इंरो वइ षरारे।करती अधिक विलाप।वंसइरे वंसइं तम विद्याधरारे।देइ पवाउइं

रा॰मजस

आयजी ६८ हावबरे हावब लछमणकिहांगयोरे। अब नइं वेऊआज। उक विणरे उक विलमिलजावे नहारे क रिसइ सहीअकाडजी ६९ धिगक्करे धिगकं अधिक असागणीरे। म्हारइं का धइं देखि स्वांमरे स्वांमा नइं देवर सलकरे। पाडाई सुविरो थिजा ७० मुक्क नइरे मुकने चिवर च मुंधरारे। दिइं अव अयार मांहि रे मांहिकं पय संसहारे। कपरि वालेनार ७१ पनलइरे एतलइं एक विद्याधरीरे। करुणा अति राघव विचारे विद्याधर अवलोकनारे। अवलोकी साधंतजा ७२ बाइरे बाइ आरतिमती मताकेरेरे। लछमणजीनी लामांहि घात उरे प्रातज उविसपइं सहारे मिलसइं राम उबाह ७३ सुमतारे सुमता ककीसुंदरीरे। कदिहोवइं परसात वासूरे वारू वतका सांसल्यारे। दुखदेउ नरिजात ७४ रावणरे रावण अतिरस रंगमइरे। लछमण मारिंजांणि लाई रेखा ईसुलनयबांधायोरे। सुणिरो वइं दुखआणजो ७५ हावबरे हावबकं सकरणजारे। हावबनेदन रूपाइं इजरेइं इजातिघनवादनूरे। जंहमालीअरयजी ७६ अवरजरे अवर अपुरव राजायारे। वंधाणा उमहेर सुकने मुकनइंजीवतांथकारे। अजबनमासी एहजतमासीएहजी ७७ सुमिरीरे सुमिरी गुण सुतलाई तोरे। थासूवा रपडेन। बइठजरे बइठो कोजे फिरी॥ फिररे रमणा जेमडरेतजा ७८ एकजरे एकज विद्याधरसलजरे एतलइं आयो चालि। हरखबरे हरखबदि मइंने बारणइरे। लामंकज निद्रालिजाइं ७९ लाघइरेला घइं वाणी अमी समीरे। मे जोराघव राइ। लछमणरे लछमणजी वेवातणइरे। दासकं कपायजी ८० ८२

कुहरवेरे नामे मिलकरसादाकरे। आणिकं प्रसनइ थासि। चरणेरे चरणे लागा वानवइरे। प्रआणीनइं उलस जी ८१ पुरवरे पुरवर बइसंगातजारे। श्रामांमं कलसथाला। राणीरे राणी राजइ सुघसारे। नंदनकं सुवि सालजी ८२ नामइरे नामि प्रभु प्रतिचेइजारे। वयसिंबिमानइं आकं। कामरे का माकरिवी कारणइरे सुंदरि सुमो सकजी। ८३ दावजरे दावेकं तवधवरइरे॥ सहस्र विजयतसनोम। वयरजरे वयरजमे घुनिकातणइरे। मंडिकं तव संग्रामजी। ८४ शक्तिजरे शक्ति उचंडरवातणजरे। कोधउं तीम प्रहार आयारे आयो कचलितलवेरे। नलकं श्रुतिलगारजा ८५ कोशलरे कोसल पुरउद्यांन मइरे। पडायो पांमं दुखवजवइरे। उबइंजल जिम माछलोरे। रचनयाकसुघजी ८६ रूपतिरे रूपतिआनरते सरूरे। आइगयो चालि रांम। करुणारे करुणो अधको कपनारे। कोमलबेपरिणांमजी ८७ आणरे आंणी गंधासं लदारे। सिचिकं अंगमझारे। नासारे नासा शक्ति सहारे॥ जिमजाग्यो चोर ८८ ककं रे ककं सांमसमा धीयेरे॥ अचरिज अधिकउ पांमि। महिमारे महिमा गंधास तणउरे। प्रबिकं मइशि रनांमजी ८९ साईरे साई उम्हारो सवसणइरे। सारपवाहज एक। गजपुररे गजपुरथाइहां आवायो रे। साधिमहिक अनेकजी ९० तरहरे तरहकें लिमकएकजारे। पडायो मारगविचि। माघइरे माघइं पगादेइं चलइरे। लोकजिकेवइंनीचजी॥ ९१ मोटारे मोटो उपद्रव मुजरे। सितकर पुरये थि॥ पवनज

रे पवन पुत्र नो मई मलो रे। देव कुंअर ससते तजी ॥५५॥ अवधि जरे अवधि ज्ञान सुं देखीयो रे। पूर्व भव तर जं
म। व्याधि जरे व्याधि वि करवा देस मइरे। पुरि पुरि गामहिं गाम मजी ॥५२॥ द्रोण जरे द्रोण मेघ नादे नामइ
रे। नरा व्याधि पयसारि। मामो रे मामकुं तामइ हणगयो रे। एहवइ करुण विचार जी ॥५४॥ प्रथवा रे प्रथिव
स घली माहरा रे। अंतर एहे कांइ। जिमव इरे जिम वेतिमसा चकहे रे। जूत्त कहइं दुःखपाइ जी ॥५५॥
बोलइं बोलइ सो वन्न सो लल करे। विश्वंकरा मुफनारि रोगहरे रोग गइं पीडा थी घणरे। गर्भ लणइं आधा
रिजी ॥५६॥ कइरे कइ सहु जिनिरो गणा रे। पुत्रा पणि परधान। प्रसवा रे पन्नावा सुखि इं समाधि मइरे
विशल्या अति धंनजी ॥५७॥ वारो रे वार कजि मतिम माहरड रे। देशाकता समला ए। पुत्रा रे पुत्रा स्नान
जलिइं करी रे। सिंच्या थी सुख थाइ जी ॥५८॥ एकि करे एक कुं मुनिवर एक दा रे। सत्य वलि सुखदाय। ए
बइरे एवइ करुणा चित्ते थजी। ज्ञान इसे दलन हा इजी ॥५९॥ दशबइ रे दाथइं दाघ मका घणा रे। मोग वो लि
विशेस। सर वरि सरव सवना तपत लण वेरे। एक लख वइं अरो सजी ॥२००॥ घावजरे घावजनइं सरो
हण वरे। शाल नो अपहार। व्याधि जरे व्याधि सकन कंदाय करूरे। लखमण जीवन दातारजी ॥१॥ एगुण रे एगुण
नो करतार वइरे। स्नान नणो जल सार। अमृत रे अमृत दा थी गुण घणा रे। सुरासुर नलहइं पार जी ॥२॥ मुनि
वर रे मुनिवर नी वांणी थकी रे। व्रत फल हाइ परतक्ष। जलनो रे जल नो प्रगट प्रसाव जी रे। प्रगटि कं लोग ८२

समक्ष जी ॥३॥ एमजरे एम जकरउ नइं सोसपा रे। स्नान तणु कं जलदाय। वाट रे वाटकं नांषा देसमइरे। दे सनि
रोग कं कोपजी ॥४॥ नेहाजरे नेहा जजल सुं सिंचीयो रे। मरइ दुइ णाहा वार। शक्ति जरे शक्ति शालगि कथाव
हारे। फूरू फिकं थिणा कमकारि जी ॥५॥ लखमण जरे लखमणइं मइदे पायो रे। जलनइ प्रगट प्रभाव। आण रे
आणकं अति कला वलो रे। वीनइं अवर उपाव जी ॥६॥ ढाल नरे ढाल जवि चें आलसमी रे। रामसहु सुखपा
इं जेह वारि जेहवी तकं न चितव मतारे। निद्रा मिलइं हिं सद्दा यजी ॥७॥ वेला कलराग दूहा॥ लाभे मलइ
तुमे तजी। अंगद सुलट सलील। रामकहइं हे बोलो यकइ। कुंमतणी नहा ढाल ॥ ए हल्ला जाम कसर
तपइं। नरतहिं लेई जार। स्नानोदक ल्यावो सही। को इमला वकं वार ॥९॥ आ जलगा सेवक कुंता। आगइ उ
त्तम मुकल्यात। नाइ लिसा आपिवइ। राषिकुं जगि अपयात ॥१०॥ जहा लगइ जगि जाव सूं। तहा लगइं उप
गार। वीसरि सिकं नहा। तुम्ह अवकुंप्रोण दीन दातार ॥११॥ मेर कुं मेरउं लीलत हइस फुंकी हुए ढा
ल॥ लो इन्द्राया णकं अवसर साधइ। अवसर साधिइं स्वामि आराधइं सो वयसि विमानइं तेन व चलाय
विद्याधर विद्याबलि चलाया। पुरी अजोध्या चाली आया। नरत नरे सरसो वत माया सो ॥१२॥ ऊपरि लूमिइं स
जसुं सही। गलता रागि इं मीदरमा ली। अंबर रहिया र [illegible] लावी नाद बलिइं लागो लप डगावा सो ॥१३॥
जोगिकं लप फुकु कमा आरा। दह दिसइं जोवइं नजरियसारी। आगइ कलादाग सोइ। प्रवइं चन्नकदो

रा॰मजस कारणकोईसो १४ लामंडलसाषी सवबातो। भरतराय ामंइं डरखलसमा नो उगासवरा कुंआगइं बयसि
विमांनि इमारगिलाग इसो १५ कोउक मंगलिआचालो। सोवंलरिउ गा चीबाली। द्रोणमेघनपया सइजा
वी। सव गुणलखणवंती साची १६ कन्या सहससतणकु परिवारो। लेसिगलीला गातसलारो। प्रतिज्ञा बइसकु
नी सरषी एकजयतिकरिवा नइं हरषी सो १७ भरतआओ प्राइंयकुंचायो। लामंडलजी आयो धायो। विस
ल्यासघली सुं लीधी। [illegible] लवहीदालनकीधी १८ जलथापइंकु जूंल देषी। रवि ऊग्यो नोसरभविशेषी। अतिह
वगिविमनचलावइ। वानकरहस्ती घलूपइंआवइसो १९ सङकोइ आरतिहोइली। कदिआवइं तुंवाटजो
आलो। सूरऊदयपंकजविगसावइं दे षि विसल्यासकुं सुषपावइं सो॰ २० विसल्याइस्सनउ लनुफरसइं
जायेउ धइं जलेहर वरसइं। शक्ति [illegible] पंतीनाठी। जिमनागणमास्याषीलाठी सो। २१ साजाती हनूमंतइं
[illegible]ली। लवसासमेकइं होन। जिमचिड सोचालइ सिंचाणइ साहइ। सघली बोलतकुं माहा सो २२ वसमीनी
कुंलघुसगनी। दावीरूप इवडइं सुत्तलगनी। केडियडी फेडेनसंगमे। मराशक्तिवइं मारूं नामेसे २३ धरणेंइ
इं रावणनइं आपी। रावणिधणिकुंधिरकरिथापी। कासिरकुंवीरावणकेरकुं। पणिलखमणनोलागनले रकुं
सो॰ २४ सरखसवनातपनो ओरकु। विसल्यादेपीमनमोरकुं। घरघरघरहरकरियज्ञालकुं। लेहसणोइ
रमइंनरहाणकुं सो २५ फिरीनदाआवुसाघितमहारइं। अवरनिश्चो चिन्तहमारइं। अवकइ जोकुं जावे ८३

वालदिसुं। गंनीमांनी होइरदिसुं सो॰ २६ सघलेलवरा धकुं फिटकारकुं। लडामायाहारि जमारकुं। दोनंमाषिइली
थीजूनि। दृष्टिअगोचर कइस्ती सो॰ २७ विसल्यातनू फरसइं फेरी। तिमतिमसासाथइं घणेरी। वावनचंदनलेप
करायइं। ज्ञणरूफाणो अतिसुषथाइं सो २८ आलसमोडाकुंविकुंस्वामी। सर्वप्रकारइं साताषामी। देषइं श्री
संनाथइं रामो। लखमणप्रवइ प्रश्नन इलामो २९ एस्पा कोटस्पारप्रवाला। एसा बालिरूपिरसाला। एस्पाआ
वइ रेवधावा। एस्पा लोग नारे मेलावा सो॰ ३० रांमसकुविरतंनसुणावइं। विसल्यानी वातवणावइं। कंसास
हसहीसाघसुहावइं। विसल्याप्रस्नाह करावइं सो ३१ सोलहजारी नारीमाहइं। विसल्यापटनारी थाहि
जिमराघवनइ सीतारांणी। तिमलखमणनइं एहवखांणीसो॰ ३२ विद्याधरनइं वांनरमिलीया। आंघणमें
हिंकोजइंरलीयां। जन्मोछवजिमउछवहोइ। देवीदेवतमासोजोवइं सो ३३ नीसाणीनवघडायोधावो। आं
नंदिरश्चयोध्यायो। साजनजनइं अधिकउल्हासो। दुर्जनजननइं पडायो त्रासो सो॰ ३४ सोमित्रीजीवंन
कुंसुणीयो। रावणआरनिंवलकुंघूणीयो। सामंत्रमंत्रीनइं बोलावी। कूरइं मनकउ सारइं आवी सो॰ ३५ सोमंत
त्रमइं शक्तिइं ताडिकुं। जोणिकुं घणुंमारीयाडिकुं। रांमंमरेसिइंकुं [illegible] करइमतउ सारइं आवी सो ३६
वांनरडासवजासइं साजी। धणीयां विणलडसिइं नहीसाजा। वायवादल जासिइं काटी। विणउबधाएव्या
धिजकाटी ३७ साईसुतसुसकुबुटेसिइं। नागपासबंधनलूटेसिइं। सहीजिहासकुआवीमिलिसिइं

रा. रामजस

कथमांहि एसा करतिलमिइं ३८ एतामांहिं कोइ नकई दिवनलीकरणी बइंमुइं सुपिनानो कंकं विवाहो साईसु
तनी आर तिअगो हो सो० ३९ मंत्रीसाथइ सीतावटे साईसुतनाबंधन छइंइ एतलउतरजी उमइ नहा करि
सिकं मंत्री केउइं तउ नहीं मरिसिकं सो ४० इणइं हो गइं आगलंरा घकं रहु का धानी फल चा घकं आपड
रवइं परनइं डरवा उमइ आगइ हो आगइ ताणकं ४१ रावणिमंत्री सर अवगणीया इतबोलावानइ एसणा
या राजा राघव पासइ जाई वातकरकं जेमइ कहिवाई सो० ४२ आयो तेराघव दरबारइं पोलिरो किंकं
तेअतिहारिइं प्रसआदेशइं आघो कं आये सभादेषतां अचरिजपायो सो ४३ इंद्र सभानेद वाएहामइं
प्रतकाइं इविआवीसइं सामानिक सुर नपजेयासइं पमिला गानेवचन प्रकासे सो० ४४ रावण लाघइं उमइ
गुणसिंधु मेल्ह उम्हाराए सुनबंधु सीता टालिलिकं मुकरागो अर्धलेइंनइं सारकं काजो ४५ कन्यातीनइ जार
जेआपइं आगइं सारू प्रातिजधाकं ईमहाकरतोनावइ दाइ तोउमइ सारू नहीं ल्वेकोई ४६ रामकहइं उकइ
जे जेहनइं राजअरथ दिइं चाहइं जेहनइं प्रमदा चाकं नहीं इअनेरी वातकुहाजे यहवाफेरी ४७ रुजा अरचा
नइं तउ सीता जोमेल्हो विश्ववदाना तोकं मेल्हु एहनाएहो साईनइं सुतआणि सनेह उसो० ४८ इतकहइं
उमइ स्वामिहावाणो वचन करो वउ अधिक अयाणा त्रियहेतनइ हारोवो प्राणो सोघ [illegible] णि रूसो नहीं को
जाणकं सो० ४९ सोमित्री उमइ जाविकं जाणि उतेह घातकं उमइ सुदिनचिवालपा अबकइं सोमित्री कपि ८४

आयो नृबरिसतय निश्चइं थायो सो० ५० एकहि रावण विश्वहो जेता रावणनीबलला हंकेता सर उदयथी जाई
नासी अंधकार बहुदेखवि मासी ५१ सोमित्रीकहइं हीला इतो प्रसअनुसारइं उआकतो फहमविनालेबो
लइ बोलो देखाइं बेफुटो होलो सो० ५२ फिर रावणतो जाविकं आजो बोलंतन नविपावइ लाजो जेहनावा
ल्हो नंदन साई बंदिथकी नसकइं छोडाई सो० ५३ जारे कहइ इक स्वामी एहकहा बइं रघुनरनाविइंकं
दरविलतजि आविइं बषितइं साचकरे रेसाषीजे सइं ५४ लक्ष्मणनी एतातीवाणी सांभलताबानर इआ
णी कंविइं सारी बाहिरइं कीधा इतगयउ प्रसपासइं साथोसो ५५ पंचअनइ एतो उचालीसइं ढालइं
सफलीसयल जगीसइं केवाराजारिषिराजविचारइं साचउजीलइं कवकं हारइं सो० ५६ [illegible]
[illegible] इतकहा श्रवणेसुणा फिरितेअ मंत्रीस कहइ मतकं काजइकि सउ आरतिवंत थइत्रा ५७ मंत्री
साथइ देवजी सोवातांकोएक कहा सुणा वांस्वामिनइं स्वामितजकटेक ५८ सीतादीधा रामनइं सरइ
सकं उमइ कोम साईसुत आवइ घरे रहइं सजन मोम ५९ एह सुणनइं लीतरी आणइं अधिकीरीस
काई तसभासरदहइ किसुंकरइ मंत्रीस ६० [illegible] रावणराइ आ
सा अधिकी थाइ तेतकं डोडारे किकं हीनजाइं राघ विद्यानो बहुरूपिणीते साधिवानो चाइ देजाइं
जिनवरां तिनइं होइरे शांतिकथाइ राव ६१ शांतिनाथ जिनेंद्रनो करइं प्रथम सनात्र तेहय णिअष्टोत

श्री मउम रंउ करिवा रे पावन रा० ६२ देव उ सफु देव नंउ। शांति नउं कर तार। आरति सायर तारणो। त्रिवनो रे लल सरना
र रा० ६३ सर्वदा सुष संपदा। सर्वदा कल्याण। स्वामि ना पद सेवतां। महिमा रे मेरू समान रा० ६४ पूजा अष्ट प्र
प्रकारनी करतां आवहा। सिद्धि अणिमादि आठ महा। पुढवा रे मांहि प्रसिद्धि रा० ६५ वीतराग हि भावना
वीतराग जे होइ। इली भमरी ध्याननवी इली रे भमरी जोइ ६६ पारस फरस्यो लोह उकं। जेम होइ हेम। प्रभु तणा
पद फरसतां। पामइ रे प्रभु पद तेम रा० ६७ नीर तनु पाणा तणा क्र। मिलायोगे गामांहि। मांन यांम इहां इ
लिइं। तिम उ मूरे सेवा थाहि रा० ६८ इस नाव ढूढो परिइं। पूजा विधि आराधि। रत्नत्रिक पर्रिइं
वयपत्र रे आणि समाधि रा० ६९ माटि तनं जिन सो मुहा। मांडि ध्यान करंत। अक्षमालि करयहा। विधसू
रे जाप करंत रा० ७० कहइ देव मंदोदरी। नवपोलीया उ मदे न। दिव सतो आठो लगइं। मांडउ रे धर्मे हिं मंडरा
रा० ७१ आयं बिलनी बी करकं। करउ तप उपवास। जिनतणी पूजा करकं। करू रे शील अभ्यास रा० ७२ पडइ
दी धउ पुर विषइं। एहवो ज्यो धर्म न करइ तेमा रिवकं। एसा धारे वाणी धर्म रा० ७३ उचार आ विसुग्रीव सु
त वय जणावी वात। विद्या तउ बहु रूपणी। साधइ रे विश्व विख्यात रा० ७४ कपिपति इ कहइ रांमसुं। अवकी
जीय ई ऊपाइ। मारइ रे पाधर पडी। लीमउ रे कि ऊ दानजाइ रा० ७५ रांम कहइ जिन आगलिइ। एराव्हे
ध्यान। अंतराइ मतिकरकं। होइ रे को इअज्ञान रा० ७६ एह विद्या साधिवा। न हीं घाइम आज। एकली ध्यान ८५

विषउइं। बहु लारे विभिइ काज रा० ७७ धायय सुग्रीवनी। करे वउउ पकर्म। मूलहो धीवेदि वकं। आउर
रे होइ अधर्म ७८ अंगदादिक आवीया। पांमिवा परसंस गुयन रावण पाषती करिवा रे विद्या स्थे
भरा० ७९ उपसर्ग जे आकरा कीया विविध प्रकार ध्यान दाद्वा कंधरूं न चलि ऊरे एकलगारे रा०
८० कहइ अंगद राइसुं रांम तेज अखंड। जाणीयो नइ सेह घी मांहि उ रे पाखंड रा० ८१ नइह रीसी
तासती परउ वइ पर पंचि देषतां मंदोदरी। ऊठइ रे जाउ बोचिरा० ८२ साहा लीधी सुंदरी जिमी
इयइं अनाथ। नजरि आग इरावती लेइ चालि ऊरे कपिन उसाथ रा० ८३ ध्यान सुसलीनता निहा
लइ निज नारि जाणि निश्चउ आकरउं विद्या रे सीधि तिवारि रा० ८४ गगननइ उद्योतनी। कहइ
विद्या ताम। धारामनना वोबीया। करूं रे सघलां काम रा० ८५ विश्वनोइ अंउ क्रम सम रथ कृपाल
धमण राम जी। अवर रे मकू अइ मउ रा० ८६ कहइ रावण राइजी। उ कर इ ते सकू साच। समयसं
ना ले सही। अविचल रे बइतुक वाचरा० ८७ विसरजी विद्या तदा। जाइ ए कंलीरैं गंम। वानरा पणि
रांम नइं। करइ रे आवि प्रणाम रा० ८८ देवि मंदोदरी। अंगद तणा उ निसु णिउंदरा करतऊं कार
अधिक उ। आवइ रे घर हितुरंत रा० ८९ स्नान भोजन करी रावण आवही उद्याति मनी मांसइ बउलीयो
तर मन सो रे नइ अनुमानि रा० ९० नेमसंगत णउ रे सयस्राति सांजि हिवडो देषि मा रि देवर स्वामि [illegible]

कं सेवतरे तुक सुविसेष ९२ एह सुणता कटुक वाणी राइनी डरवदाइ नीस आशा साधिधरनी पडीरे मुर
गय राय ९२ करी सीतलनी तवाई अतिघट सतसार रामलषमण आया वइ तजिवोरे मइं आहार
९३ एह सो सन्नि राइ चितइं रांम सु अति प्यार कं विषा सक रू सुवादिइ नमिलइरे एहनइ नार राय ९
४ सकतिने हीना हो वइ घलइ पंकज जेम माबलो तलफी मरइ जलनइरे नउपजइ प्रेम राय ९५
अजु गतमइ एकीयउ विसीषणनउ बोलमानीयो नहामी नइ नइ वसि आलइरे शर समनोल राय
९६ पक्षने परगट पणइ की कवारा यउ वकवार सीन मानिक आज जाणिउ मुहउइरे पडी मुक्ता
९ राय ९७ कलकलेकी कं आयणउ मेकाजन सारिक कोइ हाथमसलइं सो चकरि वइ नलहइरे
उनमाद राय ९८ रामलषमण इहां आणी मांन समलउ मारि धमनइ जस बोलेरायण देमित्रुरे अघ
वीनारि राय १०००० एम चितवतारे चित सुं गई राति विहाइ प्रातपरजी मउणी वारतघेतिजुरे मंडि
कं आयराय १ कं कमंडि कं रामरावण लइइ सुलटअपार बाण लषमणतणा वरसइ जाणइरे मउ
लेजलधर राय २ देषि बललषमणतणउरे संकीयो सयाल विद्यातव वक रूपणी सुमिरइरे नय
नतकाल राय ३ तो मरावण करइ आपणा रूप नो विस्तार समिगगनिइ एवियासइ दीसइरे रूइ

आकार राय ४ तो मलषमण अधिक वलीयो गरुडनो असवार जे मनइ तुं फिरइं नाचत रावणरे केरी
नार राय ५ जिहां देषइ तिहां मारइं बाणसंते रूप एहो बंधक बंध रूक चक्र जरे सुमिरइं रूप राय ६
धसि आयो मनि सुहायउ फेरवइ ते चक्र हरी नउ अति कडमारइ न लिघइरे वेला चक्र राय ७ मे
ही तउ तव दिइं प्रदक्षिणा वासुदेव वियाणि ते जकारि रथि सारि घत्ररे बयठोरे दक्षिणपाणि राय ८
राइ चिंतइं वचन मुनिनो साचए दषाइ लाइ मंत्री कथन जे था ते म हुरे आज मिलाइ राय ९ देषि
आरतिमाहि बंधव विनीषण बोलेत आपिसीता राषिजीवति मिलीयोरे तेनोतंत राय १० कोपिनइ
तरकहइ रावण कहि तकिसि तेकहाव चक्र लषमण तस्य नइं मारू मेल्हीरे मुष्टीघाव राय ११ एम करू
तां रायलषमण कंयन अति रोष चक्र मेल्हिहो सू वेदिउ जाणारे अधिक सरोष राय १२ जेठ सम एं
कारणी इं दिवसि पश्चिम जोमि अनु चउथइ जाइ पक्षनउ कौमरे तणा फलयो मि राय १३ कुसमके
रीवृष्टि कुइ देव दिइ आसीस जगतमइ जयकार अधिकउ जीवोरे कोडवरीस राय १४ ढाल घटचा
लीसमीरे जीतीया श्रीराम केशराज मुनिंद नायइ ससारे वंछित काम राय १५ [illegible] रा
ससनामइं दहदिसइं नय आणी मनमांहि दिइरे विसीसण रासेसी विसीषण नय मांहि १६ आ
तिपती जइ जाति नइ जातितणउ विसास आणी मिली याएकठा राइ विसीषण पास १७ आण्या र

रूजीपाषती।प्रन्हनाश्रणयेपाय।दिलासादीधीघणी।श्रानुचिराघवराइ १८ विलीघणलाईतलउं।सो
गकरइंश्रतिस्वामि।येटमारिमरतांघकां।हाथग्रह्याश्रीराम १९ मंदोदरिश्रादिइंसकं।सोगकरंतीना
रि।रावणशायनेरोवती।फूरइमनहिमफारि २० रामकरइंसमफावणी।कोरउवउसकोइ।रावणरा
यारायघउं।श्रमरांश्रधिकोजोइ।२१ वीरहतिमांहिमूउं।नमकुंकाइरहोइ।सोगनकरिवोतेहवा।देए
उचितश्रवलोइं २२ संसकारकायातणकं।करउमन्नावउवार।हेतीश्रावीघांहरइं।साइकरउंप्रकार २
३ कुंनकर्णनइंशत्रुजिंत।घनवाहननइंश्रांन।बंधनछोडामोकली कीयासकंराजान २४ सकं कुटंब
वीकाइं।करीरत्रेमइंपांजरो।लेइचाल्याराइ २६ बावनचंदनाचिता।श्रगरघणउघनसार दहनकर्म
विधिसाच्ववी।पद्मश्रनइपरिवार २७ पद्मसरोवरन्हाहीया।पवइजलांजलीदीध।श्वेतकांमरावणतणो
एतलइंसघलोकीध २८ दिनकेतानइंश्रांतरइं।मेटइसोगमुजांण।कथारहीरावणतणी।श्रागइंसुणोव
षांण २९ रघुपतिजीतउरे दशरथनंदनधीर रघु० लषमणनोवडवारर
घु० सत्यवतीनककंतर० गिरूउनइंगुणवंतर० ३० नोवनिकेरानादसुं श्रंबररह्यायोगाजि इंद्रनेश्रा
वइंश्रासनोहो सोरेरहिकंश्रतिलाजिर० ३१ घरिरंगवधामणा घरिरमंगलचार घरिरगुडीउछलाहे

सुषि२जय२कार र० ३२ जीतितणाकडषाघणा।गावइगुणीश्रपार।धनिसीताधनिरांमजीहो।धनलषमणश्र
वतारर० ३३ हाथपडौरावणतणइं।तोहानखंडिउंशील।सीताधनितिहिंकारणइंहो निर्मलगंगसलील
र० ३४ हणीसुंहउलेइरहिउं।मेलऊकटकश्रपार।रांमधनितिहिंकारणइंहो नतजीत्रीयनीलार र० ३
५ कारउंघोत्रिकुंलोकनो नतनइंघोश्रतिमांन लषमणधनितिहिंकारणइंहो मारिउंरावणमांन र० ३
६ रामश्रनइलषमणवदइं वांणीश्रमीसमांन कुंभकर्णश्रादिइंकरीहो निसुणोसकंराजानर० ३७ रा
जकरउंश्रापायणा यहिलाजिमघातेम श्रांणवहोलक्ष्मणतणीहो होसिइंतुम्हनइंप्रेमर० ३८ एमसुणी
नेराजीया श्रांसूनाषइंतांम गदगदवांणीबोलीयाहो निसुणोश्रीरघुरांमर० ३९ काजनहीराजहिंतणकं
म्हारइएकलगार संयमलेईसाधिसांहो श्रवहममोक्षद्वार र० ४० कुसमायूउद्यानमइं श्रप्रमेयबल
नांम च्यारज्ञानसुंसोतनकुंहो श्रायोमुनिश्रभिरांमर० ४१ साधकुंउतकेवली तिणहीरातिमकार केवल
उच्छवकारणइंहउ श्रावइदेवउदार ४२ घातकुंश्राश्रीरामजी सोमित्रीसुंसाथि कुंभकर्णश्रादइकरीहो
चाल्यातेनरनाथ ४३ देयप्रदषिणवांदीया साधुमहासुपकार श्रागइबयसीसांभलइहो धर्मतणकं
सुविचार रघुव ४४ इंद्रजीतघनवाहनइं पूछसंवतरवात पहवइसाधइंकेवलीहो निसुणोएश्रवदा
तरघुव ४५ कोशंबीनगरीवसइं निर्द्धनसाइदोइ प्रथमपश्चिमनामथी साधुसमीपइंसोइं ४६

रामजस

धर्मसुणिव्रतआदरी मर्यादनकरीविहार कोशंबीनगरीफिरइ। आयातआणगारा ४७ नंदिघोषराज
नलकं इंद्रसुमीतसुनारि क्रीडाकरतवसंतनी ए दीवकंनयनयसारि र० ४८ पश्चिमनी याणजक
रइं एतयनतणइ प्रकारि एदेवीक्रीडाकारीयो इणहीघरिअवतार र० ४९ वरजिकंयतिमांनइन
ही निंदइं नहीनिदान कालकरीनइं ऊपनो ही राइघरिइसतान र० ५० रतिवर्द्धननां मिइं सने
योवननीवयपाइ राजलहीरामतिकरइरकं तपकरणीफलदाइ र० ५१ प्रथमसाधमरी ऊपनो
पंचमकल्पइदेव साईराजादेषीयोहो आयोसुरततषेव र० ५२ वेसधरीमुनिवरतणकं रतिव
र्द्धननृपपासि एरवचरी सुणावताहो जातीसुमिरणतास र० ५३ संयमलीधकं सादरो पंच
मस्वर्गइं जाइ दोइदेवचवीकरीहकं येतविदेहआय र० ५४ विबुधनगरिइं ऊपनो दोइसाई
रय संयमपालीबारमइहो पामिकं स्वर्गअनूपे र० ५५ तिहांथकी चवीआवी राजारावणगेहइं
इन्द्रजीतघनवाहननइं नाईध्यासमनेह र० ५६ इंद्रमुषीपटरागनी रतिवर्द्धननीमाय एरो
णीमंदोदरीहुई वाहरीमायकहाइ र० ५७ इंद्रजीतघनवाहनं कुंभकर्णनृपाल अवरहाइ
तआदरइ घरकायाप्रतिपाल र० ५८ राणीजीमंदोदरी आदिइनारिक संयमसूधउआदर
इं वारूएहविवेक र० ५९ साधुनमी श्रीरामजी सौमित्रीकपिनाथ विनीषणआदिइकरी ना। ८८

रजीयांमकं साथ र० ६० सिणगारीलंकापुरी उछवनो अधिकार विद्याधरीएकीजीयइं मंगलनाविस्तार
र० ६१ वेत्रीवाटवतानालंकामाहिप्रवेस भुवनवलानमकरनइं कौथकउनामनरेस र० ६२ पुष्कगिरी
नइमस्तकिइं बइठापीउद्यान जोइजोइ जानकी जइवीकहीहनूंमांनि र० ६३ वाहिइंसाहासुंदरी
राघवलीधीगोदि जीवतुअएवीमइं प्रगटयणइ परमोदि र० ६४ पंजरनइं एवालीयो कऊएकवोआ
जे राघवजीअवलोलीयो ऊरेअहुमहाराज र० ६५ महासतीमोटीसती देवकहइं आकासि स्वर्गमर्त्य
पातालमइं पामिच्छतिसाबासि र० ६६ आसुंसुयगधोवतो आवीकरइप्रणाम सौमित्रीसाल्हासमु
आजसम्यासवकांम र० ६७ माथइचूबीसादरकु सीतादिइआसीस चिरनंदजेचिरजीवजे सफली
मयलजगीस र० ६८ नामकलप्रणमइघणु वदिनकरइइचिरजीव स्हारीएवाधजेआवजीव र० ६९
विभिषणसुग्रीवजी हनुमतिअंगदआइ चरणनमइंसीताननी तेपतिजालनलमाइ र० ७० ऊम
दनीविगमइघणु देपिपुनिमचंद सीतातिमप्रसदेषवइ पामीपरमाणंद र० ७१ सुरनोलंकतहां
पथिप्रवरप्रसाद सहसथंननोसोहतो करइहीगगनसुंवाद र० ७२ शांतिकरणश्रीशांतिनी मू
रतिमहीमावंत देइप्रदषिणवांदतो आणइंसवउरवअंतर र० ७४ पूजकरइं प्रभुजीनणी विविध २१

रामअम णदिइश्रीणि साजसकुरुनाणो श्रीडोश्रवमरजंणि र० ७४ सजीत्रणमीनावसुं चरणकमलसुषदाइवा
साहरजीएतलइ कहइर विनीयणराइ र० ७६ पहलीमंदिरमाहरइं प्रजापधारेआघ सकुकहइजा
णइ मकही प्रीतितणीएबाइ र० ७७ राइतणउंमनगपिद्ध आवइघरिप्रन नाम नाजननगतिनली
करी कुपजाविउउत्यामर० ७८ पहिरावापरिवारसुं पोषीयरिघलेप्रम करनोउनइवीनवइसो
राइविनीयणएमर० ७९ एघाडाएहामीया अरथगरथनेमार रुमरजपटकूलसुदा वस्त्रश्रमो
लकमार र० ८० एतेकालीलाधनी करञ्श्रापणीइस वक्रायपतिरावणतणीदो बइतउबिस्वावी
सर० ८१ लंकाराजतणउकरा दूनजीनउश्वसिंकुक नोमगंमबालमाहमीदो बोलइसाणगकर०
८२ लंकदीधउत्रहइसुली पहिलीदीठमंदमि आजतिलकसिरनाहरइदा जालिकीयोसुविसमिर०
८३ इसुवचनमइ इइजिकु गइसुवचनमइ स्वामि परिवरीयोपरिवारसुं आयउआनंदपामिर०
८४ सिंहोदरश्रादइकरी नामसकूनरनाह दीधांधीजकसकाहउ आणइधरीयउवाहर० ८५
कोलेषनणकउरामनइ परणावीनेबाल सर्दसुलच्छणगुणवती रूमणीरूपरसालर० ८६ इस
नणासुषलागवइ पिणमांहिदिन जात ढवरसनउवउलीगया अवसलावामातर० ८७ ढाल
जेमइतालीसमी रंगविनोदविलास केशराजरिषराजजी सरवसुणप्रकासर० ८८ [illegible] सर्व

इहजातघनवारनं सरं स्वलीमइडोइ सहासुनिसुगतिइंगया तीर्थमेघरघरेहोइ ८७ कुंलक
णित्रिवणनिलर। नदानर्मदामांहि इइरक्तिनंमिइंसलो तीर्थप्रवर्त्तिपाहि ८८ अथमाताअपरा
जिता सुमित्रासुंदोइ पुत्रानाआरतिकरइं सबरिनपावइकोइ ८९ पुत्रध्यानकीधीचली आइगयो
विघदेव पतिनागनोप्रछद। मातासुतनपेव ९० कौतुहलअति आरतिकरो कोतुम्हइ बलदेव श्री
सुनाषीमायनी उतरआपइएह ९१ नानतणाआदेशषी वनगयावनवास सीतापणिसाथिइगई
कुईपतिव्रतानाम ९२ सीताराबणअपहरी करीघणुंपरपंच नेहनकूयोबाहरुं मेलिकटकनोसंच
९३ रामश्रनइरावणतणा सुनटोमइसंग्राम हानोरावणपीजायो शक्तिचलावइनाम ९४ लागी
लषमणनइपडियइ धरायोसुरवापाइ विसल्यानइश्राणिकइ लेईगयापगराइ ९५ सबरिनया
वोआगली पहसआरतिहोइ कइजीवनो कुबरिकुं कहइवडसश्रोसोइ ९६ नारदआपइंमतिक
रकं आरतिएहलगार लक्ष्मणमरिकुंनविमरइं उदरू सबकरतार ९७ जाकुं बुलंकापुरी लावु
लषमणरामि आरतिनापरबोदही नवमुफनारदनोमन ९८ इमकहीनइ आवीयो राघवजीनइपा
स मायमनोरथपूरिवा केमकरैअरदास ९९ [illegible] सुमित्राअपराजितारं जोवइएह

श्रीजम सनीवार लषमणजी नाघावनेरे श्री लिइं अतिकवाटदो मुनिस्वामी पवरिनकोइ पाइ मुनिस्वामी सु०१
यतिवमासी जाइहो सु०१२ घणनितवला इहो सु० १९ पृत्रा ऊपरिमायनेरे होवइं नेदअपार मुरदी
नेपडिदेमायेरे चितरइंवडनारहो सु० २३००० फिरइंकदर्तबानरीरे सुतनइंके विलगाइ मालनवरे
वइं पंचिणीरे लिइसुननइरे वधायदो सु०१ गर्भ धरेव पत्रविवइरे पलिवइं अलिराम प्राणआपणा
आपिवइरे मारइं मनेनाकांमहो सु०२ मातागंगासारषीरे मातानीरषरूप मानामहायलिमाटिकीरे मा
नइं मत्रदानपहो सु० ३ मगमुप्रगणपनिवाटमइरे अधिकाणीआनिमाय साचनऊरगणपतारे जी
करकीधुंतसाइंदः सु०४ वीरस्वामिमानीघणर जवघागलेंदुमांहि मातानइं दुखदेइनइरे संयमनहिलि
ऊंधाहिदो सु० ५ घणुंकिमत्रुकहादोपीयेरे मातानइं सुपदत मुखदोषकुसमारनइरे एकधर्मननेह
नदो ६ ऊडारलायइं रामजीरे नारदसुमुयपायइं लंकापतीबोलायकइरे नासइष्रत्रक्रूनायदो
७ नेपत्रसारइं चक्रिधरे दोसरीयाह्म मात आगइदोपीच्यायकारे माताजीमरिजानदो सु० ८ अबदो
जइं कतीवलीरे मिलीमावनइ आज नेत्रनत्रेप साचकंपडइरे कीधेत्रदो सघलोकाजदो सु० ९ कइ बि
लोषणराइजारे मांगाघोदिन सेत्रल जिकं एतिनिकं एतलीरे मानोम्हारत्रेबोलदो सु० १०५ इपुरानी
रूपमारे आवीलेनिमरूप अयोध्यासमरविसुर कदइंलंकनोचयहो सु० ११ विसरजित्तेरिधिराजा १७०

यो मानापासिइं आयावातकहीसंतोषनेरे दर्भदायइं नसमायहो सु० १२ कारागरलंकातणीरे सुघडना
मिरदार अयोध्याइं आवीयारे काइनेलाइ बारदत्ते सु० १३ जेमकहि तेतिमहीकरिवरे चत्तरयणाइं
चितलाचि कत्रदेषत्रहरनीपुरीरे कतेदेपोपआवहो सु० १४ दादाइंअवसतेरमइरे पुष्पकनी
मिविमानि वयमीलषमणरामजीरे सारमनइमानेरे सु० १५ सीताविशल्यावलीरे राजसुतासुकु
माल सघलीबइठीमनमुखीरे विद्याधरीविसालदो सु० १६ विनाघणमुयावजीरे नामकलवहनमा
न अंगदसुंदक्षिणादिसइरे बइठा पुरपप्रधानदो सु० १७ सामीदिमिइं विनोयुधरे बइठा राक्षस
राइं प्रवहमेवकसामटारे लोयोविमानचलायदो सु० १८ अजोध्यानइ आसनारे आयाजोण्याजाम
भरतनूपलघुलाइसुं सामाआवइतेमहो सु० १९ भरतरायाहाथीवकारे नेत्ररिइं आयाइम्रा ईंगाविना
नदीकतल्यारे आणीअधिकउगीमहो सुं० २० भरतनूपतलेलावसुरे रहिनेचरणचिारलाइ ऊठी
इंद्रचोकूरारे लोषवकेविलगाइदो सु० २१ मस्तकचूंवइरामजीरे बारुवारविसेष शत्रुघनयगिला
गुनारे दिडमनमांननरसहो सु० २२ शत्रुघनेनेभरतजीरे लषमणनइंपरिणाम करनोलसमणजीकी
धरे जेकीयत्रश्रीरांमहो सु० २३ तांमविमानमइएकगरे वयठावेधवस्पारे दानशीलतपभावसुर
धावइंसानअपारहत्ते सु० २४ पहिलीरीपरगटपलइरे अयोध्यासमरविमल्होप्रीप्रनआरनेदि

रामजस पुनरपि कौरजूडा विहो मु० यातांरी घोडइं पांणी वइरे रजमंगल बमसावि करी सुगंधी धूप णाइं फूलदि
कलेवरा विहो सु० २६ नारंगनी रचना ...रे गलए घली एदपि घरि २ गुडी ऊछलीरे घरि २ दर्षविमय
हो सु० २७ नगरनारी सुंदर यणइंरे सोनानंत्र संदाद जेम धणी घरि आवी यादव ते सुंदरि पावइ सोह सु०
२८ वाजा विविध प्रकारनारे नमित्र नइं आकासि वाजइं नीकानादसुर होइर दिन उल्हास हो सु० २९
नगरी मांहि आवीयारे माधवे दपी भीर ऊंची नजरि विलोक वइरे लोगकं नवकोर हो सु० ३० कनकत
णी कुसम करीरे नरि २ मोतीथाल वधावइ वनिता वलीरे गावइ गीतरसाल हो सु० ३१ वंदावइ वधू
मदार कांमिनिकलस तूदार दानइ जलहर वरसतार आया नपदरबार हो सु० ३२ अंतरि तांम वि
मांनधीरे रांम सुमित्रानंद महलमांहि मनरंगसुंरे आवइ धरि आनंद हो सु० ३३ पहली कोशल्या
तणइरे चरण नामइ सीस पाय इंअवरी मालणीरे माता दिइं आसीस हो सु० ३४ सीता विमल्यास
तीर कोशल्या पगिलागि पायइ मासूत्र तनइंरे लइइ आसीस सुहागि हो सु० ३५ जिसा मूलहम
जनमीयारे तइसइं हो समनोल ... मांनिइ मारो बालहो सु० ३६ फिरि २
मा आपराजितारे लय मणके रत्ने अंग करसुपरसइ गिरघणुरे हु बिकट इं मनरंगरा सु० ३७ वेव
उमर उआउमइरे कुआ जाल्पउ जनम नयणनिरषी कुं आपणइरे धनिकरतानी कल्पहो सु० ३८ ५१

कहइ घण कंवनवासनोरे सीता इंरघु देवा लछन कं आघ कं काढीयोरे जो कुंनो कीध कं मेवहो सु० ३९ ला
तलणी परि रांमजीरे सीता नइं जेम कहइ लषमण नं वनवास मइंरे कृत कं गषि करम हो सु० ४० माताजी
उदत पणइरे मइकोध अंग्र विवेक सीता रांम दिलागि नारे देतकृत्य एक रते सु० ४१ पणि घरि आसी सषीरे
वायवादल फाटि गइ मदी आयी आणीर आया आरिनिरधाटि हो सु० ४२ ढाल अवनाली समीर गई
वडेडीनारि केआराजरिषि राइजीरे पुन्यवंत संसार हो सु० ४३ ...
... ॥ ... सगुरवइ कं संसारमइं ज्ञानदानदातार विप्यसगुरु से
वालिहइं विद्यानकुविस्तार ४४ रांमसंत लषमण आवीया माजीठ पंचयार तेमन जाणइं आपण कं के
डाणइं करतार ४५ वर तस तुलक्षि करइ नली अवसर जोगीसार उछव मंफि ते अति घणो घरि २ मंगल
चार ४६ सव कदाई माचवइं स्वामि तणी अतिसर नयतनी पदवी तृण कं नकरइं का अहमव ४७ स
मकं लदीनइं स्वांमिसं भरत लगइं सुविचार राजपद कं परन आपण कजि कं संयम भार ४८ संय
जम तं कसादरु निइवी राजासाधि मकतिसकति मृपाणया नयपद करी आधि ४९ आजलगइं मइं
रायाय कं एरइ महारकु राज दादा जोरे दयाकरो साहू आनमका ... ५० ... पिणगइं रेमरी

गु.म.ज.प घिणगइ रे लागी लीमरी खिखिकाढीलीमरी खिखि० खिमगई फिरनावइं साइ अंजुलिनं जलजानं जोइ खि० खि
५१ समय समय मर ताजीव वीतरागनाथ चतुमंदीव खि० नतुसो बिखडालनतीहाद कालेर रइं एहरी वांद
खि० खि० कलामुतव धनदीठ विनाम जमरू ठीजेम गयइ प्राण खि० ५२ जातकन इजमसाइ जोइ अण
जानकमइ मासरतन दिसाइ खि० कालइ साधुतसकू संसार कालनयायोजा इलगा खि० ५३ जरा
नपीड इतपजइ रोग नघटइं इग्नाबलयोग खि० जवलगआणिनयगइ आव तवलगकरि चितधर्महि
ताव खि० ५४ जिनरजगधीजम धीनडगइ नेतउढालकरइ रेमाय मंदिर द्वारइ लागीलाइ नवनउकाइ
हिनकटाइ खि० ५५ मागर पत्तदिआवइहेद ऊलविचारगणनीएह खि० जेद बालइ पर्वनपंढि
कितंन बलइं सडंनदवमांहि खि० ५६ जगिमनामतं सबलकषाय घरो घटिइं बि णिनरराइ खि० बा
वगा वावी यंचपुलाइ पंथिपंथिनरहवापाइं खि० ५७ एहमयालापुलामुरूआज जिमतिम सारूआत
मकाज खि० घरबालीनइकीनंकरंत मर्षं सिराम णिनाधरंन खि० ५८ आलीआसइ कहइ सारा
म ववरर वादइ संयमकाम खि० राजकरा जमपहलीजेम जतमुष माखिइ राखतंप्रेम खि० ५९ आ
लीकारी जम अभिधान एतउइ सकजिहां खि० परलीजि नउमहमानी आण अवदा कंरि मुष बोल
प्रमाण रा० ६० सरतनरूपकरीर जहार उवीचालिऊ लोपाकार खि० लषमण दोडा माहोनदा ५२

तेहाय आणा वयसारिऊं नरनाथ खि० ६१ आनानइं विसुधान आदि रांगीभक्तआनी अहलाद खि० देवरनइं सम
झावइ तेह संदरिवचनवदइ ससनेह खि० ६२ जेवउनाई नानसमांन किंतनविचार इतराजांनु खि० माइर
केमतजइ मरजाद एतउनिश्चइ बइ विधिवाद खि० ६३ बीसारणमंयमनीवात जलकीडाकरिवा नइजात
खि० देवरमाखिइ घालइ लाज कम मुषेलणनी अभिलाष खि० ६४ नासीयामनरोषण हैन चालिऊनय
निमहलमंमन खि० घरिकादोइ करीजल ध्यान जलकावइ उनेतनयान खि० ६५ एतलइ गजेनुवनाल
कार घनउपालइ रोमअपार खि० आयवदेषीत्रीयपरिवार सोरमचिऊरे पडिऊं गजलार खि० ६६ व
रहर भूज गतलागीबाल देषीहाथीअतिविकराल खि० प्रविरोषीमघलीदवि आगइ नपआयो नतषेवि खि०
६७ मदकरि आधउ नरगयंद नयणे दीठउ नरननरिंद खि० मदऊनरोघं तेनीवार जातिऊ ऊगजगी
ऊविकार खि० ६८ गजदरीणदषी अभिगंम नपनिपणि सुषपायऊ नाम खि० कानसाढीबालीएम सूए
तिआगइ दायीनम खि० ६९ वातसुणीनइ आवइ धाइ रामसत्वप्रमण सुलटमुहाइ खि० करीऊपाव
अनकेजाण महावतगज आणिऊं ठाणि खि० ७० ऊलजपणनइं नयणेदेउ समेसस्यारिषिराजविस
स खि० गयसामीत्रीसरतनरेस वंदनआवइ लोगअमेम खि० ७१ पेठइ घयकद ऊरिषराइ नरनदे
षितिमदधाइ खि० दे ससुनषणकेवलधार नामइ नषणसुणतं मुविचार खि० ७२ रिषनइ लाधउ
संयमतार तायसनाबतपालिअमंद खि० चंद्रोदय सूरोदय देषि नवमाहि समीयासवि सेखि० ७३

॥ ग्रन्थ चंपोदयगजपुरमइं आइ हरिमतिनृपतिनंदक लइ बिप चंद्रमुनेषाकरि उत्पन कलंकरनामि इंचित पनवि
७४ सप्तोदयपाणीने पुरमांहि विश्वनृतिनउ नंदन घांहि बिप आगनिकडा उरि अवतार श्रुतिरतिनामइ कु
लनी धारि बिप ७६ कलंकरनृपपदपावंत तापसवननइ पगगावंत बिप वीचिमिलि कुशलाज्ञा आगगा
र अभिनंदननामइ सुखकारि बिप ७६ तापस पंचागनि साधंत जीवघणानउ आणइ अंत बिप नाकइ
आउ लगाउ तुआप तेमांहि रहलवइं साप बिप ७८ सोअहोयर लवन कउ मरु वाय येमंकरनामइ
लहइ माप बिप फाड्यो नाकउ काउ तेनाग जीवउ वामानो मोलाग बिप ७९ नाकइ फाडि कंमांहि लु
यंग दीठउ राजाकुंकविरंग बिप दीसा उपरि आलइ लाव श्रुतरतिनामक दहतकदावि बिप ८० व
यपांका दीसा सहेज कारिवकुंकाया आजमनेज बिप एम सुणिलागउ उवाह लचिपचिमांहि रह्यो नर
नाह बिप ८१ मादामारागवइलाम पुरोहितमाघिइं सुविलाम बिप जो कयाआपायामीनेह राजा अक
रि मइ तिरछेद बिप ८२ विपदइ मारउ नरनार वेगउद्धारउ तेकार बिप पापतणा फल लहइ इजरिए
दोइ लवनमीया नृरि बिप ८३ राजग्रहीनगरमइं विप्र कपिलघरइं आव्यानेंषम सावत्री कुरिनामवि
नोद बीजउ मरणकरंत प्रमोद बिप ८४ रतणयोलगवानइदेव देसांतरि नृणायो कुरिषेहि धरि
आवइ निसि किइ जाम यक्षमंदिर लीधउ विस्तार बिप ८५ वउ बाधव गामामार दतबिप्रसुतेम प्र
कारि बिप यक्षमंदिरमइं आवइंसहेउ माघावी प्रियनो लवमेटि बिप ८६ रवि आयो बइंतसकंत ९३

दतन आव्यानो मतउरत बिप रमणकुं वाबीमानि इलोग नारिनुं कंवइं भनिते लोग बिप ८७ काढी मडग करं
तप्रहार नेदन जाणइं कोइ गमारि बिप मरणवुरी सुहणायो कंन आबायइ पणि पाड्योतेत ८८ लवमे
सविधननामि प्रसिद्ध इन्यपुत्र कुवेर समृद्ध बिप रमणकुंउ सुतनेह नो श्रोणि लक्ष्मी उरिनूपण सुवर्णा
८९ परणावितकं मावनीस सुषमानइंते विश्वावीस बिप कुपरिन मिइ बयवत स्वोमि रजनी केरउ
पश्चिमयामि बिप ९० श्रीधर रिषनइ केवलज्ञान उपजायउ वइं अधिक प्रमोद बिप केवलउत्सवकन्वि
देव देषइं तसमतणकुं लहइ लेवि बिप ९१ कुपरिषीउत्तरीयानंद रिषवंदननइं धरि आनंद बिप वार
इज्ञानो सापइ बाध श्रमपरिणामि सुलगतिलाध बिप ९२ ललानलात कुलवनइ लेन ललाललादीवित
रणादेन बिप ललाललादायावत गंम ललाललागावंत गुणगांम बिप ९३ जंबूदीपइं अपरविदेह रत्नपु
रीनगरी गुणगेह बिप अचलनामा वइं चक्रीश हरणहरण मायजगीस बिप ९४ प्रियदर्शननामा वर
पुत्र जीमो रायसिघर मति बिप बालपणइं रायइं वइराग मादरइं नहीं परणेनइं लाग बिप ९५ मातपिता
नउ राषण चेत कुवरजवमानो परणेत बिप कन्या मिलइ इह सार जनीनि परणाव्यउ कुअरपरवीण बिप
९६ सांठि सहस वरसो गृहवासि नकुलाको धान पउपवासि बिप अंतसमइ आणी अनशन पाम्यउ पंच
मअमर विमान बिप ९७ भवनोजीवकरीन इकाल सवमांहि नमीयो असुराल बिप पोतन कुपुरि ब्राह्म
णनो वंशी शाकनागनि मुख वंश वनंस बिप ९८ मरुमती करि जन्म जलीधउ लउ कुजाणीका टीदीध

ोमजस प्रतमोप्यामायाजाल आणानइं ऊपायोजाल थिए चर्ष घरि आलोपान नइंपरपंच वेत्रपासरिसा मंउासंच
थिए पाब्बइं संयमवृतिजनियाल पंचमकलिजयो ते चालि थिए २४०० गनू नविकोध कंमायालेर ग
तितिर्यलिदिउइरे मेति थिए गि रिवनाडि मरामयमन नावीक्र ऊएबलवन थिए १ त्रिचदतीननके
आनजिके नपतिनरनऊ नेरतिके वि थिए २ नरतनगाउ गतिदीव कंदर्ग जानासुमिरण पांमि ऊ त्रा
र्स थिए नाई पुत्रयणाना पीति किऊ अबमइंया उविपरान थिए मतिउयपावइं न्हार कंइ त्रासि गजमदव
डिऊएम विमासी थिए ३ एद सुलीसर नम्रारलय संयमआदरीयो अन्नय थिए माथिऊ आएकमरसन ति
द मद्दी गति विच म्याेनरनमेत्तिद थिए ४ आनमगुण आराधन कीध बामर समेर सुभाग्मपाध थिए अत्रुज
यसावि सेघार पांमिऊ भवसायर नेत्र पार थिए ५ हाथीना नाविधत प्रकार अनसन आराधी अतिसागपि
म अ सुध थिए मानाजीगइ मजत्तमम्मारि जरनइं नांमिइ मदाजयकार थिए ७ पतत्रसाधी रूडीढाल
पगुणपंचा समीयविन्नान थिए के ना राजकर किर हिंचहोरि दोइ नरननमइंकार तोडी थिए ८
नरतेन पदीऊ कोयदा राजीकरइ विवेक वासुदेवबलदेवनी पदवीन ऊ अनिषेक ९
कीजइं चितसुचितवी नचरम्मचरनेरस आवीमूळइ रामेने रामिदीय ऊ आदरस १० मांटने गायोमतंकल
उं मेयो वऊ मेकाण विधमग लीहीमाचवी माजनमल्यासूजाण ११ प्रथम कलनसल्ने स्मणनणी ढालइतेन ५४

पाल पवड्कलसश्रीरामनइं ढालइनेमुविमाल १२ वासदेवणआ रमतं ए अष्टमबलदेव राजकरउसुविमे
षदी सुरनारइसारइं मत १३ वासुदेवनइदेरनी सेवइ आवरजार स्वारद्धारे सेवीयइ श्रीबलदेवउदा
र १४ मजलदजारोदेममइ जेहनी वरतइआण राजामउलदआरदी श्रागकरइसुप्रमांण १५ रुद्धवरग
इवरग्दवर्द लाखअबइतालीस पालोआटप्रनापसु कोडीजअडतालीस १६ पचरपरीविजसतिकरइं भू
चरआणश्रखम मानइसुरमवाकरइ पालइराजअखंड १७ उमरघुपतिकइध
र्मसुगजइ सुधीयामघ्लोलत्रक अधिकनेहाअधिकमेरा अधिकनयइहोइ अधिकसुरलीइधआपइ अधिकफ
लेतरूजोइ अधिकलानलदनवगजइ अधिकचाकरयाम अधिकपुत्रकलत्रकमला अधिकमरइआग
हे उसर० १८ अधिकदानसुसीलअधिका अधिकनयदिप्रकार अधिकलावनभजपावन अधिककरणा
सार अधिकपासदनइंसामायक अधिकदाआचार अधिकअधिकुसवतअधिकानऊअधिकार हे उसर०
१९ नदादिंसानदाजुठजनदी नदीकोइचारहोलपटनदी लोना नदी नडानार नदीकोधी नदीमानीनदीछि
पलगार नदीवादविवादविग्रधा नदीकोकलिमारहे उसर० २० नदीआलकरालकाला पिशुनकोजंजाल
नदीकोपरपंचरंचदा कउनलदउमाल नदीजार जुआरधरत नदीउपीयोकोइ जेहनीउपनाजगमइं
आपदीवरसोइ हे उसर० २१ रामआपइं विभीषणनइ रामसानोक्षीप कपिपतिनइंदीपकपिना अंबेजेह

रामजन्म

सरीव रूनमतईनइधवरश्रीपुरश्रीपतिश्रापंत कुलकमुईजेवलभ्रामा नेनिदांघायंत देउसर० २२ लंकनायथा
नप्रगटी लहइवारविनध नीलादिईरित्तपुरपति मूर्यरूनपरलीध रुजटादिनायगोत चंद्रगतिमृतदे सि
रछनपरनगरदपाचलिइ लहइविमेषिदे उसर० २३ यथीयोगिईजेदीजल्पा तिमउतेहनइ देश
देइनइ संतोषाया श्रीरामिचाकलनरेभर गांमवालइगामयामइ योवनवालइयेत विमुखेतोनरकेनर
हीयो पग्रप्रधवीदेतिदे उसर० २४ शत्रुघनमुरामनाघई देगजेदीमुहाय सांइमागरुमानपुरा श्रावद्
तमदाइ रामनाघइवबमथुरापुरि श्रधिकइमाथि ऊगिहुफोऽश्रोपगाइगोलि कगपाउईमाधि उ० २५ मधु
नपनईचमारिश्रापिकं श्रबइपाहिनीसल श्ररिहणीतमदाक्षश्रावइ प्रगटबईप्रतिकूल शत्रुघ्नकुरइत्र
मूदणायो रत्तनाथनिसंक ऊरधारुनाइवुंजनतं कागरमधुरकदे उसर० २६ देऊंमघुगएननामो देपि
स्पत्रजाइ रामश्रापीतिमथुरा एहमीघमुणाइ श्रनगांवइ गाफलदल हूंकीयाकाम वलिजोरनेकोचलिस्य
इ. सीयवइश्रीरामदऊसर० २७ रामित्रणश्रसवा श्रायकश्रावीयानमदाइ सारभाजभवदननोमा मा
पिदीधासांइ धनुपदोधकंश्रर्णवाव श्रग्निमुपजारमार लयमगाइश्रायमिारघइ नाइनइजयकार
देउसरघुण २८ शत्रुघ्नतवचालीयऊ करतमीघ्रप्रयाण माधिदलवलमोसुटजर वाजहीनीसांण अ
दीनदिवाश्रामनीधउं घबरिकाधी राइ वनकवेरईनारिसरिसउ मधुकेरायदे उसर० २९ श्रस्त्रना ९८

श्रागारमांहि श्रजनरेनिवसि शत्रुघ्नपवदीरानिइ करइंपुरीनिवसि वामनांपत्निदाडीयामक श्रावदहोपुरमां
हि. शत्रुघ्ननेमसटबलाप् रत्रकीयउतपाहिदे उसर० ३० मधुनंदनलवणाकमरि मांहीयउमंग्राम लइत
श्रधिकऊयमधनइमृपि मारिनाधकऊनीम रामायणनीश्रादिजिम नारायणइरवरमांडि जातनाधुरिदी
वजाया तेमएमूहारिदे उसर० ३१ पुत्रनतेवधमृणिनइ मधुकउयोरेकराल शत्रुघ्नसूश्रागिश्र
डीयो लइइश्रतिनपाले श्रसुरशस्त्राचेटिकरिवइ श्र घिमरातेहदेवत्रनेर जमनाचातेमरहहे उसर० ३२
धनुपनेतवश्रलिवाव्रत श्रग्निदुयतेबाण सुमिरीयासांतिधकारी हरणहरिकाजाग मारीयेनधुरानलकमार
हो मृगराजघावसत्सां मधकचितहरऊवएडश्राकाम उसर० ३३ श्रजनादेनादणण सुप्रतीनतमंद जन्म
हारिकंकेनसरिकं काजकनतिमंद पजीयानरही देवजिनना कीयाप्रवरप्रसाद पाऊनेणीदाननदीयो
श्राणिकइश्रहलादहे उसर० ३४ एहलावननावतारे राभिषधधर्णानग्रहीदिक्षा प्राणबोधा फउसर श्रसिरो
म स्वर्गनीतहदेवदेव मारहीनसमेत देहऊपरिक्रमवरम्मा जयेरमधकदेवउसर० ३५ देवकृचिहरूलेजई
रही नगरसुरवाने शत्रुघ्नकलवतिईकीधकं मधकनपनीघात मित्रमारिकंमुणिमीजिके तोमश्रीचमरिदया
कुधनईश्रजनाकूकरइइमश्रानरिदहे ऊसर० ३६ चलीदेतववेउदारी देवप्रबइनासकिहाचालमित्र
हेता तणवकरिवनास वेणुदारीकेरिनामइ तेहनोश्रधिकार श्रईचक्रीपुण्यप्रेरो श्रधिकवर्तइवारहे उसर.

समजस ३७ धरणपासइं लहीरावण शक्ति भिमधुमारीयोछइं शांतिहोवउ स्वामिहो उसरण ३८ चमरलाधइं शक्तिजीति
विमलासुषमाइं नारायणनइं नीवमाणिउं एहनइं छलकोइ तामअग्रमहणचारणीनइं गयउ सर्वप्रस्ताव नेह
धीजइं शत्रुघ्नकुं कहइ वउ आवहे उसरण ३९ एम कहीनइं चमर मथुरा आवीयो तनकाल लोगसुधी बा
देशानीकउं देषीयो सुविसाल ऊकनतृतएपरजेपीउ पछइ यीडं इस एम चिंतीरोगपीडा करइं विस्तार तेहे
उसरण ४० रोगनाउपकमवीअं तोमहि विप्रकार सोनीयानहूं जेमसिध्यी तेम उपचार तोमन पिक्कलदेवि सु
मिरी ताक हइं सु विचार मथुरामां चमरकोप्यो तेहना सुविकारहे उसरण ४१ लोगदुषीयादे षिराजा करइ अ
रति अपार बीकनउं मुरछायो माणस जोवहादीनकार शत्रुघ्नवचालिआयो रांमलखमणपास चमरको
प्यो कोष्यो केमकीजइं एअरदासहे ४२ देवालइप्रणकुल दिनमण आनीयाहुनी दोइ रांमलखमणराइ घ्रसं
वंदनहीसकाकोइ शत्रुघ्नजेयहीमथुरा कहउ अन्न कणहेन देशलखमणरांमसूंकहइं पुरुसवसंकेतुहे उ०
धउ शत्रुघ्ननोजीवमथुरा ऊपजिकवकवार नां भिश्रीधरविप्रकुलतो कामनउ अवतार राजपत्नि लीयोतेडी
करणलेगविलास जोणकआचेरलाषिकं पांमीयत्रुसोत्रासहे उसरण ४४ कुकमिनपनइं बंधन मिहूं
आणीयो तेविप्र करिकृपाकल्याणमुनि बोडवीयो तेविप्र लेईसंयमस्वर्गेहोइ पुरीमथुराचोलि नंद
चंद्रजसइन्द्रपनउं कांकुतनप्रमाणिहिसु ४५ हरिप्रलाकरिउपनोर अचलनेहनुनाम रविप्रलादिक ५६

आवलाईउ रमाईजांम सकृत जोणीमारिवानो करइंते ऊपाइ तेहमंत्री मरइंदीधउं अचलनासीजाइहे उसरण ४६
समंत अटवीमांहिकारइ वींधीये तमपाय मावर्मनोवसणहारो अंकनामधराइ वाये काठिकघर हिबाहिर
वहइइथण लर तजरि आविक अचलनेहनी ऊपजिउ आतमारहे उसरण ४७ कावलाररुतारिक टउ को
ढिदवउ हाथि मउइकाटकतास आपिके जाति आ पाहाथि अचलनांमाअनुमथुरा पुरीकेरउराज रुके
मुकनेसुणी आव सारिम्प्रउककाजेहे उसरण ४८ अचलकोशंवीपकनउं मिरहकनइं मगि इन्द्रदत्तनरिंदमी
घइं कान्हावनुषसुत्वगि राइगरीफावीया तिहवनषनइं अभ्यासि राइपत्नीमाविदषिवी तामदीधीतासिहे
उसर ४९ अनंगादिकदेवसाधीमेलइ सबलउसाज पुरीमथुचालिआयो वि ल्सेरी आवाज युद्धकरिवइंना
इआवइ बंधीयानेरवचि चंडसइअंकनमोकलि वात आणइमेचिहे उ० ५० नानना इकामकी धउं मुचिवरूप
संआइ नाषहीतव अचलनगरी मांहिंलीधकराइ अनुक्रमइन्द्रपराजदीधउं वरतीयोजयकार साइते अष्टमे
वकन्यात्रकाकार उसरण ५१ एकदेवसइनहना चइ देषीहीमोमस पातपुरुषामारीयइरे सउअंकअन्नय
पामिनडीकरिदिलासा जन्मनूमिजदीषि अचालिअंकसुमित्रवापिकं विडसिंधुकीधहे उसरण ५२ मनुशाचा
रिजपासइ लेईसंयमसार स्वर्गि पचमइ होइ आया मनुष्यलोकमझारि शत्रुघ्नअचलकुउ हे तमथुराला
र अंकजीवहतातनआनन साखीउन्हसारहे उसरण ५३ श्रीप्रलपुरनगरनीकजे श्रीयनंदराइ धारणीवार

सं।गंमजम

ऊपना मुनमाग्रहीसघदाइ सुरनंदश्रीनंदश्रीश्रीतिलक नामजयंत सर्वसुंदरचमर वरमय मित्रनीगुणवंतदेउ० ५४ श्रीनंदनराइ मान पुत्रसुवइराग मानजाति दरिषायइं साधिव सिवमान श्रीतिकर ऊपयासि संयमआद स्यानतपे लह्यं केवलनेमी रूपकू नंत राइ जीरिषदवदेउमरण ५५ लाइ मातइ सुधसंयम पालता विहरत लब्धि जंघाचारणीरे तषबलि हूउपनेति पुरीमथुरा आइरिहिया तांमतेचउमासर छठअठमदशमहादश करइंतप उपवासइ उमरण ५६ पारणाजइ अवरनगरइं करीआवइं साधनामतपआचरकरण। तणइ अनितायलाध चम रेकीध जरेगनिटीया जंतनरनिरोग अधिक उदरंति घरिनहीं तपनइसे गई उ ५७ तीनलग वडखदन ग्रनलाइकतइनमकेशा एहतोउषधीजयइं साधुन मुनिमेस वाइरउनतंफरसिआवइं जतिपग सेवाइ वाइ पाणीफरसीबांधी नेगमघलाइ इहे उम० ५८ अथे आयइंआवथा नेपारणानउंकाम उदइजसेठ गृहीगणाइरे आतिजन ह्य सि नावविणवंदनकीधी सेवलमयवंत साधुआचोमासिमांहिं विहरनाविचरंत हे उमरण ५९ मे वजंणइं पुछियारे किस जं ताम्र आचारे नेसदीमइ साधुनेरे फिर जं वर्ण कार एमचितव नतइहां रह्या दीयेव जआहार चालिक पासिरइ आया जिहां बहुआमगारहे उम० ६० आचारिजश्रीनांमिसिहति वरकी पत्र जविग्रन्थ म अवरसाधुनेकर इवंदन लिंगिं काइंम अन नकीधुपडीरह्या आचारिजरिषराज प्रसकिहांथीपधारया कि हंजासो आजहेउ ६१ पुरीमथुराथकी आव्या जाइसी पाणितत्र एमकहीरिषपांउस्यारे आवीयाच यत्रममरिषि ९८

संयमी सधा ईरीआपालंत गगनि आवइं गमनि जायइं दोषमकुटालंनुहे उ० ६२ सिष्यपुछइं सगुरुयासइं कुण ए नि ग्रंथ सगुरुनापइं साधुमाषिइं हि त्रिवयंप लब्धिवंत मह तमुनिवरमाहि कोनहीं दोसपरसुणंता शिष्यमनमइं क रइं अतिअपसोस मेहेउ० ६३ एहसांमलीयउश्रावक करइपश्चाताप मासकानी सेतमातमि चालिआयो आप करीवंदनवीनवइ उमहउलांलरिनआगाध पाइलागीनइषमावे षमउमुजअपराधरे उसु० ६४ ससरिषि सुप्रमादथीरे आं निसघल ईदेशा सुणीकात्तिकपुर्णिमांइ आवीय उनेरश पयनसीक हइसाधुने आहार लिउं मुफगेह राजपिंडनरिषहांकल्पइ कहइमुनिवरनेह हे उसर० ६५ मात्र घृतवफेरिन सइ धनिसारउम मंदेवहतनयरोगमिटीया कायाविनऊपकत कोइदिन महा महइ उं इहांअवरवांति टहार मुनिकरउंअवतार मोहनऊकरे जगउद्धारदे उप ६६ समरिषिकहइ ए नकरइ साधुममतालावे चाले स्थानविरध्यां जिगणी चरणसेवाव घरिघरिइं जिनबिंबपूजक करणा साधुसेवा साधि सालसमकितमूळपालऊ जेमनघडु व्याधि हे उमर० ६७ एमकहीरिषिपधारया जिसीजिहनीमूर्त्ति रत्नमणिमा सप्तरिषनी नयकरावी भक्ति नगरपास इचारहादिसइं माडिप्रतिमांइ ऊठालनइं कमारागतध लो सुषिवसइं सकुकोइहे उप ६८ ढालएपंचासमीरे साधुनाउपगार अवइं मोटानहीं बो गगनितइ विस्तार केत्राराजमुनिंद नायइं गहुडआयासीया नास ही जिमसाधु साधुआया पापनासे तायहे उप ६९ गिरिवेताढविसमथी दक्षिणश्रेणि

संगमजस देषि रतनरथराजा नलई रतन प्रइं मन विदेषि ७० चंद्रमुषी कुंअरि तपनी मनोरमा सुकुमारि एक दिन इं परणास्यां राइप
डो मन विचार ७१ नारद लषमणजी कहइ सुत सव गुण लषणवंत साम्यवती रुपमनी जउ घाइ कुंकंत ७२ रतनरथरा
नो घणो कोप्यो तामकुमार गोत्र नवि विचारिवइ अमरषवइ अयार ७३ कीधा मंइ एक टीयइ ७३ नारद नासी जा
इ परीत्र दीयो आवीयो लषमण नाग तयाइ ७४ मनोरमा नउ रुपपट लीयो लिषे देषाय लषमण भेल अनरागी
यो रुप इम चइगाय ७५ लषमण तव रही चालीयो मावि श्री रांम गषमस चा सेनम आइ गयो अनिरांम ७६ र
तनरथ नि जुत्र सु आणि करइ संग्राम लषमण तजीती लीया वाज्या सुत्र सदमांन ७७ मनोरमा लषमण नणी यु
त्री दिइ प्रधान श्रीदांमा श्रीरामनइ रीफा या राजान ७८ माधी दसिण श्रेणि सकु माधी षगम पाल पुरी अयोध्या आ
वीया गजकर कसु विमाल ७९ लषमण नइ अंतेवरी मोटइ सोल हजार आठ अवइ पटरागणी इं द्राणी अवतार
८० विसल्या आदि इं कही रूपवती वनमाल कल्याणमाला चउथी रतिमाला सुकुंमाल ८१ जितपद्मा पांचमी
हो अनपवती अवधारि मनव्रंजन मोहनी एआवइ पटनारि ८२ अठा सउ नंदन हूआ सोर महाकुमार जाया
अरमइ वीयो एआठइ सुतसार विमल्यानउ श्रीधर रूपवती नउ एह प्रथवीतिलक सुहामणो गुणि मणि केरउ
गेह ८४ वनमाला नउ अर्जुन कुंपम अधकीनास जितपद्मा नउ जाणीयइ श्रीकेसी सोल्हास ८५ कल्याणमाला
नो केसो मंगल नाम अमंद सुपार्श्वकीर्तिकल्मनरू मनोरमा नउ नंद ८६ रतिमाला नो विमलजी विमलसुनामिप्र ८७

नामि अनयवती नउ एम दी सतसंकीर्ति नेमि ८७ चारि कही श्री रामनइ सीता सती मरेष प्रभावती नइं रति मिला
श्रीदांमा सुं विसषि ८८ गर्भ धरइ सीता सती नवसुपिनो अविलोइ आवइ चवी विमान वी सरमनले इइ दोइ
८९ करइ प्रवेस निज आननइ वीनवीयो भरतार पुत्र युगल तन हूअस्या विस्यो नहीं संदेह लिगार ९० सरग विमान षको
तवा सुत नुकन हइ इरवडाइ होसइ एताणतसही कहइ चयो भागच ९१ सीता कहइ स्वांमी सुण एमी आरति इ
त्री कांतमक लटीया धरउ करिस्यइ श्री जगदीस ९२ जाति धणी पहिली अबइ प्रसूती नाना साथि अवस्व मानमस्या
पची अतिसनमानी नाथि ९३ सउकि वलइ मनमइ धणु अमरष सउ नजाइ नलिपणि कोचालइ नहीं ता
मकरइ कुपाय ९४ सरती पी अति आकरी सत्री सउकिज मोइ होरांमजी म
उकि सरी धीमलि का अवरनरी मइ कोइ होरामजी ९५ सउकिक रकंकिकंतांकरइ मुइ होइ पदा इहोरांमजी
पचिन वंरहपाय णी फिर रएह मगाइ होरांमजी सं० ९६ नाम्रषकी तीय उपर उ तीय तनास प्रतापहो रामजी ग्रा
म्हव पतर इं मांनमइ लीयां कवइ आपराव ९७ सायणरा वी सायणी साय णि सउकिक हायहो राव सायणि
मंत्र इं पीलीइं सउकिन किउ हीकीलायहो रांम० ९८ आगिषकी उनी घरी उनही मोकिउ हो इहो राव कोकवलइं
जिमली तरी नेमवलें तीजो इहो रांम सं० ९९ तवलग इं इध्वज सावत उ नवलग इं काजी इरिह उराव फाटइ कांजी
मेलवइ एह दृष्टांत हु निहो राव सं० १०० अंकरिऊ नइ या घणा देषायया मेल्हो राव षेवलचाइ नइं वाजिवइं
फाटि गया घन तेहहो रांम सण आटउ आव कुं घउ घणुं कोउइल टइवाकहो राव मांण सफेरि वीयो फिरे लेम

रामजस

फिरनो चाकदो रा० २ वादिर मिलणइं मिलि रही मांहिं कूटकानी नदो रा० काकदीयामइं लेवसी नीयोदेषि त्रवाणद कं
रा०म० ३ पारउवानीमउं मिल्यो दीगनकहिवा युद्दो रा० सोहगीना संयोगथी उरकी बल गउवाइ दो रा० स० ४ आबा
जी वृं आंवली चउवृउ जोयो बोरहूं रा० ३ परिकीमनजताघणी मांहि अधिक कठोर हुउं रा० ५ मस्यवनी माचीसती
वनषां मनविष्यात दो रा० मउवा मारनुई करी अवरां केहीवात दो रा० म० ६ सेवकरइं मीतानणी प्यार त्रविरदा
रहो० डीनइ अमनकेलवइं कानीलदयमकारिहो रा० म० ७ एकदिवसंगमइ एठइं चितनइं चाविहउ रा० रा
वणरूपमदे मणुं हमनइं लिषदेयाविहो रा० म० ८ सीताकहइं सिउंडाण:यइं केद वोषे तसरूप दो रा० मय
मइं नउ कदहिनदेषीयो देष्यापावअनपदो रा० ९ सानायइ सुणिसुंदरी सोइ लिषनेयावदो रा० स० धूतीधूत
पणुकरइ मीता मरनसनावदो रा० म० १० मांताम्रिदे षाडीया रावणपावउदार दो रा० मउक्यं लांकी गया या
पावतणा आकार दो म० ११ गाढिविमरजीवेगमं ... थांनिक सातहो रा० सीता अनवी याडिवा केरवीघालइं
घातदो रा० १२ पग आकारदं याबीया नवआया श्रीराम दो रा० पूछ्यो एउ तरदीयउ वालीत्रियनाकं मदो रा० मरे
तऊ एपावतपूजीयइ उउतनमसीषिइं नेदहो रा० वातनमीनी रामजी मउकिपलेयोए दो रा० १३ आपआणी
णीदासीनइं तेडीनइं तेनारिहो रा० गलीरवाजारमइं सारीप्रग्रिमकारिहउं रा० १४ सीताचिनरावणवसइं
सघलइ याडउंसाद हउं रा० सालसरिष उमालसइ लोगमुखइ अयवाद दो रा० १६ मासवसंतविराजीयो ९९

ऋतुत्रियमाधिकहंतदो रा० गर्भदिषेदविनारवइं आयोएरवसंतदो रा० १७ मेंहे डोदयनो मन आंबा ठइउद्यानदो रा०
विवधप्रकारविनोदनी मांहि मोटाधानदउं रा० १८ क्रीडाकरिवाकारणइ चालउं ताबाआ जदो रा० सीताकहइ प्रभु
फदोहलो पूजं श्रीजिनराजदकं रा० स० १९ नवदी रामिमगावीया वागतणा वरफूलदो रा० परमसर पूजावी
या आणीफूल अमूलदउं रा० २० पाछइं पमनि संप्रसे वनमइ आया चालिहउ रा० विवधवसंतविनोदनइ
राचिरसोढ प्यारदो रा० २१ एतलइं सीताजी तणउ फरिकउ वहिणनयनदो रा० संकीमनमांहिं घणं लहाय इको
इ ऊचयनदो रा० स० २२ सीता प्रभुजीसं कहिउं करइ विचारनरवाहो रा० एनउ एरवउ देषीयइ कपडइ कोइक
लेसहउं रा० स० २३ राक्षसनइ हाथइ चढ दीठउं रात्तमदे ग्राहो रा० देव उत तह थपीयो मउधउ या कीसमदो रा०
स० २४ दिन गिऊं वरसबराबरी आरतिमांहि उदासदे रा० पारनया वइकेवली वर्सवनाहरवबासहो रा० २५ प्रभुजी
दिइ आसना एमकहइ तमदे तदो रा० सुषदुष आपद संपदा लागीलारइं तदो रा० म० २६ रामकहइ घरि जाइनइं
करिकुं इ उपकमं हुउ दानशीलतपभावना साचवि श्रीजिनधर्म दो रा० २७ जिनवरनी पूजा करइं भावविशुद्धि
कालदो रा० आंबिलएकजषंमनो करतमिटइ जंजालदो रा० स० २८ सीता आवी मंदिरे रहती संयममांहि
रा० दीनादिक विधि साचवइं आदरसुं उछांहि दो रा० स० २९ यत्र कीया जगमइं जिके कोइ न राषी षांति दो रा
एजिनवचने जाणीयो साबीहोवइं अंति हो रा० स० ३० विजयमरुं संदेवजी पिंगलनइं मधुमान दो रा० कालस्ते

रांमजस. मकाजपयकहितं मलसुधरस्त्रलिक्षंनहो राण म० ३१ पमातइं अधिकारीया मोटिममेरूसमांनहो रा० बरिदारकरि
षापीया परषमहायरधानहो रा० सं० ३२ राघव आगइं आवीया ऊनाकरिसरिणामहो रा० घरि २ लागा धजिवा
नसहायइ घनधामहउ रा० सं० ३३ रांमकहइ सोलाईहउं कां तुम्ह आरनिवतहे कांकापततरूपानजिउ नाषे
वि नयमहंतहो रा० ३४ घनजी मंणकवीननी पणिमानविकहिवायहो रा० मांनवनाअमलामणीनइ घन
नइं उरवदायहउं रा० सं० ३५ अणकहीयो लागइं महा स्वामिप्राहनुपासहो रा० इतडि मइ पडीया अंहूय
हो वदुंदरिसायहउं रा० ३६ रांमकहइं लयमाणिजो लीवनणउतउदानहो उम्हेनमइ दोधा महा नामइं नहो
घनमानहउं रा० ३७ देवमुणंदेवीतणउ अतिअपवादषमीषहो रा० जणजणनइं तुमिच्छाकरो कांनननां
इदोषहउ रा० सं० ३८ समवादोफलदे षिकइं कहउंरूणनषायहो रा० फलमुगंधनंपषिकइ मंध्यांविण
नरहाइहउं रा० ३९ लेफलनइं लिविदषीयइं षटिकाजेमघसायहो रा० नरहइं त्रिविणसोगवं नरपति
रतउं मायहो रा० ४० मांसाहारीमानवी नतउइ पायो मांसहो रा० लंपटनारीपांमिकइं ननजमावतिनामहो
रा० सं० ४१ नूमउंलोजनपांमिकइं नषोएकलगारहो रा० नरहइ निमत्रियपांमिकइ ननउयकूणविकार
रा० सं० ४२ अंबरषीनइं घणं पंषीयपगयोमहो रा० किउंकंबइडपषायइ आगइ कलादेसिहो रा० ४३ सं
नलि नवेएहवी लोगांकेरीवाचहो रा० आणपणइं सुविचारनां देषीयइं पणिसाचहो रा० ४४ लेइ गयोपति १००

पकली एकाकी आपहो रा० कालघणोघरितेहनइं रहीपणिदेषायहो रा० ४५ रावणनो विणलोगबां रहीयोहोमि
इकेनहो रा० जाणंतकरि मइं आपणो वइनजसवंधमहो रा० ४६ लातिनलगइ वइं महा मोटांसांडजेमहो रा० ज
गमइं जसअपजसपणु नविचारइ वइपेम रा० ४७ अपजस पतउ षवडो सामहमनपायहो रा० घन नइ आ
णमुणाविया कं नइलि कुसुहायहउं रा० सं० ४८ नान्हीमुहमोमोटिक बोलांताएवाल रा० मकुवानाकी एकहो
तगमइ जसआरी अमोलहो रा० सं० ४९ आदिनाथ आदइकरी आजलगइ इहिवनहो रा० कोइनलोगांकालि
मा पुहवीमांहि प्रसंसहो रा० ५० कारतिआजनमनी मतिहारकं रघुनाथहो रा० सीताकाईनोकइ वकांनो ठकत्रि
यनोमाथहो रा० ५१ वसाहनहोइ रही एतउवातसुणंतहो रा० सीतामापिइं कालिज कूकाढवउ एकनहकरा०
सं० ५२ धीरजआदरबोलीया महतरां मुनीमहो रा० सती जणावीवानए कहिसकुजमनाकामहो रा० ५३ नहो
षउंजसजायवा त्रियानकूकणमातहो रा० विमरत्यातेविगसं इरवहीयइं नसमातहो रा० ५४ एकविनमीठालमइ
वाकलमिलोगसमानहो रा० केवारा नमीतातणा मतका कीयास्वकालहकू रांमनीसप [illegible] रतिप
अस्या रांमजी मुणिवाकाजिइसाद जिहांजाइ तिहां सांनलइं जणर मुखिअपवाद ५६ रावणजी लेई गयो तिहारहो
चिरकालि जांणि मत आणीमहो रां मित्रषटीवालि ५७ वांनादेषइं वसुनी लाजनकरीआहार नारीरूपविलोकवइ
पउंगनुविवहार ५८ लेइ गयउंहषमारिवा उषमारणगमार तिंदिनतउंऊषमारी कसिइ इहा किमतउ विचार ५९
एमसुणी घरिआवीया रांमनलाईवार चरउजेचोषाचउंकसी लेज्या नगरमझार ६० उदीकथा नोकहयरो उहीजनस

रा॰मजस मदाइ आलिम्रणावइंरामनइं उरतफिस्योनहीवाइं ६१ जेहतणइंतउंकारणइं रावणनउंतयकीध फिरिविक्षित
इ सीतानणी करणअवधारीध ६२ लखमणजीपणिमांसली लोगमघइएवात जोलिपडितेआकाशथी वजूत
लंनिघात ६३ [illegible] लखमणजीप्रलमंबीनवेहो राघवमंकरजोडिकी
कीजइंतोजानोडि नहीसीतामांहिषेडि लिकुंमावकराहिचेहोडि लषमणजी ६४ पांणीमइंपाथरतिरइं
पश्चिमदिसिदिनकार ऊगइतोसहीजाणीयइ सीतालोपइकार ल० ६५ वैश्वानरसीलउपडइं अमृतमारण
हार तउएसहीकरिजाणीयइं सीतालोपइकार ६६ अंधकारसूरिजकरइं चंदकरइअंगार ल० ६७ सायर
नाऊलसीतरी उवेरगुअपार ल०ए० ६८ पंकजपाथरऊपरइं पामइअतिविमार ल०ए० ६९ सूरिज
अंपमायांषकी वरनइंवामरवार ल०ए० ७० सायनणइ मूंपि संपजइ अमीतणउरसमार ल०ए० ७१ मा
पुनांममंसारमइं जउ पामइकलिकार ल०ए० ७२ कालकूटविसषाईयां आसतणकंअधिकार ल०ए०
७३ निर्दयधर्मलहइघणं अमाईजसधार ल०ए० ७३ कामकलावाळइघणं प्रज्ञानउपरिहार ल०ए० ७५
लपादयाविणवाबही नपहिंनणाप्रकार ल०ए० ७६ असमतीक्ष्णनमायरु व्यवगादवइंविचार ल० ७७
आपिविकणवावही देषुसकसंसार ल० ७८ चंचलचित्तमानवी ध्याननधरउसुधकारनो ७९ प्रल
म्रनइनचीबूझायइ अबलासुंअतिरोस सदोसहानहीजोडिवी एतोवइनिरदोस ८० ल० रामकहइमह
जरनरी नीधामुनइसुणाय मइपणिकांनेसांसली चरीयणिकहीआइ ल० ८१ वनकाएअपजसनणीमइं १०१

नउंमहीनजायइं सीताकादइपरषकी। जेमएकहजिमिटायल० ८२ दोनोदेइआंषली नवनामइंलषचात ममस्त्र
बइउ मारहरा फेरिमुकहिसावान लखमण ८३ पडहवजायोसहरमइं मुंहजोडिसजिकेइ सुमकरूंश्रीराम
ना मइमारिवानिकेइ ल० ८४ लोगवचेनेसीतासती किकुंढोडीयइंनरेस उत्तावाअवळइघणी पावक
घघसमू ल० ८५ मोलमुरगीवइघणी सहगानहीलगार सीतानउसंसारमइं नासिउधनिअवतार ल० ८६
उदिनकिकुंनचितारहिउ जादिनपडिउवियोग मोगमरूआवीघण करताथाअनिभोग ल० ८७ बानीफा
टइघीघणा आकुंनउफूडलाय वरमइषाजिमसादवो सीताउबइरउ ल० ८८ आजकाईअनेषामणा सु
णिलोगानाबोल मतिरवरामतताइजी सीताछइनिरमोल ल० ८९ बिणरूसइनसइबिणइं सेटनक
उइनहाय बाहिजदष्टिनाथीषा लोगनहीसमल दूलनस० ९० रामकहइएसाचवइ परघरनउजणलोग
आणिमिल्योएपहवो टवतणउसंजोग ल० ९१ जवजगगनयणननिरंघहि कहीनकहिणीकेइ कहकह
णीघाघनिपडइ अधिकअमानहोइ लखम० ९२ मइजनतउकेपइनहीं कउपिननेउविकार सडीननउला
एवदउ फेस्यावलइ निवार ल० ९३ सायरसायरतोलजइ नकुवइगं मतलाव सायरमइताराअंतरो घना
घइजिनराव ल० ९४ एकनरोएकजघरो एकपुरीपरसीध हरिकायासकजगतमइं अयजसपडहउदीधल
र्षपनारिजिसीनकबांहडी सुविकविलागीनारि बेडावाबुटइनहीं कोधंकोडिप्रकार ल० ९५ कहइवि

सी॰ मरास सीषण रावणी सीतानी दिउं साषि राजा रावण आगलिइं रह्या आपुण पउं राषि ल॰ ९७ उपद्रव अनिआ करा कागडरा
बीएह दिला मांजरइ मइं करी तिहिं प्रभु तीदा धेबेर ल॰ ९८ जब आवी मंदोदरी नवकाभ अतिसोइ बोलावीइ
तिकहा मुहरइ पाडीयार ल॰ ९९ रावण साथिलइ घणुं कुंणि मकलह चोरि फिरि २ कहा बोल बीयो एकीमा
लेनइ नारि ल॰ १८० ए प्रभु प्रसादि ते सारइ करी नको इ प्रवाह कणा वडि जइ को होवइ तेनलय धरइ आगाह
१ समकरूप एह न हुत जे लाधइ उरइत्रा मनोया माहिं शिरोमणी सीता विश्वावीस ल॰ २ लषमण जाणा सीयहि
उं लाषित लंकेश रामि नमानी एकह। दिनउफने आदेश ल॰ ३ सीता थाविर चइ नह। कोडि प्रकारे राम वातक
हता विरचीयो जव सानल्योकं तोन ल॰ ४ सासु मुस सामकं फिसा मान पितानइ न्यात एह कं नाम पीरूली ह
नेम तके रीमात ल॰ ५ एवावनमीढ लमइं तिहिं जिमको धाकमे कन्ना राजतिम नोगवइ एजि नमत नेमगनेलस्स॰
कुतोत मुष मेनापतं। माथि कहइ श्री राम सीता काढो घर थकी वेगकरउ एकान ७ अटवी
मांहि मेलजो जिहां नहा केदनी आस आपुणहोमरि जाइ म्हइ पामीनइ अति त्रास ८ पडिलागीनइ रोवंता करतो अधि
क विषास लषमण लाषइ रामसुं स्वामि सुणो अरदास ९ घरि बाहिर कं काढायइ सीता सरीषी नारि गर्भवती सवि
सेषथी देषउं वात विचारि १० मन बोलइ अब आगलइ बोलो जाण सीमार काल रूप प्रभु हुइ रहि कं अइ १ कर्म
विकार ११ रावंत उं घरि आवायो कोइ न चालइ पांण वात विचारि पडा घणी लाइ जांपस मान १२ गिर समेतनी जा १०२

तिने रोहलो करे प्रमांण आणा प्रभुनी बइं केरु सेनापती रे मुजां नइ पणइं मानाम नी उमी चाली नाम अकुत
बजेना अवनणी चाली जाइ जायइ ताम १४ पवन गतिइं पेरादाया मारग यइ रथसार गंगा सागर उतर्या पहुंता पेलइ पा
रि १५ सिंह निनाद अरण्यवी आगइ न चलेसोइ आविउ आम नापनो सीता मारी तोइ १६ कदोन जाइ कोइ दा आवइ
हाथे लगाइ फिरि जन्मसे वकतणकं कामदीयो ननटाइ १७ लेइ गयो लंका धणी चित मइं आणी वाच लोग वइम कि आ
करो निमुणी एहवुं हाव १८ राजित माहउ रामजी मेल्हा थाइ हिराणि लक्ष्मण केरा वानती रामि सुणि नहा कांनि १९
एवन स्वापद सन न्या जेदवा जमनो गेह मुझ मुकी कि मजावि सइ प्रथम परीक्षण एह २० एम सुणी मुरछा लहा रथ
पीनां मयइंत जाणि मुई सेनापती आपुण अधिकर डंत २१ चेतन लहइ वनवायरइ फिरि २ मुरछंत सुमतहो
इनइ मती तमसाथि इ दुबेन २२ इरिके तलइ सा पुरी किहा अवइ अरु आप फगइ जइ बेहजो यही कादिंइ मुझ
संताप २३ तोमकहइ सेनापती मुझ ना षित एएम तुकहिजे श्री रामनइं मकहेतो नु फेनेम २४
सीता देई उलन उक्क सुणि मसनेहा राम उमरू पाइ मकि मरु फोयइ उमर आशा विश्राम सा। रहफो
जबांधिलड तीनहा नाकरती उमरू त्रास श्रुककरी मुझ काढतो कोधक कारे विसासमी॰ २७ धरणइ पडी नविलइ मती
नाकरती उपवास लोगा नइ नवि मेलती कोधकं कारे विसास सी॰ २८ रूअइ पणि पइती नहा नालेती गलपा
स पेट ढरी नवि मारती कोध उ॰ २९ कतरणा न चिके सती नवि घाती विसयास स्वापन देती स्वामिनइ कोध उ ३०
होइ नइं अति आकती मेली लाकड घास जुहर पणि करती नहा कोध उ ३१ पर्वत थी पडती नहा मरती को किनमा

रामरास सं बहइ ऊपकमिनइं ऊगइता कीधउ ० ३२ रांणं थी मुतव समसिरं पुरुं वसइं मक्तास साजनमिलस्पश्रीगगइं
कीधउ सीता ० ३३ मदा मदा सांमिश्रावस्यइं मदि रावणमृताम देखिइं अमरतश्रागिया कीधउं कांरे विमास सी०
३४ ग ऊ गोत्र नृमनाविसृ श्रांणीमइं ३त्न स विधिमघलां करिसृ महा कीधउं कारे विमास सी० ३५ जिणइ रुजा
साच्ची रंगिइं दमिते राम साहमी मादमिगयोयमि ऊं कीधउं कारे विमास सी० ३६ नाहा सुंनाकीपरइं कारमु
रंगबिनाम एकनत्र आवी पाधरुं ऊं कीधउं कांइरे विमास सी० ३७ ऊंजाण थी माहरइ हरऊं पुमप्रकाश क्षणीननतउदेनर मेले
कीधउं सीता ० ३८ अवतांन इत्रीधर रंउ मारइं ४ उजास देवनमकिं ते मासही कीधउं सीता ० ३९ ऊचांनी विहीवनां
लांबा लेइ निमास उरवशा णीश्रनिगवनी कीधउं सी० ४० किहां सीतां सुकमालिका किहांवन नउरेवास एनी करिन
विचारणा कीधउं सीता ४१ गृपतिपणइं घरिनीतरइं कांनकीयोत्रिरनास सांडकरी सक लोगमइं कीधउं सी०
४२ देशा यइ अनिवद वहइं रांकसलपतंग ऊनरीयो हीदे पीचो रांमतणउं निमरंग सी० ४३ नगरी के रावाह
ला उंबकेरा नेह प्रहरघडी दिन अंतरइं रीनांदे पोतेह सी० पहिला प्रहरनी छांहडी घरनी लायइं तेम रामचंदन
सीतडी मुऊ सरोंइं इम सी० ४४ चिंरत नगउंकार साथाउं उनमनां णसजेह मायरनउंतउ बिहुऊं रामिकाउं रंइह
सी० ४५ के इषकगुण नहीं चिनधरी लेनउं मूऊनइं राखि रांसम राखणीकरइं सुबालिनऊं साथि ४६ नयूरउन
रलालवी नेहनणी सुणि वात मनचोरि तत्र मूऊ लणी हार[...]मणा न्यान सी० ४७ आपुणपइं अंगीकरि केल
करी उइं दूरि रांकरतिऊं विसवादसो रायारे हेरे हरि सी० [...]वरधान मायरतणऊं गालइं ऊलनितिऊं १०३

ति सायर उत्सवइं नहीं राखिरहि उं तसपदि सी० ५० जउं पसनइ[...]बी कारेनली धउं साच साचवइ उं संसार मइं
साचनणी वड वाच सी० ५१ नोग विसुं सत आयण उं वनही मांहि विसृन पस्तएकारि जकिंउ करइं जेह थी नेपाह मन
सीता ० ५२ राजा रा याह लता विरयानाएकाज रांमनऊ तमोहरा अवरानइं सीलाज ५३ ऊमिन राषी मानिनी
श्रयमांनइं नहीपार दोईपरि परउव हिउं दोमहागनरतार सी० ५४ घीरनीर नउं नहलो चंदन समुदाप्पूर आपा
नइं थी उपमा कीहीं किसु करनार सी० ५५ पेचंही आश्रव सेवीया सेआपाय अगार डारणी च्यारइ नवि कीया
धर्मही च्यार प्रकार सी० ५६ त्रिकरण सधनराषीया मद आवइ मइ कीध उही पाचवइ पापीया व्रसिवरतां विनती
४ सी० ५७ विगथा च्यार ममावरी सेव्या ऊविसन सात कीधा च्यारकषाइ जी पंचपरिमिथ्यान सी० ५८ तेफलएऊ
लेगइ दोसन उमनलवलेस कर्म तिण्यो फल पांमीयइं एजिननो उपदेश सी० ५९ रविऊ गोदे पिमऊं घहवनइं श्रेधु
२ घनवर मइं रेजवा सीयो सऊउजायइ गमार सी० ६० मामव संतइ कयरडे पांनतणो नहीं पाघ मरिजमे हव संतन
कोई नदाउइं दोस सी० ६१ रांमचंदना राजमइ मुषीयासग ला लोक कंचनमांहि रडघडुं एसत कर्मही जोग सी० ६२
खलनवचने ऊंपरिहरी कीनविचारितमर्म मिथ्यातीउपदेसवी मतिरे नजा जिनधर्म सी० ६३ एमकही मुरछाय
डी करिसीतल उपचार करि सचेतन सुंदरी वचनवदइ सुविचार सी० ६४ रांम विना दुख ऊंलऊं तिमही मुऊवि
णसामि लहिसइं आरतिश्राकरी विवधपरइं दुखपांमि सी० ६५ ऊंतऊं कईनांऊइं मुफसी बऊलीदासि तनन

र्गम् रा॰भ॰उम

करेजिऊं आपणउं प्रभएमुक अरदास मी० ६६ जे हनाघर मइं जे थउउं लोऊइ ते प्रतिपाल नाति विना आरोकरी वा
हणिन सकइ चालि मी० ६७ सरिज बत्राइ दीपूतउं ततासिहर सुंलीनं ते सुरतरू उजलह रू महिमा मेरू समो नसी
१६८ ते प्रभू सायर सारिषउं गुणेलरितसर प्रर धणीपणइ मइं पामीयो प्ररवपुन्यअंकूरि सी० ६९ काइ मए उ
ऊ मादिवी काइ मउ राजान मयल कंइ बासि कें कजित प्रभू तुम्ह नइ कल्याण सी० ७० संगल नोवि मुक सुषतणा
स्वामी नइ एबोल बोलम कोरे मोहा मणा आवा अनइ रे अमोल सी० ७१ लषण मुंए मारही कहिजे तंआसीस
सेवाकरिजे प्रभूतणी धनधारइ जगदीस सी० ७२ पंथइ त्रीवहोजि तं तन्हइरे वबविसवावीस विदाकी योतो
नापती जाई मिलो निजई शसी० ७३ एतरह पनमी ढालमइं सीता सुंप्रभू कोप केशराज नो नइं वधइ तां कीर्त्ति
तिउपसी० ७४ सत्यवती साची सती फिरइ घणुं वन मांहि सूबनष्ट जिम हरणली आपडं
निंदइ त्याहिं ७५ अई कर्म गतिवांकडी नही केहनइ मानि तीर्थंकर चक्री सकं नडीया इहि एजाणि ७६ रंक
फेडी राजा करइ राजा नइं पलीरंक करइ सही न विमेटी वा जायइ चिहि नामंक ७७ अघ डितं घार मणइ
घणुं घडायानइ नाजंत माघइ एविक लोकनइ देवमदागाजेत ७८ फिरि २ रोवइ घणुं पगि २ खलनमना
य दर्नोक रिकं रककरी पावघणं बीमइ ७९ नाम्पवंत नां मसजिके नेतंतं न विसीदाइ शेनादोवी मांमरी
आगइ ऊ लीआइ ८० जीवन नइ मरवा तणउं नयन वि [illegible] नमस्कार ना मानमइं लोगंदाग मोइन १०४

लोगन दावितिविं नवूइ एकोई वन देवि कारण कोई विचारवइं [illegible] वई तन तेषेवि ८२ रोजमुणी माता तणउं स्मरन
तं जाणणहार नायक ने शेनातणउं चित्तमुंकरइं विचार ८३ [illegible] चना साची मनी सीदाता अति जाणि चाली आवि
कृपापति सतीतदा नयआणि ८४ अलंकार सिंअंगना ऊतारी नइ ताम राजा आगइ मेल्या रावेवा निज माम
८५ वहिलिमचा है मोघकी राजा नाषइ रणि अलंकार एना हरा अघइ रहइ तें जाणि ८६
सुत पति आ य मिल्यउं वस्त्र सुंजे घरदारा कें सअसे मटलि तें सीता नामपत्रापार सुत पति आय मिलिउं
८७ कवणअवतं तस्थाप आपणउं नामधकामी दुहि अपणपइ किमी अरे एवउ तं नमामउं निर्दय थी निर्दय घ
णुं तिहि फाधउं एकोम चोरस्यमाई आकरोरो नेहतणउं पवीमसु० ८८ ओ रोका मव वेदि तो दिनइ करंदे इ प्र
वुडनउ ऊ पासि आधिक अरघहोइ ऊ कृपा डाय इ पाडीयो दयावसी दिल मांहि वीनकवीतं जेअहहो नेतिमना
यतं प्राहिं सु० ८९ समति नामपर धंन ना मतनमपा मइपावी कोमल बोणी प्रकासि बात न वकहइ सइ वी पुंडरी
कपुर नउ धणी गजवाहनतो पूत वेधुदे जाई हो रावणपरघरमत सु० ९० वज्रजंघ जी राइपरम एस्थावक कहायो
देवधर्म गुरू न चतमाऊं जिहि निश्चय लहायो महोदरपुर नारिनो विरूदवंतन अपार परइ खकातर बइ घणो
हो जगमाहि जमसार सु० ९१ हाथी लेवा काजि आजइ रो आरवी आयो हाथी चढी या हाथि नाम मन घर हिं चल्या
यो रोजमुणी नइ ताहरो आयोइ हानेरे त्रा साई लणी सवनामा यइ हो बात विसेस असे मसु० ९२ एमसुणा नाम
चिर राइपरतीतिमुराघी परिवेहो लगि मां डिवा तनउं सघली साची रावतीरा वा वही मंत्री नइं स्यपाल मील मांटीपाला

रामजस
राम

यइहो गवतिक वई ततकाल सु० ९४ निःकपटी अति प्रगट पणइ नाथइं ते नृप आनंद की तं वहनिचं मुंकलोकंत
नृप एक धर्म जेहा करइ तेहा मगासंमारि मगपणतो वइकारि मोहो स्वामिन नइ कंइ नारि सु० ९४ नामकलघरआ
णि तजि नरघर पधारं ते हो इपिजमतिदारक रू कतं सफल जमारो अवधारो अरदासए सोच नरगो नहीं कांन
बारू वार विलो पथी हो राइ लणइं अनि रांम सु० ९५ पीहरीयइ धमिजाइ मामुरंइ जतं दुख पावइं इहि नाना
मईं अब त्रिया नइं कोइ न आवइं सधीवांट इंचा लतं जतं कोर तं लजंत नतहा डसमनतो गमइहो नारी न विला
जंत सु० ९६ लोग वच नियी रामकाएकायो देपतं कनरी यायीरो सरांम त्रम सरि पतंपयो गवेषा करि सइघणी
सुषनहीलनइ इलगार चक्रवाक जिन एक लतहो आणइ आर तिअयार सु० ९७ त्रिविकाय इव यमाडि नांमसाना
घरिआंणाराइ वनावियतं गेह तिहां रहइं राघव राणी धर्म भा निचिंतव मीयो आरतिपरहीरालि सषसानामा
नइ घणी हो पावाषीमनवालि सु० ९८ को री नानी आविरानमे चरणे लागी वातविशेष विचार कहइ वइं तेम
नुरागी सिंहनादि अरणमइं प्रत्न मइं मुकी देवि वात सुणी रघवीपइ सुरबाणी तत पेवि सु० ९९ वन वावइं
हाएह मासलावी पणि स्वामिन इहो वात नली वइंतेह सु० २१०० तजनतं तो ते सुणावी लोधतं पहलावगति वग
ति वात वणवी नापी विइलीजिम जिमनि सुणइ रामजी म[redacted]म सुषनावयण कपजत कआइ घणतहो तिमति
मचितमइं चयत सु० १ मदा रामत्र रकाम कीयो मघलोनी विम[redacted] कदहानकां धेकां मजेरहमी दो वइ हासी नाप १०५

दोषनो माहरइए अति उपजितरोष सोनइं ललगइं रूपं मताए [illegible] मसदा निरदोष सु० २ लोगानी सुणि वातना ष
की जुरक कोहुवा लपणा की प्रीत रणु जिमता णीतोडी सिंघा हष्ठानी वातपणी विपरीत वोउत मतिजिनधर्म
नइहो रायेयो कलरीत सु० २ एह मुणी सुरगाय पडि कं रघुनाथ तिवारइ लक्ष्मण करि उपचार घणु सुर
वाही तिवारइ कगाइ कलाक यो विद नूतत असमान किहांगइ मांता सीतीहो प्यारी प्राणसमान राघवरो
इ वेलक कपजिकं अति आनंद केम असमसमटलित सीतानाप अमंद सु राघव० ४ लोग वचन विसवाप
कतं पवरपनइ नारी सीतावचननगरूड मंत्री लीधवरतारी घरि आवितनरप आपणइ तामकरइ संता
ल महीयलमइ मोटी सतीहो वादहिदइ जन आलं सुरा० ५ लोग वोक उगमांहि एहनतं न्याइकहाण पर
घरसलण सरलोक ए अजणा रूढुदे बीनां सकइ लडइ रावइ नोर नोर नो उवाह्यो वहातं कीधतं कांसक
वार सरा० ६ वदरी विगपावाति पुरप पुरदेपणआंधा मूंकीकहणकंवालकहा पणिन वलिइ मांधी
पर घर फिरवा पागली लूणी परभनले ए एह गुणानी धरणी हो कहि णिकही कहो कण सुरा० ७
मंत्रदेण मंत्री त्रा मुक्रामसमारणदासी प्रीलवंती प्राय माषी महा सुपलोग विलासी पुन्यवंती प्रग
टी घरी छिमावंती ससारि कइ नहीं हो सइ नहीं हो सीता सरिषी नारी सुरा० ८ चंद्र कमल अकल
ग नाग णी आविमत्रा सिंहर विद्रुम पंकजलनालि कलत्राक षकेहरि कर कूरमचं वक नइं फ

रामजस ली कोईलअनइं मराल तेपइं अतितपमाहे सीतानइं सुविसाल सु० १९ देविकहीतेहरिइं दनीनारी अ
लगी अमरीनहीआसनी आपणइं कामहिंविलगी देविनाची अमरीषकी सीतारूपरसाल देवइंदीध
बीधरीहो मइनरपाणीबाल सु० १० लखमणलाघइं नामरामजी अवअवधारइं माणमनो एमहन
वानविगयांहीविचारइं सरइनहीजिहीबादिरो तेरूसवीयइकाइ कोइनमानीवानतीहो काइहोन
इपविनाइ सु० ११ गइतिकादिकं जोणस्वामी अबही समालजे पाबइवरमांमेहकदइ सुधरइवर
मालजे मुपनावइं स्वामनी जीवनीअवनाइहो सिंइं महीइमलोगीयइहो पाबइंकरे[illegible]
[illegible] स्वामी तुमआपकरीनइं घणीदिलासा सीताआणजेग्रहद मारी सुणिअरदासा अवरगयां
आवइनही नहीअवरानेकाज त्रियाहेतितोदोडीयइहो नहीइहवानीलाज सु० १२ बयसिविमं
निस्वामी चमूपतिमावइलीधउ खेचरनइंपरिवारचलिकं आलसनकोधउसिह नाद अर
ल्पमइं आइगयातनकाल आतुरतामिलवातणीहो जोजोजगनी झलसुं० १४ उता आविनिद्रारे जिस
रूकाषीसीता नयणेनावीनीरिषानतेदीगारीथललनगिरिनरू सोभाया खधिनलाभाकोईकरपटकी
नइबोलाओ पंचासुधरमोईसु० १५ कहेरेविलूरीव[illegible]वेगिकरीसिघइं षाधीकहेरेगलीअनगारे

मईसारइंलीधी लेईगयोपरद्वीपमइं आपाअलगीबात आमूढलीजाइंजेसो राघवजीविललानम
१६ फिरआयोपुरमांहिं स्वामी आतिभरतउमोगो ह्मरूघरेघालीयं अहोपुरवामीलोगो किमउकरूं
तुमसाषडीरामघणीआवेन अवदोइकाईगमेरू गइतानविपावेतसु० १७ षेतकामश्रीरामनाम
सीतानोकरीयो मनरूपमकदेविहाइं आतिआवइ नरीवोहीयइनेउहहिदइहनेकं आयक
मीआय वचनेपणिश्रीरामेनहो सीताहरीयमुहाइं सु० १८ पचोवनमीढाल रामजारइहदा
मी मत्ताकानसुरिमकं कामफोकइ पमाडीपासी केसराजऋषिराजजी सीतानोसोभाग सीता
हीसलपावहाहो नहीअवरानोलाग सु० ॥१९॥ [illegible] ॥ हाथीनउं जगमइघणा पणि
अयरापतिएक उच्चैश्रवएकछे अश्वअछइअनेक २० गंगोदकपणिएकछइं पाणीनानदीपा
२ क्षीरोदधिपणिएकछइ अबुधिअवरअपार २१ परमेष्ठीपणिएकछइ घणामत्रघणागुणवंत सु
दर्सनपणिएकछइ अवरगिरानदीअन २२ दानाशांतिसुएकछइ अवरघणादिइदान दसनतइं
पणिएकछइ घणाकरइअभिमान २३ सालिसइपणएकछइ घणानागवइलोग खलसेइपणि
एकछइ घणाग्रहइजुगिलोग २४ तिमसीतापणिएकछइ नारितणाछइलाष आबिलीयापक
चेइनही आबानीअभिलाष २५ मासदिवसिपूरीहुआ मनवेलाशुभवार सीताइसुतजन्मीया

गंमसम पुगलपणाइं सुषकार २६ ॥ वान्नागादं गगागीएतोना ॥ सीतास्वामिनी सुतजाया तेन तं युगलपणइं सुष
गे राया नवश्रानदं अधिकपाया नवगोरडायां गुणगाया नवग्रहरनी सांगणु डाया सीता० २७ तेबनत्र
धिकमूगइया वदीवानवाराया सुतजाया जिमकीजीयइं तिहां राइकराया सीता० २८ बारसमोदि
नआइयो नंदननामधराया अनंगलवण सोहामणउं मदनांकुमकुदवाया सीता० २९ पंचधाइक
रिपालीयइं नामनीयांमुनिनाइं हाथोहाथ संचारिवइं अमरचवीनइं आया सीता० ३० चंदकला
जिमवाधरी बालपणउ बोलीया सुरासुर नतणी परइं राजा ओरीफाया सी० ३१ सामुडी पगिलागा
ना दीधा पीअसमो इमसरिषा सुतजन्मजितं कीधी सफल जगीसो सी० ३२ कोत्रान्पाएक जाइयउं
सीतादोइ वदीना कौनात्पामी नउघणी अधिकाणीए सीता ३३ सिद्धपुत्र वइं न्यप्रहति सीभारयत्र
लिथ्रनउं विद्याबल अद्धिकरी सवविधिजाण सुजाण ते सी० ३४ मेरु आदिनी चलनइ त्रिसंधइ
सुजुहारइं गगनगती सीताघरिइं निसानइं पावधरइं सी० ३५ वारू लोजन पान सुदीधा तसुअहा
रो सुषपूरवइं सीताघणउं उतरदिइनो मारो सी० ३६ देवगुर सुषसोरघी म्हारइ निसदीपेमो जा
नक रूजिननीपनी शुद्धधरू उत्तनेमो सी० ३७ सोपतइ सीतानणी कोणअवमाघारी चेरीसुण
वीश्रोपणी तुरीबेहालगतारी सी० ३८ बानीतरिआवी घुणी नाईजाणीनामो मउवानी राजकरइं २०७
॥

अनतउं परघरवासउं सी० ३९ कदइ अष्टांगनिमतीयो कनानीमतीआणी सुतलवणांकुसमारिमो
लुकआगतिगणी ४० पुनलत्तणकरिमावता जेववालपमागसो लवणांकुमउड नवा मित्रआरतिन
उवामउ सी० ४१ देइ अतिआमामना सीता मनती कीध। न्यात्रा वही संसार मइं आमइ लेकानीधी सी० ४२ श्रा
वनाकांधूघणी पुत्रपढाबीलाइं लीधीमानिमिसारपइ दरषी सीतामाई सी० ४३ वनवजीवन्नात्पाधरा
पात्र सिरीमणगात्रा जीनीनाकाइनासके होइमाणसमात्रा सी० ४४ विद्याविवध प्रकारनी बहतनिवि
ज्ञाना सिद्धकीयासिद्धारपाइ मोटापुरवप्रधानो सी० ४५ वजजंघनी पुत्रिका जातिकुलान मनोमा उविल
सीरिवतीनणइं कपजाउइं नतिगंमा सी० ४६ कमावरवत्रीसमु वज्रतंघजी तामो अनंगलवणपरणावीय
तं कीधउं उत्तमकामो सी० ४७ पृथिवीपुरपति परगटउं पृथुनामा सुपालो परणीच्यमतवती कमाकेचन
मालीमी सी० ४८ मदनांकुस नेमांगतो मायइं तेराजानो वंशअ जात्पइ कंकंवइ कन्याके गादानो सी० ४९
एमसुणिचढिचालीया वज्रजघनार साधी बाधजरेषइ पृथुराइजा जीतिआणि कंवाधी सी० ५० पृथुनृपति
मउनेडीयकं पाननपुरपति भाइ वारनलाइ आईयो कष्टइं सुत्रसहाइं सी० ५१ वज्रजंघसुतनइंया चार
इअनिसंताणइ लवणांकुस नवचालीया वरजिकं पणिनृविमानइ सी० ५२ दोइपक्षइं लड सामरा मंत्र
उअतिसं[illegible] पृथुवल आगइंलाधीया वज्रजघनइ उआमकं सी० ५३ माउलुसे सासाजनी लवणांकुस
दिमनो करीउवावणआकरी चालिउं पृथुपेषेनो सी० ५४ लवणांकुमहसिबोलीया एआणजात्पावशो

रामजस नमश्रागइं कितेलाजेता पांमइवंरावमं मोसी० ५५ एवुलाषइंकुंआरसुणे वेमजणालोवे विक्रमवेवान
मद्री मकइश्रंछापदघनगात्ता पुद वत्तज्ञघमुद घुकदइ श्रकुमनइंमइदीधी कनकमालिकाबालिका परला
तुंपरमीधामी० ५७ रेगश्रात्राहइतपा कीधउकेटकपरावा एतलइवालीश्रावीया नारदजीश्रषिराधामा
५८ रंगरलीदादलादे पी० ५६ साधो दीसत्रवउरमरंगमइं कदाकि मोत्रमलाधउ ५९ कमा०पुराजा
तली श्रीकुसमुपरणतो किजइवडतिदिजालिवउं ददतगउमकेतो सी० ६० सवलानतंजदनुत्रदरो
नेरगुदीनोपावउ वेशाकुदइउएकश्रग जेमवधइचितवावो सी० ६१ नारदनाधइनयणवइ तेनोदे
षइलानो श्राधानोराविवो किसत्रश्रवइरविवानतं सी० ६२ श्रादिकुश्रीश्रादामरू श्रादिनाथजन
दीसउ नरहकृतमृतनदेनकं नेपगिधुरिचक्री सो ६३ पुरयपनोताहोवतो इणदी वेशाविष्यातो पुरीश्रजो
ध्यापरगटा रांमसुलषमणत्रातो सी० ६४ रामविणयलषणकेता लोगवननोश्रासो पांमीरामिदेवाइयो
सीतानइवनवासो सी० ६५ रामचइलनांदवइ सीताउरिउतपनो वेमइघ्यागइमेफणा मोटापुरषर
लो सी० ६६ श्रीकुसकुदइ रिषरायजी नतुनकीधुएहो कारणश्रतिश्रवलालणी किउदेवायइवेहकुं
सी० ६७ लवणकदइ रिषसापुरी कहो वइकतीएकै हरि साविश्रनइंसतजोजनो दीसइएहदजेरेमी
इवउवत्रजेघकहइंकुंश्ररो श्रवचालतेनिजथानिइ लसमणरांमदेषाडिसुं सरपणइसनमांनइं सी० ६८

मानीवातविसेषथी वज्रजंघनी नाथी कनकमालापरणावीया श्रीकुमरविरांशिगाथी सी० ७० पंचावनमीढालम
माराणानकुंमरउ कुंमरनजरीनउकवइ उतइरवपुमश्रकुंस सी० ७१ ... वज्रजंघपुहु
तइजी लवणांकुसनीलारि चाल्पादलवलसामटा माथनदेसश्रपार ७२ पदलीतालोकालगुरि नवलोक
मश्रावंत कुवेरकानजगेइजी श्रानीजसपांवत ७३ एककणलेपाके पति जीतीलीमंतजद नारद
नविजउम्हली श्रागमनायेपद ७४ कुनरीयागंगानदी जिहिंवइंगिरिके लाम निहिथाउतरिनीदिस
इ श्रायाधीरतलास ७५ चंदनवाकद्सवकं जीतिलीधा स्वांमि मिहलकुसमुकेतले एजीत्यांपांमि ७६ नत
षादिकलोबका नंदसुनंदनदेशा सीमत्तलतानला माविनीधा सुविंगमन ७७ माविलीयासुघनइमकुं सिंघ
नीपरकन श्ननारिजनइं श्रीरिजां कीधउसघलइमल ७८ पद्मिसबकुं माथावल्ला माथघणानपाल पु
कगीके [redacted] श्रावीयउ लवणाकुस[redacted] ७९ चत्रसंघधनि राइजी जेदनाएसालेज इमसु
णलांघरिश्रावीया मायमिलणनोदेज ८० नरशांकुसवकुं रायसुं प्रणमइंमानापाय मालादिइ
श्रासीसजी विधजिकुंश्रधिकोश्रावे ८१ नंदननइंनीकीपरइ करिजेतकरतार रामसुलषमणमार
या नमितणाजरतार ८२ वज्रजंघकहइकुंश्रर सी कहि एवइश्रवसर मार पुरीश्रजोध्यामाय
कइ कोजइनानजहार ८३ रत्नमागकालाबुका कुमसकंनलचूल शरसानलेश्रादिइघणा
माथिकुश्राश्रनरूलत ८४ प्रयाणनीसंतासली देवाडश्रलिरांम साहणवाहणसामटइ कुंम

रामजस

रस्या त्या नांम ८५॥ कडषानी ढाल॥ आवइं री माई लव कुश समजि माजी तात प्रतइं आयउं देषा
वण करि अधिक दावउ जी॥ ८६ रोवंती माताजी बोलइं किसउं उम्ह एहा युध तणी विध माजी वात्या
मुझ मन अचेरइं॥ ८७ पिउ पिउ आवइ तुम्ह सउंय पकड़ि सकइ नहीं देवा तीनि लोकनो कंटक रावण
मारि लीयो तउ पिवा॥ ८८ ववतिके नदी वायइ पालइं मरू नवायइ कापइं मोटा मुझउ बालु निज घा
वा पुत्रां सुं माजं यइ॥ ८९ जलहर करी गाजतु लीनइं अष्टापद आति कोपइं करि२ निज गोडा तोड
इं पणिघन नइं न विलोयइं ९० विनउ करे वाउ तउ तुम्ह जाउं तउ तुम्ह वेगा ह्वा वउ प्रउप्रम प्रज्या परि
पाजे एह विमासी जो वउं॥ ९१ पति विणमइं दुःख स्ह सु मन बोल्यो उम्ह विमासी गति म्हारी रांक तणा रू
आवउं पतनुं मन इच्छउ उं मइं धारी॥ ९२ पुत्र कहइं माजी तुम्ह सांचां जिहि की धूंए को जो निढ़ि माथि
न मिलइं मन मोती तूटुं जं मम आका जो॥ ९३ माताजी कहइं पुत्रो निसुणो ए रह वाघो कामो कानण हारी
तारतणी परि जोडि ते अति रांमो॥ ९४ पुत्र उह्यारा दम मगाए ह्वा किम करि वाय बात तउ बोहरा एवडे
लव तणोरे इम ह्वा कही स्यइं ताता॥ ९५ आनंदकारी तातहांन इरे ए वचन तउ ताना मक ऊलदाई नाज
मउ तु आलण सुंदर ठइं संग्राम तउ॥ ९६ एम कहीनइं वाल्या कुंअर रो तीन मिली माई उन्मक वंतम दे
न कटक मु रेणु रही न सबाई॥ ९७ कंगारऊ दाल तणा संबाहण सारा दम्ह मही हजारो पंच तणा नरू बेदी १०९

कीधउं पंच प्रमाण उं॥ ९८ सेनानी सुं आवी अरीया अति बल वंतां दो नहीं सेनानी कें रहइ मारइं एह मूंल प्रस मो
ई॥ ९९ मो मित्री कहइ रे रे पतंगा आउर अति दे षाता आरि उविक्रम पावक मांहिं करि स्यइ झंपाना आ
१०० एम कहीनइं राम सुलषमण सुयावादिक लार उं दूह तणी चढ़ि मांमी आया कोई नलाई वार उं॥ आ०
१ तलइं नारद नइं मुष सेतनि नामंकलसाई पुंडरीक पुरि वाली आया देषी सीता बाई॥ २ गेवं नीक रइं ना
ई मुक्ते सु प्रत्र जीतो याकी भी मुण स करि नइं गर्ह सा एजा लडिवानी मति जाधी॥ आ० ३ मां मंकल कहइ राम क
रा ए अवनु काई विगाडइं आणजाण्या एदोइ दल्गि वा हरि स्यइं रोइ पवाडइं॥ ४ जव लगए विण सइ नहीं कार
ज तव लग दउडी जावा करी निवारउं वा नजणावी रांमहि रो समिटा वा॥ ५ एम सुणि सीता सांम कलबय मि
विमान इं आवइं लव कुश मध सि माताजी नइं चरण सीस नमावइं आ० ६ सीता कहइं सांमंडल साइं ष्यार
मामउ मांचउं मामा नइं नो णा जा मांहि तेह जणाणउं जावउं॥ आ० ७ पणि नागी ऊठाइ ऊंचा नीमक ठिला
इं सिर चुंबी घोडइं बयसाडी मामउ कहइं सुष दाई॥ आ० ८ वीर तणा पत्त नी कीरति परसीधी जग मां
हिं वीर प्रजन नी कीरति वाजी ए पामी नइं षाटइं॥ आ० ९ वीर तणा सुत वीर अठ ठउं उम्ह काम करंतुरे विमास
पिउ पिउ प्यसा घिलइं तो होसिइं जगम इंद्रसी॥ आ० १० जेह नारण मइं राजा रावण आप ण पूडइ रे मरालो
श्रगट पणइं एतो रे पवाडउं मघलइं ही रेगवाणउं ११ लव कुश सकइ रहमा माजी उह्य वात कहइं एफो की
आली भिल्याउ सरीइं अलगा वात न लागइ नीकीष्यो० १२ एम कहइं ना दोइ परस्तना मूराधनि संबाह्या स्वा

रामजस

मितणा उ एकांमसमारण अधिक पणई जमासी आ० १३ सुग्रीवादिक पचरबराह्या नचारसइनई दावईवई
लामकन नेपेचरलइ माधई मंडइ मरियइ दावई १४ लवणांकुस मकुस समरि घातीया सर मिरोमण सूरा राम
तणा नइ उपरआवइ जिमआवइ जलपुरा आ० १५ सुग्रीवादिक रामकलमु ए अंइ एकणदोई लामकल
कहइ सीताजोया रामतणा सुनदाई आ० १६ आवी सीताचरणेलागी बेकर बइठा आगइ लवणांकुश
ऊठावणि आगई रामतणा लउ लागइं आ० १७ तिहां तिहां रणरंगइ पेलइ हरि जिमगजवनमांहिरघी मारि
नइ रे निषाद। टेक नकोई मांहि आ० १८ राम सुलखमण सामा आवीया देषी सुंदर नाई एकोई सरूपजी
आई लाईरह्या लिलाई १९ नयणां नद जणावइ निजमु परमु पेषइ देषा नयणां मानी नाषालि
षत्मइं सयलविगयो आई २० मनतउमिलवा नई कुमारइ बलभी नामसिजा गइ इंद्रिश्रवमरवइ न्या
नीनर एसं सयजलमागइ २१ लवण कहइ रघुपति सूरुडो अकमल लखमण आवि इ आरसइ मऊ सा
हणि नउ पति जस्र इसणीया निजहाथइ आ० २२ मोर इम तुम्ह सायइ जुडाया सुजमदी योजना मई
असीस स्या मुंश्र तिलइसा नरि नवपइ सांभानई २३ रावणा सुलइ ताजे षाकइ सो बलउ उदमसे
ती इमनी आदिषकी अबलइ सी सत्रीनीए षेती आ० २४ एमसुणीनई रामसुलखमण लवणांकुस दो
वीरा धनुषनदोडी सनमुष आवइ मेरूतणी परिधीरा २५ रामतणा रथनो सारथीयो जानापति जीम
सावइं वजनेधजी लवण नणउ रथ षेउवइ जसपावइं आ० २६ विरविराधल लखमणरथ आगइ ए षुम्यांकुस १०१०

रथषेडइं रथी सारथी चारही सपरां एक एकनई नेडइं आ० २७ विपृविप सजांणीजांणी जाची कुअर जी तो सम मा
रथषेडइं रथी सारथी चारही सपरां एकएकनई तेडइं आ० २७
पुत्रजीपुत्रां लेदन जाणई चोटकर तनि मका आ० २८ विवधायुधइ विवधपरइरे लडिवइ कुंसमनावी रामकद
दृष्टेदुरथषेडी लिइं अरि नइरे दवावी आ० २९ कहइ सामथीदयन विहालइ पोडां णासरघावइं कशाघातमु
ताउताही पाबाही पगलावइ आ० ३० रथ जीनउमिथलकुंउ अतिवइरीय इअति नाडीयो करसिवलाणा
षीवतरम्मी अरितउहीननमाडिउ आ० ३१ रामकहइ नपयाकरहलेना इहिं रामा इण मारइ सोकरढीला
आजपयावइ सामतउ कुणतिवारइ आ० ३२ वज्रावर्तधनुषधणीनउ सघलकां मसमारइ सोई मुहणो फर
हीयतउ वातपडी आकारइं आ० ३३ मुसलरत्नहल लणबलुअरि नउ सोपणि ढीलोपडीयो अरिगजअकूसरै
रियो हलइए इहिं अरिमुनविग्रडीया आ० ३४ यदुहजोरमेविननइरे हलम सलएमको मा कोईअवस्था
केरइं केडइं कुंआजनिकोमा आ० ३५ राघवना जिमतिमलखमणना सघलाही उपकनउ जे कीधातेसा
म्हानआया जगिजागनो मर्मो आ० ३६ एनलइ अक्रुसिवोणइरुणीयो हीयइ लखमण काकउ मुरछाई पडी
योरथमाहि अकुसकी मत्रांक उ आ० ३७ मुरछाई ताहीयो [illegible] रथनो घरनई वलीयो वारविराधविज्ञा
णीवारू स्वामीसंज्ञापायो ३८ वाग विराधसुषस्त वोलि कुअनु चितकारजकीधउ रामरमई रसरंगई लखम
मुकरथ घरनो लीधउ आ० ३९ लिइं रथ रणमइं अरि नइं हणिमु चक्रइं यदी सोसो लखमणजी फिरइं रण
मइं आयो कुपतो वइ अतिरीसो आ० ४० रअंकुस कुसनरराजि मनोड्डु कोई नला कुंवारो चक्रचलावइ अरि

रामजस

नइं दावइं अंकसमुतनी लारो आ० ४१ देई अदक्षणा पाछा वलीयो लक्ष्मणनइं करिवइं वो जिमतो पंषीइ जग्र्यु
ठउ आवी सातइ ववइं ठउ आ० ४२ फरी मुंकि उमो फिर आयो पंषितनां मविचारइं गो तिन पुरुषइं ए गुण
गिरूअ सा पुहिकउ मारइं आ० ४३ रांम सुलक्षण आरति आणइं वासुदेव बलदेवा एदोइं नाइं अपछी
या पदवी एह मनेवी आ० ४४ एहवइ पेनमीढलइ अंअरी करितउ अधिक देषायो केआराज अगंजे ताजेथा
ते आंगइं ज सपायो आ० ४५ ॥ काफी राग [illegible] ॥ सिद्धारथ सा घइं करी नारद रिष आवंत विधसुं करतांवं
दना गाढउं सुष पावति आ० ४६ इचि ता देषी रांमनइं नारद जी इंवंति अणकारण आरति तणउ राघव क
हउ तुरंत ४७ फोडा दीधा अपरिइं कां पाडउ रिषि देव लभियराई घाडइं आवइ एअ हमव ४८ एआया वा
लया मदा नहीं हमारउ नाल कारण ए आरति तणउ रिषनाथइं सुविसाल ४९ एह वेधीन विषवाद ए कां
करउ रघुनाथ एद सुबोल सुलक्ष्मण अ निसुणइं सघलो साथ ५० एजाया सीता तणा युगल पणइं अति रांम
लवणांकुस अतीव बली पुत्र उमारा रांम ५१ त्यागतणा दिनथकी यु छनतो दिन आंनि समलाविं अं
श्री रांमनइ सीतानउ विरतंत ५२ घरजीनइं मिलवा लणी आआआणमतेह आय जणावण कारणइं क
रि देषावी एह ५३ एह नीए अदिनागिकां मनसुं करउ विचार चक्र अरवक नउ फिरउ जउ समराणवि
वहार ५४ आदिनाथना पुत्रनी निसुणी हो सिइवात बाहुबलि साई तणी चक्री नक्षी घात ५५ तुम्ह टालत
इंउ म्ह तणी अवरी सिर कि मइहोइ हाथीजाय जे हाथीयां माषिलइं तउ जोइ ५६ विस्मय श्री डामेदनो हर्षलायइं १०२१

नसमायइं सुरबाई धुरनी पडिकं लीधउं तेंम उवाय ५७ आंष्यां आसं नाषीनउं लक्ष्मण लीधां लार पुत्रां नइं मिलवा
चलिअ कोइ नलाइ वार ५८ स्पंदन बीनवउ नसा आवंता पहुदेषि लवणांकुस सुकमारडा विनउ करइं सुवि
शेषि ५९ हाथाजोड थीयारउ अलगा नाष्यां तांम रांमअनइं लक्ष्मण नमी वरणे करे प्रणांम ६० ॥ ढाल आ
[illegible] ॥ वेद नआसिउ लबोह डीरे नंदना मीलनलहोइ अपारे रे नंदनइ नीबरजहारे
नंदना नंदवउ अ संसार रे नंदना परमर्यादा रे नंदना रे नंदन थी आनंद रे नंदनइ सुषकंद रे नंदन पूनिमचंद
रे अछमइं बस मसुद रे नंदना ६१ ॥ [illegible] ॥ सुतपावइ सुष मयलजी रे नंदना पहलां मयनो परते थितन तंबो
लण पुत्रजी रे नंदना पुत्र थकी घरसतरे नंदना परम० ६२ कवाइ उचाकरी रे नं० नीधाकं बलगायरे हलधरनइंद
रि नणनंदना की जहीयइं न समाय रे नं० प० ६३ षोडइली धषात सुरे नं० रवइ बिर मावार रे लवणावइ नय
ला जलइ रे नंदना पोषइं प्रभ अपार रे नं० प० ६४ जानुपन पगलागता रे नंदना अंकिगनअ धकारवे लवणां
कसनइं पयन मइं रे नं० ताम सकुपरि वार रे नं० प० ६५ दोइ पसनाराणी या रे नं० मांहो मांहिं उछाह रे दोवइं
रंग दिनोद डीर नं० आलंमडि अं वाहर नं० ६६ वाअ मदी ग पुत्रनार रे नं० पुत्र पिता मइं मेल रे मिलीयोव
चन आगा चरूर नं० इधइं माकर लेल रे नं० ६७ निरपीह रषी तानकी रे नं० वात पडी सअ गमरे वाअ द्रिग इ
नि तथांनक इर नं० वय मिबिमा नइं तामर नं० ६८ सर षापुत्रा सोनीया रे नंदना० श्री लक्ष्मण जी रांमरे इंइ
नणइं घरि उपना रे नं० जयंत क अलि रांम रे ६९ सर षासुत न बइं कोइ नइ रे नं० अस र मोरे अनेक रे गाल

रे मजम देवाउगहार जीरे नं० जसवालाकोईकेरे नं० ७० सामंकलजीनाभीझेरे नं० ए नपमईसुपमायेरे एढरनरमहरे
गईदेषीयारे नं० मोसनमातिकेराइरे नं० ७१ लामंकल जिम वालहारे नं० स्नार इत्रबईतेमरे पीरनीरति
मिलिरषीरे नं० नपसुवनतसरे नं० ७२ वयमिविमानईविराजतारे नं० लखमणरामत्रेबाहरे श्रागइ
बइवापुत्रजीरे नं० श्रावइनगरीमाहरे नं० ७३ कंचीश्रीवईलोकजीरे नं० मिलीयाम्यालइश्रायरे मुषि
२उयरकचरइरे नं० धनिधनिराघवराइरे नं० ७४ कतरीयारेविमानथीरे नं० श्रावीनइंदरबारेरे उढव
मेडिकेञ्चतिघणउरे नं० घरिरमंगलचाररे नं० ७५ नत्रवनिबाजईनादसुरे नाचइपात्रअपाररे कुदम
डीनईवरसीयारे नं० वरसाकंचनधाररे नं० ७६ लखमणजीसुग्रीवजीरे नं० विलीषणरुनुमानरे श्रागद
श्रादिईसकमिलारे नं० दीनवायोगजानरे नं० ७७ रानिवियोगईपुत्रसुरे नं० दिनकोठइधीमानरे पर
देशामईएकलीरे नं० रयणीवमासीजानरे नं० ७८ पतिनईपुत्रविजोगणीरे नं० जोगणजेहवी होइरे
मरजासिइमाटलिवलिरे नं० पातकमोटकहाइरे नं० पा० ७९ ईसालेईश्रावीयइरे नं० दना पामीवन
श्रादमरश्रागइईवारावलीरे पंचवाक्यमुनिश्रीमरे नं० पा० ८० नाघइराघवरायजीरे नं० बोलाविजई
केमरेजनञ्रपवादमिटकेनथीरे नं० त्रस्पतिजाणकपमरे नं० ८१ कंजाण्मानासनारे नं० मापणतं
गाइंश्रापरे दिव्यकीयांसघलोमिटइरे नं० लोकवचनसेनापरे नं० पा० ८२ सर्वलोकनीसाषसुरे नं०
दिव्यकरावतंदेवरे मुरकोफिरषइलोकनरे नं० मा चलस्यांनतपेवरे नं० पा० ८३ नलुरनपेनतिकरे नं० ॥ २०११

नारीबादिरजायेरे नंरूपमंगि कमोरिककेरे नं० मंचकबकमंडायेरे नं० ८४ श्रावीवयवाराझीयारे नं० विलीषणस्त्र्या
वरे लचरनईषेचरमकरे श्रावाजंगमजीवुरे नं० ८५ पुरीश्रयोध्यानामकरे बोलांमांतिहांलोकरे साचद
कं लोकांपकरे नं० जिकुफिनवकइ होकरे नं० पं० ८६ घनश्रादराइचालीयारे नं० कपिपतिरिवानाम
रे पुडरीकपुरश्रावीयोरे नं० श्रागीश्रतितिहांसरे नं० पयर० ८७ पगप्रणमीसीतातणारे नं० नामकरइ
अरदासरे पुरीश्रजोध्याश्राविकइरे नं० सफलकरउंद मश्रासरे नं० ८८ पुःफकनामिविमानएरे नं० मो
कलीयोरघुनाथरे मत्रकरिनईमोकलिकरे नं० एकंसघलइसाथरे नं० पं० ८९ श्राजगीश्रामीरंनथी
रे नं० श्ररीणतजांनइपरे वलीकिसुंकरिसइंश्रनरे नं० सरिषुस्वांमिनसपरे नं० ९० पुनरपीक
पिपतिबीनवइरे नं० शुद्धकरेषाकाउरे बोलांबांठत्रइमहसुरे नं० वेगपधारउराजरे नं० ९१ एम
मृणीदरषीषरीरे नं० बोलइथीएवातरे बइठीडाकविमानमइरे नं० श्राईगईतवमातरे नं० पं० ९२ मांहि
त्रिदयावागमइरे कतागिकेरेविमानरे नं० लखमणजईपगिलागीयोरु नं० पगिलागानमश्रानरे नं० ९३
श्रागइबयसिवीनवइरे नं० घरेपधारकश्रीजरे एघर० पुरयाहरार धारत्र० मकराजरे नं० पा० ९४
सतीकहइवइसाचएरे नं० पडिलीकरिसुसुधिरे पांबइबांणइकेवलीरे नं० जेकपतसीबुद्धरे नं० पा
० ९४ सघलेएमनलानीयरे नं० राघवजीनइश्रायरे सतीकहइश्रनश्राविकइरे नं० बोलइलीएमाइरे
नं० पा० ९६ रावणसाथइरागनजेरे नं० नकतवहलवलेसरे धीजकरउंप्रतिश्रादरीरे नं० देषइलोकत्र

१ भजस्म कंमेरे नं० ८७ रमिबोलीनवजानकीरे आणनाथ अवधारिरे तुम्हचीआणउंकरणवइरे नं० नकरिक्रांतविचार
रे नं० याप० ८८ वातकहंताविरचीयारे नं० लवणांकुसनालानरे नं० तेउतेतोउवीकरईरे नं० ९ रंप्रीवातरने
१० पाप० ८९ कविज्ञाणतउंजोमुरूइरे नं० नवपदलीदिउंदहरे नं० पाठ ईकरिसुंकुमहारे वीजननीपणिमंम
रि नं० २ ९०० रांमकहईलइ सुणनरे नं० मइनवितांणीपाडरे अबदीजांणुवेनदारे नं० लोगकरईमुह
मोसरे नंदनाप प० १ सिद्धीएमुकनपनारे नं० नातु उकलारेरे नं० पियकरउंसकांदेषतीरे नं० माचइस
कनइ्यारेरे नं० २ मुगतिवातकहईजानकीरे नं० दिव्यकरुंकुंपंचरे आगनिमांहिनाकपुंरे नं० नकरू
कोपनपंचेरे नं० पाप० ३ वावलनईचावंसहीरे नं० पीवृंतानउकोसेरे जीनईसाकफालीयोरे नं० चदुउला
ईसरामइईं नं० पप० ४ डमजेजेत्रसहनेगमईरे नं० सोईकरउंपरमादरे श्रोकाकाईमांणीयोरे नं० मुकनइए
असहलोदरे नं० पप० ५ सिद्धारथपुरराजीयोरे नं० अनकुकुनायंतरे मतिरेवरांमउंरामजीरे नं० दवावीद्रायं
नरेनं० हलोकमकंभ्रन्आगिलरे नं० कउंबीननीश्रावेरे सीताजीमोटीसतीरे नं० सीलतणई सुपलावरनं०
प० ७ कहिकंनिहिकोधवंसहीरे नं० जगमईपहकहावेरनं० रहिवादिकंपकांमनइरे समकजई राघवराव
रि नं० ८ कुनत्रसमकुवेंसहारे नं० सीताबईनिरदोसरे दासचलाविकंबईउमहईरनंदना मुकनइए अपसो
समरे नं० ९ सीतामुहदोआगलरनं० कडुवाचमहपरहवरे पंचामुईपरमेसरुरेनं० वानुपडीयकुवेरेनं० १०
कमरजिहानीपरईरेनं० ८६ तुमारीजिहरे विलमांहिं पालबाहरीरे आतुरवदईपश्रबीहरनं० ११ कोलिहिफिरी १७१३

उसलाघसुंरे नं० सीताबईकलंकरे दमसनराषिउंसांमिनोरे नं० किहांगईजोकोरे नं० १२ धीनकरावीश्राकरोरे
नं० श्रीजेकरू सकुमाचरे साचवउंकुमसारमइरे नं० मणिनदीधायईकाबेरे नं० १३ हाथइ तिनिस्पुइन
हलीरे नं० लांबीचोडीपाडरे पुरसदोढकनीपगीरेललणा ईधणचंदणफाडरे नं० १४ सनावनमीहोलमइरनं०
राघवघापिकंधीजरे नं० केमराजजुपिगजजोरे नं० माचमाचवचीजरे नं० १५ ॥ढाल ॥ राग ॥ ७ ॥ गिरव
ताहईजोणीयई कृतरिश्रणिमकार रुरिविकमवडराजवी जयनपणसुनमार १६ अहोनरसतकुमरी
परणीराजान सुषलोगवतीश्रावीयो माहतणनेअवसान १७ माचननंदनरूविप किरणतनलानारि
वमरजादविलीकती वातपडीसुविचार १८ काहइदीधाकांमिनी श्रीपुणसंयमधारि विद्युनदहानामधी
राजहणीवइनारि १९ श्रेयोध्यांउद्यानमइ विपश्रतिमाप्रतिपन्न राक्षसणीउपसर्गबी निश्चलगपिउमन २०
साधुकंनेकेवली उबवकरिवाकाजि इन्द्रादिकबकुदेवना आवईश्रधिकविराजि २१ अवसरदेषीधाजना
देवदयापरभांहि हरजांमाविवानवई जोरवदहजगमांहि २२ सीतांनीजतिश्रोलहइ सीतासतीअपार दग
धउश्रवलालणी नरिषलोकगमार २३ सीतांसानिधिकारणइ अनीकपनीत्रसिरांम मंकोलहरिआपुणक
रईकवलउवकाम २४ रांमनणीश्ररिमथी दीक्षकावधपाई मिलिरहीज्वालावली दषिउनविजाई २५
सीतापावकपाथतीश्रावीईमसाषत वीतरागश्रनसाधुसुर आपसापिराषत २६ लोकपालसकुंसंत 114
लउं सूरचंद्रवइदेव दिवशानीशानासाषीया जमदजाणउंसकुं सेव २७ मनईकरीवचनेकरीका

मजस. थायइंकरिजाइं जागतनइं सोचनविषइं रामरालीनरे कोइ २८ अत्र तेमइं वांछिकं कव वालिकरी मुकचार वेश्वा
नरजनमाघाथ्या २९ अवइंब मवार ३० नहातनं पांणीकंजे यमकरी ततकाल श्रीनवकार दिमुमिरता काकप
डीमावालन ३० पइतांहीपरुनीचइ आगिफाटि नइंवावि निर्मल पाणी सुरवरी सीलतणइं सुप्रभावि ३१
सिंहासननलउपरइरे तऊपरिमाजाइरे सीता हंसीजिकंकजऊपरइंरे बइठीमानपाइरे मा
समवनीमाचीसनारे लाल सावनेह नत्तें सीलरे सीता सुरवर सांनिधकारीयारे सीलयकां अग्निजालरे सीता ३२
अगनिसु ज्वाला आकरीरे धगधगतांअंगाररे सी० सीतानइं सीलइंकरीरे सी० सलिलकह्यो तिसाररे सी०
स० ३३ अलेवावरतनांमधीरे चाबुकइंतेचापरे सीता० सीतानइं सीलइंकरीरे पीजायछेराजानरे सीता०
स० ३४ हनुमंतनइदधिठलंघीयोरे तेजिकुंवरतुद्यानेरे सी० सीतानइंसीलइंकरीरे पीजायोगजानरे सी०
स० ३५ पाषर पाणीकपरइरे तारवीयाश्रीराइरे सीतानइंसीलइंकरीरे मगीयावहितकांमरे सी० ३६ रा
क्षिपदरिइंतोमेतेरे शांमित्राजीमाइरे सीता० सीतानइंसीलइंकरीरे युद्धइंजीतिकंकोइरे सी० स० ३७
देवइंनइंवलीदानवेरे गवणनकंतमराइरे सीतानइंसीलइंकरीरे मासिलायकंथासोराइरे सी० ३८ ति
कोटीलकापुरीरे किंदांहीनलगावुरे सी० सीतानइंसीलइंकरीरे लीधाविणकपावेरे सी० स० ३९ रामितजा
ईअरण्यमइरे जिहांनआगाकोइरे सीता सीतानइंसीलइंकरीरे रातिविलाकनुंकोइरे सी० ४० पत्रय
नत्रनीकपनारे दाईतेसमतोलरे सी० सीतानइंसीलइंकरीरे नीकानइंमिरमोलरे सी० स० ४१ लक्ष्मण २०२४

मुजाइंआयो नत्रीनुपांमिहाररे सी० सीतानइंसीलइंकरीरे मरस्यासंमारिरे सी० ४२ पीहरीयानइ मासुरेरे
अजुआलाकलदोइरे सी० ज्ञज आलिकं पाइरांमजरे अपकीरतिमलधोवइरे सी० ४३ गुलगुलनाद सदांम
गारे कोइकरहकाररे सीताकोइलनायइलमारे कोइनृयकाररे सी० ४४ कोइ प्रलपुन गतिसुरे को
इदिलदिलदवरे सी० विविधप्रकारीचेष्टारे देवकरइंततपवर सी० ४५ धों मां धों धों नादसुरे वाजइमधुर म
देगरे सीतातानरबाबउपंगसुरे कोइरंदिकरमरंगरे सी० ४६ कोइवजावइंवासलीरे कोइवजावइवीण
रे सी० नाकंतमांनइंअनुमानसुरे कोइरमाति कंलीनरे सी० ४७ कोइ आलावइंरागमइरे कोइसुरनिध
रे तरे सी० नाचइंतांमवरागनारे थइथइ त्राहकरनरे सी० ४८ वापीनुंजलवाधीइरे जिमसागरकल्लोल
पमरीइंदिमिचारिस्यारे कर तुंअधिकअखोल सीता० ४९ माचा तांमनणायवार लागानातोलागरे सीता
श्रमवालाआकतारे जांणीजलनेजागरे सीता० ५० विद्याधरेंतवेगमरे तांमगयानतामिरे सी० पांणीतेज
यपांमकइरे सीता कंचाअतिआकासरे सी० ५१ लखरतवमीलाघणारे दीनपुण्यअतिदाषिरे सीता महामत
मोटीसनीरे राखिरअवरायरे सी० ५२ जोगकिसुंसमाधणी माचाकरीसाषिरे सी० प्रीण परमेश्वरइरे न
लीर सुषिनायरे सी० ५३ वालानइंदोइलाधसुरे कनारिवेंतग्ररे सी० पदलपमालइंआगाइरे पाणीपुर
पेडुररे सी० ५४ उत्पलकमलकल्याघलारे पुंडरीकनपद्मरे सी० पंकजविविधप्रकारनारे हंमाकेरा मद्य
रे सी० ५५ जलविचिकनटिआफलेरे मणिकेरासोपानरे आपतिननटिबांधीयारे वापीबइंमयमानरे सी०

सणपद नागद नावइं नावइघणुरे करतंउं मीलत्र संमरे सी० गगनजदिइंरसरंगमइरे वर्ण वनतंकुनिवंगारंम।
स० ५७ सीलवडकं सुवपाणीयइरे सीतानकंजगमांहिरे सी० लोकमराहइ मादरोर एक समाद कं वांरेरे सा०
स० ५८ सुघनावसी नातुणनुरे लघुणा कसजीदयइरे नरतांदं मननीवरइरे पामिगयासुविस्रापरे सी० ५९
सिरसुंघीवयु माडावारे दाईसुनदाईपामेरे सी० करणीजिमकलनाकरीरे पामी सा मावासंर सी० ६० सा
मित्रीत्रात्रुघनरे नाम मललनजनपनीर सी० विनीपण सुर्यावजीरे श्रादइंसुपश्रनुपरे सा० ६१ जय उपकर
तापापतीरे श्राया श्राणि कुराणि सीता० पाय नमी सुपमाषकारे इमचगणीनादामर सी० ६२ त्यादणधमग्ला
रामतारे करतापश्रातापेर सी० अंजलिजोडावीनवइरे पमकरंतात्रापर सा० ६३ नागवतनमइंजेन
जीरे नकायोकात्रानाचरे सी० अटवंमांहिमनतोर मेनवीयो नदीमाचर सा० ६४ सघनावइं सुधमार
पारासुघलाकाजर सी० लक्ष्मिणं उपमइ पदारेरे आगतनतं श्राजेर सा० ६५ इसादिकप नइमइरे सा
रात्रतिश्रपरामेरे सी० श्रापि सुथारी श्रांपणीरे धनिमोनव लाभेरे सी० ६६ सीता ना पइं स्वामनीर काईकुरकं
विषवादेर सी० जही ननकन गिजीणवार नेम कुन्म सुघमादर सी० स० ६७ जनश्रपवादनिवारवार ना
पाश्रागमफार रे सी० कुजीवनीकुगरीरे नामतण इश्राधार रे सी० ६८ समेहलनीरणुषारे सुरजकामोघा
इर सी० वनुणवायनणकं घणार रेणुनतंनकदायर सी० ६९ सापहिमावइंसीहकोर नावनकंदेपाघरे
सी० वनणमेत्रतणकुघणुरे सीउक नुनकदायरे सी० ७० चेत्रहिमासरकाकलार कुकुर श्राइकरावेसा०

वनुणश्रावानाघणुरे काइलनकंनकदाइरे सी० नगर तणाजंवालरे पाणीजेरजाइरे सी० वनुणंगाढा तणीजेर
पाणीजेनकदागर सी० ७२ सारसफरसपाणीवहारे कंचननो मभरायर सी० गुणपारमनकंघणकुरे नादत
लकं नकदायर सी० ७३ श्रारतणादिनश्रादिवारे श्राउतणादिन छेहर सी० तेकीन सव स्वामनीर वदीनगीठ
इंदहिर सी० ७४ करवदी मइरा पायुजर प्रनजीवारजेनोमरे सी० तइसयमइं नविरापीयार एटवेनपाकाम
र सी० ७५ सारा वार ज्ञेलागनार काइ नदीसइदाघर सी० सागवीयइंललनाव सुर पुण्पतणा मेजागर सीता०
७६ घरेपधारात्रापणार प्रवस्मामानोगार सी० नागवीयइंललनावसुर पुण्पतणा मेजागर सी० ७७ सीता
सापइंस्वामिजार मरीयंत्रसमनमांनिर सी० संघमलसिकंमादरीर नरउइं मनसुप्रश्रानिरे सी० ७८ एम
कहीकंपाडीयार स्वलाश्रावीरकंसेरे सी० पनजीनइ पकनावीयार जिननानिमसरंसार सी० ७९ प्रभुजीन
वधुरकायमार नरदाप्रविलगार सी० जयनघणगुरु श्रीसुखिर लीधउं संयम सारे सी० ८० सुखनागणि
नीकन्हर सी० वइंविवधसविसालेर सी० परमम्हासुपयासुपर मिरीयामकं जेजालेरे सी० ८१ श्रवानमी
डालमइरे पटकायाप्रतिपालेर सी० केमरागदिघरानायवरं नमीयचरणविकालेर सी० ८२ [illegible]
[illegible] चंदनसुमिविकंपसथयकं संच ततनाम किहांगइसीतासती रामकइ इंश्रामेरीम ८३ सोसोल
वरषवरा नकुमवाछोतूटि चलचितनकशाकांमुनी मलजंश्रावितजूरि ध्येरलस्मणनइं नासणि नसघला
कालोकदासिकरकश्रइंहर्षसुं देषीहारोसोग धनुयएहइ रासइंलसा लसोणतायइंनाम एमकसमवक

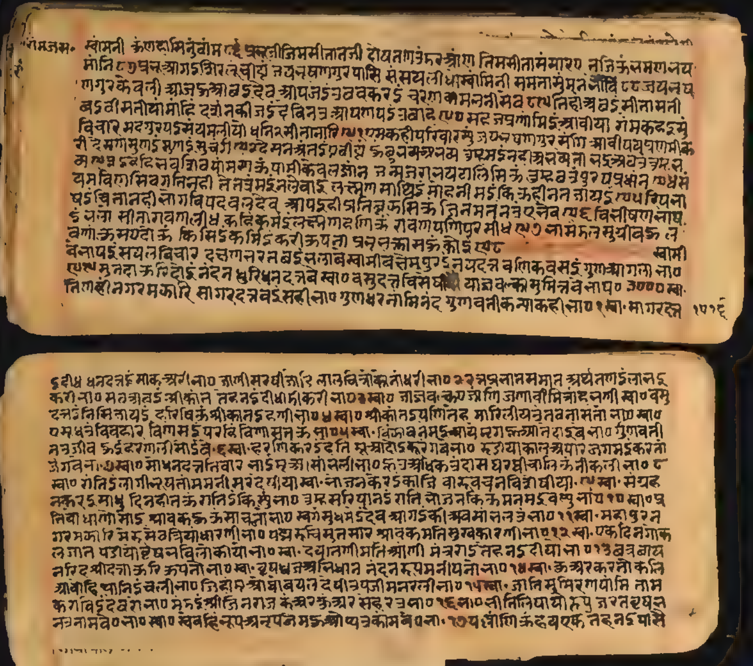

गमजस
शाधीयो साउ श्रारस्तनरनरद नृपतिनइं सुतेसापीयोसाउ १८ एहनू पनतें जोगमुहार इं पामश्रागिवतें साउ स्वा॰
करिस्युत मनपणाग कीयोगुणनी मांनचीसाउ १९ एमकदीघरिजाइ एनलइं सेवपधारीयो साउ स्वा॰ दव
नुदारणिकाजि पद्मरुचि रूपगारीयो साउ इ॰ २० स्वा॰ लीतिलिखी जेचित्र तघी विस्मयपांमीयो साउ श्रार
लघीनेदीधा श्रापुण श्रोभांधामायतेनप २१ स्वा॰ एविजेसाउ इंसेठ स्हारा कीधकां सवे॰ कुमार कारइप
विलोम श्रापधकामइं नामवेस्वा॰ २२ प्रतलीतेरूपसाइं पायोपदश्रालिरांमवेसाउ स्वा॰ जेमरागुरूदव
जरू केकरू कुमिलोमवे॰ २३ नागवीयइए राज राजजम्हारनेश्रापीयोसाउ पुरमांहिं वडवीर श्रापसमत्र
करिघापीयासाउ २४ स्वा॰ मवन्नतइं सुकुमार श्रावकनावतपालवे॰ स्वा॰ स्वर्गइ सरइ देवविलसइं सुघुवि
रकालवेसाउ स्वा॰ २५ गिरवृताढविष्यात नगरी नंदावर्त्तिवेसाउ नंदीस्वर श्रनिधांन राजा राजकीजेव
स्वा॰ २६ पद्मरुचि मांदव कारनोश्रतिश्रानेववे॰ स्वा॰ कनकानातिइं कूंपि नंदनतयनानंदवे साउ २७
राजकरी व्रतलीध स्वर्गे चवतइं नाइकेसाउ स्वा॰ श्रागविदेहमझारवे खेमानगरीश्रागवेसाउ २८ स्वा॰ विपुलवाह
नराय नारीजपमावइजेहि इं साउ श्रीश्रीचंद नरेंद राजतलीपदवीवरिइं साउ गुप्तिसमाधिसमीप संयमली
धउमादरतेंसाउ २९ ब्रह्मलोकनो देव होइश्रायो पाधरो साउ ३० श्रेष्ठ मवलीदेव दवदीमित्र मदावसाउ स्वा॰
हृषभधजनो जीव राजाए सुग्रीववेसाउ ३१ केकनतेंश्राकेत सवमइं नमीयो स्त्रवेसाउ पाटणकंदमणाल
केइंपुन्यश्रकृतवे॰ साउ स्वा॰ ३२ वजसुकंठ नरेस हेमवती नंदजाइंयोसाउ श्रीनेनोमलवृत मातनजनम १० २७

नलाइंयोसाउ स्वा॰ कुनककनतेंवमदन कर्तमंन नपनइं स्वा॰ विजयपरोहितरन चुडारूपश्रनपत साउ ३३ स्वा॰ नाम
इतश्रयोनरते नंदननीकते ज्ञालीयइं साउ गुणवतीनवमांहि नवतीवांमिइं श्राणीयइं ३४ श्रीमतिहुं घरनारि नाम
घणीमइं सरस्वतीसाउ स्वा॰ वेगवतीसुकुमारि रूपजीश्रधिकेकलावतीसाउ ३५ स्वा॰ मुगोचनवयपाय एकदि
निनइं उद्यानिवे॰ स्वा॰ प्रतिमानतप्रतिपन्न माधुरदियनश्रनध्यांनवे ३६ लोककरतामव एहवकंदीया माधवे
साउ स्वा॰ मालीहुं धश्रमीवम लाधइं श्र राधवे॰ साउ ३७ स्वा॰ नारीमधइएइ लोगवनतेंवरलोगवसाउ मइंदोठकरश्रात
नामफिम्यातेलोगवेस ३८ रिषकरइं कातमय नुगटपणइं लोएमकदा साउ नरस्मइं एदोस तज्ञनइंपरेहमदा
साउ स्वा॰ ३९ मुगांकरीसातिध वेगवतीनुं विसीविवेसाउ श्राकुलव्याकुल गात पावइ दुःख श्रतीववे साउ स्वा॰ ४०
एहमुणीनइं स्नान नावीनीत्रापीघणं साउ ए सयमानीमनमांहि श्रापइं श्रवगुण श्रापणतेसाउ स्वा॰ धामुदर्शन
मुनिपामि श्रावीलोगघणामिल्यासाउ खमयोमुफश्रपराध जेमहमा जिमभासत्यासाउ ४१ मांनीनं प्रावेह मुनि
जाणांपतेंनं पडइं स्वा॰ जमनिदेषित्र्यपार किम तेंबंकिइं नरवापडसाउ स्वा॰ ४२ ज्ञाम मुठोजगमांहि कोइन
इ नेराषिलिइं साउ स्वा॰ समाकरीरिषराइ पात्रमुषी हमनविलिइं साउ ४४ एम मुणंतालोग पुनरपिमेवा
माचवइं स्वा॰ श्रावकधर्महिमाथि वेगवतीमनरांचवइं स्वा॰ साउ ४५ राजा देषीरूप वेगवतीसुराचीयोसाउ
कन्याकेरइं काजि पुरोहितनवजाचीयोसाउ ४६ स्वा॰ मिथ्यादृष्टिजोगि कमानपइं नानवेसाउ स्वा॰ जोरइं
लीधीबात जनक नलीकरिघातवेसाउ स्वा॰ ४७ विषकीयोरेनीयांए राजानइं दुःखदइवे॰ साउ दोश्रोवचनस

गे तनजम मांण नहिकुंपद्दउपायबेना०४८ दिनकोड घरिराखि कोडीदीधं श्रीरूणीना० आरतिकअतिरोतन हरिकोतापामद्दत
णीना०४९ मरणनणइकंहेति होयोवान्नइमणीस्वा० ग्रहीसंयममुरलोक पामीविनिपंचमनणीना० स्वा०५०
जनकनणइघरिआयु मांताजीएउपनी ना०वैरविरुयनविजाइ जेमनाबीतिमनायनीए स्वा०५१ मुनीवरजीनइं
जेह जेटआत चढावीयो ना० स्वा० मुवुंअनजएद लोनंमीहिमावीइना०५२ भवमइंनमनअपार मंसजीव
मुरूमणीना०कुंम जवइ विप्र रूडोनइंरतीयामणकुंना०५३ स्वा० मावित्रीनमनारि उदरिलीयोअवनारबे
ना० नंदनामिइभलास मुंदरनइं मुषकारबेना०स्वा०५४ विजयमेनदिपामि संयमलीयोमादरा स्वा०६ करे
तपजयकार मदइपरीमहअकरी ना०स्वा०५५ गिरिममेनइंजात कंचनभलनेविद्याधरु रिषतणकुविमार
देषीनोगपुरदरु ना०स्वा०५६ एतपतणइहिंअकारि स्वारइरिधजेएहवी ना० होयोकुरइंहिं तिमांण जेहवीन
नमतिजेहवी ना०५७ जईबांजइ मुरलोक देवतणामुषनोगवी ना० आडीकरमनइअवेति आयोनेमुरवरचवी
ना०५८ कुकरावणराइं जाईअस्वारअपवउंबे ना० मकुरायामिरताज वसुमांनंहिंवाकडो ना० ५९ स्वा० मान्नं
वल्पकनोजीव नमनोएनमिंघुबे स्वा० एतुकुपजोआइ रावणनोलघुबंधवे ना०६० स्वा० श्रीनतिहल्पोनेराइं
अघवापहलीगयो ना० स्वा० पुरनलइंमुवतिइ पुनवंमुघेवरघयउं स्वा०६१ षेतविदेहमकारि पुंडरीकणीवइ
विजय ना० नोमित्रिभुवनीनंद चक्रीनगवेनहि नजय ना०६२ स्वा० अनंगमुंदरीतामपुत्री अमराअवतरी ना०
स्वा० एतवंमुतमदेषि लेईचालि कुंअपहरी ना० स्वा०६३ चक्रामुघटाआय पंधिइरोकिउपायीयो ना० स्वा० अकु १०२८

लाणोकढुंत मनटाअतिसंतापीयो ना०६४ स्वा० अनंगमुंदरीबाल यांनघकी फाकीघरी ना० कोईतिकजनकारि
आणिपडी मामुदरी ना०६५ पुनवंमुलेइविष्ण आणइमुवीयोमाढ ना० कौतुकएहनिहाना एनागकुपायजो ना०
स्वा०६६ नागविमुगपदमार विविधिप्रकारइंगउंकुं ना० दमरदघरिअवतार एअनलस्मणजीकुंकुं ना०६७
वमतीवनमकारि गजमुताअविरुद्धबे ना० नपतउअत्यपार करतोनावविमुधवे ना० स्वा०६८ अंतिममो
आराध संघारइमनीमती स्वा० अजागरआदगिलेत आरतिमईनपडारती स्वा०६९ बीजेकल्पिवसाइ कुइए
हवे ना० लस्मणनइ मुषदाइ दिनदिनवधतोनेहबे ना०७० गुणवतीनरूआत गुणधरनोमथराइबे ना० संमर
तउंसंसार कुंहलमेकिनघाइबे ना०७१ श्रावकव्रतनवलिपाल मुजादेवत्रिकालनि ना० मानामहोदरएह सामे
फलनपालबे ना०७२ काकंदीपुरि मांहि वामदेवनाप्रतबे ना० श्रीमाउरिअवतार रावणघरनामूतबे ना०
स्वा०७३ मुनंदनमुनंद अनुक्रयोस्वकारणइं ना० वतिलामीमुनिएक मासषमणनइंपारणइं ना० स्वा०
७४ उन्नरकेरिनवलेइ मुथमइं मुरलोकबे ना० काकंदीराजानरतिवर्द्धनअनोकबे ना०७५ मुदर्शनाजीमा
य दोकुंमनकुरिआयाना० स्वा० प्रियंकरपरमिहू अनेकरअनकारीया ना०७६ गजकरावनपालीदे
वकुवांघवेकबे ना० लवणंकुसएदोइ सीतामुतमुविवेक ना०७७ मुदर्शनाजीमाय सवीनरनीजेहवी सि
द्धारथमाथा तिहिपढायोएहबे ना०७८ एमुनिवचनमुणेत मकुजननइंवइरागबे ना० ग्रहीसंयमपावेत
श्रीनानीमोनागबे ना०७९ रामनमीरिषिपाय पाम्यामनिसंतोषबे स्वा० आरतिगइ मुषथाइ प्रीततणाअति

भान्त - ... ...

रामजस पोषबेलाए सा० ८९ एगुणसठिमीढाले नवीनर अवदातबेसा० केश राजरिषराजवी रूकहीएवाजबेसा० ८० ॥ [illegible]
[illegible] सीतायामइं चालिके तवु आयाश्रीराम सुकमालोगी खामनी कविवनघणुं एकामठेरे सीतानपना के
सअति दुःधारघानी वाप रहि वोमेलेलुगडे जिनमननीएवापडू नारषकीएअतिभार मोटउमंसमलार किवंति
वेहइं सइं एनणी सांमकंएहअपार ८४ राजाराक्षणआगलिइं राषिरहा तिजटक राषेमइ मंत्रमविषय साचीरेक
अनेक ८५ इमविमासीवेदना कीधा राघव राइं लखमण आदिइं घणमीया सीतानीनायाइ ८६ सपरिवारकं राम
जी अयोध्या आवेत गुणगानीनणा गाढउमसषयावेति ८ ॥ [illegible] ॥ सतीयासीतामाचीजो सुरवरदीधाआ
षिसती नलानलामुषिनाषा सती श्रीमुषिनाषइंरामजी जी सीलमहाइं राषीउजी नारिथमइमाचोसहोजी विम
लो चलगिरइं देषि मंत्रामइ साचकंमुख्याजी श्रीनवकार विसेषि सती० ८८ दानामइ साचउकह्यउजी जीवृत
पाउंजगिदीन अनामइंसाचउनहीजी साचवेगीलप्रधान सी० ८९ नियमइं साचउसत्योजी नियमवडो मंनोध
पकैनोयंचमइजी परममहासुषहोइ सी० ९१ माविधूरमलगिखामनीजी विवधपरइंतपकीध कायाकीधीकुब
लीजी नरनयनवंफललीध स० ९२ अहोनिसातेतीसनोजी अनसन अधिआराध दसविध आराधनकरीजी स
मरसनकंर समाधि सं० ९३ मानरतो बावीसनोजी यायोइरोआव अमुनइंइपदनोगवइजी सीताउमसघना
व सं० ९४ गिरवैनाहिइंजोगीयइंजी कांचनपुरयरसिद्ध कनकरथराजालतउजी राजकरइंसमद्ध सं० ९५ १०८

महाकनीसुंमंननीजी वंदनुषिजन्हासु पुत्रीदोइयरणावकी मेवरमंडपतामसती ९६ रामसुलखमणतेदीयाजी पुत्रानइं
परिवार श्रीसीआउंवरघणइजी वरसोलयरकोर सती ० ९७ लवणवरइंमंदाकनीजी वंदमुषीचोसाल अंकुशनइं
आगइ धसीजी पहिरावइवरमाल सं० ९८ लखमणकै अरकोपीयाजी अढाइ सइसार लवणांकुसनइं आगलेजी
मागइकुकअपार सं० ९९ लवणांकुसनामइं सलीकाकइजी नइवापि प्रीतिपनउनीबइइघणीजी मुंकरि सिक
सतापसं० २१००० अवघउइनाइं नणीना तिहिंथीवधनविधाइ गलकेदर नइं आगलइजी वोनतउनलूजाइ
सं० १ सरमांगसुमनाथयात्रा वइरागइमनलाव अनुमतिमांगीबापनीजी आयामुनिवरपासि सं० २ अढाइमइ
एकवा कुअरएकहावार महाबलमुनिआडंसइंजी लीधउंसंयमभार सं० ३ लवणांकुमकुअरनगउजी कीधउ
लवविवाह मामिउमजोध्या आवीयाजी कृतघणउउवाह सं० ४ मामेहनतनपालेजी नगरिलूमिआया वकविधनाव
इनावनाजी चितनइलीचइंसमकाइ सं० ५ बसकरीमइंप्रतिदोइ वगतंप्री लगिघाण अवबजोदीलालीलीयइंजी
तउमघलापरमाणमें ९६ इमचितवनोतहनइजी मावइविमुनयातदेवकरइंजइउपनोजी मुषमांहिदिनजात
सं० ७ एकदिवसहनमनजार मेरूगिरिदइजाइ चेत्रमासजितनजकेजी मनरलीयायनघाइ ८ वाकउआवेना
षकीजी रविश्रीमभनउंदषि पदरूपसंमारनोजी चितचितइंसुविशेषि सं० ९ दिननीआदिइंनगीयाजी वक्षो
मष्पिनगाइं घटिउदिनघटिवइंकरीजी मोणसएमगिणाइ सं० १० पुत्रपनतउपावतिा राजानारघापंतदीका
नउवमांहीयाजी दानघणउआपंत सं० ११ धर्मरत्नपुरपावलीजी लीधउसंयमभार सुदरिसाहामातसइजी लागी
इलूनीलार सं० १२ भावइपीवइपइरवइजी करिवइंसोगविलास प्रेमकरेवइपत्नी मनइंप्रियमुआसमेत

[illegible]

नामरीमजल

अवलीमिलचाटवढ्जी। प्रियमालाइवैराग करइंतिकाधनिकोमनीजी माधइंशिवनोवांम सं० १४ आरतिकालनी
वनीजी पवित्रगीकहिबाइं साधिरदइपमाधवीजी प्रहद्गुणइसुघपाइ १५ माचत्र मंयमपालिवइज। कर्मनंगा
उत्तयकार हनुमनकृत्साकेवलीजी पामंतेसवनंतेपार सं० १६ हनुमंतजीदासीमालतीजी चिनचितवइश्रीराम
कष्टग्रहिकदीसानणतेजी बाजिविषइंसुधवांम सं० १७ मारुमहदिस्त्रवर्धिकरीजी जीलीएदग्रंमणि विघमम
हागतिकर्मकीजी कहइंमनामइंताम सं० १८ चरमत्तरीरीरामजी करइधमंनीहामि वपामइं विषयाधघ
णीजी नवदइवचनविमासि १९ हाहामइंतोगिकमदीजी। लक्ष्मणरामसनेह वचनअगोचरवइंघणोतोको
इनपावइछेह सं० २० नामचन्मादोदवनाजी पुरीप्रजोप्पाश्राइ नेहपरीक्षाकोरणइली मंदइंकणकपाइमं
२१ लक्ष्मणनइमायाकरीजी दृष्पावइतेदव अनेवरसकुरावनोजी करुणास्वरइंनतसव सं० २२ पयपय
हापयनी पप्रनीअधिकप्रकाशि रावइंमरणअकालननेजी कांइंकिसंकेकरतार २३ वचनस्यलरूटइध
णुजी माधइंमकनोकेवी मरीनइनेमानिजी करतीअधिककलेस सं० २४ विलोकीविपवादसुंजी तोय
लक्ष्मणनजीविनाजीवनघणोजी लाइनपअंतप सं० २५ बातकदतामरिगयाजी फिटरेपापीकाल
वेनरीयोबलवरकरीजी रघुपतिसिंनेहपाल सं० २६ एमकहंतास्वामिनाजी वचनमाधइंजीवनीकलि
गयतेततखिणमदाजी आनरपणइअनीव सं० २७ सिंहासनबइठोधकाजी दिमघलिअवहेलि आधिपमा
स्याहारतिंजी लषधिवनिरदंसि सं० २८ लक्ष्मणमूर्छाणिकजी देवकरइविषवाद हासिपकोअनरथ १०२०

कउजी उयीगयीपरसाद सं० २९ विद्याधरविद्योषमीजी आपांरणीयोएह पश्चात्तापकरीघणुंजी सुर्गगयामु
रतनर सं० ३० अंतःपुरनीपद्मिनी सवेजोगीकन करइपीर इव्यावइजी रोवइंअतिविलवंत सं० ३१ शोकवच
नअवगणमुणीजी राघवधसिआवंत असंगलअगाजोगीआजी मेदिकंकिमकेलरनम सं० ३२ तीवइवइमकनी
ईजीजी पनकेमसूरत सरविक्रकोइपकारथीजी तवउपचारकरेत सं० ३३ वइलगाव्यावगमंत्र प्रव्याजोतिजा
गा तत्रमंत्रउपकमंआति। कोमआयत्रमाण सं० ३४ काइनआव्यापाधरुक्जी तामघनमुरछाइ सेजापामी
नइंप्ररजी करुणास्वरइंविललाइ सं० ३५ आउघनसुर्यावृतीजी विनीपणलंकेश इत्यअधिककेइनेआरड
इजी रोवइरायअसम सं० ३६ कान्त्यादिकमायतोजी नयणनाधइनीर हाहाकारकतेघणाजी गयाविजास
इवार सं० ३७ मारसिमारसिपंथेमजी सरि२स्हाटहिडाटइ ओगमइंसककोफवोती पडीअवनीवाट सं० ३८
लवणांकुसधमनइंनमीजी अनुमतिमागइंआप एसंसारअसारवजी उमनंप्रवलशताय सं० ३९ अमतया
घमुनीश्रामीपइंजी पांमीजनमदाप मोक्षगयामुनिवरसदाजी आराधीगुरुमीप सं० ४० भाईनइपुत्रनणउजी
पामीघणनंवियोग फिरि२मुरछाइ अनूजी वधूत उजाइसोग सं० ४१ भाईजीएत्रनूविनोनी पुत्रोटीभीपवि
अजकिमंआगइंकसइजी निदिधीविगकं कवि सं० ४२ मोहइस्नुरगणउघलोजी जीणउरोमनरचा विली
घणादिकरायजोजी ममभ्यावइ सुविसेसधइधारांमांदिधारनूजी वीरका मिरतोउ लण्याकारीलोगमइजी
अधिरपणोनजिआज सं० ४३ श्वनउ तीकायालागजी ओमकारनंकाजकीजइप्रअ्यादमपाज। मरीजइमहा
जसं० ४४ पएहमुणिअतिकापीयाजी। होवइसीवालंत अवस्वायनइवाजिवइजी इगरनविडालेति सं० ४५ डी

रामयश

वइठइ सुकलाइजी मनि आव्या रामराज्य दिन ऊगइ दाग रता वलक्ष्मण । अवसर वही पोसात सं० ४७ वालि सुग्रीव लाइजी
कोलगावइ वार लिइ लखीक रिस्मइ घणा जी अने नजन पयसार सं० ४८ अथवा पुत्र नंद पुत्र जी कोपइ नहीं रा
जान रामकह्यो सोभइ करा जी चलिकं अनेरइ थान सं० ४९ स्नान करावइ हाथ मंजी अगुठी नइ अति विलपनवि
धसा चवइ जी रामकरइ अति रामस० ५० बानर सीता जनताण जी मूकइ आगइ आणि लाइ जी आरोगीय इजी
वोलइ सीतो वाणि सं० ५१ कदि किम कारा पुकइ जी लंकइ इंद्र आवी अनेक म मं के बालिक नी परि इंजी ए पग
उइ विवेक सीत ५२ पत्र होवी नइ पाल कइ जी आपइ जी चापइ पाये कालि नागि वनका करइ जी कदि कदि चाल
इता यस० ५३ इदि विध पायइ माद नी जी नन्दइ अछिलगार वत्तलि गया घर मा मलव वयरी करइ विकार
सं० ५४ इंद्रजीत नइ सुदना जी नंद मदो मय मंत अपरही वयरी घणा जी निमुली ए विरतंत सं० ५५ अज्झा
इ आवी या जी गुमपणइ तत काल सूनी सोली नइ गुफा जो जिम आवंत मीयाल सं० ५६ पव गिलि दाश्री रामजी
जी अंका रापी वेधु धनुष बांण नइ करि यदइ जी गाजनते जिम सिंधु सं० ५७ आसन कंपइ अव सुजी आवइ
देवजटाइं देव घणा सुपरिवरि जी करिवा राम सहाइ सं० ५८ सुरवर सो निश्च साचवजी तेनहि कहि कहि नइ
पाडि विलाणाहि कपचरा जी अलक की योनि ताडि सं० ५९ लक्ष्मण संयम ग्रहि इंजी नयिा गुर रति वेग
तेग फूरी नहीं राजनी रामयदी वनवास सं० ६० हाल लतीए साधनी जी जेहनाचर मन्नारी रकशा राजवसि
मांहइ जी रूप आश्रय धिक अधार सं० ६१ [illegible] ॥ देवजटाइ रामनइ दया वइठ दांत समझावा
नइ कारणइ आया वइ एकंत सं० ६२ गजरा पद आलेक परइ मीचइ सूकके हप्प संसर वेतिअ काल १०२१

हि वावइ वीज अंतर ६३ घाणी पीलइ रमनी रामकहइ श्री राम किम करइ चेगमो नवी मूठ यगाना कांम ६४ पंकउ
गइ पाणी यइ पाणी विणा नवंत जलम सींचि कं मूठ कि कइ नवि फल जे तिर ६५ बीजन कइ जनविना जे सरव
तिविणा यि वालंपी ल्यो घाणी यइ मरपिनलमद षि ६६ तव बोल्यो रामिदेवता एजतुइ मनदोइ मकुफिरवावइ
नदी स्वामि विमासी जोइ ६७ नद कद्दी कोप्या घणुं आलिंगीनइ दह कहइ द्रोरे ताह एि ची आणु तुमे नह
६८ आना पति सुरलाक या जटाइ कपाय दे पुइ उ कुंलागइ नहु मोह मइ रघुराइ ६९ आप कपाय केलूव
मुइ नारि एक पापिणी नइ आवीया रामवदइ सुविवेक ७० को मूर्गिपदी ज नर मुइ नारी पांधिलइ फिरत
सिंइ मदी मूर्ख आ कुण ने साधि ७१ स्वामि अमे गानकों करइ के मुक वात्रीनारि हीयावुकी नवि कंतरइ रामक
हइ सुविचारि ७२ वो स्वा बोला हतुं मुरु फिरिमा वेत मुआ गया नइ मायनो सोदन का पावंत ७३ परतपदि
सी नृगयण के आपन समझकोइ राममइ मांहे रह्यो राम कहइ सुर सोइ ७४ इगरवल तो इयीयइ पगतलि
नवि दपंत लिइ परायो पापीयइ पोतइ नवि पद्यंत ७५ इंड वचन प्रतिबूझ्या अनुजी आया वामि लक्ष्मण
लाइजी सदी मूर्क सामि कं गोमि ७६ तव तेदाइ देवता आयणपवे दयाइ पगिलागी शत्रुघ्न तनइ स्वर्ग प
हुताजाइ ७७ मे मकार कया नही रामि कीयो तिहि वार आप कया कनावलो लवा संयम भार ७८ शत्रुघ्न नइ
राजनी पदवी आपइ इंदा वात्रुघ इलइ नही संयम साधि जगीम ७९ लव गनलं के अंगज अवइ अनंगदव
दारं राजनारतन सआ पायो उ बक्करी अपार ८० ॥ [illegible] ॥ धनि धनि रामजी धनि

रोमजस परिणामजी ग्रुघवी मांहि परमेसेवे धनि उफतातजी धनितुकमातजी धनितेरा कुलवंस वे धं० ८१ मुनि सुव्रत मइं
तीरथि वरतइ सुव्रतजी गणधारवे अढाई द्वासि वताविकं सद्गुरु सवजलतारणहारके धं० ८२ उत्रुग्रसुधी
वबिलाषण वीरविराधन्नदारवे० सोलहजार मेरे मरसा म्रिइं रो मह्कु आ व्रतधारवे०धं० ८३ वरनारी सेयमव
तलीधकं सद सिनदा मइं ती सवे० श्रीमति आरिजिकाकेरी सेवक रइं निसदी सवे० ८४ पंचाचारी शुद्धा
हारी समतिगुपति प्रतिपालवे० शीलसुधारी परउपगारी षट्काया रषवालवे० धं० ८५ व उम्र आगम आ
दिइं तपकीजइं विविध अलियहवंतवे० कंचननी परिकाकसीजइ गुरु गिरूउ गुणवंतवे० ८६ चउदइ
पूरव अगइ ग्यारइ पढीयो बुद्धि मांणवे० पंडितराज सिरोमणि साचउं सवविधि सुजांणवे धनि० ८७
आसेवन नइं ग्रहण त्रिष्यादो सीषी गुरुनइ संगवे० गुरुकुलवासइं साविषरसलगि रह्या मनन ईरंग
वे० धं० ८८ गुरु आदेसइं उग्रविहारी एकाकी विचरंतवे० तिणही रातइं ध्यान तणि इंवलि अविधि अतिक
पउंइं तवे० ८९ चउद रज्जात मलोक विलोकइ जिम तकं फल करमांहि अनुउ अधिक वेदन अनुसवतो
दीवकं नरकइ पोहिवे० धं० ९० वसुजी चितइं जव कृष्ण तकं नो मइं श्रीधन नंदनवे० लक्ष्मणजा कृतं लघु
लाई वसुदेव समवे० धं० ९१ वरस सकंक आरयणइरे मंडलीक सेयतीनवे० दिगविजय व्याली सवर सला
पदवीधर परवीणवे० धं० ९२ ग्यारह जार पंचसइं कंपरिइं वरस वदीता साविवे० सकीयुत सबार सहनो
दीसइं ग्रंथ ग्रहि पाउवे० ९३ अविरति नइं वलि नरकंपकतो लतकर्मो नकं जोरवे जइसो कीजइ ते सोल १०२२

हीयइं | कोइं केरो नर मोरवे धं० ९४ | इम चितवतां रोम मुनीस्वर | कर्म हणवा रे सवे | नपइ उपआधिका कीजइं | समतामा
वसमेतवे० ९५ पहिलूं पंचे वासकीया दिनतीजइं | करिवा कज आहारवे० | संदनपलनगरइं पांउधारइं | जयण
नीगति मोरवे० ९७ | वेदहिते मचकोर इंदेषइं | तिमपुरना सहु लोगवे० | सन्मुख आया पणमइं पाया | एहु लनकं
मेजोगवे० | ९८ | आपआपणा घर नइं वारइं | लाजनके राष्यालवे० | आगइ रकइ सकि नचूकइ | आलीसा वरसाल
वे०धं० ९९ | लोकउ आइवीसार मच्छकं अतिहाथीलेउड्ईवलचे० | ऊचाकांनकरइं अतिघोडा | रूकं अधिकु अव
लवे० | १०० | आरनलीधवेरीमइं | वलि आयान यगाइवे० | प्रतिनंदी सूयइं प्रतिपास्या | आणीधर्म सनेहवे | १
श्रवजीनकं पारणो पकृतकं | ऊपजो अतिउलासवे० | पंचसुदिव प्रगसी कीहुआ | उद्योपण आकासवे० | धं० १०२
नमीवनरइं जइं चितवितवइं | पुरमांहि नवि जावंबे | लोतघणलो गांनइं कंपइसो | उपदाइं न विघाउ हेवे० | १०३ अन्न सू
फ़मकं विपनविषइरे | मित्या आहार हि आसेवे पनहिं तरयह अतिउह कीधकं | करिवात प्रत पवासरे० धं० धनम
तालावनहिं काया नो | आणि समाधि अमे सवे० प्रतिमाधरपरमारव साधइं | समरस सुविसेसवे० | १०५ वामी
चंदन जीवन मरणकं | मित्र अरि समतालवे० | साकर टांकर सुष उष सरसा | सरसा बोल कबोलवे० | ६ हर्ष नही
विषवाद नहीं रे | नोही राग जरो सवे | आतमरी मरमावइ पावइ | सुषकर तकं संतत्र मवे | धं० ७ पतिनदीयो घनकं
वीचिकं | तिहिं वनि आयो चालिवे | मंदपुन मेरो वरघोडकं | १ आंनसकइ नत्रा कइ हालिवे धं० ८ एतलइ सुसट
सुसटघ स्यावकआ | नपह यकादीनी धवे० | कटक पडावकीयो सरतीरइं | तां मर सोई कीधंव० ९ आरोग्यान पसु
सटसकुं | पुण्यतणइं परिमांणवे० | रोमरिषी सरवहरणकाजइं | आयासाधु सुजाणवे० धं० ११० मनमुष आइदे 123

रां॰सीं॰मतस इअदविण राषकरइ परिलोमदे० धमिदिहाडोधमपवेलं सेझाश्रीरिषराइबे० ध० ११ अनमकनोअनुप्रति
लासा रतनतणीतव बैठबे सुरघरकी धापुदविश्रमिधि सुयनगतितनत्तठबे० १२ रामरिषउपदेसदीयोतब आ
वकनाचतबारबे० आदरीया प्रतिनंदीराये अवरीपणि नयलारबे० १३ राजाघरहियधास्यो उजदिमांडिव
संनवे सेवकरइ सुरवरसुरदेवी जाणीसाधुमहंतबे ध० १४ एकमासीदोमासीदोमासीकरइ त्रिमासीचौमास
बे० तेपउपचासकरतांकापइ कर्मांकेरायासबे० ध० १५ पर्यंकासनकदहिकीजइ उतकटिकाशन सारबे
प्रलंबितनुजकदहिकदहिं उर्द्धबाहुनदारबे ध० १६ अगुष्ठाधारइकदिरदिवकं कदि एडीआधारबे० इत्यादि
कचोरासीआसन रामकरनअपारबे ध० १७ विचरतविचरतकोडशिलाइ रामपधास्यातामबे० कोडिमुनी
सरमोक्षसिधाव्या नेहच्यीकोडीनामबे ध० १८ रातिरह्याप्रतिमाधरहोइ सुकलसुध्यानधरंतबे चायकश्र
णिचढ्यातबकीजइ घातकरमनउंअंतबे ध० १९ एतलइअवधिसइजीदयइं श्रीमीतेइतिवारबे० ध्यानचल
विजावानविदिकं प्रतनइ मोसमकारिबे० २० उपद्रवअनुकूलकरीनइ अणिवढतकं सामिबे० उतारूमु
ऋमिक्रूचवइ जिम सुरगतियदवी पामिबे० ध० २१ इम चिंतविसानेद्रपूधास्यो ।रामरिषीसरपासिबे० मास
वसंतविकुर्विकवाइ राचिकंमनसुविलासबे ध० २२ ढालचलीएतउंएकमनम ।सीतामंफिकरंगबे श्वका
राजरिषीरातपर्यपइ ।नतज्ञावइअसंगबे ध० २३ ॥धमासीरागेढ्हा॥ कंकेलीपाडलबकुंचंपकनइ
सहकार विविधप्रकारइफूलीया एहमदन सरसरसार २४ मलया चलनावाय्रा वाजइअतिसुषदाइस
मरागुंजारवकरइ कोइलटहुकसुहाइ २५ श्रीसीतेइविकुर्वि हि सीताकेरोरूप नारीजनपरिवारसुं श्री १२३

[illegible] नप २६ रामकनेआवीकहइ सीतमसुणिअरदास आगइजइ पवितोइकइं फिरिआवीप्रियपासि २७
॥पदकीएढाल॥ सीताआवइ रे धरि राग बालप्रणाकउ रामसुंसनेहा सोगकरणकउलाग सी० २८ वरसां
मालोकेरी सुंदरि सुंदरमंडपनावइ रूपअनूपमअधिकवणाविकं इंद्रकरइअलिलाघसीताए २९ रमिझ
मिरिझमिघूघरवाजइ नूपरकेरोनाद घलघलकरिचडकंघलकावइ उपजावइअहलाद सी० ३० चित्र
कउचटकेमटकेमनके लनककफटकोफार अमृतकटकउ फरउकनटकउं घूंघटकेकंसुविचार सी० ३१
पहरणपीतपटोलाचोली मोहइ सोतिसुरंगी सहीयरटोलीसाथरलोली वणनीअेवइअंगि सी० ३२ काजल
रषीमोहसरषी आरागमुषियांन सवकमांनचढावइचतुरी एकइलोचनबाण सी० ३३ अंगदषावइहा
वनचावइ कोमलगात्रकरहारिलेपकरावइ रूपिरचावइ निरषणसरषीनारि ३४ थाथोथपमप मादल
वाजइ चेवपटचचपटताल ऊणऊणआहटरवावीकरनउं वीणावंसरसाल ३५ नाटिककरती चित्तअपहर
नी घुमकघुमककीचाल रागअलापइमीठीगावइ रावरहाअतिप्यालि सी० ३६ नवनउतुदत्रारूराघ
इधामरूप महिमअधिकंअलिमांन सोचविचारीजोतोंजाणिकं प्रियसषअमीयसमान सी० ३७ लेतन
मेसइंतपकदहीनवलइ लचियविसइमनएह एतलइपचरणीआवी वाणिवदइसमनेह ३८ रेलोल
सरमणीनारी राघवस्यो सरनार प्रबलउपम्युनतापइपांम्या नटकंतुफकरनार सी० ३९ तजिसंयम
नजिरामनरेसर लोगविलोगअपार हमपणिरामनणी त्रियाथास्यां प्रबलपुष्यधारीलार सी० ४० एवि
द्याधरपत्रीवरजे करजेलोगविलास कुवंतवंदीनाप्रबसारी आदिलगइएतास सी० ४१ कंओंपतुम् 124

रामजस मुकविजोगइं आदरीयोएविजोग सारंआगइं कनीआवी किंकनविमानतंजोग सी० ४२ पहलीबोलनमां
रोरांम निश्रनूनकं तेरनोएतुम्हेतोस अवलोअरघीजइजवारइं तवदेणकं संतोस सी० ४३ एकहिवइंनारिक
करवइं मासवसंतविनोदि रामनणकंमनरं चनराविकं रावकिं झानइंमोदि सी० ४४ माघसकलवारमि
निसिश्रेतिइं उपजिकंकवलनोंण एमीतेइअवरहरिमंडिकं त्रवनकंमंडाण सी० ४५ सोवनयंकजेवय
वासांमी चांमरढालइंदेव मस्तकवत्रविराजइंवारू देवकरइंअतिसेव सी० ४६ देसनदीधादेवोनिसुणी
देसनअतिघूमि सीतेंद्रइंसोमित्रीरावणगति पूछीकरइंस्वांमि सी० ४७ नरकिचतुरथिइं एसकंकोई
संइकनइलेकेजा लक्ष्मणलनयोग्पइं सहइवेदनसुविसेस सी० ४८ नरकिथ्यकानीकलिनइंरावण ल
क्ष्मणपुवविदेह विजयपुरीरेसुनंदरोहणी होमइंसुतससनेह सी० ४९ सुदर्शनजिनदासलेहमिइं
श्रावकधर्मअगाध स्वर्गसुधमेंइंहोइ विजयानगरीहोसइंश्राद्धसी० ५० तिहांमरीहरिवषेंईहोसइं दोइपु
रुषप्रधांन सुरहोईविजयानगरीयइ श्रीअरतराजान सी० ५१ लक्ष्मीरोलीऊरिऊयजिमइं जयप्रनइ
जयकांत संयमपालीस्वर्गेबडइरे लहसइं सुघएकांतिसी० ५२ तवनुइंइंपणंतजिआवी पांमीनरतजषे
त्र सरवरतनिमनिनोमिइंचक्री होसइंश्रुलसंकेनसी० ५३ ऊदोदेवचवीघरिघारइं घामिइंवरसेना
न इंद्रायुद्धनइंसेघरघालिध वसुघावधतकं चांनसी० ५४ तेचक्रीसंयमनतपाली वेजयंतविमाण
पांमसिइंपरिघलपुण्यइं करिदेवसदाकल्याण सी० ५५ इंद्रायुद्धसोनअंरावणजीव तीर्थंकरनोगो
त्र ऊपाईलवतीजइंकरिस्यइं जिनपद नत्रयूत सी० ५६ रावणजिनतीरथिंतेलहइंसिइं गणधरए १०२४
मराजजीरवकरइं काइलग्राधसुहाइ ५५ आसातरावकावाह सातापारारूप पारपान परपारप पा

दतीगाजा रावणजीवुगति साधसिकं साघइंरथ्रविघराजसी० ५७ लक्ष्मणजीवनाम्हारोनंदन दशरथरे
दोघ प्रगतिलदमसइं अतिगदगदसइं पालीसदगुरसीषसी० ५८ पुष्करदीपइंप्रागविदेहइं रत्नसंचित्रा
नोम नगरीइंनरदेवतणउ पद पहलीपाळीवांमिसी० ५९ पावइंतीर्थंकरपदसोगवि पछंचसइंनिर्वा
ण लक्ष्मणलहि स्यइंअनंतचतुष्टय अष्टमहागुणतांणसी० ६० एमसुणीमनिं दुषलते चरणेकरिपरि
णांम पूरवनेहतणो द्रवसिआया लक्ष्मणयासइंतोमसी० ६१ सिंहादिकनीरूपविकर्वी रांमकरावण
दोइ लक्ष्मणसुं संग्रांमकरेता देषइं सुरपतिसोइं सी० ६२ एकरमथीएगतिलाधी लाधाएसेताप अजऊ
करमनदाघुटइं अईरकरमकलापसी० ६३ तेदाइसमझावीस्वांमी लक्ष्मणरावणसाथिइं वातसुणावी
अतिचित्रलावी जेसाथीरघुनाथेसी० ६४ लक्ष्मणरावणकहइंक्रपानिध कीधुंरूडुंतेंकाज एजपदसमु
ण्पावीसरीया एगतिनाइपआजसी० ६५ निजकृतकर्मतणिबलिएहवी आपदपांम्या आय आपहो
लागविनइंबूटस्यां आपकमायायायसी० ६६ करूणाआणीसुरपतिसायइं नरकथकीउद्धरतीम कांडो
सुरलोकइंसुकंचाकं नत्रकंजोलंप्रवीणसी० ६७ एमकहीवारितोनइं लेइचलिकंसुरराइ पारानांयरि
करघीपरिकरिषिरि पद्याअपुवाआइसी० ६८ सुनरपिउद्यमर्कवेअधिकतें पहलनणीपरिघाइ सास्त्री
वदनवधनीजायइं पीडाइंअतिकाइसी० ६९ आपकमावलिनोगवणीवइं विणनोगविछूटिनहीवइं प्रभु
तमघांनपधारे मेरीमाराकूटि सी० ७० तेतीनइंतजिसुरपतिआयो प्रणमीराघवपाइं नंदामश्रीदिइसकं 125
मीरथकरीजातकराइं सी० ७१ देवकंरइंसामंडलपामइं आवीआपदिघाइं प्रीतिपनोत्तीपरिघलपेखी

...विजा गई आदगीयो ... [illegible] ... पीव धर घर ...

रा०जं० कलस संगेगयासुयदाइसी ७३ राधंवतीमवरसतगीमालितं ३ इस्त्रूके सलपरपाई ॥ चोढिके जनतां को [illegible]

सी ७३ ॥ पनरह जार वरस लत आयु ॥ ए रहा व तिवाली ॥ रामरिषिस्वर माजगिआ मा ॥ जनम जरा सय टालिसी ७४ ॥ नमो

नमो श्री राम रिषीसर ॥ अजर अमर कहिवाइ ॥ तीन लोक नइ माथइ माथइ [illegible] ॥ सासयत लहइ सी ७५ ॥ संवत्त सोलइ

अमी इरे ॥ आसो आसोमासु ॥ तिथि तेरस अंबर पुर माहि ॥ आणी अति उल्लास सी ७६ ॥ विजय गछि गछनायक गिरुउ ॥ गो

यम नउ अवतार ॥ विजयवंत विजय रिषिराजा ॥ कीध अधर्म उधार सी ७७ ॥ धर्ममुनी धर्मजन उधारि ॥ धर्म तणउ भं

डार ॥ षिमा दया गुण केरउ सागर ॥ सागर थेम उदार सी ७८ ॥ श्री गुरु पद्म मुनीसर मोटउ ॥ मोटा जेहनो वंश ॥ चउरासी

गछ मइ जाणीतो ॥ प्रगट पणइ प्रसंस सी ७९ ॥ तास पटोधर गुण करि गाजइ ॥ गुणसागर जयवंत ॥ कइ सुतन कलें पतंग

कलि मइ ॥ सूरि सिरोमणि संत सी ८० ॥ ए गुरुदेव तणइ सुपसाइ ॥ अथ वहि कंसु रामां तणइ ॥ ग्रंथ गुण रिमे [illegible]

र वस मांहि वषाण सी ८१ ॥ एवं बास चिलाल सुधारी ॥ मत नर नव सुविसाल ॥ राम यशोरसायण नामा ॥ ग्रंथ रचो [illegible]

न मी ८२ ॥ केसिराज नतो कर जोडि करे ॥ पंडित सुणउ अरदास ॥ जो घाटी आगइ तो वांचे वांचो जोडइ ॥ रागअसासमी ८३ ॥ [illegible]

गइ ढाल ज बेगइ ॥ राग ज बेगइ होइ ॥ वाच तारे वचन [illegible] ॥ सनही [illegible] सी ८४ ॥ [illegible] ढाल न जाणी ॥ राग

गढ जाणी एह ॥ ते वांचा गइ वाचंतो ॥ [illegible] पजिस्य अति नेह ॥ ८५ ॥ [illegible] सायर नीव लगा जइ ॥ अवलग सूरिज चंद ॥ केसराज

कहइ तवलग पंथ थकर [illegible] आणंद सी ८६ ॥ कलस ॥ राम लखमण अने रावण ॥ सती सीता नी चरी ॥ विस्तार नाम्यो चरित्र सा

सी ॥ वचन रचन करी घरी ॥ संघ रंग विनोद वक्ता ॥ अने श्रोता सुख सणी [illegible] मुनिंद जंपइ ॥ सदा हरष वधामणी ॥ ८७

॥ इति श्री ढाल बंध रामजसोरसायने ॥ चतुर्थोधिकार समाप्त ॥ लिखितं ऋषि श्री रूपसी [illegible] १२५ १०२४

मरा गुजार वकरइ कोइल [illegible]